अभिव्यक्ति

प्यारे लाल नन्द किशोर गलवलिये

राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामनगर (नैनीताल)

Ph. : 05947-251326, www.gpgcramnagar.org, E-mail : principal_pngrmr@yahoo.com

कुल गीत

सुख सरिता कोसी के तीर
बसा है सुन्दर विद्यापीठ
जहाँ प्रवाहित विद्या-नीर
प्रसरित सदा ही ज्ञान-दीठ।।
संगीत, कला, कविता का ठाठ
शिल्प, रसायन, भौतिक-ज्ञान
सिखलाता गुरूकुल यह पाठ
प्राणि, वनस्पति, योग और ध्यान।।
देवभूमि के रज से पावन
रामनगर उपवन मनभावन
शक्ति-शील उद्योग प्रधान
राष्ट्र-प्रेम है, निज पहचान।।
सत्य, अहिंसा, न्याय-विहान
सर्वोपरि है, अपनी आन
मानवता संदेश महान
समता-हित, सरबस बलिदान।।
माँ गिरिजा की आँचल-छाया
गुरूकुल ने सौभाग्य है पाया
ज्ञान-ज्योति से ज्योतित सारा
प्रमुदित विद्या-सदन हमारा।।
यहाँ विराजित हंस-वाहिनी
सदा सुपूजित वीणा-वादिनी
ऋते ज्ञानान्न मुक्ति-मंत्र प्रदायिनी
शत् अभिनन्दन पुस्तक धारिणी।।
सुख सरिता कोसी के तीर
बसा है सुन्दर विद्यापीठ
जहाँ प्रवाहित विद्या-नीर
प्रसरित सदा ही ज्ञान-दीठ।।

संस्थापक

स्व. ला. प्यारे लाल गलवलिये

स्व. ला. नन्दकिशोर गलवलिये

"जान किसी अनथक ज्वाला से, दीप्त तुम्हारी भी है छाती।
मैं ही तुमको सौंप रहा हूँ, यह अपने प्राणों की थाती।
मूल्य जानकर इसका रखना, उर में इसे बसाकर।"

डॉ. श्रीमती हेमा प्रसाद

प्राचार्या / संरक्षिका

महाविद्यालय का प्राध्यापक वर्ग प्राचार्य के साथ (सत्र 2017-2020)

प्रथम पंक्ति-(बायें से दायें)-डॉ. प्रमोद जोशी, डॉ. धर्मेन्द्र कुमार, डॉ. सिद्धेश्वर सिंह मौर्या, प्रो. संजय कुमार, डॉ. आर.एस. कनौजिया, डॉ. जी.जी. पन्त, डॉ.(श्रीमती)हेमा प्रसाद-प्राचार्य, डॉ. प्रीति त्रिवेदी (मुख्य सम्पादक), डॉ. अनीता जोशी, डॉ. अनुमिता अग्रवाल, डॉ. निवेदिता अवस्थी, डॉ. जया भट्ट, डॉ. भावना पन्त, डॉ. किरन कुमार पन्त, द्वितीय पंक्ति-(बायें से दायें)-डॉ. दीपक खाती, डॉ. जे.पी. त्यागी, डॉ. रोहित शर्मा, डॉ. शरद भट्ट, श्री प्रकाश चन्द्र सती, डॉ. अक्षय गुरुरानी, डॉ. अनुराग श्रीवास्तव, डॉ. पी.सी. पालीवाल, डॉ. सुभाष चन्द्र पोखरियाल, डॉ. अरुण कुमार सिंह, डॉ. सुमन कुमार, श्री प्रभजोत सिंह, डॉ. नवभा जोशी, ?डॉ. रंजीता चौहरी, डॉ. मीनाक्षी नेगी, कु. भावना अग्रवाल, डॉ. रूपाली जोशी, डॉ. कमला तिवारी, डॉ. दुर्गा तिवारी, डॉ. ममता भदोला जोशी, डॉ. शिप्रा पन्त, डॉ. डी.एन. जोशी

महाविद्यालय के बी.एड. संकाय का प्राध्यापक वर्ग, प्राचार्य के साथ, सत्र-2017-2020

प्रथम पंक्ति-(बायें से दायें)-श्री भूपेश पन्त, श्री अजय सिंह, डॉ. अजय कुमार, डॉ. राजीव गंगवार, श्री ललित मोहन,
डॉ.जी.सी.पन्त-समन्वयक बी.एड.विभाग, डॉ. (श्रीमती) हेमा प्रसाद-प्राचार्य डॉ. संगीता कुमारी-विभाग प्रभारी-बी.एड.,
डॉ. प्रीति त्रिवेदी (मुख्य सम्पादक)-एसोसिएट प्रो.हिन्दी, डॉ. हिमावती, डॉ. विनीता विश्वकर्मा, कु. हेमा पन्त-प्रभारी पुस्तकालय बी.एड.
दूसरी पंक्ति-(बायें से दायें)-श्री जय सिंह भण्डारी-अनुसेवक, श्री बालम सिंह डंगवाल-लिपिक बी.एड. संकाय,
श्री सतेन्द्र सिंह बिष्ट-स्टोरकीपर बी.एड. संकाय, श्री ज्वाला दत्त उनियाल-अनुसेवक

शिक्षणेत्तर कर्मचारी वर्ग प्राचार्य के साथ

प्रथम पंक्ति-(बायें से दायें)-श्री नारायण दत्त परगाँई-प्रयोगशाला सहायक, श्री जे.सी. बलौदी-वैयक्तिक सहायक, श्री सुभाष चन्द्र चौधरी-प्रयोगशाला सहायक,
श्री मोहन सिंह नेगी-उपनल लिपिक, श्री नन्दन सिंह रौतेला-प्रयोगशाला सहायक, श्री रणजीत सिंह-विद्युतकार, डॉ.(श्रीमती) हेमा प्रसाद-प्राचार्य,
श्री आर.सी.तिवारी-मुख्य प्रशासनिक अधिकारी, श्री पूरन चन्द्र सती-वरिष्ठ सहायक, श्रीमती पूजा कार्की-प्रयोगशाला सहायक,
कु. अर्पिता वत्सल-प्रयोगशाला सहायक, श्री सत्येन्द्र चौधरी-सहायक उ.मुक्त वि.वि.शाखा
द्वितीय पंक्ति-(बायें से दायें)-श्री हरी सिंह-माली, श्री आकाश लाल-अनुसेवक, श्री धरम सिंह-अनुसेवक, श्री नागेन्द्र सिंह-अनुसेवक,
श्री किशन सिंह-अनुसेवक, श्री रामसिंह-अनुसेवक, श्री इमरान (उपनल कार्मिक) अनुसेवक, श्री दर्शन सिंह (उपनल कार्मिक) अनुसेवक,
श्री हुकुम सिंह-अनुसेवक, श्री किशोर-अर्दली, श्री धनसिंह-अनुसेवक, श्री विजय सिंह-अनुसेवक, श्री बलवन्त राम-अनुसेवक, श्रीमती किरन देवी-पर्यावरण मित्र
श्रीमती राधिका देवी-अनुसेविका, श्रीमती गौसिया खानम-अनुसेविका, श्रीमती कमला जोशी-अनुसेविका

अभिव्यक्ति

वार्षिक–पत्रिका (संयुक्ताङ्क)

2017–2019

संरक्षिका – डॉ. (श्रीमती) हेमा प्रसाद

मुख्य संपादक – डॉ. प्रीति त्रिवेदी

सह–संपादक – डॉ. जी.सी. पन्त

विशेष सहयोग – डॉ. संजय कुमार
डॉ. धर्मेन्द्र तिवारी
डॉ. शरद भट्ट
डॉ. मूलचन्द्र शुक्ला
डॉ. अक्षय गुरुरानी

छात्र/छात्रा संपादक – हेमचन्द्र जोशी
कु. स्वराज

मुद्रक – विबग्योर प्रिंटर्स
रामनगर (नैनीताल)
मो.: 9720080008

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विषय	पृष्ठ सं.
1.	प्राचार्य कार्यकाल	01
2.	महाविद्यालय-एक प्रगति यात्रा	02
3.	महाविद्यालय छात्र संघ अध्यक्ष एवं सचिवों की सूची	03
4.	Galaxy of our Esteemed Alumni	4-6
	महाविद्यालय का ऊर्जावान क्रियाशील छात्र संघ	
5.	बेरोजगारी/ईश्वर	7
6.	राष्ट्रहित में एकता की जरूरत	8
7.	समय का महत्व	9
8.	छात्र, छात्र संघ और राजनीति बनाम प्रशासन	10-14
	आलेख (शिक्ष/शिक्षणेत्तर वर्ग)	
9.	हेनरी रैमजे (रामजी साहब) के सपनों का शहर रामनगर	15-17
10.	भारतीय साहित्य तथा संस्कृति में हनुमान-विमर्श	18-22
11.	भारतीय संस्कृति एक सनातन धारा	23
12.	अवधी का लोक-साहित्य	24-27
13.	अनाम वृक्ष की आत्मकथा	28-29
14.	कुमाऊँ के देव विषयक मान्यताओं एवं धार्मिक सम्प्रदायों का आलोचनात्मक अध्ययन	30-34
15.	उत्तराखण्ड के लोक-नृत्य	35-37
16.	अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा-कोष	38-40
17.	प्रतिकूलताओं से घबराएँ नहीं	41
18.	भारतीय समाज में नारी : कल और आज	42-43
19.	राधा और सीता	44-45
20.	महिला उत्थान और आपेक्षिक नजरिया	46
21.	नवजागरण की देवी-महादेवी	47-48
22.	रहमतें/रामनगर महाविद्यालय	49
	आलेख/कविताएँ/शोध वर्ग	
23.	मैत्रेयी पुष्पा के कथा-साहित्य में स्त्री जीवन की छवियाँ	50-51
24.	दलित आत्म कथाओं में स्त्री चिंतन	52-54
25.	दहेज प्रथा : एक अभिशाप अथवा दहेज : एक सामाजिक कलंक	55-56

क्र.सं.	विषय	पृष्ठ सं.
26.	कुमाऊँनी कविता की परम्परा में 'शेरदा' एवं 'गिर्दा' की कविताएँ	57-63
27.	वन्य-जीवन संरक्षण	64
28.	ये कैसी गाड़ियाँ/पहाड़कि याद में	65
29.	निर्भया को याद करते हुए	66
	आलेख/कविताएँ (छात्र-छात्राऐं)	
30.	आरक्षण क्या, क्यों और कैसे, बोलने से पहले समझें	67
31.	पहाड़ के पानी की जल संस्कृति	68
32.	भारत में बेरोजगारी की स्थिति : एक आकलन	69-70
33.	प्रकृति और उसका विनाश	71-72
34.	गर्व है हमें भारतीय होने पर	73-74
35.	आतंकवाद	75
36.	बेरोजगारी - समस्या और समाधान	76-77
37.	समय का सदुपयोग	78-79
38.	बैठकी होली	80
39.	भारतीय-संगीत का संक्षिप्त इतिहास	81
40.	दहेज प्रथा : एक अभिशप्त परम्परा	82-83
41.	जीवन में शिक्षक का महत्व	84-85
42.	महिला सशक्तिकरण	86-87
43.	भारत के उन्नति की ओर बढ़ते कदम	88-89
44.	व्यक्तित्व विकास में एन.एन.एस. तथा एन.सी.सी. की भूमिका	90-91
45.	मानसिक - स्वास्थ्य	91
46.	स्मृति	92
47.	मात्रात्मक तथा गुणात्मक चर	93
48.	विचार	94
49.	नारी शक्ति	95-96
50.	वृद्धाश्रम	97-98
51.	उत्तराखण्ड का इतिहास	99-100
52.	गुरुत्वाकर्षण सिद्धान्त के खोजकर्ता-भास्कराचार्य	101
53.	रूपकुण्ड झील (रहस्य झील) चमोली जिले का अद्‌भुत ताल	102
54.	सत्य वचन	103
55.	उत्तराखण्ड के प्रमुख पर्यटन क्षेत्र	104

क्र.सं.	विषय	पृष्ठ सं.
56.	नशामुक्ति	105-107
57.	भारत के दस प्रसिद्ध द्वार	108
58.	सदैव सत्य बोलें	109
59.	अनमोल वचन	110
60.	हवाई जहाज जैसी यात्रा	111
	कविताएँ	
61.	मोबाईल..../पावन है.../कविता प्रेरणा	112
62.	बेटियाँ/माँ	113
63.	भारत के वीर सैनिक/अनमोल वचन	114
64.	मेरी माँ/स्त्री पर बढ़ते अत्याचार	115
65.	आज है....../मेरे देश की....../उत्तराखण्ड है.......	116
66.	कैसी हो गई...../माँ तेरी याद में	117
67.	वक्त/सर्दी आई/मेरा कॉर्बेट नेशनल पार्क	118
68.	जिन्दगी की धूप-छाँव/हिन्दी दोहा	119
69.	मेरा बचपन/माँ	120
70.	फूल/महान सैनिक	121
71.	बेटी है......./शिक्षा का ज्ञान/माँ की ममता	122
72.	औरत क्या है? / चुनाव / तमाशबीन	123
73.	कलयुग का श्राप......./ अब विश्वास.............	124
74.	बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ	125
75.	बदलता समाज	126
76.	मत बाँटो......../भारत के......../संस्कारों की परम्परा	127
77.	जिन्दगी/मेरी माँ/संगीत............/प्रमुख विचार	128
78.	बेटी बचाओ/आशाएँ/बेटी	129
79.	उत्तराखण्ड और महिलाएँ/देश का हाल	130
80.	संघर्षों की दुनिया	131
81.	जीत बड़ी...../अपने-अपने............../उम्मीदों का धुआँ	132
82.	तुम सही...../जय बोलो............/मेरा कुमाऊँ	133
83.	फौजी / बदलना है / मत बाँटो / बालिका	134
84.	देखा है / मातृभूमि	135
85.	ये पल भी / रंग भेद	136
86.	संघर्ष	137
87.	खुशी की बहार / भारत माँ की पुकार	138

क्र.सं.	विषय	पृष्ठ सं.
88.	मजा बचपन का / माँ पर कविता / माँ	139
89.	जीवन / एक सोच / अनमोल.......... / गुरु और शिष्य.............	140
	संस्कृतम् (शिक्षक/छात्र-छात्राएँ)	
90.	आख्यानपरम्परायां मेघदूतस्य समीक्षणम्	141-145
91.	संस्कृत भाषा	146
92.	दर्शनशास्त्र (चार्वाक दर्शन) दर्शनशास्त्र मध्ये चार्वाकदर्शन स्थानम्	147-148
93.	संस्कृत भाषाय: महत्वम्	149
94.	सुभाषितानि	150
95.	सुभाषित श्लोका :	151
96.	संस्कृत के कुछ श्लोक (भावार्थ सहित)	152
97.	वर्तमान सन्दर्भ में संस्कृत की उपयोगिता	153-154
98.	लक्ष्यैक दृष्टि:	155
99.	पावनं हरिद्वारम्	156
100.	आधुनिककालेऽपि संस्कृतस्य महत्वम्	157
	ENGLISH SECTION	
101.	Research Methodology & SPSS IN Commerce and Management	158-159
102.	Role and objective of higher Education for mation of Intellect	160-161
103.	Man and Environment	162
104.	The Value of time / Let's My loving sister	163
105.	Some facts about Indian music and musicians	164-166
106.	Mother / The love.................. / Tribute	167
107.	Importance of.................... / The Real.............	168
108.	J & K / Wondering..................	169
109.	Interesting facts.............. / Good thing....... /What is Life	170
110.	John Updike	171
111.	Internet Addiction	172
	अद्यतन	
112.	समारोहक की आख्या	173
113.	क्रीड़ा-परिषद	174-175
114.	क्रीड़ा-डायरी से	176-177
115.	प्रशस्ति / सम्मान	178
116.	Teachers Orientation and Refresher	179
117.	विभागीय आख्यायें	180-223

Vision of the College

To impart holistic education based on the gospel values of love, justice, equality and peace to young students from all strata of society and enable them to develop as intellectually matured, morally upright, socially responsible and spiritually inspired leaders to serve the society and the nation.

Mission of the College

- *To build knowledge and learning institution to serve the voluntary and professional sector from our experiences gleaned from different courses.*
- *To pilot UGC curriculum based on contemporary thinking and through action, learning and research to refine the process of techno-scientific achievements.*
- *To promote the creation of civic institution and voluntarism within communities.*
- *To promote Indian philanthropy both at the individual and social level to benefit the least advantaged section of society.*
- *To shape the students into agents of social change by incorporating the values of good citizenry, scientific temperament and rational thinking.*
- *The learning processes and experiences are geared to liberate, transform and empower the learner and the learned (Teachers).*

स्वस्तिकम्

डा. धन सिंह रावत
राज्य मंत्री (स्वतन्त्र प्रभार)
उच्च शिक्षा, सहकारिता, प्रोटोकाल,
दुग्ध विकास

उत्तराखण्ड राज्य

विधान सभा भवन
देहरादून
कक्ष सं. : 23
फोन : (0135) 2666410 (का.)
(0135) 2666411

सन्देश

यह हर्ष का विषय है कि राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामनगर (नैनीताल) उत्तराखण्ड की वार्षिक पत्रिका ''**अभिव्यक्ति**'' का संयुक्तांक वर्ष 2017-19 का प्रकाशन कर रहा है, जिसमें विद्यार्थियों, प्राध्यापकों और कर्मचारियों की सृजनात्मक अभिव्यक्ति को एक मंच पर प्रस्तुत करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि पत्रिका अपने उद्देश्य में सफल होगी तथा उसमें उत्कृष्ट लेखों का समावेश होगा, जो निश्चित रुप से विद्यार्थियों में रचनात्मक अभिरूचियों एवं उनकी उपलब्धियों के लिए प्रेरणादायक तथा जन सामान्य के लिए मार्गदर्शक का कार्य करेगी।

अत: महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका ''**अभिव्यक्ति**'' के सफल प्रकाशन हेतु प्रकाशक मण्डल को हार्दिक शुभकामनायें।

(डॉ0 धन सिंह रावत)

दीवान सिंह बिष्ट
विधायक

सदस्य विधान सभा
उत्तराखण्ड

निवास :-
ग्राम : शंकरपुर, पो. रामनगर
जिला : नैनीताल (उत्तराखण्ड)
फोन : 05947-251177 (फै0)
कक्ष : 60 विधायक निवास देहरादून
मो.नं. : 9837138988, 9456590844

सन्देश

मुझे यह जानकर अत्यन्त हर्ष हो रहा है कि इस क्षेत्र की सर्वोच्च शैक्षणिक संस्था पी0एन0जी0 राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामनगर (नैनीताल) की वार्षिक पत्रिका **अभिव्यक्ति** का संयुक्तांक प्रकाशित किया जा रहा है। पत्रिकायें किसी भी शैक्षणिक संस्था के छात्र-छात्राओं की रचनात्मक क्षमता को सार्थक मंच देती है। पत्रिका अभिव्यक्ति छात्रों मे सांस्कृतिक एवं साहित्यिक गतिविधियों के साथ सृजनात्मक शक्ति को बढ़ाने में कारगर सिद्ध होगी, ऐसा मेरा विश्वास है। आशा है सम्पादक मण्डल ज्ञानवर्धक व अन्य समसामयिक महत्वपूर्ण सामग्री का समावेश कर पत्रिका को विशेष बनाने का प्रयास करेगा।

मैं पत्रिका के प्रकाशन के लिए महाविद्यालय के प्राचार्य, सम्पादक मण्डल, कर्मचारियों एवं विद्यार्थियों को शुभकामनायें प्रेषित करता हूँ।

(दीवान सिंह बिष्ट)

कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल
स्लीपी हौलो, नैनीताल-263001, उत्तराखण्ड (भारत)
Kumaun University, Nainital
Sleepy Hollow, Nainital-263001, Uttarakhand (India)

Tel. : +91-5942-235068
Resi. : +91-5942-236855
Fax : +91-5942-235576
e-mail : vc@kunainital.ac.in

प्रो0 डी0के0 नौड़ियाल
कुलपति
Prof. D.K. Nauriyal
Vice-Chancellor

शुभ सन्देश

पी0एन0जी0 राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामनगर की वार्षिक पत्रिका ''**अभिव्यक्ति**'' का संयुक्तांक (2017-2019) के प्रकाशन पर मुझे अत्यन्त हर्ष की अनुभूति हो रही है।

निश्चय ही ''**अभिव्यक्ति**'' एक ऐसा माध्यम है जो अध्ययनरत छात्र-छात्राओं में निहित प्रतिभा को प्रस्फुटित कर संवारने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करती है। आज ऐसे विशिष्ट दौर में जब ज्ञान-विज्ञान की नित नई-नई शाखाएँ जन्म ले रही हो हमारे छात्र-छात्राओं को भी तद्नुरुप तैयारी करनी होगी। छोटे-छोटे आलेख ही सही, युवा कलम से निकले विचार निश्चित ही उनके बहुआयामी विकास में सहायक सिद्ध होंगे और उनकी वैज्ञानिक सोच में वृद्धि होगी।

इस सुअवसर पर मैं पत्रिका को मूर्त स्वरुप प्रदान करने में सहयोगी बने रचनाकारों, प्राध्यापकों, कर्मचारीगण तथा सम्पादक मण्डल को उनके सद्प्रयासों हेतु साधुवाद देता हूँ।

एक बार पुनः ''**अभिव्यक्ति**'' के सफल प्रकाशन हेतु अनेकानेक शुभकामनाएँ।

प्रो0 डी0के0 नौड़ियाल
कुलपति

प्रो0 ओम प्रकाश सिंह नेगी
कुलपति
Prof. Om Prakash SIngh Negi
Vice Chancellor

उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय
Uttarakhand Open University

उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय

सन्देश

मुझे यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई है कि राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामनगर (नैनीताल) अपनी वार्षिक पत्रिका **'अभिव्यक्ति'** का संयुक्तांक (वर्ष2017-19) प्रकाशित करने जा रहा है।

किसी भी शैक्षिक संस्था की पत्रिका शिक्षकों एवं विद्यार्थियों की प्रतिभा एवं कौशल की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम होती है। मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि पत्रिका में छात्रों एवं जनहित हेतु उत्कृष्ट पठनीय, ज्ञानवर्धक एवं प्रेरक सामग्री का समावेश किया जायेगा जिससे छात्र एवं समाज के अन्य वर्ग लाभन्वित होंगे।

मैं 'अभिव्यक्ति' के आकर्षक प्रकाशन तथा उसके माध्यम से, संपादक मण्डल एवं महाविद्यालय द्वारा अपेक्षित लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु, अपनी शुभकामनायें देता हूँ।

'अभिव्यक्ति' के सभी पाठकों को इस पत्रिका से वांछित ज्ञानोपलब्धि हेतु मेरी हार्दिक बधाई।

(प्रो0 ओ0पी0एस0 नेगी)
दिनांक: मार्च 18, 2019

उच्च शिक्षा निदेशालय, उत्तराखण्ड

हल्द्वानी - 2631239 (नैनीताल)

फोन नं0 : 05946-240555, 240666, 240777

Mail-highereducation.director@gmail.com

डॉ. (एस0सी0 पन्त)
निदेश (उच्च शिक्षा)

अर्द्धशासकीय पत्रांक : 13203/2018-19
दिनांक 19 मार्च 2019

<u>सन्देश</u>

महोदय,

अत्यन्त हर्ष का विषय है कि आपका महाविद्यालय अपनी वार्षिक पत्रिका **'अभिव्यक्ति'** संयुक्तांक (वर्ष 2017-2019) का प्रकाशन करने जा रहा है।

मुझे आशा है कि वार्षिक पत्रिका में ऐसी महत्वपूर्ण, ज्ञानवर्धक एवं सरगर्भित पाठ्य सामाग्री प्रकाशित की जायेगी जिसमें छात्र-छात्राओं का सही मार्गदर्शन होगा और पाठ्य सामाग्री प्रकाशित की जायेगी जिसमें छात्र-छात्राओं का सही मार्गदर्शन होगा और उनके जीवन-दर्शन, कार्य-संस्कृति और अध्ययन-रुचि में आवश्यक रचनात्मक बदलाव आयेगा। छात्र-छात्राओं को अपनी अभिव्यक्ति को व्यक्त करने का अवसर प्राप्त होगा एवं उनके व्यक्तित्व विकास में सहायता मिलेगी।

'अभिव्यक्ति' पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए महाविद्यालय के प्राचार्य सम्पादक मण्डल, प्राध्यापक, कर्मचारियों और छात्र-छात्राओं को मेरी हार्दिक शुभकामनायें।

मंगलकामनाओं सहित,

डा0 (एस0सी0पन्त)

सेवा में,

प्राचार्य राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
रामनगर (नैनीताल)

संरक्षकीय आशीर्वचन

महाविद्यालय की पत्रिका 'अभिव्यक्ति' के संयुक्तांक के प्रकाशन पर अपने कर्त्तव्य निर्वहन की सुखद अनुभूति हो रही है। पत्रिका किसी भी शिक्षण संस्था के बहुआयामों को सशक्त रुप से प्रदर्शित करने का माध्यम है। वहाँ के विद्यार्थियों की बौद्धिक सृजनशीलता के विकास, अद्यतन की उपलब्धियाँ, कृत कार्यों एवं चुनौतियों की दिशा एवं दशा को भी प्रतिबिम्बित करती है। 'अभिव्यक्ति' के इस अंक में प्रकाशित रचनायें विद्यार्थियों की मौलिक प्रतिभा, उनके दृष्टिकोणों एवं उनके विचारों को अभिव्यक्ति प्रदान कर रही है। मैं महाविद्यालय के उन समस्त विद्यार्थियों को बधाई भी देना चाहती हूँ जो यहाँ से शिक्षा ग्रहण कर महत्वपूर्ण पदों पर चयनित होकर राष्ट्रहित में अपना योगदान दे रहे हैं।

आज का युवा वर्तमान युग की बदलती परिस्थितियों से दिग्भ्रमित है। उच्च शिक्षण संस्थाओं में अध्ययनरत युवाओं से अपेक्षा की जाती है कि पठन-पाठन के साथ ही वर्तमान वैश्वीकरण, निजीकरण, बाजारीकरण व सुधारीकरण के साथ-साथ अपने परिवेश तथा समाज के घटनाक्रम, समस्याओं, सामाजिक बुराइयों पर गम्भीतापूर्वक, मानवीय संवेदनाओं के आलोक के सम्यक परिवेक्षण व विचार मंथन कर, सदैव स्पष्ट व सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाते हुये अर्जित ज्ञान से स्व-कर्त्तव्यों का निष्ठापूर्वक निर्वहन करें। भारतीय स्वर्णिम संस्कृति को आत्मसात करें। पाश्चात्य संस्कृति की कार्य संस्कृति को अपनाते हुये राष्ट्र को नित नई ऊँचाइयों पर ले जाने का प्रयास करें।

मै हृदय से धन्यवाद ज्ञापित करती हूँ उन सभी विभूतियों का जिन्होंने अपना अमूल्य समय निकालकर पत्रिका के लिये संदेश-रुपी आशीर्वचन प्रेषित किये हैं।

इस संस्था की उपलब्धियों के लम्बे स्वर्णिम इतिहास में संस्था को चरमोत्कर्ष पर पहुँचाने के लिये जितनी आहुति विद्वान गुरुजनों ने दी वहीं विद्यार्थी वर्ग ने भी समिधा बनकर स्वयं को साबित किया है। उसी का परिणाम है कि इस वर्ष सहायक प्राध्यापक, उच्च शिक्षा के विभिन्न महाविद्यालयों में गैस्ट फैकल्टी के रुप में 7 विद्यार्थी अध्यापन कर रहे हैं। वार्षिक परीक्षा में विश्वविद्यालय में प्रथम/द्वितीय स्थान/गोल्ड मेडल प्राप्त करना, एन0सी0सी0 से चयनित होकर गणतंत्र दिवस परेड में सहभाग कर महाविद्यालय को गौरवान्वित करना, UGC&NET, JRF, CSIR, SET, DST-INSPIRE Scholarship for Science Students जैसी उपलब्धियाँ महाविद्यालय के प्रत्येक सदस्य व विद्यार्थी द्वारा महाविद्यालय विकास रुपी होम में दी गयी साध्य व कर्त्तव्यनिष्ठ रुपी आहुतियों का परिणाम है। मेरा पूर्ण विश्वास है कि महाविद्यालय निश्चित ही अपने गौरवशाली व सुसंस्कारित परम्पराओं के साथ, उच्च शिक्षा की सिरमौर संस्था बनेगा।

मैं महाविद्यालय के सभी प्राध्यापकों, कर्मचारियों, शास्त्र प्रशासन, क्षेत्रीय जनप्रतिनिधियों, जागरुक अभिभावकों वर्तमान व पूर्ववर्ती सभी छात्रसंघ पदाधिकारियों के सहयोग के लिये सभी का धन्यवाद करती हूँ व भविष्य में भी सहयोग की आकांक्षी हूँ।

अन्त में इस पत्रिका की मुख्य सम्पादक डॉ0 प्रीति त्रिवेदी एवं सम्पादक मण्डल को उनके परिश्रम की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुये साधुवाद देती हूँ जिनके प्रयासों के परिणामस्वरुप पत्रिका का सफल प्रकाशन समय पर हो पाया है।

शुभकामनाओं सहित।

(डॉ0 श्रीमती हेमा प्रसाद)
प्राचार्या

संपादक की कलम से...

''विद्यालयोऽयमुदयाचल सन्निकाशो, बोधार्थिना वितरतात परितः प्रभातम।
छात्राश्च लोकहित साधन दत्त चित्ता, आचार संयम विचार धना भवन्तु।।''
(उदयाचल के समान स्थित यह विद्यालय जिज्ञासु के लिए चतुर्दिक प्रभा वितरित करें और विद्यार्थी लोक कल्याण की साधना में दत्त चित् होकर आचार संयम और विचार से सम्पन्न हो)

This Temple of learning establishes like the abode of rising sun May irradiate the dawn all around for the seekers of knowledge; And students yoking their minds to Universal well-being be blessed with Discipline, Meditation and Thought.

किसी प्रदेश का सर्वांगीण विकास शिक्षा की समुचित व्यवस्था से ही संभव है हमारे देश के वैज्ञानिकों मनीषियों एवं चिंतकों ने विश्व पटल पर अपने-अपने क्षेत्रो में उच्च कीर्तिमान स्थापित किए हैं। समाज में व्याप्त स्वार्थपरता, उपभोक्तावाद ने मानव में आज के अतिरिक्त और कुछ सोचने की सामर्थ्य समाप्त कर दी है, उपलब्धियों के जिस शिखर पर आज हम पहुँचे हैं, निःसंदेह वह पहले कल्पनातीत थी, परन्तु अतीत के अनुभव के बिना आज का वर्तमान आधारहीन ही नहीं, अपितु पंगु प्रतीत होता है। पुरातन युग और ऐतिहासिक बोध को मानसिक स्तर पर भोगकर ही वर्तमान की सार्थकता और आधुनिकता अर्जित की जा सकती है। भारतीय संस्कृति की जो धरोहर हमने अपने पूर्वजों से प्राप्त की है, उसमें सौहार्द, सहिष्णुता, समता तथा प्रत्येक विचारों का सम्मान हमारी विशिष्टता रही है। पश्चिम के एकोन्मुखी दर्शन के विपरीत हमारे ''सर्वे भवन्तु सुखिनः'', तथा ''वसुधैव-कुटुम्बकम्'', के सिद्धान्त कोरे पुस्तकीय आदर्श ही नहीं बल्कि हमारे दैनंदिन जीवन के अंग रहे हैं। अपनी इसी सांस्कृतिक चेतना के प्रत्येक देश काल की कसौटी पर विभिन्न परिस्थितियों के मध्य आज भी खरी सिद्ध होने की विशेषता के कारण इतने विदेशी आक्रमणों तथा सैकड़ों वर्षों की परतन्त्रता के बावजूद हम अपनी अस्मिता की अलग पहचान और अस्तित्व बनाए रखने में सक्षम रहे हैं। इस जिजीविषा का मूल मंत्र हमारी रक्त वाहिनिओं में घुला हुआ ''राष्ट्रवाद'' है।

हमारे राष्ट्रीय जीवन में कुछ विरोधी-तत्व हावी होते जा रहे हैं। आज युवा-शक्ति के अभ्युदय एवं उसे भविष्य के भारत के निर्माण हेतु महत्, दायित्व सौंपने के साथ ही नित नवीन समस्याएं भी उभर रही हैं। धार्मिक कट्टरता, क्षेत्रवाद, भाषाई-विवाद, जातीयता, वर्गवाद, आतंकवाद, पृथकतावादी प्रवृत्तियाँ आदि जिस प्रकार षड्यन्त्रपूर्वक उछली जा रही है, उसमें राष्ट्र की एकता, अखण्डता, धर्मनिरपेक्षता, तथा हर व्यक्ति को गरिमा के साथ जीने के अधिकार पर बड़ा सा प्रश्न चिन्ह लग गया है। वास्तव में अब वह समय आ गया है कि किसी महान दूरदर्शी ने कहा था- ''यदि भारत जीवित रहता है, तो कौन मरता है? परंतु यदि भारत मर जाता है, तो कौन जीवित रह सकता है? हमें यह अनुभव करना चाहिए कि राष्ट्रीय एकता को अनिवार्य रूप से हमेशा सभी क्षेत्रीय भाषाई तथा साम्प्रदायिक निष्ठाओं से ऊपर स्थान प्राप्त करना चाहिए। नवीनता की स्थापना हमेशा प्रतिवादों, विरोध एवं संघर्षों के मध्य होती है।

आज शिक्षा नीति में भी युगोपेक्षित परिवर्तन के प्रयास किए जा रहे हैं जो अत्यन्त आवश्यक है नवीनता के नाम पर आमूलचूल परिवर्तन हमारा लक्ष्य ना होकर रचनात्मकता उपलब्धियों रोजगारोन्मुखता व शिक्षा की सामाजिक सापेक्षता होनी चाहिए। मनुष्य की मनुष्य के रूप में स्वीकृति आधुनिकता की पहली शर्त है, आधुनिकता जो कि वस्तुतः फैशन बदलते हुए डिजाइनर परिधानों, खान-पान के नए-नए तरीकों अथव पांचसितारा संस्कृति की दासी नहीं है, वह तो एक दृष्टि है, जो वर्तमान की चुनौतियों को स्वीकार करते हुए सहअस्तित्व की भावना के साथ जिजीविषा को जन्म देती है।

सारांशत: यदि हम अपने सम्पूर्ण सामाजिक परिवेश में एक संतुलन, रचनात्मकता और प्रगतिशीलता लाना चाहते हैं और भारत का सर्वतोन्मुखी विकास करना चाहते हैं, तो हमें अपने देश के मानस को विस्तृत, बृहत्तर और उदार बनाने हेतु उपक्रम करने होंगे, जिस से आने वाली पीढ़ी आत्मविश्वास से ओत-प्रोत एक जागरूक और उत्तरदायी समाज की संरचना की हेतु बन सके।

मनुष्य के जीवन विकास में व ज्ञान वृद्धि में पत्र-पत्रिकाओं का विशेष योगदान रहा है। प्रतिवर्ष महाविद्यालय से निकलने वाली महाविद्यालय की पत्रिका ''अभिव्यक्ति'' के माध्यम से महाविद्यालय के अधिकांश वे छात्र-छात्राएँ, जिनमें प्रतिभा के वे अंकुर हमारे समक्ष आते हैं, जिनके बारे में हम अनभिज्ञ होते हैं। संभव है, मौलिकता में किंचित मिश्रण हो, फिर भी नि:संदेह विद्यार्थियों को ये पिपीलिका और कच्छपवत प्रयास सराहनीय है, प्रशंसनीय है। सीढ़ी का यह वह प्रथम सोपान है, जिस पर पाँव रखकर वे बहुत आगे बढ़ सकते हैं। मेरी शुभकामनाएँ उनके साथ हैं।

इस महाविद्यालय में सदृढ़ अनुशासन और कुशल शिक्षण कार्य तो सम्पन्न होता ही है, साथ ही एन.एस.एस., एन.सी.सी. रोवर्स-रेंजर्स, क्रीड़ा एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि में छात्र-छात्राओं की कुशल भागीदारी प्रशंसनीय है। विभागीय परिषदों के माध्यम से आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में प्रतिभाग कर छात्र-छात्राओं ने अपनी शैक्षिक एवं शिक्षणेत्तर प्रतिभाओं का भी परिचय दिया है, जो कि सराहनीय है। महाविद्यालय में समय-समय पर विभिन्न विभागों द्वारा राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय-सेमिनार व कार्यशाला का आयोजन किया जाता रहा है इसमें प्राध्यापकों एवं छात्र-छात्राओं की कुशल भागीदारी अत्यन्त प्रशंसनीय है। नि:सन्देह इन सब कार्यक्रमों के नेतृत्व एवं कुशल संचालन की बागडोर महाविद्यालय की कर्मठ प्राचार्या डॉ. हेमा प्रसाद जी के हाथों में है। मैं प्राचार्या महोदया के संरक्षण एवं सहयोग के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ। अपने सह-सम्पादक डॉक्टर जी.सी. पंत, जिनके परिश्रम एवं सहयोग के बिना यह गुरुत्तर कार्य असंभव था, मैं उनका आभार प्रकट करती हूँ। प्रो. संजय कुमार, डॉ. धर्मेन्द्र तिवारी, डॉ. शरद भट्ट, डॉ. मूल चन्द्र शुक्ला, डॉ. अक्षय गुरुरानी, डॉ. दुर्गा तिवारी, कुमारी भावना अग्रवाल एवं प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से सभी सहयोगियों का धन्यवाद ज्ञापन करती हूँ, साथ ही छात्र संपादक हेमचन्द्र जोशी एवं छात्रा संपादक कुमारी स्वराज तथा पत्रिका हेतु लेख आदि सामग्री उपलब्ध कराने वाले सभी प्राध्यापक एवं छात्र-छात्राएँ पूर्व एवं वर्तमान समस्त छात्र संघ पदाधिकारी धन्यवाद के पात्र हैं।

वर्तनी शुद्धिकरण एवं त्रुटि शोधन के भरसक प्रयासोपरान्त यदि कोई अशुद्धि रह गई हो तो मैं स्वयं क्षमा प्रार्थी हूँ। अंत में ''अभिव्यक्ति'' का यह संयुक्तांक (2017-2019) आप सभी सुधीजनों, विद्वानों एवं विद्यार्थियों को समर्पित कर कर्त्तव्य-पूर्ति के हर्ष की अनुभूति हो रही है, किंतु कर्त्तव्यों की समाप्ति कहाँ?

''जिस युग में हम हुए, वही तो अपने लिए बड़ा है।''
अहा! हमारे आगे कितना, कर्म क्षेत्र पड़ा है।।

कर्मण्येवाधिकारस्ते......

-डॉ. प्रीति त्रिवेदी

पी.एन.जी. राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
रामनगर (नैनीताल)

प्राचार्य – कार्यकाल

	प्राचार्य	–	कार्यालय
1.	डॉ. ओ.पी. शर्मा	–	27-07-76 से 28-04-79 तक
2.	डॉ. लाभ सिंह	–	16-05-79 से 21-07-84 तक
3.	प्रो. यज्ञ दत्त पाण्डे	–	28-07-84 से 30-06-86 तक
4.	डॉ. आर.पी. उप्रेती (प्रभारी)	–	01-08-86 से 06-02-87 तक
5.	प्रो. आई.एस. नायक	–	07-02-87 से 16-08-91 तक
6.	प्रो. जी.बी. उप्रेती	–	17-08-91 से 27-11-92 तक
7.	डॉ. मुहम्मद सईद	–	06-01-93 से 30-06-98 तक
8.	प्रो. एस.सी. साह (प्रभारी)	–	01-07-98 से 04-11-98 तक
9.	प्रो. जी.एन. खोलिया	–	05-11-98 से 30-08-2000 तक
10.	प्रो. डी.एस. बगड़वाल	–	08-07-2000 से 31-12-2005 तक
11.	डॉ. बी.सी. मलकानी (प्रभारी)	–	01-01-2006 से 31-02-2006 तक
12.	प्रो. सी.एस. पाण्डे	–	11-02-2006 से 31-01-2008 तक
13.	प्रो. जी.एस. गढ़िया (प्रभारी)	–	01-02-2008 से 31-07-2008 तक
14.	डॉ. बी.सी. मलकानी (प्रभारी)	–	01-08-2008 से 16-08-2009 तक
15.	डॉ. बी.सी. उप्रेती	–	17-08-2009 से 31-11-2011 तक
16.	डॉ. पूर्णिमा भटनागर (प्रभारी)	–	01-12-2011 से 22-12-2011 तक
17.	डॉ. पी.एस. मखलोगा	–	23-12-2011 से 12-10-2012 तक
18.	डॉ. (श्रीमती) हेमा प्रसाद	–	13-10-2012 से अद्यतन

महाविद्यालय – एक प्रगति यात्रा

स्मृति शेष स्वनाम धन्य श्री नारायण तिवारी जी के सहयोग से 14 अगस्त 1975 को पी.एन.जी.राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय की स्थापना ''छिब्बाल छात्रावास'' में श्री नंदकिशोर गलबलिए द्वारा की गई। गलबलिया परिवार ने ₹200000 की धनराशि महाविद्यालय स्थापना हेतु प्रदान की। तत्पश्चात् प्यारेलाल नंदकिशोर गलबलिया महाविद्यालय के नाम से इस कॉलेज की स्थापना हुई। स्थापना समारोह में माननीय तिवारी जी स्वयं उपस्थित थे। महाविद्यालय को राजकीय बनाने के लिए आंदोलनरत विद्यार्थियों की मांग पर यह महाविद्यालय को राज्य सरकार द्वारा 14 अगस्त 1976 को राजकीय कर दिया गया और अब इस महाविद्यालय को पी.एन.जी. राजकीय महाविद्यालय रामनगर के रूप में जाना जाने लगा। पुनश्च इसकी घोषणा माननीय नारायण दत्त तिवारी जी, जो तत्कालीन उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री थे के द्वारा की गई थी। इसके बाद महाविद्यालय निरंतर विकास के पथ पर अग्रसर होता गया।

- 24 अप्रैल 1977 को तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री तिवारी जी ने रामनगर पधार कर भोटिया पड़ाव में भवन का शिलान्यास किया।
- 14 एकड़ भूमि पर अवस्थित रामनगर कॉलेज का प्रथम शैक्षणिक सत्र 1976–77 में सा.हिन्दी, सा.अंग्रेजी, संस्कृत, अर्थशास्त्र, इतिहास व राजनीति विज्ञान के अध्ययन–अध्यापन के साथ प्रारम्भ हुआ।
- सत्र 1977–78 में समाजशास्त्र में स्नातक स्तर पर शिक्षण कार्य प्रारम्भ हुआ।
- सत्र 1978–79 में छात्र संघ की स्थापना हुई।
- सत्र 1979–80 में स्नातक स्तर पर भूगोल व मनोविज्ञान खुलने के साथ ही वाणिज्य संकाय भी प्रारम्भ हुआ।
- सत्र 1989–90 में स्नातक स्तर पर विज्ञान संकाय भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, जन्तु विज्ञान, वनस्पति विज्ञान व गणित विषय खुलने के साथ प्रारम्भ हुआ।
- सत्र 2003–04 तक स्नातकोत्तर स्तर पर कला संकाय के अन्तर्गत हिन्दी, अंग्रेजी, राजनीति विज्ञान, अर्थशास्त्र, भूगोल, मनोविज्ञान, समाजशास्त्र विभाग प्रारम्भ हो चुके थे।
- सत्र 2006–07 में जन्तुविज्ञान, रसायन विज्ञान, वनस्पति विज्ञान तथा गणित विषयों में स्नातकोत्तर स्तर पर कक्षाएँ संचालित करने हेतु स्थायी सम्बद्धता प्राप्त हुई।
- सत्र 2008–09 में निम्नलिखित व्यावसायिक पाठ्यक्रम प्रारम्भ हुए।
  1. ईको टूरिज्म
  2. पी.जी. डिप्लोमा – योग एवं वैकल्पिक चिकित्सा
  3. कार्यालय प्रबन्धन एवं सचिवीय पद्धति
  4. पर्यटन एवं यात्रा प्रबन्धन
  5. टूरिज्म स्टडीज्
  6. कम्प्यूटराईज्ड एकाउन्टिंग
- सत्र 2008–09 में स्ववित्त पोषित बी.एड. कार्यक्रम भी प्रारम्भ हुआ।
- सत्र 2008–09 में ही IGNOU का Convergence Centre भी अस्तित्व में आया था। वर्तमान में IGNOU द्वारा सभी कन्वर्जेन्स केन्द्रों को बन्द कर दिया गया है।
- सत्र 2009–10 में उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय का केन्द्र प्रारम्भ हुआ।
- सत्र 2014–15 में NAAC संस्था द्वारा महाविद्यालय का पुनर्मूल्याकंन व पुनर्प्रत्यायन किया गया।

महाविद्यालय छात्र–संघ के अध्यक्षों एवं सचिवों की सूची

वर्ष	अध्यक्ष	सचिव
1978–79	धन सिंह मेहरा	संजय कुमार
1979–80	स्व. जितेन्द्र अग्रवाल	बलवन्त सिंह
1980–81	सुरेन्द्र सिंह नेगी	स्व. दिगपाल लटवाल
1981–82	दिनेश लोहनी	गोपाल दत्त शर्मा
1982–83	स्व. दिगपाल सिंह लटवाल	रमेश चन्द्र जोशी
1983–84	गोपाल लोहनी	दिनेश चन्द्र
1984–85	देवेन्द्र चन्द्र भट्ट	हामिद अली
1985–86	ललित तिवारी	चंदन सिंह नेगी
1986–87	राजीव पपनै	विजय सिंह डंगवाल
1987–88	स्व. अम्बादत्त मिश्रा	लक्ष्मण दत्त तिवारी
1988–89	प्रभात ध्यानी	हरमोहन लटवाल
1989–90	शेर सिंह लटवाल	आनन्द जोशी
1990–91	संजय पाण्डे	नवीन नैनवाल
1991–92	नन्दन सिंह नेगी	प्रदीप भण्डारी
1992–93	गिरीश मठपाल	महेन्द्र सिंह लटवाल
1993–94	नवीन नैनवाल	दिनेश सत्यवली
1994–95	स्व. कुशल सिंह अधिकारी	गणेश रावत
1995–96	असद अली	हीरा सिंह चौहान
1996–97	नवीन नैथानी	विनोद बिष्ट
1997–98	आलोक गुसांई	संजय नेगी
1998–99	स्व. दलीप सिंह रावत	कमल पाण्डे
1999–2000	गणेश रावत	रमेश शर्मा
2000–2001	यजुवेन्द्र सिंह रावत	नवीन सुनेजा
2001–2002	राजेन्द्र सिंह	राजेन्द्र रावत
2002–2003	देवेन्द्र सिंह नेगी	दीप चन्द्र गुणवन्त
2003–2004	जगमोहन सिंह बिष्ट	लोकेश नेगी
2004–2005	विजय सिंह सुप्याल	विकास सिंह बिष्ट
2005–2006	संजय डोर्बी	हरप्रीत सिंह
2006–2007	दीपचन्द्र गुणवंत	चन्दन बंगारी
2007–2008	हरप्रीत सिंह	राहुल रावत
2008–2009	भूपेन्द्र सिंह खाती	विनय पड़लिया
2009–2010	संगीता नेगी	कमल तिवारी
2010–2011	विनोद वर्मा	ज्योति पाण्डे
2011–2012	जितेश रावत	अमित चन्द्रा
2012–2013	कमल रौतेला	दीपक चन्द्रा
2013–2014	चन्दन सिंह बिष्ट	पूजा रावत
2014–2015	हेमन्त रावत	मनोज भण्डारी
2015–2016	सुमित लोहनी	स्व. दिगपाल सिंह डंगवाल
2016–2017	गौरव फर्त्याल	अमित बिष्ट
2017–2018	रविन्द्र सिंह रौतेला	कमल फुलारा
2018–2019	जितेन्द्र सिंह रावत	अमित कुमार

GALAXY OF OUR ESTEEMED ALUMNI

Alumnus	Status
Dr. (Smt.) Hema Prasad	Principal, P.N.G. Govt., P.G. College, Ramnagar
Dr. (Smt.) Guddi Prakash	Principal, Govt. Degree College, Tanakpur
Dr. Girish Chand Pant	Asso. Prof. Hindi, P.N.G. Govt., P.G. College, Ramnagar
Dr. Shreesh Maurya	Asso. Prof. Kumaon University, Nainital
Dr. Kiran Kumar Pant	Assi. Prof. Commerce, P.N.G. Govt., P.G. College, Ramnagar
Dr. Pankaj Kandwal	Assi. Prof. Chemistry, NIT Uttarakhand, Srinagar, (Garhwal)
Dr. Maya Gola	Assi. Prof. Hindi, Kumaon University, Nainital
Dr. Deepak Khati	Assi. Prof. Commerce, P.N.G. Govt., P.G. College, Ramnagar
Dr. Renu Rani	Assi. Prof. Economics, Govt. P.G. College, Rudrapur
Dr. Chandra Prakash	Asso. Prof. Commerce, Govt. P.G. College Rudrapur
Dr. Mohan Chandra Bahuguna	Atashey, Hindi & Bhartiya Dutawas, Kathmandu, Nepal
Sri Sonu Singh	Excise Inspector, Uttarakhand
Major Shivam Agarwal	Major, 6 Garhwal Rifles
Dr. Rohit Kumar Singh	Health Educator, Govt. Medial College, Haldwani
Capt. Ajay Upadhyay	Capt., Engineering Core
Km. Deepika Bora	Asst. Statistical Officer, Forest Department, Ramnagar
Dr. Deepak Bangari	Asst. Prof. Lovely Professional University, Punjab
Dr. Deepak Kumar	Asst. Prof. Mathematics Kumaon Unversity Nainital
Dr. Tajpal Singh	Asst. Prof. Hindi, SSJ Campus, Almora, KU Nainital
Dr. Nirmala Pandey Joshi	Asst. Prof. Hindi, Govt. College Someshwar,Almora
Dr. Chandra Khati	Asst. Prof. Hindi, Govt. P.G. College Bageshwar
Sri Pranay Srivastava	Executive Director, Great Mission Public School, Ramnagar
Dr. Manohar Chandra Joshi	Working in NGO, Champawat
Sri Ganesh Rawat	Journalist & Socio Political Activist
Sri Chandan Bangari	Journalist
Sri Navendu Mathpal	Lecturer, G .I.C. Dhela, Ramnagar

Smt. Renu Chandra	Lecturer, G.I.C. Bailparao, Ramnagar
Sri Navin Chandra Joshi	Lecturer, G.I.C., Choi, Ramnagar
Dr. Devki Das	Lecturer, G.I.C. Bailparao, Ramnagar
Sri Navin Chandra Arya	Lecturer, G.I.C. Champawat
Dr. Kalpana Pant	Asso. Prof. Hindi, Govt. P.G. College, Rishikesh
Sri Anil Kumar Singh	Head of Operation, UAE Exchange, U.K. Ltd. London
Sri Manish Suyal	Shodh Adhikari, Uttarakhand Intermediate Board Office, RMR
Sri Chandra Bhal Kinker	Lecturer, G.I.C. Betalghat, Almora
Sri Sanjay Tiwari	Lecturer, G.I.C. Chhoi, Ramnagar
Sri Girish Chandra Pandey	Lecturer, G.I.C. Pavalgarh, Nainital
Sri Shivom Agarwal	Lecturer, G.P.S. Simalkhet, Kotabag
Sri Ankur Bhatnagar	Fellow, Aziz Premji Foundation
Sri Namit Bora	Artificer Apprentice, Submarine specialization Indian Navy
Sri Dinesh Tariyal	Indian Navy
Sri Rajesh Kumar	Lecturer, Physical Education Govt. P.G. College, Gopeshwar
Sri Aarif Hussain	Patwari, Ramnagar Area
Sri Tahir Hussain	Lecturer, G.P.S. Kotabagh
Sri Talim Hussain	RAC, SDM Office, Ramnagar
Sri Nadeem Ansari	Assi. Accountant Sub Treasury, Ramnagar
Km. Bhawna Agarwal	Lecturer G.G.I.C. Ranikhet (Almora)
Km. Himani Bisht	Assi. Prof. Chemistry, P.N.G. Govt., P.G. College, Ramnagar
Km. Lata Jalal	Assi. Prof. Chemistry
Bhuwan Chandra	Assi. Prof. Chemistry
Suresh Chandra Arya	Assi. Prof. Chemistry
Dr. Gaurav Kumar	Guest Faculty, Education, Education M.B.G.P.G. College, Haldwani

List of Alumini (Contd.)

Alumnus	Status
Km. Anuradha	Guest Lecturer Economics, Govt. Degree College, Nainidanda
Km. Bhawana Agrawal	Guest Lecturer Hindi, P.N.G. Govt., P.G. College, Ramnagar
Dr. Himani Bisht	Assi. Prof. Chemistry, Govt. Degree College, Satpuli
Dr. Tarun Arya	Guest Lecturer political Science,
	Guest Lecturer Higher Education Department, Uttarakhand
Dr. Pawan Kumar	Guest lecturer Sociology, Govt. Degree College, Nainidanda
Dr. Krishna Chandra Mishra	Guest Lecturer Hindi, Govt. P.G. College, Manila
Rohit Kumar	Guest Lecturer Political Science, Higher Education Department
Mohit Joshi	Guest Lecturer Political Science, Higher Education Department
Rupali Prasad	Teacher Political Science, Teacher Navoday Vidhyalaya
Manoj Yadav	Lecturer Political Science, Lecturer Secondary School, Uttarakhand
Vineet Yadav	Political Science, S.I. I.T.B.P.
Shankar Ram	Assi. Prof. Chemistry, From the Public Service Commission 2018-19
Km. Pratibha Shah	Assi. Prof. Commerce, From the Public Service Commission 2018-19
Devjani Khatri	Assi. Prof. Commerce, From the Public Service Commission 2018-19
Km. Anita Khetwal	Assi. Prof. Commerce, From the Public Service Commission 2018-19
Chandsut Hariom	Assi. Prof. Commerce, From the Public Service Commission 2018-19
Meena Pargai	Assi. Prof. Maths, From the Public Service Commission 2018-19
Seema Negi	Assi. Prof. Maths, From the Public Service Commission 2018-19
Mahesh Chandra Arya	Assi. Prof. Maths, From the Public Service Commission 2018-19
Devendra Kumar	Assi. Prof. History, From the Public Service Commission 2018-19
Mahendra Shukla	History, From the Public Service Commission, Bihar 2018-19
Km. Himani Bisht	Assi. Prof. Chemistry, From the Public Service Commission 2018-19
Shri Narendra Rana	Commerce Professor, Govt. Inter College, Bhaunkhal
Bhawana Rana	Senior Assistant, Uttarakhand Board Office, Ramnagar
Shri Neeraj Bisht	Sub-Inspector, Delhi Police
Utkarsh Vidhyarthi	Lecturer Physics, From the Public Service Commission (Secondary) 2016

महाविद्यालय का ऊर्जावान क्रियाशील छात्रसंघ

2017–18 2018–19

ज्ञान शील एकता

परिचय

रोहित मेहरा

विश्वविद्यालय प्रतिनिधी, महाविद्यालय रामनगर
अध्यक्ष - छात्र महासंघ कुमाऊँ वि० वि० नैनीताल (2018-19)

शिक्षा

- B.Sc. in Hospitality form HM Lacknow (2011-14)
- M.A. Political Science from P. N. G. Govt. P. G. College Ramnagar (Nainital) (2016-18)
- Diploma in Yoga from P. N. G. Govt. P. G. College Ramnagar (Nainital) (2018-19)

उपलब्धियां

- छात्र छात्राओं के ऑफलाइन प्रवेश प्रारंभ
- एम० ए० योग पैनल
- पी० जी० ब्लॉक सी० सी० मार्ग
- डिजिटल प्रोजेक्टर वॉइट बोर्ड
- सी० सी० टी० वी० कैमरे
- तिरंगा गार्डन (अथक प्रयास अध्यक्ष 2017-18 रविन्द्र सिंह रौतेला)
- 2 करोड़ राशि की माँग उमंग कार्यक्रम में (चार दीवारी बाथरूम व जीर्णोधार के लिए) स्वीकृति प्रदान

कार्यक्रम महाविद्यालय रामनगर

- रक्त दान शिविर (अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद द्वारा)
- मिशन साहसी (अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद द्वारा)
- KUSU उमंग कार्यक्रम (छात्र महासंघ कुमाऊँ वि० वि० द्वारा)
- होली मिलन कार्यक्रम (छात्र महासंघ कुमाऊँ वि० वि० द्वारा)
- विदाई समारोह (छात्र महासंघ कुमाऊँ वि० वि० द्वारा)

छात्र संघ, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय रामनगर

सत्र 2017-18

अध्यक्ष	-	रविन्द्र सिंह रौतेला
उपाध्यक्ष (छात्र)	-	करन सिंह
उपाध्यक्ष (छात्रा)	-	हेमा रजवार
सचिव	-	कमल फुलारा
संयुक्त सचिव	-	देवेन्द्र जोशी
कोषाध्यक्ष	-	मुकेश असनौड़ा
विश्वविद्यालय प्रतिनिधि	-	भरत सिंह

प्रभारी- छात्रसंघ, रा० स्नात०महा०रामनगर

छात्र संघ (सत्र-2017-18)

राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय रामनगर

रविन्द्र सिंह रौतेला
अध्यक्ष
2017-18

करन सिंह बिष्ट
छात्र उपाध्यक्ष
2017-18

देवेन्द्र जोशी
उप सचिव
2017-18

मुकेश असनोड़ा
कोषाध्यक्ष
2017-18

भरत सिंह
विश्वविद्यालय प्रतिनिधि
2017-18

कमल फुलारा
सचिव
2017-18

हेमा रजवार
छात्रा उपाध्यक्ष
2017-18

छात्र संघ, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय रामनगर

सत्र–2018–19

अध्यक्ष	–	जितेन्द्र सिंह रावत
उपाध्यक्ष (छात्र)	–	रवि जोशी
उपाध्यक्ष (छात्रा)	–	कोमल
सचिव	–	अमित कुमार
संयुक्त सचिव	–	मनीष मेहरा
कोषाध्यक्ष	–	गौरव रौतेला
विश्वविद्यालय प्रतिनिधि	–	रोहित महरा

प्रभारी- छात्रसंघ, रा0 स्नात0महा0रामनगर

जितेन्द्र सिंह रावत
अध्यक्ष
2018–19

कोमल
छात्रा उपाध्यक्ष
2018–19

अमित कुमार
सचिव
2018–19

गौरव रौतेला
कोषाध्यक्ष
2018–19

रवि जोशी
छात्र उपाध्यक्ष
2018–19

मनीष मेहरा
संयुक्त सचिव
2018–19

रोहित मेहरा
विश्वविद्यालय प्रतिनिधि
2018–19
अध्यक्ष-छात्र-महासंघ, कु.वि.वि.नैनीताल

एक दिवसीय रक्तदान शिविर एवं छात्र संघ द्वारा आयोजित होली समारोह

कोमल
छात्र संघ (छात्रा उपाध्यक्ष)
2018-19

बेरोजगारी

पढ़-लिखकर जब हुए जवान
नौकरी करने लगे तलाश।
नो वेकेंसी का जब दिखा बोर्ड
विफल होने लगे सब प्रयास।।

क्या करे आज का युवा,
कन्धे पर उसके जिम्मेदारी।
माँ-बाप ने पढ़ाया-लिखाया,
हाथ लगे उसके बेराजगारी।।

लाखों की संख्या में है आज,
लाइन में खड़े बेरोजगार।
नौकरी में भी सिफारिश का
आजकल गर्म है बाजार।।

उस पर से बढ़ती जा रही,
दिन प्रतिदिन ये महंगाई।
हुआ मुश्किल भरना पेट,
कुछ भी देता नही सुझायी।।

बेरोजगारी भत्ता भी,
लगी देने अब सरकार।
भत्ता नहीं चाहिए हमें,
दे दो बस रोजगार।।

ईश्वर

सफर कितना भी मुश्किल हो, प्रभु आसान कर देंगे।
जो तुझसे हो ना पाऐगा, उसे भगवान कर देंगे।।
सफर कितना भी मुश्किल हो, प्रभु आसान कर देंगे।
तू इस जीवन के रास्ते पर, प्रभु का नाम लेकर चल,
बुराई से जरा बचकर, भला कोई काम लेकर चल।
तू चल कल्याण को सबके, तेरा कल्याण कर देंगे।
सफर कितना भी मुश्किल हो, प्रभु आसान कर देंगे।।
प्रभु के नाम से हमने, सवरते काम देखे हैं,
जहाँ मुश्किल ही मुश्किल थी, वहाँ आराम देखें है।
तेरा हर मुश्किल का हल वो, अरे नादान कर देंगे,
सफर कितना भी मुश्किल हो, प्रभु आसान कर देंगे।
वो अपनी गोद में तुझको, भरोसा कर उठा लेगा,
तू अपना कर्म करता चल, फिर बाकी वो संभाल लेगा।
तुझे अपनी दया से वो, तू सुन हैरान कर देंगे,
सफर कितना भी मुश्किल हो, प्रभु आसान कर देंगे।
जो तुझसे हो न पाएगा, उसे भगवान कर देंगे।।

– ***मंजू (M.A.IInd Sem.)***

राष्ट्रहित में एकता की जरुरत

जिस देश के लोगों में अपने राष्ट्र के प्रति समर्पण की भावना न हो, वह देश कभी आगे नही बढ़ सकता। किसी भी देश के विकास सुरक्षा में वहाँ के नागरिकों की भूमिका अहम होती है। किन्तु हाल ही मे इस देश के अन्दर जिस प्रकार से सेना के शौर्य और पराक्रम पर देश की प्रमुख विपक्षी पार्टियों द्वारा संदेह किया जाना चिन्ताजनक है।

पुलवामा काँड के बाद जिस प्रकार से देश की केन्द्र शासित सरकार ने पाकिस्तान के अन्दर घुसकर उस पर स्ट्राइक की वो भारत के इतिहास में पहली बार हुआ होगा। इस देश के जवानों और उनकी शौर्यता पर पर सन्देह नहीं किया जा सकता, हमारे देश की सेना के अन्दर भी वही पराक्रम है, जो इजराइल और अमेरिका जैसे देशों पर है। जम्मू कश्मीर के अन्दर एक लम्बे समय से देशद्रोही विचारधारा का और उनके समर्थन में दिल्ली मे बैठी हुकूमत का भी उन्हे सहारा मिलता रहा है, हम उन पत्थरबाजो के समर्थन में अपनी आवाज बुलंद करते हैं, जो हमारी सेना पर पत्थरबाजी करते है। आखिर कब तक हम देशद्रोही विचारधारा के लोगो को अपना समर्थन देते रहेगे। यह हमें तय करना है, हमे यह भी सोचना होगा कि अगर हम किसी उस पार्टी विशेष को चुनाव में अपना समर्थन देते है, जो भारत के होकर भारत विरोधियों को समर्थन करते हैं। अस्तु हमें ऐसे लोगो को अपना समर्थन देना बन्द करना होगा।

भारत देश वर्तमान समय में एक महाशक्ति के रुप में उभरा हुआ देश है। पिछले 5 सालो में भारत ने अपने आपको विश्व समुदाय मे समाहित कर दिखाया भी है। क्योंकि इस समय भारत के अन्दर एक मजबूत और सशक्त नेतृत्व देश की सत्ता को संभाले हुए है। पर इस देश की राजनीति की विपक्षी परम्परा यह बन चुकी है। कि आप सत्ता पक्ष के हर उस कार्य का विरोध करो, जो राष्ट्रहित से जुड़ा हुआ हो, कही न कही इस प्रकार की राजनीति इस देश के लिए कोई अच्छा संकेत नही है। हम कब तक धर्म निरपेक्षता, जाति, पथ सम्प्रदाय के नाम पर लोगो के बुरे कामो पर राजनीति करेंगे। इस देश के खिलाफत करने वालो हर वो व्यक्ति देशद्रोही जो इस देश के संविधान के खिलाफ जाता है। हम सभी को जाति, पंथ सम्प्रदाय से ऊपर उठकर राष्ट्रहित के लिए मतदान कार्य करना होगा।

हम सभी पहले भारतवासी हैं उसके बाद कुछ और हमारी राष्ट्र के प्रति ये जवान देही तो होनी ही चाहिए की राष्ट्र सुरक्षित हाथो में रहे। आओ हम सब मिलकर एक नये भारत का संकल्पना साकार करे यही संकल्प लें।

अमित कुमार

(सचिव छात्रसंघ, सत्र-2018-19)

समय का महत्त्व

मनुष्य के जीवन में समय की महत्तवपूर्ण भूमिका है। वह व्यक्ति जो समय के महत्त्व को समझता है वही इसका सही उपयोग

कर प्रगति के पथ पर अग्रसर रहता है। परंतु दूसरी तरफ वे लोग जो समय की महत्ता की अनदेखी करते हैं अथवा समय का दुरुपयोग करते हैं, वे जीवन पर्यन्त असफलता ही पाले है। समय हम सभी के लिए अमूल्य है। समय धन से भी ज्यादा कीमती है, क्योंकि यदि धन को खर्च कर दिया जाए तो यह वापस प्राप्त किया जा सकता है किन्तु यदि हम एक बार समय को गंवा देते हैं, तो इसे वापस प्राप्त नहीं कर सकते हैं इसलिए हमें कभी भी समय को बर्बाद नही करना चाहिए। हमे सकारात्मक दंग से सही तरीके से समय का उपयोग करना चाहिए। जो व्यक्ति समय का सदुपयोग नही करता उसका जीवन नष्ट हो जाता है। मानव की उन्नति में समय का सहयोग महत्त्वपूर्ण होता है। अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए मनुष्य को समय के महत्त्व को जानकर उसका सदुपयोग करना चाहिए। समय अपनी गति से बढ़ता जाता है। वह किसी के लिए रूकता नहीं है। उसे रोकने की शक्ति भी किसी में नही है। वास्तव में समयानुसार आवश्यक तथा उचित कार्यो को संपन्न करना ही समय का सदुपयोग है। समय किसी का भी इंतजार नहीं करता है।

विद्यार्थी जीवन में ही मनुष्य अपने भावी जीवन की तैयारी करता है। मानसिक तथा शारीरिक रुप से अपने को सक्षम बनाता है। जो व्यक्ति इस काल में समय का सदुपयोग न करके अन्य कार्यो में व्यस्त होता है वह आगे अपने गृहस्थ जीवन में असफल हो जाता है। उसका भावी जीवन कठिनाइयों का शिकार हो जाता है। वह शारीरिक दृष्टि से कमजोर पड़ जाता है। जो व्यक्ति इस काल में समय का सदुपयोग करता है, उसका भावी जीवन संकटहीन बनता है। वह उन्नति के मार्ग पर निरंतर बढ़ता जाता है। सफलता उसके चरण चूमने लगती है। कितने ही महापुरुष महामानव होते चले गए परंतु समय फिर भी चलता रहा वह कभी नहीं रुका 1 जो लोग समय के साथ चलते हैं वे जीवन में अपने पद चिन्ह्व छोड़ जाते है और सम्पूर्ण विश्व उनका अनुकरण करता है। परंतु वे सभी लोग जो समय के महत्त्व को नहीं समझ सके अथवा समय के साथ न चल सके वे लुप्त होते चले गए। समय चलायमान है। जीवन में उन्नति की कुंजी समय का सदुपयोग है। वे ही लोग जीवन में सफल बनते है जो समय का ठीक उपयोग करते है। इनके जीवन में समन्वय होता है। उनका परिवारिक जीवन सुख-शान्ति से विकसित होता है। उन्हे जीवन में शान्ति मिलती है और समाज में उनका आदर होता है। ये कहना अतिशयोक्ति न होगी कि वक्त और सागर की लहरें किसी की प्रतीक्षा नहीं करती।

''जो लोग समय नष्ट करने की बात करते हैं जबकि धीरे-धीरे समय उन्हें नष्ट करता रहता है।''

गौरव रौतेला

(कोषाध्यक्ष छात्र संघ, सत्र-2018-19)

छात्र, छात्र संघ और राजनीति बनाम प्रशासन

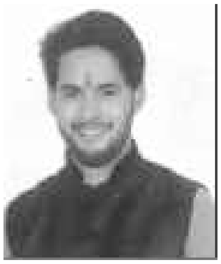

1- छात्र आंदोलन के कुछ पड़ाव-

स्वतंत्रता पूर्व और स्वांत्रत्योन्तर भारत में एक साथ जितने भी परिवर्तनकारी समाजिक आंदोलन हुए उनमें छात्रों की भूमिका बहुत अहम रही है कुछ ऐसे आंदोलन भी हुए जो पूर्णत: छात्रों के हितों के लिए खड़े किये गए और उसमें समाज के व्यापक हिस्से की भागीदारी रही थी। इन आंदोलनों ने समाज को झकझोरकर रख दिया और बहुत गहरे में दबे असंतोष को खुलकर आवाज दी, इसमें J.P. आदोलन को प्रमुख माना जा सकता है। हमारे महाविद्यालय रामनगर का प्रमुख आंदोलन भी एक संघर्षरत रहा जिसमें M.A. इतिहास, M.Sc. भौतिक विज्ञान विषयों का अभाव होने के कारण हमें भूख हड़ताल कर तीन दिनों तक संघर्ष किया गया। जिसमें स्वंय मैं व छात्र संघ अध्यक्ष 2013-14 के द्वारा आंदोलन की लड़ाई की गई उसके बाद महाविद्यालय में इतिहास व भौतिक विज्ञान विषय स्वीकृत हुए आज भी पूरे कुमाऊँ में हमारा आंदोलन की चर्चा की जाती है।

- **विद्यार्थी और राजनीति** -क्या देश के भविष्य निर्माण के लिए छात्रों को राजनीति में रहना चाहिए। समय-समय पर जब भी विश्वविद्यालय नैनीताल पूरे कुमांऊँ में छात्र-संघ का चुनाव आता है तो तभी विद्वान व ज्ञानी लोग छात्रों की राजनीति में प्रासंगिकता पर प्रश्न चिन्ह् लगा देते हैं, बार-बार ये सवाल दोहराया जाता है कि क्या छात्रों को राजनीति में भाग लेना चाहिए। भगत सिंह जी के अनुसार भाग लेना चाहिए जब उन्हें 1928 में इस बात का ज्ञान था कि छात्रों को भाग लेना चाहिए तो आज जबकि भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक राष्ट्र है, तो प्रबुद्ध और ज्ञानी वर्ग क्यों छात्रों को राजनीति से दूर रखना चाहते हैं जबकि भविष्य के निर्माता वही होंगे।
- **राजनीति और भविष्य**-छात्रों के लिए आवश्यक है कि राजनीति की शिक्षा भी हो और व्यावहारिक रुप से समझ भी सके। राष्ट्रीय नेतृत्व का दायित्व है कि वे छात्रों में जिन्हें कल देश की बागडोर हर स्तर पर अपने हाथों लेनी है- नेतृत्व क्षमता पैदा करे उन्हें साप्रदायिक व पृथकवादी ताकतों के विरुद्ध एकजुट करें। लोकतांत्रिक कार्यप्रणाली से अवगत कराऐ और साथ ही राष्ट्रीय समस्याओं के समाधान में उनकी भागीदारी सुनिश्चित करें।
- **छात्र संघ का महत्व**-कुमांऊँ विश्वविद्यालय के आदेशानुसार प्रत्येक महाविद्यालयों में छात्र संघ चुनाव कराये जाते है। 2 सितम्बर सन् 2005 में लिंगदोह कमेटी बनाई गई, उसी के अनुसार छात्र संघ चुनाव किया जाता है। छात्र संघ का महत्व महाविद्यालय की समस्याओं को एकत्रित करके विश्वविद्यालय ले जाना व उसका समाधान करना साथ ही महाविद्यालय की अनेकों समस्याओं से रुबरु होकर समाधान करना महाविद्यालय के विकास के लिए शासन से आवेदन करना व शैक्षिक वातावरण बनाना है।

• **छात्र राजनीति में युवा सक्रियता के लिए प्रयास–** छात्र राजनीति में युवाओं की सक्रियता के लिए प्रयास छात्रों को निरंतर करने पड़ते हैं। यू कहूँ छात्र राजनीति महाविद्यालय के विकास में सहायक होगा। सक्रियता छात्रों की विभिन्न क्षेत्रों में होनी चाहिए चाहे शासन से विषय प्राप्ति की मांग हो, चाहे अध्यापको की नियुक्ति हो यह सभी प्रयासों में छात्र राजनीति की सक्रियता झलकती है।

• छात्र संघ में शासन की भूमिका– छात्र संघ अध्यक्ष रहते हुए शासन की भूमिका बहुत आवश्यक होती है तथा वह भूमिका स्वंय मैने देखी है छात्र संघ अध्यक्ष बनने के बाद महाविद्यालय में विकास व वादे निरंतर आते रहे, उन्हें पूरा करने के लिए निरंतर आगे रहे, उन्हें पूरा करने के लिए निरंतर प्रयास हुआ। स्थानीय नगरपालिका से निवेदन के पश्चात् विकास की गंगा जैसी बहनी तय थी। इसी के साथ बार–बार निवेदन करना कहीं ना कहीं मुख्यमंत्री जी उच्च शिक्षा मंत्री व माननीय विधायक जी द्वारा शासन की भूमिका सराहनीय रही है।

छात्र संघ अध्यक्ष रहकर संघर्ष की भूमिका– छात्र संघ अध्यक्ष बनकर आया तो एक बहुत बड़ी जिम्मेदारी सर पर थी और विकास के लिए सभी वादेदिन प्रतिदिन मेरे दिमाग में तेजी से धूम रहे थे। सर्वप्रथम मेरी सबसे बड़ी भूमिका छात्र–छात्राओं को रोजाना कक्षाओं में जाने के लिए प्रेरित करना था, साथ में उनकी जो समस्याओं आवश्यकताओं की जरुरतों को शासन के द्वारा निवेदन करना भी था।

छात्र संघ अध्यक्ष रहकर मेरा संघर्ष मेरे वादे पूरे–

1– कक्षाओं को आधुनिकीकरण की ओर ले जाना सबसे बड़ा संघर्ष था, जिसमें कक्षाओं के लिए (डिजिटल प्रोजक्टर व वाईट बोर्ड) भेंट किये गए आपको फिर से बताना चाहता हूँ छात्र राजनीति में शासन की भूमिका जरुरी होती है रामनगर विधानसभा के विधायक श्रीमान दीवान सिंह बिष्ट जी के आशीर्वाद से छात्र–छात्राओं की जरुरतें पूरी कर सका।

2– शासन की भूमिका का साथ ही एक लक्ष्य था सैकड़ों छात्र हमारे महाविद्यालय रामनगर भारत देश व शहीदों के बलिदान की स्मृति में अपने महाविद्यालय रामनगर के (झंडा स्थल का सौन्दर्यकरण कर 20 मी0 ऊँचा तिरंगा लगाया गया एक राष्ट्रवाद की चेतना की श्रेष्ठता हर भारतीय को जवानों का बलिदान दर्शा सकें। छात्र संघ अध्यक्ष रहने के बावजूद छात्र–छात्राओं की समस्या ज्ञात हुई, जिसमें बाहरी अज्ञात व्यक्तियों द्वारा पड़ता था। उसके पश्चात महाविद्यालय के भीतर व छात्रावास में 16 CCTV कैमरे भेंट किये गए।

3– छात्र राजनीति में छात्र संघ एक मजबूत स्तम्भ माना जाता है जिसमें हजारों छात्र–छात्राओं का प्रतिनिधित्व करने का अवसर प्रदान होता है।

4– महाविद्यालय रामनगर ज्ञान का एक मंदिर है पूर्व में जहाँ–जहाँ अंधेरा दिखाई देता था नगरपालिका से निवेदन करने के पश्चात सोलर लाइट लगाई गई।

5– महाविद्यालय में स्वच्छता को देखते हुए स्टील के कूड़ेदान भेंट किये गए।

6– खेल के मैदान में सोलर सबमर्सिबल लगा। 2017–18 में छात्र संघ समारोह में पेयजल मंत्री श्री प्रकाश पंत जी के मध्य मांग रखी गई उसके अगले दिन कार्य प्रारम्भ हो चुका था।

7– महाविद्यालय में UG से PG जाने वाले कच्चे मार्ग में CC मार्ग का निर्माण करवाया गया। 2017–18 में छात्र संघ अध्यक्ष रहकर विधायक जी से CC मार्ग का निवेदन किया गया था। उसके पश्चात CC मार्ग का कार्य पूरा हुआ।

8– छात्र छात्राओं की मांग स्वयं रखी गई जिसमें M.A. योग का शासनादेश लाने में सफलता मिली। इस वर्ष से M.A. योग में प्रवेश प्रारम्भ किये जायेंगे।

9– कई कक्षाओं में पंखों की आवश्यकता होने के कारण 7 पंखे भेंट किये जिसमें गर्मियों में छात्र–छात्राओं को समस्या का सामना नहीं करना पड़े।

10– पिछले वर्ष छात्र संघ अभिनन्दन समारोह में माननीय मुख्यमंत्री श्री त्रिवेन्द्र सिंह रावत जी उच्च शिक्षा मंत्री द्वारा विभिन्न कार्यो की घोषणा की गई थी, जिसमें महाविद्यालय की चारदीवारी, शौचालय, डिजिटल पुस्तकालय व ऑडोटोरियम हॉल के लिए 2 करोड़ की घोषणा की गई थी। उसके बाद DPR तैयार कर पैनल बना दिया गया है जल्द विकास कार्य प्रारम्भ होंगे।

रविन्द्र सिंह रौतेला

(छात्र एवं अध्यक्ष 2017–18)

छात्र संघ अध्यक्ष बनने के बाद मैं मित्रों के बीच अधिक नहीं रहा जिसके कारण कई छात्र–छात्राओं की भाषा में यही शब्द होते कि अध्यक्ष बनने के बाद बदल जाते या तरह–तरह की बाते बस इसका कारण पूर्व में सामान्य छात्र की तरह महाविद्यालय आया और इन सालों में बहुत सी समस्याओं को एकत्रित करके रखा था। अध्यक्ष बनने के बाद भिन्न–भिन्न स्थानों में जाकर राज्य के मंत्रीगणों के सम्मुख वार्ता कर समस्याओं से अवगत कराते–कराते कब अपना कार्यकाल का साल निकल गया पता नहीं लगा। 1 साल पूरे होने से पहले–पहले आयी ज्यादा समस्याओं का निराकरण कर चुका था। क्योंकि छात्र–छात्राऐं अपने छात्र संघ अध्यक्ष से यही अपेक्षा रखते हैं कि उनका अध्यक्ष विकास कार्य करें।

• इसी सोच के साथ कार्यकाल खत्म होने के बाद भी अपने वादों के अनुसार मैदान में डंटा रहा बार–बार राज्य के मंत्रियों से भेंट करता रहा। एक सोच थी एक आशा थी अपने महाविद्यालय की कक्षाओं को डिजिटल करूँ। आने वाले छात्र संघ का उदाहरण बनूँ। जिससे छात्र संघ को एक अनुभव मिले साथ में सीख भी।

• महाविद्यालय के खेल के मैदान की दशा 6 सालों से देखते आया, जिसमें धूल बहुत होती है कहीं ना कहीं मैदान में उपस्थित खिलाड़ियों को नुकासान भी पहुंचता है। उसको देखते हुए मैदान में पानी का छिड़काव के लिए (सोलर सबमर्सिबल) लगाया गया।

• सी0सी0टीवी0 कैमरेलगाये गये।

• महाविद्यालय झण्डा स्थल का सौन्दर्यकरण कर तिरंगे की ऊँचाई बड़ाई गई।

आगामी कार्य–

• हमारे महाविद्यालय रामनगर में परीक्षा करवाने हेतु एकमात्र ऑडोटोरियम हॉल है जो वर्तमान की स्थिति में क्षतिग्रस्त होने की कगार में है। उसके जीर्णोधार के लिए 50 लाख मुख्यमंत्री जी त्रिवेन्द्र सिंह रावत जी उत्तराखण्ड सरकार द्वारा मेरे छात्र संघ अभिनन्दन समारोह में घोषणा की गई थी। अपने अथक प्रयासों से DPR बन चुकी है। कुछ महीनों उपरान्त कार्य किया जायेगा।

अंत में एक संदेश छात्र–छात्राओं से कि अपनी कक्षाओं में रोज जाइये, जिससे आपकी पढ़ाई सेलेकर सभी जानकारी भी प्राप्त होगी। क्योंकि प्रयोगात्मक परीक्षाओं से लेकर मुख्य परीक्षा प्रवेश लेने की तिथि ज्ञात न रहने के बाद नुकसान आपको होगा। आपको जागरुक बनना पड़ेगा। नये छात्र कुछ ही महीने कक्षाओं में उपस्थित रहते हैं। उसके बाद छात्र नेताओं का सहारा। अपना प्रवेश फॉर्म खुद भरिये क्योंकि आज सब सुविधायें ऑनलाइन कर दी गई है। यदि आप रोजाना महाविद्यालय आयेंगे तो कभी आपको समस्या उत्पन्न नहीं होगी।

मेरे द्वारा किये गये कार्य व कार्य दृश्य

- विवेकानन्द पार्क
- कक्षाओं को डिजिटल किया गया।
- U.G. जव P.G. तक सी0सी0 मार्ग
- स्वच्छता के लिए स्टील कूड़ेदान
- वाइट बोर्ड।
- झण्डा स्थल का सौन्दर्यकरण व ऊँचा तिरंगा।
- महाविद्यालय अंधकार में ना रहे उसके लिए स्ट्रीट लाइटें।
- सी0सी0 टी0वी0 कैमरे महाविद्यालय व हॉस्टल में।
- खेल के मैदान के लिए सोलर सबमर्सिबल।
- कॉलेज में पानी की पूर्ति के लिए जल संस्थान से निवेदन कर 24 घण्टे बांगाझाला लाइन से जुड़वाया।

प्राचार्या महोदय से निवेदन कर प्रयास–

- दांतों का निशुल्क केन्द्र।
- करिय काउंसलिंग।
- महाविद्यालय की रंगाई पुताई
- फिजिक्स विभाग की गैलरी की लाइटों को सही करवाया गया।
- वाचनालय कक्ष को पुन: खुलवाया गया।
- रक्तदान शिविर।
- कक्षाओं के लिए 10 पंखें भेंट।
- कैंटिन की सुविधा 2017–18

छात्र संघ अध्यक्ष (2017-18) रविन्द्र रौतेला द्वारा महाविद्यालय के लिए किये गये कार्य

आलेख

(शिक्षक/शिक्षणेत्तर वर्ग)

''ऐसे सत्य सिखाना जग को अनाचार जगसे मिट जाए।
मिटे स्वर्ग की असत् कल्पना, शाश्वत सत्य भूमि पर आए।।''
तुम भू के भगवान, तुम्हारे चरणों में ईश्वर मिलते हैं।
तुम अन्तर के माली, तुमसे फूल जिन्दगी के खिलते हैं।।
मैं भूलूँ पर तुम मुझसे भूलों पर उदास ना होना।
तुम शिक्षक, विद्वान तुम्हारी प्रतिभा से लोहा भी सोना।।''

– रघुवीर शरण मिश्र

हेनरी रैमजे (रामजी साहब) के सपनों का शहर रामनगर

उत्तराखण्ड में कत्यूरियों एवं चन्द राजाओं के शासन काल में पर्वतीय भू-भाग से मैदानी भू-भाग के साथ सम्पर्क मार्ग ब्रह्मदेव तिमली (वर्तमान टनकपुर) एक कर रहित रास्ता 'चोर गलिया' के बाद बमौरी दर्रा (वर्तमान हल्द्वानी काठगोदाम) मध्य में चिल्किया, रामनगर तथा कोटद्वार, हरिद्वार एवं ऋषिकेश आदि थे। क्योंकि टनकपुर से सहारनपुर तक अविछिन्न घना वन प्रदेश था, जो बरेली एवं रामपुर तक फैला हुआ था। तराई के जंगली क्षेत्र में बॉक्स एवं थारू जातियाँ निवास करती थी। रूद्रपुर, बाजपुर, काशीपुर एवं हल्द्वानी छोटे गाँव एवं कस्बों के रूप में अस्तित्व में थे। जिन्हं विभिन्न चन्द राजाओं ने भावर-तराई की देखभाल हेतु बसाया था। कुमाऊँ के जयचन्द्र, पिता-पुत्र 'हर्ष देव' जोशी एवं 'शिवदेव' जोशी की दुर्बुद्धि का नतीजा था कि सन् 1815 में अंग्रेजों ने कुमाऊँ में चढ़ाई कर दी, बहाना बना था गोरखों से कुमाऊँ एवं गढ़वाल को आजाद कराने का। 'गोर्खा गर्दी' से त्रस्त पर्वतवासियों का तब मानना रहा होगा कि अत्याचारी गोरखों से अंग्रेज उनके हित चिन्तक सिद्ध होंगे। परिणामत: उत्तराखण्ड का मानस खण्ड एवं केदार खण्ड सन् 1815 से 1947 तक अंग्रेजों का गुलाब रहा।

लार्ड गार्डनर एवं हर्ष देव जोशी के मध्य मुल्क कुमाऊँ की बेहतरी को 18 शर्तें हुई थी। इन में से कतिपय शर्तें-आजादी के इतने वर्षों के बाद भी कुमाऊँ एवं गढ़वाल अँचल में लागू है। अंग्रेजों ने अपनी भारी-भरकम फौज की मदद से कुमाऊँ और गढ़वाल गोरखों से खाली करवा लिया। गोरखागर्दी से त्रस्त कुमाऊँ के निवासियों ने अंग्रेजों की खूब आवाभगत की। उन्हें सिर-आँखों पर बिठाया। उत्तराखण्ड में अंग्रेज गर्वनर आते रहे और जाते रहे। इसी क्रम में सन् 1856 में कुमाऊँ में सर हेनरी रामजे ने जो बाद में सर रामजे अथवा (रामजी) साहब कहलाये ने शासन किया।

उत्तराखण्ड में शासन करने वाले अंग्रेज अधिकारियों में से सर हेनरी रैमजे एक ऐसा नाम है जो सदा सम्मान के साथ स्मरण किया जाता रहेगा। उनका इस क्षेत्र तथा यहाँ के निवासियों के साथ इतना लगाव हो गया था कि वे न तो सेवा निवृत्त होना चाहते थे और न सेवानिवृत्ति के बाद अपने देश ही लौटना चाहते थे। उनकी अत्यधिक लोकप्रियता एवं अंग्रेजों की कूटनीतियों को अपनी समझ से लागू करने अथवा न करने की विवेचक बुद्धि का प्रयोग करने के कारण उनकी इच्छा के विरूद्ध सन् 1884 में उन्हें समय से पहले ही सेवानिवृत्त कर दिया गया। वे स्वदेश लौटना नहीं चाहते थे। 1884 से 1892 तक वे सेवानिवृत्ति के बाद अपने अल्मोड़ा हाउस में रहे, जिसे तब रैमजे हाउस कहा जाता था।

अन्त में अपने पुत्र के विशेष आग्रह पर उन्हें अपनी इच्छा के विरूद्ध अपने देश लौटना पड़ा। कहा जाता है कि अल्मोड़ा से जाते वक्त सर रैमजे हेनरी (राम जी साहब) फूट-फूटकर रोए थे। कैप्टन रामजे मूलत: स्काटलैण्ड के निवासी थे तथा प्रसिद्ध गवर्नर जनरल लार्ड डलहौंजी के चचेरे भाई लगते थे। उनका विवाह सर हेनरी वाशिंगटन की पुत्री के साथ हुआ था। रैमजे साहब ने इस अँचल में लगभग 44 वर्षों तक शासन किया था। उनके शासनकाल में न्याय व्यवस्था एवं समुचित प्रशासन की ऐसी नींव पड़ी कि अंग्रेज लेखकों ने उन्हें 'कुमाऊँ का राजा' उपाधि से महिमा मण्डित तक कर डाला। कहा जाता है कि तत्कालीन कुमाऊँ की जनता रैमजे साहब के आदेशों/निर्णयों को सिर झुकाकर अंगीकार करती थी। 'कुमाऊँ का इतिहास' के लेखक बद्रीदत्त पाण्डे महोदय ने लिखा है कि, उनका शासन नवाबी ढंग का था और उनका न्याय काजी का सा। उनकी लोकप्रियता का कारण यह था कि उन्होंने अपनी प्रशासनिक एवं न्यायिक व्यवस्था में प्रजा के हित को सर्वोपरि रखा। अन्य शासकों के शासन काल के समान ही उनके शासन काल में भी, उच्च ब्रिटिश अधिकारियों की ओर से समय-समय पर अनेक नये-नये विधान लागू करने के निर्देश आते रहते थे, किन्तु ''रैमजे साहब'' ने अपने

शासनकाल में उन कानूनों को यहाँ लागू नहीं होने दिया जो यहाँ की जनता के विरूद्ध होते थे। कहा जाता है कि 'रैमजे साहब' पहाड़ी (कुमाउनी) बोलते और समझते थे, उन्हें (मडुवे) की रोटी एवं (सिसौड़) की सब्जी अत्यन्त प्रिय थी। कुमाऊनी जनता के साथ उनका व्यवहार पारिवारिक सदस्यों का सा था। ऐसे भी प्रमाण मिलते हैं कि रैमजे साहब के 1856-1884 की कुमाऊँ (पौड़ी गढ़वाल सहित) के सहायक आयुक्त के रूप में नियुक्ति के बाद लंदन मिशनरी सोसाइटी, के पादरी (रेवरेण्ड बड़न) को खूब प्रोत्साहन दिया, रैमजे द्वारा उन्हें मिशन की गतिविधियों को चलाने के लिए सभी प्रकार की प्रशासकीय एवं आर्थिक सहायता भी प्रदान की। जिसके अन्तर्गत, बड़न की देख-रेख में अल्मोड़ा में एक कन्या पाठशाला, एक अस्पताल तथा एक कोढ़ी खाना खोला गया। इस प्रकार प्रशासकों का प्रश्रय एवं प्रोत्साहन पाकर शिक्षा एवं चिकित्सा की सुविधाओं के माध्यम से पहाड़ी लोगों के पिछड़ेपन को दूर करने, विशेषकर समाज के निर्बल एवं शोषित वर्ग, तत्कालीन (शिल्पकारों) का सामाजिक जीवन स्तर सुधारने के कार्यक्रम चलाए गए। स्थान-स्थान पर ईसाई मिशनरियों की स्थापना की गयी जो कि मिलम तक के सीमान्त क्षेत्रों तक फैलाए गए। मिशनों, शिक्षा संस्थानों, चिकित्सकालयों, निराश्रित महिलाओं के लिए स्वरोजगार कार्यक्रमों, निर्धन एवं पिछड़े वर्ग के लोगों के बच्चों के लिए निःशुल्क शिक्षा एवं छात्रावासों की सुविधाओं आदि के द्वारा इन्होंने यहाँ की जनता को अत्यधिक प्रभावित कर डाला। 1857 में कुमाऊँ में शिक्षा विभाग स्थापित हुआ। मेजर गार्डन को कुमाऊँ सर्किल का इन्स्पेक्टर नियुक्त किया गया। सन् 1871 में गार्डनर की जगह पण्डित बुद्धिबल्लभ पन्त की नियुक्ति की गयी। पन्त जी की लगन एवं मेहनत से कुमाऊँ में शिक्षा का खूब प्रचार एवं प्रसार हुआ।

1844 में अल्मोड़ा में मिशन स्कूल खोला गया था जो 1871 में रैमजे कॉलेज हो गया जिसने अल्मोड़ा में अंग्रेजी शिक्षा का श्री गणेश किया था। रैमजे साहब कुमाउनी लोगों की शिक्षा के प्रति 1874 की अपनी रिपोर्ट में लिखते हैं कि - यहाँ सबको पढ़ाना कठिन होगा। हमें कुछ लोगों को काम चलाऊ शिक्षा देनी चाहिए, बनिस्पत इसके कि कुछ थोड़े से लोगों को ज्यादे खर्च करके अच्छी शिक्षा दी जावे। यदि कोई होशियार लड़का ऊँची शिक्षा प्राप्त करना चाहे तो उसे छात्रवृत्ति दी जावेगी। हल्कावन्दी स्कूलों के टीचरों को रुपये 5 माहवार मिलते हैं। इतने में मामूली शिक्षा देने वाले आदमी मिल जाते हैं। यद्यपि हमारा शिक्षा सम्बन्धी कारोबार पिछड़ा है तथापि कुमाऊँ में पढ़े लिखे लोगों की संख्या औसत से ज्यादा है।

ऐसे भी साक्ष्य मिलते हैं कि रैमजे साहब अंग्रेजों को कुमाऊँ के नगरों में बसने-बसाने के पक्ष में नहीं थे। मिशनरियों को प्रोत्साहित करने के फलस्वरूप यह भी माना जाता था कि रैमजे कुमाऊँ के पर्वतीय अँचल के निवासियों को ईसाई बना देना चाहते थे। पर्वतीय अँचल में कानून लागू करवाने के लिए रैमजे साहब पुलिस की जगह पटवारी व्यवस्था को अधिक माकूल समझते थे, तब से लेकर पर्वतीय अँचल में नगर और कस्बों को छोड़कर राजस्व पुलिस (पटवारी) व्यवस्था अनवरत चली आ रही है। अपने शासन काल में रैमजे वे पहले अंग्रेज अधिकारी थे जिन्होंने मलेरिया ग्रस्त बीहड़-वनों एवं सघन झाड़ियों वाले उपजाऊ क्षेत्र की तराई एवं भाबर को आबाद कराने की ओर ध्यान दिया। यहाँ पर सड़कों एवं सिंचाई की सुन्दर व्यवस्था कराने का श्रेय रैमजे साहब को जाता है।

वर्तमान सर्वगुण सम्पन्न नैनीताल के उपनगर रामनगर शहर जिसकी धरातली स्थिति 29^{0}-23'-35'' उत्तरी अक्षांश एवं 79-10'-9'' पूर्वी देशान्तर पर समुद्र की सतह से मात्र 1204 की ऊँचाई पर कोसी नदी के दक्षिण तट पर स्थित है, यह स्थान उत्तराखण्ड के कुमाऊँ मण्डल का आधुनिक शहर है। अंग्रेज कमिश्नर सर हेनरी रैमजे द्वारा इसकी कस्बे के रूप में नींव रखे जाने से पूर्व यह एक छोटा सा गाँव हुआ करता था। यहाँ से नैनीताल 54 किमी0 रानीखेत 98 किमी0 दूरी पर स्थित है। यहाँ पहुँचने के लिए दिल्ली से बड़ी रेल लाइन अथवा मोटर मार्ग से मुरादाबाद-काशीपुर होते हुए पहुँचा जा

सकता है। यह शहर कुमाऊँ के पाली पछाऊँ एवं दोसाँद के साथ दक्षिण–पूर्वी गढ़वाल का प्रवेश द्वार भी है। ऐतिहासिक स्तर पर सन् 1850 में इसे पश्चिमी कुमाऊँ मण्डल तथा पाली पछाऊँ–रानीखेत के लिए एक राजमार्ग के केन्द्र के रूप में विकसित करने तथा कालान्तर में रेल मार्ग (पहले छोटी रेल लाइन) से जुड़ने से पूर्व भी इसका महत्व पूर्व में ब्रह्म देव मण्डी (टनकपुर से लेकर कनखल–हरिद्वार के यात्रा मार्ग (कण्डी सड़क) के मध्य मे पड़ने वाले पड़ाव (कस्बे) के रूप में हुआ करता था। क्योंकि उस काल में यह (वर्तमान रामनगर) उत्तरापथ (उत्तराखण्ड) का एक प्रमुख यात्रा पथ व व्यावासिक मार्ग हुआ करता था। तब पूर्वी कुमाऊँ नेपाल, पूर्वी उत्तर प्रदेश से हरिद्वार की ओर जाने वाले यात्री टनकपुर से जौलासाल–चोरगलिया–हल्द्वानी कालाढूंगी होता हुआ 70 मील का पैदल मार्ग पार करके वर्तमान रामनगर पहुँचते थे, और फिर यहाँ से ढेला 9 मील, सनेह 8 मील, हल्दूखाल–9 मील, लालढांग 10 मील, चीमा 13 मील से कनखल और फिर वहाँ से हरिद्वार 3 मील कुल 119 मील का मार्ग तय कर हरिद्वार पहुँचते थे। प्रारम्भ में कुलियों के द्वारा कण्डियों, पीठ पर बाँधी जाने वाली टोकरियों (डोकों) में सामान तथा बूढ़े, आशक्त यात्रियों को ढ़ोने वालों का मार्ग होने के कारण इसे कण्डीपथ (कण्डी–सड़क) कहा जाता था। बाद में अंग्रेजी शासन काल में विशेषत: रैमजे साहब द्वारा नदी–नालों में पुल–पुलिया बना दिये जाने से यह कण्डी सड़क बैलगाड़ी की सड़क हो गयी, जिसके द्वारा नेपाल की तराई से लेकर दून की घाटी तक का व्यापार चलता था। बाद में मुरादाबाद–दिल्ली से रेलपथ तथा विभिन्न स्थानों से आने वाले राजपथों से जुड़ जाने के कारण इसका महत्व और बढ़ गया। इधर 1935 में रामनगर से मात्र 121–14 किमी की दूरी पर स्थित राष्ट्रीय उद्यान अब कॉर्बेट नेशनल पार्क के स्थापित हो जाने से इसका महत्व और बढ़ गया है। साथ ही यहाँ से 8–10 किमी0 की दूरी पर कोसी की धारा के मध्य स्थिति (गर्जिया) देवी शक्ति पीठ की लोकप्रियता ने भी रामनगर का महत्व बढ़ा दिया है। यहाँ से सीताबनी जो एक पौराणिक, ऐतिहासिक, धार्मिक स्थल है, मात्र 15–16 किमी की दूरी पर स्थित है।

विश्व प्रसिद्ध पर्यटन स्थल जिम कॉर्बेट पार्क एवं धार्मिक स्थल गर्जिया एवं सीतावनी की सुरम्य प्राकृतिक छटा तथा गढ़वाल एवं कुमाऊँ अँचल के इस प्रवेश द्वार शहर रामनगर के इर्द–गिर्द बैलपड़ाव, छोई, ढिकुली, गर्जिया, कुमेरिया, मरचूला, सांवल्दे, ढेला एवं लालढांग, चिल्किया, पीरूमदारा, हिम्मतपुर, हल्दुआ के जंगल तक घनी आबादी के साथ आकर्षक होटल एवं रिसोर्टों का निर्माण हो गया है। जो अनवरत जारी है। वणिक वर्ग की दूरगामी सोच एवं संगठनात्मक बुद्धि के परिणाम स्वरूप बने सुविधा सम्पन्न खत्री सभा भवन एवं अग्रवाल सभा भवन, रामनगर शहर की शान है। दूसरी ओर प्रगतिशील सांस्कृतिक परिषद, पैंठ पड़ाव, पर्वतीय सभा, लखनपुर एवं दुर्गा मन्दिर तथा धर्मशाला भरतपुरी रामनगर में लगातार बस रहे पर्वतीय समाज के लिए आवश्यक आवश्यकता साबित हो रहे हैं। पर्यटन एवं शिक्षा का स्तर कई मायनों में संतोषजनक होने के उपरान्त भी इस शहर में एक सर्वगुण सम्पन्न चिकित्सालय (सरकारी/व्यक्तिगत) की कमी दु:ख का कारण है। समाज सेवियों एवं धन–सम्पन्न जनों को इस ओर अवश्यमेव ध्यान देना होगा अन्यथा इस शहर से हल्द्वानी, काशीपुर, मुरादाबाद एवं दिल्ली को गरीब पर्वतीय बीमारों के स्थान्तरण एवं हस्तान्तरण का क्रम जारी रहेगा।

– डॉ. जी.सी. पन्त (एसोसिएट प्रोफेसर हिन्दी)

भारतीय साहित्य तथा संस्कृति में हनुमान–विमर्श

हनुमान के उदात्त व्यक्तित्व से प्रभावित तथा अभिभूत मैक्सिको के महान साहित्यकार, राजनयिक तथा नोबेल पुरस्कार विजेता कवि ऑक्टोविया पॉज ने 1972 ई. में हनुमान पर फ्रेंच में पुस्तक लिखी, जिसका अंग्रेजी अनुवाद 'मंकी द ग्रामेरियन' के रूप में प्रकाशित हुआ। इसका हिन्दी अभिप्राय है वैयाकरण हनुमान। पॉज के लिए तमाम दूसरी चीजों से ऊपर हनुान एक वैयाकरण तथा कवि थे। हिन्दी समालोचक सदानंद शाही के अनुसार हनुमान का चरित्र मनुष्यता के इतिहास में कविता की तरह विस्फोट करना है, जिसे पॉज समझते हैं और हम भारतीय उन्हें बंदर विमर्श से आगे ले जाने को तैयार नहीं होते । जिस प्रकार हिन्दी शब्दकोषकार तथा मानस मर्मज्ञ फादिर कामिल बुक्के, पॉल रिचमैन तथा रा.के. रामानुजन ने अपने गहन तथा श्रमसाध्य शोधों से दक्षिण एशिया के साहित्य विमर्श में रामायण परम्परा को नई दिशा दी। उसी प्रकार ऑक्टोवियो पॉज की हनुमान पर कालमयी कृति ने हनुमान विमर्श को एक नूतन फलक प्रदान किया।

लोकप्रिय हिन्दी विश्वास के अनुसार पवन देवता मारूति तथा अंजनी के पुत्र हनुमान की देवराज इन्द्र के वज्राघात से ठुड्डी टूटने के कारण हनुमान नाम पड़ा। चम्पू रामायण भी इस तथ्य की पुष्टि करता है, जबकि पद्म पुराण में उल्लेख है कि हनुरूहा नामक स्थान में जन्म के कारण हनुमान नाम पड़ा। वाल्मीकि रामायण तथा अधिकांश ग्रंथों में हनुमान वानर/कपि के रूप में वर्णित है। शिवपुराण के रूद्र संहिता में हनुमान को रूद्रावतार माना गया है, जिन्होंने राम की सेवा करने के लिए हनुमान के रूप में अवतार लिया।

मानस के अधिकारिक विद्वान तथा कथावाचक रामभद्राचार्य ने हनुमान चालीसा में उद्धृत शंकर सुवन केसरीनंदन को अशुद्ध पाठ मानकर संशोधित करते हुए 'शंकर स्वयं केसरीनंदन' की व्यंजना की है। अर्थात् शंकर ने स्वयं रामभक्ति के लिए कापि (हनुमान) का रूप ग्रहण किया तथा शिव की शाश्वत सहचरी के रूप में पार्वती कपि के पूंछ के रूप में विद्यमान है। पार्वती के बिना शिव की कल्पना संभव नहीं है। जिस प्रकार पूंछ रहित कपि की। इसलिए लंका में हनुमान ने अपने रौद्र रूप का प्रदर्शन तभी किया जब उनकी पूंछ को आग लगायी गयी। पार्वती ने शिव के अपमान से रूष्ट होकर दक्ष प्रजापति के यज्ञ कुण्ड में कूदकर यज्ञ को भंग किया, जबकि रामावतार में कपि स्वरूपधारी शंकर ने पार्वती स्वरूपा पूंछ में आग लगाने पर पूरी स्वर्णनगरी लंका को ही जला डाला।

वैदिक देवमंडल में इन्द्र, अग्नि, वरूण, रूद्र, विष्णु, पूषण तथा मरूतों का उल्लेख है। हनुमान सदृश्य छवि किसी वैदिक देवता की मिलती–जुलती नहीं है। डॉ. यदुवंशी ने अपनी पुस्तक शैवमत में शिव तथा हनुमान में किसी तादात्म्य का उल्लेख नहीं किया है। बंगाल के वैष्णव संत कवि जयदेवकृत 'गीत गोविन्द' के दशावतार स्तुति में कई अवतारों – कुर्म, वराह, वामन, नृसिंह इत्यादि की चर्चा है किन्तु हनुमान का किसी अवतार के रूप में उल्लेख नहीं है। अवतारवाद की संकल्पना मूलतः वैष्णव परम्परा की देन है, जिसमें शिव से जुड़े आख्यान सम्मिलित नहीं है। यद्यपि पुराणों में शिव के अवतारों की भी चर्चा मिलती है। ऋग्वेदिक देवकुल का अग्रणी देवता तथा हनुमान के बीच संघर्ष तथा इन्द्र के द्वारा सेरावत की रक्षा के लिए वज्र प्रहार हनुमान को आर्येत्तर परम्परा से जोड़ता है। ऐसा कुछ इतिहासकारों की मान्यता है। जिस प्रकार कृष्ण साहित्य में प्रथम बार वृष्णि कबीले के नेता के रूप में छान्दोग्य उपनिषद में प्रकट होते हैं, उसी प्रकार हनुमान आदि कवि वाल्मीकि कृत रामायण के पात्र के रूप में पहली बार उपस्थित होते हैं। सोलहवीं सदी के महाकवि गोस्वामी तुलसीदास की अवधी में रचित रामचरितमानस में विस्तृत वर्णन के साथ हनुमान भारतीय लोकचेतना में व्यापक रूप से अधिष्ठित होते हैं।

इतिहास तथा पुरातत्व भी हनुमान की पुरातनता को पुष्ट और प्रमाणित करता है। इक्ष्वाकु तथा गुप्तकालीन स्थलों से हनुमान की मृणमूर्तियां प्राप्त होती है। नागार्जुनकोंडा, यमुनानगर, देवगढ़, नचना इत्यादि स्थलों से प्लास्टिक कला

के रूप में हनुमान का रूपांकन का प्रमाण मिलता है। अमेरिकी संस्कृतविद् तथा इतिहासकार शेल्डन पोलक ने अपने विद्धत आलेख रामायण एण्ड पॉलिटिकल इमेजिनेशन इन इंडिया में चहमान राजा पृथ्वीराज–2 की प्रशस्ति में हनुमान के उल्लेख की ओर ध्यान आकृष्ट कराया है जो इस प्रकार है –

पृथ्वीराजो महाराजो रामो सो समस्यम विना हनुमान निश्चितम वीर भवान् अदभूतविक्रम।

यह अभिलेख संवत् 1224 (1168 ई.) के चहमान राजा पृथ्वीराज–2 से सम्बन्धित है, जिसमें उसने अपने मामा किल्हण को हाँसी किले का संरक्षक बनाया है। किल्हण की तुलना हनुमान से की गयी है, जिसके पास चमत्कारिक शक्तियाँ हैं।

विविध जटिल तथा बहुरंगी भारतीय परम्परा के अध्ययन में समाजशास्त्रीय तथा मानवशास्त्रीय उपागमों तथा प्रतिमानों ने नयी अकादमिक अवधारणाओं को जन्म दिया। मानवशास्त्रीय अध्ययनों में शास्त्रीय परम्परा को महान, वृहत, अभिजात्य तथा लिखित परम्परा माना गया है तथा असाक्षर लोगों को अलिखित परम्परा को लघु या निम्न परम्परा कहा गया है। हनुमान एक ऐसे लोक देवता है जिनके बारे में शास्त्रीय तथा लोक परम्परा में अलग–अलग तथा परस्पर विरोधी मत प्रचलित है। वह बल, बुद्धि तथा विवेक तीनों के देवता हैं। लोक परम्परा उन्हें भय तथा संकट से उबारने वाला देवता मानती है तो शास्त्रीय परम्परा में उन्हें कवि, विद्धान तथा श्रेष्ठ ज्ञानी मानती है। भारतीय लोकप्रिय साहित्य में हनुमान को कमोवेश शक्ति, शौर्य और पराक्रम के प्रतीक के रूप में ही हल्के ढंग से निरूपित किया गया है।

सुप्रसिद्ध समाजचिंतक तथा कालदृष्टा विनोबा भावे ने अपने बहुचर्चित निबंध जीव और शिक्षण में कहा है कि सम्पूर्ण गैर जिम्मेवारी से सम्पूर्ण जिम्मेवारी में कूदना तो एक हनुमान कद है। इसमें यदि हाथ और पांव टूट जाये तो क्या अचरज? कवि तथा साहित्यकार बच्चन ने अपनी आत्मकथा के प्रथम खण्ड में हनुमान को शक्ति के प्रतीक के रूप में ही अभिव्यक्त करते हुए कहा–इलाहाबाद विश्वविद्यालय में नामांकन के समय काउण्टर पर इतनी भीड़ रहती थी कि इस हेतु भुजाओं में हनुमान जी तथा जेब में लक्ष्मी होना आवश्यक था। उपर्युक्त उदाहरणों से प्रतीत होता है कि भारतीय साहित्यकारों ने हनुमान के व्यक्तित्व के कई अन्य महत्वपूर्ण पहलुओं की घोर उपेक्षा की है। उनकी सहजता का लाभ उठाकर राजनीतिक विमर्श में घसीटकर उन्हें दलित, मुसलमान तथा जाट करार दिया है।

पवनपुत्र होने के नाते उनमें वायु सी चपलता है और स्वाभाविक उच्छृंखलता भी। अपने आराध्य के गुणानुवाद में अहर्निशरत और लीन हनुमान की चपलताओं और चंचलता की जितनी अहमियत लोक जीवन में मिली है, उतना उनके धीर–गम्भीर स्वभाव, आचरण और चरित्र की नहीं। हनुमान शाश्वत मौनव्रती योद्धा हैं और अपनी चुप्पी तभी तोड़ते हैं जब उनकी जरूरत आराध्य श्री राम तथा लोककल्याण के लिए पड़ती है। तुलसीकृत रामचरितमानस में उद्धृत है –

कहइ रीछपति सुनु हनुमाना।
का चुप साधि रहेउ बलवाना।।

वरदान और श्राप के सांसारिक फलितार्थ से हनुमान भी मुक्त नहीं है। अजरता, अमरता तथा अवट सिद्धियों का वरदान प्राप्त करके भी उन्हें अभिशप्त देव माना गया है। चूँकि उन्हें 'स्व' के अपार पराक्रम तथा असीम शौर्य का बोध नहीं है, जब तक उन्हें इसका स्मरण किसी अन्य के द्वारा नहीं कराया जाय। यह हनुमान के व्यक्तित्व का अद्वितीय पक्ष है। स्वयं के पराक्रम तथा क्षमता का बोध व्यक्ति को अहंकारी बनाता है तथा आसुरी प्रवृत्ति का जन्म देता है। इसी बोध के कारण महापण्डित तथा शास्त्रवेत्ता रावण आसुरी सत्ता का प्रतीक बन बैठा जो अंततः उसके सर्वनाश का कारण बन गया। हनुमान अहंकाररहित चेतना है। अहंकार व्यक्ति का सबसे बड़ा दोष और दुर्गुण है क्योंकि अहंकारी व्यक्ति निर्मल तथा निवकलुष नहीं हो सकता है। प्रभु का सानिध्य तथा चरणों में शरणागति प्राप्त करने के लिए भक्त हृदय को मनसा, वाचा, कर्मणा निर्मल तथा निवकलुष होना पड़ता है। चूँकि प्रभु स्वयं कहते हैं

निर्मल मन जन सो मोहि पावा,

मोहि कपट छल छिद्र न मावा।

महावीर होने के लिए व्यक्ति को समस्त सांसारिक बंधनों से मुक्त होना पड़ता है। कठिन साधना तथा चित्रवृत्ति निग्रह के बाद वर्धमान महावीर कहलाये। हनुमान जो जन्मना ही महावीर हैं। रामायण तथा महाभारत के सहनायक है। वाल्मीकि रामायण में राम के चिर सहचर तथा योद्धा के रूप में हनुमान हैं। रणव्यूहकार के रूप में कूटनीतिक कौशल का परिचय देते हुए हनुमान रावण के रामभक्त सखा विभीषण से मित्रता की गांठ जोड़ते हैं और रावण की कुत्सित नीति तथा आसुरी सत्ता से त्रस्त विभीषण को सहयोगी बनाकर कौटिल्य नीति – शत्रु का शत्रु प्राकृतिक मित्र है, का अनुपालन करते हैं।

शब्द शिल्पी तथा कथाकार रामवृक्ष बेनीपुरी ने 'गेहूँ और गुलाब' शब्द–चित्र मे लिखा कि यह न भूलिए कि सोने की लंका थी और जहाँ राक्षसता निवास करती थी। वैभव, ऐश्वर्य, विलासिता तथा आसुरी सत्ता का प्रतिष्ठान लंका का दहन कर हनुमान ने अधर्म पर धर्म की विजय पताका लहराई। द्वापर युग में धर्मक्षेत्र, कुरूक्षेत्र के पांडव–कौरव युद्ध में हनुमान गांडीवधारी अर्जुन के रथ की पताका पर विराजमान हैं। जिस रक्ष के सारथी स्वयं मधुसूदन कृष्ण हैं। इस प्रकार महाभारत के धर्मयुद्ध में सत्धर्म का साथ निभाकर हनुमान ने यतोधर्तस्ततो जयः के प्रति अपनी निष्ठा समर्पित की। संभवतः हनुमान एक ऐसे पात्र हैं जो दोनों युगों (त्रेता तथा द्वापर) तथा दोनों महाकाव्यों (रामायण तथा महाभारत) के सहायक है। अजरता तथा अमरता के वरदान से विभूषित हनुमान कालखण्ड की सीमाओं को तोड़ते हैं।

हनुमान की संकटमोचक छवि लोकमानस में बहुप्रचरित और बहुश्रुत है। जानकी हरण के उपरांत अलंघ्य, समुद्र पार कर अमेद्य लंका तक पहुँचना और अपछृत सीता की खोज करने का जोखिमपूर्ण कार्य करने का बीड़ा उन्हें उठाना पड़ा। राम–रावण युद्ध में घायल तथा मूर्छित लक्ष्मण के उपचार के लिए आवश्यक संजीवनी औषधि लाने का कठिन दायित्व हनुमान के कंधों पर ही गिरता है।

भूत–पिशाच का भय दूर करना हो या फिर परीक्षा की वैतरणी पार करनी हो, किसी साक्षात्कार परीक्षा में सफलता हासिल करनी हो या फिर अखाड़े में किसी को पटखनी देनी हो, हनुमान जी का स्मरण कीजिए वे आपके साथ है। किसी भी प्रकार का कष्ट, पीड़ा या संताप हो, हनुमान जी आपको सहजता से उबार देंगे। प्लेग से पीड़ित तुलसी ने स्वयं शारीरिक कष्ट तथा रूग्णता से मुक्ति पाने के लिए बार–बार हनुमान जी से प्रार्थना की है –

औषधि अनेक तंत्र-मंत्र टोटकादि किए,
बादि भरा देवता मनाए अधिकाति हैं।
चेरो तेरा तुलसी तू मेरो कंधो रामदूत,
ढील तेरी वीर मोहि पीर ते पिराति हैं।

उनकी संकटमोचक छवि के कारण दुर्घटना संभावित क्षेत्रों में, विशेषकर व्यस्त सड़कों पर उनकी अगणित मूर्तियाँ स्थापित की गयी है। उत्तराखण्ड के क्षेत्रीय इतिहास लेखन से संबंधित क्षेत्र–अनुसंधान के क्रम में पहाड़ी राजमार्ग (मेरठ–पौड़ी राष्ट्रीय राजमार्ग पर गुमखाल से कुछ किमी. आगे) पर अवस्थित हनुमान की छोटी मूर्ति तथा देवालय के बारे में जिज्ञासा की तो स्थानीय लोगों ने बताया कि उक्त स्थान पर कई सड़क दुर्घटनाएँ हुई थी। किन्तु कलियुग के साक्षात देव हनुमान की मूर्ति की प्राण–प्रतिष्ठा के बाद ऐसी कोई भी अप्रिय घटना नहीं हुई। यही कारण है कि दुर्घटना संभावित स्थलों तथा व्यस्त राजमार्गो पर सर्वाधिक मूर्तियाँ तथा देवालय गदाधारी हनुमान की है जो शिव के अवतार होने के कारण भावी अनिष्ट को रोकने का सामर्थ्य भी रखते हैं।

कपि स्वभाव के कारण हनुमान चंचल, चपल तथा उच्छृंखल है, किन्तु शास्त्रीय अनुशासन तथा लोकमर्यादा के

संवेदनशील अनुपालक भी है। रावण के दरबार में बंदी बनाए जोने पर वे वश में नहीं आ रहे थे। नीतिज्ञ रावण ने उन्हें यज्ञोपवित से बांध डालने का उपाय किया। असाधारण बल तथा शौर्य के बावजूद हनुमान लोकसम्मत मर्यादा तथा जनेऊ की महिमा को कायम रखते हुए बँध जाना स्वीकार किया। मानसकार लिखते हैं –

ब्रह्म अस्त्र तेंहि सांधा, कपि मन कीन्ह विचार।

जौ न ब्रह्मसर मानहूँ महिमा मिटहि अपार।।

लोक मान्यता है कि रामराज्य की स्थापना के बाद श्री राम हनुमान को इस पृथ्वीलोक में अपना शाश्वत् प्रतिनिधि बनाकर उन्हें कलियुग का साक्षात देव बना दिया। कहा जाता है कि राम की अनुपस्थिति में उन्होंने पृथ्वीलोक में रहना सशर्त स्वीकार किया। अपने आराध्य श्रीराम से हनुमान ने स्पष्ट कहा कि वे इस लोक में तभी तक विराजमान रहेंगे जब तक राम का गुणानुवाद विभिन्न रूपों में होता रहेगा। वे रामकथा के आदि वक्ता आदि लेखक, शाश्वत श्रोता तथा अनन्य रसिक हैं। राम से जुड़ी प्रत्येक अनुष्ठानों कथा, संकीर्तन, रामलीला श्रोता तथा दर्शक के रूप में हनुमान सर्वत्र उपस्थित रहते हैं।

हिन्दी आलोचक अपूर्वानन्द ने प्रसिद्ध बहुभाषाविद्, लोकवार्ताकार और कवि रा.के. रामानुजन की हिन्दी में अनुदित पुस्तक 'दीन सौ रामायण' के पूर्वकथन में लिखा है – ऐसा कहा जाता है पहली रामायण की रचना हनुमान ने महासमर के बाद एक पर्वत शिखर पर की और फिर पांडुलिपि को छितरा दिया। वाल्मीकि उस महाकृति का अंशमात्र ही पकड़ पाए। हमारे पास अभी भी जो रामकथा है, इस लोकश्रुति के अनुसार मूल रामायण उससे काफी बड़ी थी। हर पीढ़ी के हाथ उसके कुछ पन्ने लग जाते हैं। इसलिए रामकथा कहने का अधिकार उसी को है जो उसकी अनन्तता का मान रखता है और उसे एक रूप में शेष कर देने का दम्भ नहीं पालता, जैसे ही वह ऐसा करेगा, हनुमान के द्वारा महाअन्तरिक्ष में बिखेर दिए पन्नों से कुछ और पृथ्वी पर आ गिरेंगे और उसका दम्भ चूर-चूर हो जायेगी।

यद्यपि तुलसीदास का उद्देश्य हनुमान के भक्त स्वरूप का उद्घाटन करता है लेकिन वह भी हनुमान को श्रेष्ठ ज्ञानी (ज्ञानीनामग्रगण्यम्) मानते हैं। हनुमान का सही परिचय वाल्मीकि रामायण में मिलता है। आदि कवि वाल्मीकि हनुमान को वर्ण का मर्म समझने वाले वेदों के ज्ञाता व्यक्ति के रूप में पाते हैं। वह हनुमान के जिस गुण पर सबसे ज्यादा रीझते हैं, वह है हनुमान का व्याकरण ज्ञान। इसी सूत्र को पकड़कर ऑक्टोवियो पॉज हनुमान को वैयाकरण (मंकी द ग्रामेरियन) मानकर नया विमर्श लाते हैं। पद्मपुराण में उन्हें साहित्य तथा कलाओं के असाधारण पारंगत के रूप में व्याख्यापित किया गया है। हनुमान का कवि होना तभी से मान्य और स्वीकृत है, जब से रामकथा का अस्तित्व है। कहते हैं कि जब आदि कवि वाल्मीकि ने अपनी रामकथा के विलक्षण किरदार तथा राम के परम भक्त हनुमान ने भी रामायण की रचना की है। उन्हें आशंका हुई कि यदि हनुमान की रचना सामने आ गई, तो वाल्मीकि की रचना को कौन पूछेगा ? उन्होंने सीधे हनुमान से ही अपनी आशंका कह सुनाई। हनुमान अपने राम के तरह ही भक्त वत्सल भी थे। सो उन्होंने अपनी रामकथा समुद्र में डूबो दी। लेकिन इससे हनुमान की रामायण का अस्तित्व खत्म नहीं हुआ। यह कथा रामकथा के एक और गायक का पता देती है।

हनुमान आदि रामकथा वाचक भी हैं। उनकी रामकथा का स्रोता कोई सामान्य या अदना कथारसिक नहीं, अपितु स्वयं जगजननी जानकी हैं। इस दृष्टि से हनुमान अद्वितीय कथावाचक हैं। अशोक वाटिका के सुरम्य निर्जन वन में वृक्ष हर आसीन होकर राम का गुणानुवाद कर रहे हैं, जिसकी स्कूल स्रोता सीता स्वयं है। कथावाचक की भूमिका में व्यासपीठ पर वृक्ष भी टहनियों पर हनुमान है तथा स्रोता होने के कारण सीता नीचे आसीन है। तभी से यह परम्परा स्थापित हुई कि कथावाचक कोई भी हो, वह सदैव उच्च व्यासपीठ पर आसन ग्रहण करेगा तथा श्रेष्ठ श्रोता भी निम्न आसन ग्रहण करेगा।

हनुमान की एक और महत्वपूर्ण भूमिका सूत्रधार तथा महासंधिविग्रहिक भी है। त्रेता युग में हनुमान किष्किंधापति सुग्रीव तथा लंकापति रावण के अनुज विभीषण से राम को मिलवाते हैं। कलियुग में रामरसिक भक्तसंत कवि तुलसी को

चित्रकूट के वैराग्य घाट पर राम-लक्ष्मण से साक्षात्कार कराते हैं।

भक्ति परम्परा के कवियों ने नवधा भक्ति के द्वारा अपने आराध्य की उपासना की है तथा ईष्टदेव को विभिन्न रूपों से अंगीकृत किया है। दास, भ्राता, प्रेमी इत्यादि के रूप में हनुमान की रामभक्ति शब्दातीत और कल्पनातीत है। राम और सीता उन्हें 'सुन सुत' कहकर संबोधित करती है। हनुमान के हृदय तथा उच्छवासों में रामत्व का शाश्वत स्पंदन होता रहा है। राम स्वयं अपने अनन्य भक्त से अभिभूत है। तुलसी कहते हैं –

महावीर बिनवउँ हनुमाना,

राम जासु जस आप बखाना।

हिन्दी भाषी क्षेत्रों में उनसे हमारी मुलाकात हनुमान चालीसा नामक लघु पुस्तिका से होती है। यह किताब तुलसीदास के नाम पर प्रचलित है, लेकिन तुलसीदास की भाषा और साहित्यिक गुणवत्ता से परिचित लोग मानते हैं कि यह तुलसी की कृति नहीं है। आनन्दनारायण शर्मा ने अपनी पुस्तक 'सुकवि समीक्षा' में तुलसी के केवल 12 ग्रन्थों को प्रामाणिक माना है जिसमें हनुमान चालीसा का उल्लेख नहीं है। किसी हनुमान भक्त ने यह चालीसा लिखी होगी और इसे महत्व दिलाने के लिए तुलसीदास के नाम से जोड़ दिया होगा। हनुमान चालीसा का वह अज्ञात रचयिता कम से कम सच्चा भक्त रथ होगा जिसका पहला उद्देश्य हनुमान जी के गुण और प्रभाव को सरल भाषा में लोगों तक पहुँचाना रहा होगा। इसमें हनुमान को सर्वप्रथम ज्ञानगुणसागर माना गया है तथा उनके अतुलित शक्ति और पराक्रम की चर्चा बाद में की गयी है।

भारतीय भाषाकोश में हनुमान के लिए 108 नाम संग्रहीत है, जो हनुमान के व्यक्तित्व के अगणित पक्षों की ओर संकेत करता है। हम भारतीय शायद उनकी विराटता के संकीर्ण पक्ष तक ही सीमित है।

1. ऑक्टोवियो पॉज, मंकी द ग्रामेरियन, 1972 मूल पुस्तक फ्रेंच में।

2. कैथरिन लुडविक, हनुमान इन दि रामायण ऑफ वाल्मीकि एंड दि रामचरितमानस ऑफ तुलसीदास, 1994।

3. लेनार्ड टी वाल्काट, हनुमन : दि पावर -डिस्पेंसिंग मंकी इन नार्थ इंडियन फोक रिलीजन, दि जरनल ऑफ एशियन स्टडीज, खंड-37, अंक-4, अगस्त 1968।

4. ए.के. रामानुजन, तीन सौ रामायण, अपूर्वानन्द (संपादित), नई दिल्ली, 2012।

5. गोविन्दचन्द्र राम, हनुमान के देवत्व और मूर्ति का विकास, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, 1976।

6. जोगिन्दर नरूला, हनुमान : गॉड एझड रायिक हीरो, नई दिल्ली, 2005।

7. डी.सी. हांडा, सम अर्ली टेराकोटाज ऑफ हनुमान, डी.पी. सकलानी (संपादित) रामायण ट्रेडीसन इन हिस्टौरिकल पर्सपेक्टिव, दिल्ली, 2006।

8. डॉ. यदुवंशी, शैवमत, विहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना, 1988, द्वितीय संस्करण।

9. सदानन्द शाही, 'पवनसुत का वह रूप, जिसे हम भूलते जा रहे है', हिन्दुस्तान, देहरादून, 19 अप्रैल, 2019।

10. आनन्द नारायण शर्मा, सुकवि समीक्षा, पटना, 1973, चतुर्थ संस्करण।

11. डॉ. संजय कुमार, 'रामकथा और रामलीला : विविधता तथा आंचलिकता', अश्वनी कोटनाला (सपांदित), स्मृति के शिलालेख, लैंसडौन, 2015।

12. शेल्डन पोलॉक रामायण एण्ड पॉलिटिकल इमेजिनेशन इन इंडिया, डेविड लोटेंजन(सं), रिलीजस मूवमेंटस इन साउथ एशिया : 600 ई 1800 ई0, ऑक्सफोर्ड, 2004।

– *प्रो. संजय कुमार (इतिहास विभाग)*

भारतीय संस्कृति एक सनातन धारा

भारत की विधि ज्ञान, कर्म, रचना वह व्यापार है जैसा कि ऋग्वेद में स्पष्टत: कहा गया है कि 'सा संस्कृति:प्रथिमा विश्ववारा' अर्थात् आदि संस्कृति विश्व के कल्याण के लिए थी एवं है। प्रमाणित कि भारतीय संस्कृति सिन्धु सभ्यता से भी प्राचीन है जिसकी नगरीय सभ्यता ने सुमेर, मिस्र व मेसोपोटामिया से सवयं को श्रेष्ठ साबित किया है, इसने प्राचीन काल से अपने व्यापारिक सम्बन्ध मध्य एशिया व पश्चिम एशिया से स्थापित किये। ये 3250-2750 बी.सी. के लगभग का समय था। ज्ञान की धारा प्रवाहित करने वाली वैदिक संस्कृति ने विश्वस्तर के चार वेद हमें प्रदान किये, ऋग्वेद, सामवेद, अथर्ववेद, यजुर्वेद। जबकि उपनिषद के रूप में हमारे पास दर्शनग्रन्थों की ऐसी श्रृंखला है, जिसके दार्शनिक चिन्तन सारे विश्व को आलोकित करते हैं। उत्कृष्ट संस्कृत के उपनिषद ज्ञान को जनभाषा में प्रस्तुत करके गौतम बुद्ध ने बौद्ध धर्म स्थापित किया तथा महावीर स्वामी ने जैन धर्म को आलोकित किया इस प्रकार एशिया को विस्तारित होने वाले इन धर्मों के मूल स्रोत भारत में ही प्राप्त होंगे। भारतीय धर्म का स्वरूप सनातन है। सनातन जिसका प्रवाह सतत् बना हुआ है। सिन्धु काल की मातृदेवी आज देवी दुर्गा के रूप में पूजे जा रहे हैं। लिंग पूजा यथावत बनी हुई है जबकि वैदिक युग की प्रकृति पूजा भी हमारी प्रकृति में सतत बनी हुई है। तुलनात्मक देखे तो विश्व की अन्य सभ्यताऐं चाटे सुमेर, मेसोपोटामिया, मिस्र, यूनान में जिन देवी-देवताओं की पूजा की जाती थी उनमें से कुछ राष्ट्रों ने इस्लाम स्वीकार कर लिया है और कुछ ने ईसाई धर्म, कुछ नास्तिक हैं, कुछ अन्य धर्म को मानने वाले हैं।

विश्व राज्य की कल्पना वेदों में आज से 5000 वर्ष पूर्व की जा चुकी है। भारतीय संस्कृति की व्याख्या मैंने धर्म को केन्द्र मे रखकर की इसका कारण यह है सभ्यता के प्रारम्भ में दो प्रमुख काल प्राचीनकाल व मध्यकाल भारत ही नहीं विश्व मे चाहे यूरोप हो या एशिया सभ्यताएँ धर्म केन्द्रित रहीं। निश्चित ही भारतीय सनातन परम्परा के वेदों में वह शक्ति है कि वह सम्पूर्ण विश्व को दार्शनिक, आध्यात्मिक चर्मोत्कष पर पहुँचा दे। ऐसा नहीं है कि भारत निश्चित ध्यान में ही रत रहा। इसकी समृद्धि ने प्राचीनकाल से ही आक्रान्ताओं को अपनी ओर आकर्षित किया। यूनानी, शक, कुषाण, पल्लव, हूण व मुस्लिम आक्रान्ताओं के आक्रमण के बावजूद हम अपनी विधि-दार्शनिक आध्यात्मिक उपलब्धि को बचाकर विकसित करने में कामयाब रहे। ये आक्रमणकारी हमारी संस्कृति में ही समाहित होकर भारतीय सभ्यता व संस्कृति को स्वीकार कर लिए चुनौती बनकर सिर्फ इस्लाम धर्म हमारे सामने आया। इनके आक्रमण उत्तर-पश्चिम सीमा पर प्रारम्भ हो गये थे। इनका उद्देश्य ही दार-उल-हर्ब को दार-डल-शिकून में परिवर्तित करना था। ये मूर्तिपूजकों का अंत करके इस्लाम की स्थापना करना चाहते थे। राज्य स्थापना व इस्लाम की स्थापना इन आतताइयों का लक्ष्य था। ऐसे आतताइयों के प्रहार के बावजूद सनातन संस्कृति अर्थात् भारतीय संस्कृति न केवल जीवित है बल्कि विश्व में भारतीय आध्यात्म का अपना अलग स्थान है। इस्लाम आक्रमणकारियों के साथ सूफीवाद का भी भारत में प्रवेश हुआ जिससे भारतीयों को प्रेम के माध्यम से जोड़ने का प्रयास किया गया, तथापि आज भी इस्लाम की एकधारा भारतीय संस्कृति के लिए चुनौती बनी हुई है।

- डॉ. श्रीमती जया भट्ट (असिस्टेंट प्रोफेसर-इतिहास)

अवधी का लोक–साहित्य

सर्वप्रथम ''अवधी'' और ''लोक साहित्य'' की व्याख्या कर लेना अपेक्षित होगा। ''अवधी'' शब्द को अयोध्या से व्युत्पन्न कहा जाता है। अवधी, अवध शब्द से बना और अवध अयोध्या से। अनेक लोगों ने ''अवध'' को अयोध्या का अपभ्रंश माना है। प्राचीन संस्कृत ग्रन्थों में ''अयोध्या'' नाम तो आता है, परन्तु अवध नहीं। बाल्मीकि रामायण में कहा गया है :

''अयोध्या नाम नगरी, तत्रासील्लोकविश्रुता।
मनुना मान्वेन्द्रेण या पुरी निर्मिता स्वयम्।।''

डॉ0 भगीरथ मिश्र के अनुसार ''अयोध्या'' से ''अवध'' की व्युत्पत्ति इस प्रकार संभावित है – ''अयोध्या'', ''अजोद्धा, ''अओद्ध'' ''ओधा'', ''औध'', 'अवध''।

परन्तु इस प्रकार की व्युत्पत्ति अभी तक नहीं की गई है। दूसरी व्युत्पत्ति अवध्या (अवधि) से है, जिसमें राम के चौदह वर्ष की वनगमन की अवधि प्रसिद्ध है, वह इस प्रकार हो सकती है :– ''अवध्या'', ''अवधिया'', ''अवधी'' अवध। ये व्युत्पत्तियाँ नगर से सम्बन्धित हैं। इनके अतिरिक्त भाषा–क्षेत्र से सम्बन्धित व्युत्पत्तियाँ भी हैं, वह है–अर्ध मागधी से–''अर्धवागधी'' 'अद्धवाधी'''' अवाधी'''' अवधी''। ये व्युत्पत्ति इतनी सहज नहीं प्रतीत होती, किन्तु इसमें कोई सन्देह नहीं कि इस क्षेत्र की भाषा अर्धमागाधी अपभ्रंश से निकली अवधी है।

वास्तव में ''अवधी'' शब्द इतना प्राचीन नहीं है, जितना ''अवध''। यह शब्द ''रामचरितमानस'' में अनेक बार आया है:–

''तहहिं अवध जहँ राम निवासू
तहहिं दिवस जहाँ भानु प्रकासू।
अवध राज सुरराज सिहाई, दशरथ धन सुनि धनद लजाई।।
राखिय अवध जो अवधि लगि, रहत जानि यहि प्रान।।''

इससे स्पष्ट होता है कि ''अवधी'' शब्द ''अवध'' से बना है और इस क्षेत्र में बोली जाने वाली भाषा को अवधी कहा है।

अवधी–भाषी क्षेत्र के अन्तर्गत उत्तर प्रदेश का मध्य–पूर्वी समस्त क्षेत्र आ जाता है, जिसमें लखनऊ, फैजाबाद, गोंडा, बहराइच, जौनपुर, सुल्तानपुर, प्रतापगढ़, रायबरेली, उन्नाव, बाराबंकी, सीतापुर और लखीमपुर का क्षेत्र आता है।

लोक साहित्य, लोक मानस की सरल, सहज अभिव्यक्ति है। लोक साहित्य से बढ़कर लोक–जीवन की अभिव्यक्ति का सच्चा, सशक्त और विश्वसनीय माध्यम कदाचित कोई दूसरा नहीं हो सकता।

लोक–साहित्य किसी जाति, समाज या राष्ट्र की संस्कृति का वह अभिन्न अंग है, जिससे हम संस्कृति की पहचान तो करते ही हैं, उस जाति, समाज और राष्ट्र के सौन्दर्यबोध तथा जीवन के प्रति उसके लगाव का परिचय भी प्राप्त करते हैं। लम्बे समय तक लोक संस्कृति के अध्ययन के प्रति पढ़े–लि खे लोगों की उपेक्षा के कारण लोक–साहित्य के अध्ययन की तरफ ध्यान नहीं दिया गया। परिणाम ये निकला, उसके अनेक स्वरूप जो आज हमारी आँखों से ओझल हो चुके हैं, कहीं अभिलेखित न हो सके। और हमारी वर्तमान तथा भावी पीढ़ी उनके ज्ञान से वंचित हो गई। यह भ्रांति का ही नतीजा है, कि बहुत दिनों तक–बल्कि किसी सीमा तक अब भी अनेक पढ़े–लिखे लोग, यह विश्वास नहीं कर पाये, कि लोक–कला अध्ययन के योग्य एक बौद्धिक विषय है। वे कला के अध्ययन से विमुख नहीं हैं, परन्तु लोक कला को ''अपनी कला'' की परिधि से नहीं

मानते। वास्तव में यह उपेक्षा और भ्रान्ति लोक साहित्य से जुड़े ''लोक'' विशेषण के कारण है। शब्द कोषों में ''लोक'' शब्द के अनेक अर्थ दिये गये हैं, किन्तु हमारा अभीष्ट केवल ''सामान्य जन'' से है।

लोक साहित्य में लोकगीतों का सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान है, जिनमें लोकजीवन प्रतिबिंबित होता है। इनमें जीवन के बहु आयामी क्रिया-कलाप समाहित होते हैं अवधी लोकगीतों के अन्तर्गत संस्कार सम्बन्धी लोकगीता, ऋतुपरक लोकगीत, जातिपरक लोकगीत तथा विविध लोकगीत आते हैं।

संस्कार सम्बन्धी लोकगीतों में जीवन के विविध संस्कारों तथा लोकाचारों का वैविध्यपूर्ण वर्णन रहता है। इनमें मुख्यत: जन्म सम्बन्धी (सोहर-सरिया), मूंड़न-छेदन सम्बन्धी जनेऊ सम्बन्धी तथा विवाह सम्बन्धी लोकगीतों को देखा जा सकता है।

पुत्र जन्म होने पर सरिया, सोहर, मंगल के उपरान्त चरुआ पीपरि, छट्टी तथा वंशीवादन से सम्बन्धित लोकगीत की कुछ पंक्तियाँ इस प्रकार हैं -

''आज ललन कै बात, बलम सन्दुखिया खोलउ रे।
सासू जो अइ हैं, चरुआ चढ़इहै, उनहूं कै भारीनेग। बलम0
जिठनी जो अइहैं, पीपरि पिसइहैं उनहूं कै भारी नेग। बलम0

इसी प्रकार ननद, देवर, नंदोई को सम्बोधित करते हुये गीत को आगे बढ़ाया जाता है। इनके अतिरिक्त ऋतुपरक लोकगीत विभिन्न ऋतुओं में गाये जाते हैं। जैसे-श्रावण मास में सावन, भाद्रपद में कजरी, फाल्गुन में फाग-होरी, चैत्र में चैता-चैती और प्रत्येक ऋतु में बारहमासा।

इसी प्रकार श्रम सम्बन्धी लोकगीत किसी कार्य के समय श्रम परिहारार्थ गाये जाते हैं। इससससे कार्य में मन लगा रहता है और थकान का भी अनुभव नहीं होता है। इसीलिये इन्हें क्रियापरक लोकगीत भी कहते हैं। इनमें जीवन के विविध रूप पाये जाते हैं। ये कार्य लगवही, निरवही, जैतसारी, चर्खा आदि से सम्बन्ध रखते हैं।

इसके अतिरिक्त बिरहा, कहरवा, धोबिया, कुम्हरउवा, सपेड़ा आदि जाति-परक लोकगीतों की श्रेणी में आते हैं। संस्कारों, ऋतुओं, क्रियाओं और विभिन्न जातियों के लोकगीतों के अतिरिक्त, लोग अन्य विविध प्रकार के लोकगीतों से भी अपने सुख-दुख, हर्ष-विषाद की अभिव्यक्ति करते हैं। इनमें पुरबी, बालकों के खेलते समय का लोकगीत सत्यनारायण व्रतकथा के समय के गीत, कुआं खोदते समय के गीत, गदर के गीत, भारत-चीन तथा भारत-पाकिस्तान युद्ध सम्बन्धी गीत आते हैं।

अवधी में लोकगाथाओं का भी प्रचलन है। आकार की दृष्टि से लोकगीत छोटे और लोक गाथायें बड़ी होती हैं। लोकगीतों में गेयता मुख्य है, तो गाथाओं में गाथा। लोकगीतों में सोहर, गारी सावन, कजरी फाग, जैतसारी निरवही, बिरहा, पुरबी, भजन आदि आते हैं और लोकगाथाओं में आल्हा, ढोला, मारु, लोरिक आदि आते हैं। लोकगीतों को गीति-काव्य और लोक गाथाओं को प्रबन्ध-काव्य के निकट रखा जा सकता है।

लोक गाथाओं के अतिरिक्त अवधी में लोक-कथाओं की भी प्राचीन परम्परा है। ये कथायें धार्मिक अनुष्ठान, पौराणिक, ऐतिहासिक, जासूसी, सामाजिक, घरेलू संस्कार व्रत, उपवास तथा देवी-देवताओं से सम्बन्धित होती है। अवधी भाषा में लोकनाट्य की भी परम्परा रही है, जिसके अन्तर्गत-रामलीला, नौटंकी स्वांग कठपुतली तथा कत्थक नृत्य आते हैं।

कत्थक नृत्य एक शास्त्रीय नृत्य है, किन्तु अवध में इसका विकृत रूप ''लोक नृत्य'' के रूप में प्रचलित है। यह नृत्य गीत प्रधान होता है, जिसके साथ-साथ, हाव-भाव में प्रदर्शित किया जाता है। इसके अतिरिक्त अवधी भाषा में पहेलियाँ, कहावतों तथा मुहावरों के भी दर्शन होते हैं।

अवधी-भाषा के अन्तर्गत उसके एक सशक्त पक्ष का उल्लेख अत्यावश्यक है-वह है अवधी की लोक कला। लोक-कलायें मानव-जाति की वो धरोहरें हैं, जो लाखों विपरीत हवाओं के बावजूद अपने अस्तित्व का दिया जलाये रहीं और आज भी अपना शाश्वत सौन्दर्य लेकर हमारे सामने हैं। लोक-कलाओं में एक निश्छल पवित्र मन का प्रतिबिम्ब होता है। किन अनजाने हाथों से इनकी परवरिश हुई, इनका संरक्षण होता रहा, यह कोई नहीं जानता है। हाँ, इतना अवश्य है कि ये जनमानस द्वार अविष्कृत हुई, आम आदमी द्वारा पोषित हुई और सदा सार्वभौमिक रूप में प्रस्तुत हुई। यही इनकी मूल संजीवनी है। इन कलाओं का कोई विशिष्ट विद्यालय नहीं रहा है और न इनको जानने वालों में विद्या, बुद्धि की प्रवीणता की कोई अपेक्षा रही है। ये लोक संस्कार किसी जाति, वर्ग अथवा आभिजात्य की सीमा में नहीं बंधते हैं। वे सभी लोक मानस में रचे बसे हैं। लोकाचार भारतीय परम्परा में वेदमार्ग के समानान्तर है, जीवन का अनिवार्य अंग है।

गोस्वामी जी ने कहा है - ''लोक वेद मंजुलदुइ कूला।''

अवध की लोक-कलाओं का इतिहास, धरती के धर्म की तरह प्राचीन है। आदि-कवि बाल्मीकि ने अयोध्या को धन वैभव से ही नहीं, कला सम्पन्नता की दृष्टि से भी ऐश्वर्यवान कहा है। महाकवि कालिदास ने ''रघुवंश'' के सोलहवें सर्ग में महाराजा कुश के समय में राजभवनों में चित्रांकित मनोरम दृश्यों का सजीव वर्णन किया है, जिनमें-उपवन सरोवर, जीव-जन्तु और मोहक नर-नारियों के सुन्दर भित्ति-चित्र बने होने की चर्चा है।

अवध में भित्ति-चित्रांकन की सहजतम अनुकृति ''ऐपन'' की थाप है, जो देवी पूज कर लौटने पर या फिर परछन के समय नववधू द्वारा दरवाजे के आरपार की जाती है। शादी-विवाह में मण्डप छाने के समय , जो पांच पुरुष स्तम्भ लगाते हैं, उन स्तम्भ पर यही ऐपन की थाप लगाई जाती है और फिर उन पाँचों लोगों की पीठ पर इसी पंजे का चिन्ह लगाया जाता है, जिसमें पाँचों देवताओं का अनुग्रह माना जाता है :

''सदा भवनी दाहिने, सम्मुख सिद्ध गणेश
पाँच देव रक्षा करे, ब्रह्मा विष्णु महेश।''

भित्ति-चित्रांकन की इस क्षेत्र में बड़ी विविधतायें हैं। असाढ़ी पर गोबर से असाढ़-असाढ़ी लिखे जाते हैं। नाग-पंचमी में ऐपन काजल से पाँच नाग या लिपटवां सापों के झुण्ड बनाये जाते हैं। रक्षाबंधन में चौके के आस-पास ''सनीनो''बनता है।

हर छठ में गोबर की पीठिका पर ऐपन, सिंदूर, काजल से मातृका बनती है, तो अहोई आठों में गेरु से मातृस्वरूप बनाई जाती है। करवा-चौथ पर तो अवध-क्षेत्र का सर्वश्रेष्ठ आलेखन ''गौरीबाग'' लिखा जाता है, जिसकी रंग-बिरंगी छटा देखते ही बनती है।

भित्ति-चिंत्राकन के पश्चात् ''धरा-अलंकरण'' का भी अत्यन्त महत्व है। अवध में धरा अलंकरण का मुख्य साधन पिसे चावल का ही ऐपन होता है, जिसमें सुनहरापन लाने के लिए हल्की हल्दी मिलाई जाती है। केवल कार्तिक मास की शरद चौकें बिना हल्दी के ऐपन से लिखी जाती हैं। बूँद, सतिया और समानान्तर लकीरों से प्रारम्भ होने वाली इन

चौकों में जो लयात्मकता मिलती है, वही इनकी विशेषता है। किसी मांगलिक अवसर पर खींची जाने वाली सतिया (स्वस्तिक) को आठ क्षेतिज दिशाओं की ओर संकेत करते सूर्य का संक्षिप्त संस्करण समझा जाता है।

अवध में नई नवेली बहुओं से आंगन में चौक रखाने की प्रचलित परम्परा और उसका नेग इस कला के प्रोत्साहन का प्रबल प्रमाण है। आमतौर से प्रचलित चौक चार कोने वाली पायेदार चौकी जैसी बनती है, जिसको अलंकृत कर दिया जाता है। दूसरा प्रसिद्ध नमूना सतियों में से समानान्तर लकीरें निकाल कर वलयाकार गिराने वाली ''सतिया पर की चौक'' है या फिर कंगन पर कंगन बिठाकर ''कोड़रा'' अर्थात् ''नाग-कुण्डली'' बना दी जाती है। जन्म के दिन तीज-त्यौहार या मांगलिक अवसर पर प्राय: यही चौके रखी जाती है।

इसके अतिरिक्त अवधी में मंगल सज्जा का भी विधान है। मांगलिक अवसरों को अधिक मनोहारी बनाने के लिये उपकरणों की सुन्दर सज्जा अवध के लोक-जीवन का विशेष अंग है। द्वार के वन्दनवार, सिर के मौर, डलवे, सूप और पंखों को तरह-तरह से सजाया जाता है। ब्याह का कलश बुआ गोठती है, जिन पर जौ लगाये जाते हैं और इसका नेग भी होता है। लड़के वाले गौरी-गौरा रच रच के बनाकर भेजते हैं। नाइनें बड़े कलात्मक ढंग से महावर पैरों पर चित्रित करती हैं।

लोक-कला की सबसे मधुर भूमिका यह है कि वे जाति-पाति, ऊँच-नीच, अमीरी-गरीबी की दीवारों को तोड़कर अपने सम्मोहन में सबको समान रूप से बांधे हुये हैं। ये सबको आपस में एक ही धरातल पर लाकर मिलाती है। जनजाति, ग्रामीण परिवेश, साधारण समाज, नागरिक परिवेश, अभिजात वर्ग-सर्वत्र इन आलेखनों का एक सा आदर है।

सारांश यह है कि अवध-भूमि मानव-मूल्यों, मानवीय उच्चादर्शों और सदाचार के अन्यतम प्रतिमानों की जननी है। इसका साहित्य विश्वमैत्री, विश्व प्रेम, विश्वशांति का संदेशवाहक है। आज समस्त विश्वशांति की स्थापना के लिये विकल है। गोस्वामी जी ने कहा है :-

सात दीप नवखंड लौं, तीनि लोक जग मांहि।
तुलसी सांति समान सुख, अपर दूसरो नांहि।।
महासांति जल परसि कै, सांत भये जन जोई।
अहं अगनि ते नही दहैं, कोटि करै जो कोइ।।

अत: हम कह सकते हैं कि अवधी का लोक साहित्य अत्यन्त समृद्ध है, जिस पर लोक साहित्य प्रेमियों तथा हिन्दी भाषियों को गर्व होना स्वाभाविक है।

- डॉ. प्रीति त्रिवेदी

(एसो. प्रोफेसर-हिन्दी)

अनाम वृक्ष की आत्मकथा

सृष्टि का अनमोल, सौन्दर्यशाली और मनमोहक पर्याय है – प्रकृति, जो सुरम्यता के साथ रहस्यात्मकता से ओत-प्रोत है। उसी की शान्त और आनन्द प्रदान करने वाली गोद के समकक्ष वह धरती जहाँ की सुगन्धित एवं निर्मल वायु के झकोरों में मैं झूमता था। प्रात:कालीन सूर्य की पहली किरण मुझे चूम कर जगाया करती थी। जहाँ की अमृततुल्य वर्षा बूँदों से मैं अपनी प्यास बुझाया करता था। वह सब कुछ आज मुझे बहुत याद आ रहा है। आप जानने को उत्सुक होंगे कि मैं कौन हूँ?

मैं 22-23 वर्ष का युवा वृक्ष हूँ जो अपनी मृत्यु को बहुत करीब से देख रहा है। मैं लोहाघाट से लगभग 11 (ग्यारह) किलोमीटर दूर 'तिलून' के पास टनकपुर-तवाघाट राष्ट्रीय राजमार्ग के निकट ही पैदा हुआ था। वह स्थल अपने अनुपम सौन्दर्य और शीतलता से सभी को आकर्षित करता है। मेरे अतिरिक्त अन्य देवदार के वृक्ष उस स्थल को सघन छाया देकर रीठा साहब, मुनस्यारी, पिथौरागढ़ आदि जाने वाले यात्रियों एवं पर्यटकों को वहाँ रूकने को विवश कर देते हैं। वाहनों की आवाजाही को कौतूहलता से देखता-देखता मैं कब अपना बचपन बिता कर युवावस्था तक आ पहुँचा। मुझे पता ही नहीं चला, बस एक बात पहले जैसी रही वह थी धूल उड़ाते वाहनों के ध्वनि की तीव्र आवाज जो हमें न चाहते हुए भी सुननी पड़ती थी।

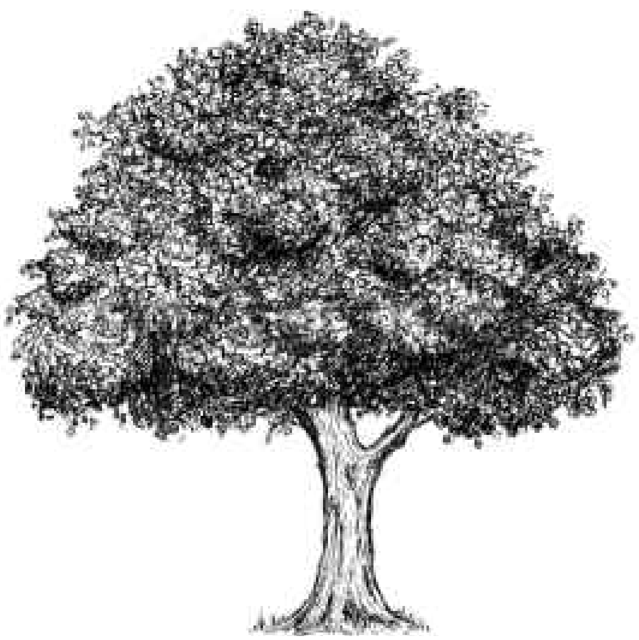

एक रोज जब वाहनों की आवाजाही कुछ अधिक ही तेज प्रतीत हो रही थी, उसके कारण मैंने अपना सारा ध्यान उनकी तरफ किया और देखा कि बहुत सारे वाहन मेरे निकट सड़क पर रूके जिनमें से कुछ लोग बाहर निकले। बच्चों की तरह सहमा-सहमा मैं उनकी गतिविधियों को अपने ध्यान का केन्द्र बिन्दु मान रहा था। उनमें से दो-तीन अगुवाई करते अपनी भाषा में कुछ वार्तालाप करते आगे बढ़ रहे थे। अन्य द्वारा हाथ में कुछ उपकरण लिए उनका अनुसरण किया जा रहा था। ऐसा प्रतीत हो रहा था कि वे सभी किसी विशेष उद्देश्य से वहाँ आये हैं।

उनमें से कुछ के पास सफेद चूना जैसा जो पदार्थ था वे उससे हमारे पास में रेखा-सी खींचते हुऐ आगे बढ़े जा रहे थे और वे मुझे तब तक ही दिखाई दिये जब तक कि मोड़ से ओझल न हो गये हों। मैं अपनी जड़ों से जुड़ा था। इस कारण उनके पीछे भी नहीं जा सकता था। जड़ों से जुड़ाव रखना सभी की पहली आवश्कता भी है और दायित्व भी। जड़ों से जुड़ाव रहित जीवन नदी की उस शाखा के समान है जो मुख्य नदी, जिसका एकमात्र लक्ष्य समुद्र से मिलन है उससे अलग होकर बहने के

प्रयास में बिखरकर समाप्त हो जाती है। अत: मैं भी अपनी मर्यादाओं में बँधा सबकुछ महसूस कर रहा था। कुछ अन्तराल के पश्चात् सभी व्यक्ति अपने–अपने वाहनों पर सवार होकर घुमावदार सड़कों पर आगे बढ़ चले थे। मैं यह सबकुछ 12 महीनों तक याद करके भयभीत रहा कुछ अनहोनी के लिए परन्तु यौवन के नव–उल्लास ने शीघ्र ही यह सब विस्मृत करा दिया था।

समय बीतता चला गया। 21 अक्टूबर 2017 की बात है एक दिन जनरेटर के साथ, हाथों में आरियाँ लिए 8–10 व्यक्ति मेरे निकट से गुजरे इससे पहले कि मैं कुछ समझ पाता एक व्यक्ति आरी के साथ मुझसे चार–पाँच फीट दूर खड़े उस प्रौढ़ वृक्ष की शाखाओं को काटने लगे, जहाँ कुछ महीने पहले आये व्यक्तियों द्वारा सफेद रेखा खींच दी गयी थी। यद्यपि वह रेखा आज तक मिट चुकी है पर फिर एक बार वह दृश्य मेरे आँखो के सम्मुख है जिसके कारण मैं भयभीत था। मुझे भली भाँति याद आ चुका है कि उस रेखा ने प्रौढ़ वृक्ष के साथ ही मुझे भी आबद्ध किया था।

शाखाओं के कटने से मूक चीत्कार करता वह वृक्ष अब तक मुझे याद है, मैं निकट ही खड़ा उसके बहते आँसुओं को लाचार दृष्टि से देखता रहा। देखते ही देखते वह विशाल वृक्ष सड़क के बीचों–बीच काट कर गिरा दिया गया था। वातावरण आश्चर्यचकित शान्ति से घिरा था, जिसमें कुछ महिलायें और पुरूष उस वृक्ष की बची हुई छोटी–छोटी शाखाओं को काटकर वैसे ही नोच रहे थे जैसे बाढ़ग्रस्त इलाके में बाँटी जा रहीं भोजन सामग्री, और कुछ जनरेटर द्वारा चालित आरी को बड़ी उत्सुकता के साथ देखकर कह रहे थे कि क्या तकनीकी है। पूरे दिन के काम को चन्द मिनटों में कर दिया इसने।

अब तक वह वृक्ष 8–9 गिल्टों (तनों के कटे भाग) का रूप ले चुका था। उसके दर्द को किसी ने महसूस नहीं किया। उसको तड़पता–छटपटाता किसी ने भी नहीं देखा। किसी को भी उस वृक्ष की साथ कोई सहानुभूति नहीं थी। सभी उस वृक्ष के भली–भाँति कटकर ढहने को लक्ष्य मान रहे थे। इसका कारण था टनकपुर–तवाघाट 'ऑल वेदर रोड़' का निर्माण।

इस क्षण मैं उन आरी लिये व्यक्तियों को अपने निकट आता देख रहा हूँ। वे मेरी मोटाई और ऊँचाई का जायजा लेते हुए मेरे ही निकट चले आ रहे हैं। मैंने अभी–अभी तो जीना सीखा, पक्षियों और पथिकों से नया परीचय पाया। वो पक्षियों का कलख, वो सूर्य की पहली कोमल किरण, वह सुगन्धित वायु का मृदुल स्पर्श, सब कुछ इस अन्तिम क्षण बहुत याद आ रहा है मुझको। परन्तु मैं तनिक भी भयभीत नहीं हूँ अपनी मृत्यु से। इस मृत्यु को भी आनन्द के साथ बिताये बाल्यावस्था से युवावस्था तक की मधुर यादों के रूप में स्वीकार करता हूँ। मैं तो केवल यह सोचता हूँ कि क्या मुझे भी कोई याद रखेगा?............अवश्य! शायद वही जो मुझे टुकड़ों में बँटता देखे। मेरी शाखाओं को झपटते स्त्री–पुरुषों को देखे, और प्रसन्नचित उन आरी लिए व्यक्तियों को देखे जो मेरे ढहने को अपनी सफलता मान रहे हों। वे सभी अब थककर निकट ही बैठे हैं। आराम करने के लिए, नवीन ऊर्जा प्राप्त करने के लिए जो उसी वृक्ष को काटने के लिए संचित की जा रही है, जिसकी छाँव तले वे सभी बैठे हैं।

– डॉ. दुर्गा तिवारी

(प्रवक्ता–हिन्दी)

कुमाऊँ के देव विषयक् मान्यताओं एवं धार्मिक सम्प्रदायों का आलोचनात्मक अध्ययन

उत्तराखण्ड राज्य के कुमाऊँ अँचल की धार्मिक सामाजिक एवं सांस्कृतिक परम्पराओं के सन्दर्भ में कहा जा सकता है कि स्कन्ध पुराण में वर्णित मानस खण्ड के नाम से गौरवान्वित भारत राष्ट्र का यह मध्य-हिमालयी भू-भाग जिसमें अनादि काल से ही यहाँ के मूल निवासी के रूप में यक्ष, गन्धर्व, किन्नर, कोल-किरात आदि जातियों के अतिरिक्त समय-समय पर अन्यान्य प्रजितियो, धर्मों, सम्प्रदायों एवं संस्कृतियों से सम्बद्धित मानव समूहों को अपने प्राकृतिक सौन्दर्य, समृद्ध वनस्पति, जैव-विविधता, स्वच्छ एवं शान्त वातावरण के कारण अपनी ओर आकर्षित करता रहा है। फलत: भारतीय उपमहाद्वीप एवं मध्य एशिया के विभिन्न क्षेत्रों में अंकुरित एवं पोषित कोई ऐसी धार्मिक एवं सांस्कृतिक विधा नहीं जिसके तत्व यहाँ पर न पाये जाते हों। मध्य भारत में हुए विदेशी आक्रान्ताओं के आक्रमणों ने भी विभिन्न जातियों एवं धर्मों को मानने वाले समूहों एवं समुदायों को हिमालय तथा मानसरोवर की शरण में आने को मजबूर किया था इतिहास ऐसे उदाहरणों से भरा पड़ा है। पिथौरागढ़ जिले के अस्कोट (रजवार राज्य) विशेषत: मानसरोवर कैलाश यात्रा मार्ग में निवास करने वाली जातियाँ का मूल निवास कभी मध्य भारत रहा है, रहते आ रहे हैं। पन्त, पाण्डे तथा जोशी जैसे प्रतिष्ठित कुमाऊँनी ब्राहमण परिवार भी यहाँ मध्य भारत में आकर बसे हैं।

चमत्कार को नमस्कार कहावत प्रसिद्ध है। प्रकृति की गोद में पलने वाला भोला-भाला मानव जब किसी अद्‌भुत या चमत्कार पूर्ण दृश्य या शक्ति को देखता है तो वह उसकी अलौकिकता से अभिभूत होकर उसे दिव्यत्व का स्थान दे देता है तथा उससे सम्भाव्य हानि या लाभ की भावना से प्रभावित होकर उसके चमत्कारी, मंगलामंगल कर सकने में समर्थ शक्ति के समक्ष नतमस्तक हो जाता है। यही है देव विषयक् भावनाओं एवं मान्यताओं के मूल में अन्तर्निहित मानव मन को दौर्बल्य अर्थात् मानव मन का डर। प्रत्येक सचेतन प्राणी के समान ही मानव भी संकट से बचे रहने के साथ-साथ सुख एवं सुरक्षा प्राप्त करने की कामना करता है। फलत: किसी भी दिव्य शक्ति की संकल्पना चाहे वह भयभीत करने वाली हो या सुख समृद्धि प्रदान करने वाली, दुर्बल मानव की पूजा-प्रतिष्ठा का आधार बन जाती है और जो मनुष्य एक बार इस प्रभाव के अन्तर्गत आ गया फिर वह तो क्या उसकी आने वाली सन्तानें भी कभी उससे मुक्त नहीं हो सकती। देववाद अर्थात् देव विषयक् मान्यताओं की यह कहानी सृष्टि के आरम्भ से आज तक बराबर इसी रूप में चली आ रही है। इसके दृश्यमान रूप भले ही भिन्न-भिन्न हों, पर इसके पीछे कार्यशील भावना एक ही है। कुमाऊँ अंचल का समाज आर्य प्रधान समाज है यहाँ देवी या देवता का आशय वह नहीं है, जो भारत वर्ष के अन्य अँचलों में हुआ करता है यहाँ वैदिक तथा पौराणिक देवी-देवता भी लोक देवता के रूप में पूजे जाते हैं इनका क्षेत्रगत स्वरूप, प्रभाव क्षेत्र होने के साथ-साथ परम्परागत इतिहास एवं पूजा पद्धतियाँ भी होती हैं। प्रत्येक जाति, गाँव तथा परिवार के अपने निजी देवी-देवता होते हैं जो यहाँ के लोक जीवन तथा सांस्कृतिक गतिविधियों के अभिन्न अंग होते हैं और इन्हीं देवी-देवताओं के संकेतानुसार संचालित होता है। यहाँ के निवासियों का व्यक्तिगत एवं सामाजिक जीवन-कुमाऊँ अँचल में वैदिक एवं पौराणिक देवी-देवताओं का स्थान स्थानीय अल्प मृत्यु प्राप्त (अब भूत-भूत्यड़ि) रूप में पूजे जाने वाले के समक्ष गौण हो जाता है। क्योंकि इस क्षेत्र की मान्यता है कि वैदिक एवं पौराणिक देवी-देवता श्रद्धा के साथ कर्मकाण्ड के अवसर में पूजे जाने के लिए होते हैं। यहाँ के निवासियों को यह भी मालूम है कि ये वैदिक एवं पौराणिक देवता न तो उपेक्षा किए जाने पर उन्हें किसी दु:ख, संकट या विपत्ति में डाल सकते हैं और न उनका बहुत बड़ा कल्याण ही कर सकते हैं। जबकि स्थानीय देवता ये दोनों ही कार्य करने का भरपूर सामर्थ्य रखते हैं और उनकी अवहेलना करने अथवा उनकी

नियमित पूजा एवं आराधना न करने का अर्थ है अपने दोपाये (मनुष्य) चौपाये (पशु) धन-धान्य आदि के लिए महान विपत्ति को अथवा अपने सर्वनाश को आमंत्रित करना क्योंकि यहाँ के जनमानस की संकल्पना के अनुसार ये लोकदेवता जहाँ एक ओर क्रुद्ध होने पर अनेक प्रकार की पीड़ाओं, दु:खों एवं पीड़ाओं का निवारण करने की आलौकिक शक्ति होती है। इसलिए देखा गया है कि कुमाऊँ क्षेत्र की सरल एवं भोली-भाली जनता वैदिक एवं पौराणिक देवताओं को प्रसन्न करने के लिए आगमों, तंत्रों एवं पूजा पद्धतियों में विहित अनुष्ठानों के पचड़ों में न पड़कर अपने ईष्ट देवता से अपनी वाणी में साक्षात् रूप से अपनी कथा-व्यथा एवं अनुरोध व्यक्त करने में विश्वास करते हैं। अपने ईष्ट देव की प्रसन्नता के लिए ऋतुचक्र के अनुसार उत्पन्न होने वाले फूल, फल एवं अन्न चढ़ाकर अपनी भाषा-बोली में अनुनय-विनय एवं स्तुतिगान कर आराधना करने में विश्वास करते हैं अपने देवता से प्रत्येक स्थिति में अपनी छत्र-छाया एवं अनुग्रह बनाए रखने के लिए विनती करते हैं। मृत्यु टालने के लिए महामृत्युंजय मंत्र का जाप करने के स्थान पर डंगरिये में अपने आराध्य देवता को अवतरित कराकर बभूत (चुटकी) का चमत्कार की प्रत्याशा हो अथवा कैंसर के मरीज का जागरी अथवा दिशा-भाग की पूजा से ठीक हो जाना जिसके आगे आज का मेडिकल साइंस भी घुटने टेकता नजर आता है। न्याय के देवता गोल्ल से गुहार हो या कोटगाड़ी माई के दरवार में घात या धात, धामदेव अथवा विरमदेव की याद हो या छूरीमल, भागीमल, नागीमल, कटारीमल, कालसिड़, हरू, सैम, कलबिष्ट अथवा गंगनाथ का स्मरण अथवा असौज के महीने में भूत बाधा, प्रेतबाधा मड़-मसांण से मुक्ति के लिए बकरी तथा मुर्गे की बलि, लोक देवताओं को प्रसन्न करने के लिए तथा महिष मर्दिनी की कृपा पाने के लिए अष्टबलि(अठवार) का प्रचलन, ये सब उपक्रम इस अँचल में निवास करने वालों के लोक-जीवन एवं लोक-व्यवहार के अंग है। इतना ही नहीं यहाँ के निवासियों के लिए तो प्रकृति का प्रत्येक रूप पूज्यनीय है। हिमालय की प्रत्येक श्रृंखला देवता है, देवी है। नदियाँ, तालाब, वृक्ष, गुहा, जलस्रोत जीव-जन्तु सिंह, बानर, नाग, काक, यक्ष, ऑछरी-चॉचरी, भूत-प्रेत सभी यहाँ आराधनीय है। इन सभी को प्रसन्न करने के लिए यहाँ के निवासी विशेष अवसरों पर उनकी भेंट पूजा के आयोजन करते रहते हैं तथा स्थानीय भाषा में इनकी आराधना भी करते हैं तथा स्थानीय वस्तुओं से पूजन भी। इनकी पूजा विधि का रूप भी अधिकतर उनकी अपनी स्थानीय आस्थाओं व स्थानीय परम्पराओं पर आधारित होता है।

यहाँ की प्रकृति के कण-कण में विद्यमाल देवी-देवताओं के अतिरिक्त प्रत्येक ग्राम, समुदाय या परिवार का कोई न कोई अपना ईष्ट-देवता या कुलदेवता भी होता है। इनके प्रति यहाँ के निवासियों की ऐसी अटूट आस्था होती है कि वह अपने पर आये सभी प्रकार के कष्टों के निवारणार्थ अपने क्षेत्र से दूरस्थ प्रदेशों में कार्यरत रहने पर भी समय-समय पर सपरिवार अपने गाँव-क्षेत्र में आकर एकल अथवा सामुहिक रूप से अपने कुल पूज्य अथवा ग्राम पूज्य देवी-देवता की भेंट पूजा करते हैं तथा प्रत्येक प्रकार के संकट से अपने परिवार की रक्षा के लिए प्रार्थना करते हैं और आगे बहुत कुछ पाने की लालसा में बिट बाँधते हैं, मनौतियाँ भी करते हैं। निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि कुमाऊँ के निवासी विपत्तियों से छुटकारा तथा सुख-समृद्धि के लिए अथवा किसी चमत्कार की प्रत्याशा में सीधा एवं सरल मार्ग पकड़कर देव पूजन, अर्चन एवं वन्दन करते हैं अर्थात् कुमाऊँनी अनादि काल से भी धर्मभीर व प्रकृति उपासक रहे हैं। यहाँ का प्रत्येक स्थल नदी, घाटी, पर्वत किसी न किसी देवता से सम्बन्धित माना जाता है। हिमालय का इसके धर्म में विशेष स्थान है। चार्ल्स, शेरिंग ने अपनी पुस्तक में लिखा है कि ''हिन्दू के लिए हिमालय का वही महत्व है जो एक ईसाई के लिए फिलिस्तीन का'' यहाँ के निवासी मुख्य रूप से शैव शाक्त हैं, वैष्णव अपेक्षाकृत कम हैं। यहाँ के निवासी स्थानीय देवी-देवताओं को अपना सर्वस्व मानते हैं, कुमाऊँ अँचल में लगभग बड़े मन्दिर बताए जाते हैं जिनमें से लगभग 35 मन्दिर वैष्णव तथा 60 मन्दिर शैव तथा शक्ति के माने जाते हैं। यहाँ विष्णु तथा कृष्ण के मन्दिर भी हैं, फिर भी यहाँ के निवासी स्थानीय देवी-देवताओं को अधिक मानते हैं, जिन्हें कुल देवता अथवा ग्राम देवता या स्थान देवता कहा जाता है। असामयिक एवं अप्राकृतिक मृत्यु को प्राप्त हुए लोग अपनी

इच्छाओं की पूर्ति हेतु यहाँ अवतरित होते हैं, उनकी इच्छित वस्तुओं को उन्हें समर्पित कर देवता के रूप में उनकी स्थापना कर दी जाती है। इन लोक देवताओं को डंगरिये/जगरिये (विशेष गायक) किसी भी व्यक्ति के शरीर में अवतरित करा देने की शक्ति रखते हैं, तथा वे इस शैली के विशेष जानकार भी होते हैं, यह ज्ञान भी परम्परागत रूप में पीढ़ियों तक चलता रहता है। इन्हें जगरिया, गुरु अथवा धामी नामों से जाना जाता है। ये जगरिये, डङरिये लोक देवता को सामने बुलाने तथा चिपटे हुए भूत-प्रेत मड़-मसॉण को दूर भगाने की ताकत भी रखते हैं। इस धार्मिक प्रवृत्ति ने यहाँ की लोक संस्कृति को इतना प्रभावित किया है कि यहाँ जागर, गीतों की एक विशिष्ट गीत-शैली का प्रादुर्भाव हुआ है। हरू, सैम, ऐड़ी, ग्वाल्ल, गंगनाथ, भोलानाथ, छुरमल, कलबिष्ट, चौमूँ, भूमियाँ आदि देवता गाँव-गाँव में पूजे जाते हैं। रुष्ट होने पर ये देवता अनिष्ट भी कर डालते हैं। इसलिए समय-समय पर जागर लगाकर प्रत्येक मंगल कार्य में पूजन कर इनका स्मरण किया जाता है, हैरानी की बात यह भी है कि इस अँचल में लोक देवता की तरह लोक देवियों का अवतरण कम हुआ है। इतना ही नहीं विभिन्न धार्मिक अन्ध विश्वासों में जकड़े हुए कुमाउनी दिशा-शूलों को बचाकर यात्रा करना पसन्द करते हैं। घर से बाहर जाते हुए तिलक लगाकर, दही खाकर यात्रा प्रारम्भ करना शुभ मानते हैं। टोने-टोटके, झाड़-फूँक, पशु-बलि, भूत-प्रेतों से सम्बन्धित, लोक व्यवहार से सम्बन्धित लोक विश्वास भी इस क्षेत्र विशेष की अपनी थाती है।

कुमाऊँ अँचल में वैदिक देवता सूर्य की उपासना अनादि काल से ही की जाती आ रही है। शीत प्रधान प्रदेश होने के कारण ऊष्मा एवं ऊर्जा के अप्रतिम स्रोत भगवान भाष्कर की महत्ता को सम्भवत: यहाँ के आदि मानवों ने स्वीकारा होगा और आदित्यालयों का निर्माण किया होगा तथा पूजा अर्चना प्रारम्भ की होगी कालान्तर में यहाँ की लोक संस्कृति के समस्त कार्य-कलाप सूर्य के संक्रमण चक्र से जुड़ गये। यही कारण रहा होगा कि यहाँ के सभी पर्वों तथा लोकोत्सवों का आधार सौर संक्रान्तियाँ हैं। मास एवं तिथि जिसे पैट (प्रविष्टे) कहते हैं, की गणना सौरमास के अनुसार की जाती है, यही कारण रहा होगा कि यहाँ के अनपढ़ से अनपढ़ ग्रामीण को भी सौरमास का, सौर संक्रांतियों का तथा उसके गते (विगते) अथवा पैट का पूरा ज्ञान रहता है। वह अपने सम्पूर्ण कृषि कार्यों, मांगलिक कार्यों व लोकोत्सवों का निर्धारण सूर्य की गति चक्रों के आधार पर किया करता है। इसीलिए यहाँ के अधिकतम सांस्कृतिक उत्सवों का आयोजन उन्हीं के आधार पर किया जाता आ रहा है। सूर्य के प्रति आस्था रखने वाले कुमाउनी आज भी प्रत्येक रविवार को अथवा पौष मास के रविवारों को सूर्य के निमित्त व्रत रखते हैं तथा सूर्यास्त से पूर्व एक बार लवण रहित भोजन करते हैं। कुमाऊँ अँचल में सूर्य प्रतिमाओं की संख्या 63 बताई जाती है, कटामल बड़ादित्य, गुणादित्य, मढ़/मण गांव का बड़ादित्यालय, वमन सुयाल के 16 मन्दिरों का समूह, बयाला की सूर्य प्रतिमा, पावनेश्वर का आदित्यालय, चंपावत का आदित्य महादेव, चौपाता का आदित्यालय एवं आदित्य प्रतिमा के साथ-साथ कुमाऊँ अँचल में स्थित बड़े मन्दिरों में सूर्य की सुन्दर प्रतिमाऐं स्थापित है। डॉ. डी.डी. शर्मा ने लिखा है कि ''बैजनाथ के मंदिर के भण्डार गृह में जो मूर्तियाँ संग्रहीत हैं उनमें से दो सप्ताश्वरथी हैं, तथा दो उदीच्यवेषी (कपुषधारी) पिथौरागढ़ जनपद में घुंसेरा, मोस्टा, बकौड़ा, मैठाणा, पुंगेश्वर (बेरीनाग से 3 किमी.) अल्मोड़ा जनपद में महारूद्रेश्वर (अल्मोड़ा शहर से 8 किमी खूँट गाँव में), बागेश्वर (स्थानक मुद्रा में)। कुमाऊँ में सबसे अधिक सूर्य प्रतिमाएँ जिनकी संख्या 8 है, जागेश्वर में पायी गयी हैं, यहाँ पर सूर्य को समर्पित एक देवालय, 3 सूर्यतीर्थ तथा 1 सूर्यकुण्ड है। मानस खण्ड के अनुसार इस सम्पूर्ण क्षेत्र में 10 सूर्य तीर्थों, 3 सूर्य कुंडों तथा 2 द्वादशकों के मन्दिर का विवरण पाया जाता है, इनके अतिरिक्त द्वाराहाट (बदरीनाथ मन्दिर) पाताल भुवनेश्वर, बेलार (गंगोली) पभई (गंगोली) रमक (काली कुमाऊँ) नैनी (लखनपुर) आदि देवस्थलों में भी पार्श्व देवता के रूप में सूर्य की उभय विध मूर्तियों का उत्कीर्णन पाया जाता है। वैजनाथ की उदीच्यवेषी अर्थात् कुषाण चोगा तथा ऊँचे बूट पहने सूर्य की प्रतिमा संभवत: कुमाऊँ की सबसे प्राचीन सूर्य प्रतिमा है'' जबकि डॉ. मठपाल खेतीखान (लोहाघाट से 16 किमी पूर्व में स्थित) सूर्य की भग्न मूर्ति को सम्भवत: कुमाऊँ की सबसे प्राचीन प्रतिमा मानते हैं। पहले ही बताया जा चुका है कि धार्मिक सम्प्रदायों की दृष्टि से कुमाऊँ ही नहीं अपितु सम्पूर्ण हिमालयी क्षेत्रों के

जन–मानस पर जिनका गहनतम और व्यापक प्रभाव रहा है वे हैं, शैव और शाक्त सम्प्रदाय, इतिहासकार बद्रीदत्त पाण्डे महोदय के अनुसार आज से 60 वर्ष पूर्व कुमाऊँ क्षेत्र में 250 शैव मन्दिर थे। कुमाऊँ अँचल में शिव मन्दिर ईश्वर (स्वर) नाथ और केदार के साथ भैरव और विनायक (नामान्तक) हैं जैसे –

जागनाथ (जागेश्वर) पीनाथ/पिनाकनाथ (पिनाकेश्वर) बागनाथ (बागेश्वर) विभॉडेश्वर, कैलाशेश्वर, रूद्रेश्वर, तारकेश्वर, कल्पेश्वर, ओंकारेश्वर के साथ–साथ गणनाथ, केदारनाथ , कल्पनाथ, तुंगनाथ आदि कुमाऊँ मण्डल में मन्दिर निर्माताओं के नामों पर आधारित देवालयों की संख्या अल्मोड़ा जनपद मुख्यालय के आस–पास सर्वाधिक पायी जाती है। यथा – भीष्मेश्वर निर्माता राजा भीष्मचन्द, उद्योतचन्द्रेश्वर (राजा उद्योत चन्द), दीप चन्द्रेश्वर (राजा दीप चन्द), कषायेश्वर, रूद्रेश्वर (कसार देवी में), तुला रामेश्वर (तुलाराम), बद्रेश्वर (बद्रीदत्त जोशी), पार्वतीश्वर (राजा उद्योतचन्द्र द्वारा अपनी प्रेयसी पार्वती के नाम पर), तुनेश्वर (तुन के वृक्षों की अधिकता के कारण), कमलेश्वर, बलभद्रेश्वर, चिंतेश्वर, बेतालेश्वर, विश्वेस्वर, पातालेश्वर, कंकालेश्वर, धूमेश्वर, डंडेश्वर, कोटेश्वर, जटेश्वर, बटेश्वर, कालेश्वर, अम्बिकेश्वर, सोमेश्वर, बिल्वेश्वर, चिल्लेश्वर, श्री नाथेश्वर, महाकालेश्वर, त्रिनेत्रेश्वर, पिनाकेश्वर, त्रिमुखेश्वर, चक्रेश्वर, पावनेश्वर, खड्गेश्वर, लटेश्वर, रामेश्वर, नकुलेश्वर, कोकर्टेश्वर, पाताल भुवनेश्वर, हंसेश्वर, घ्वजेश्वर, आनुरेश्वर, घंटेश्वर, बालेश्वर, पुंगेश्वर, सुग्रीवेश्वर, दीप्तेश्वर, पंचेश्वर, भीमेश्वर, चित्रेश्वर, गर्गेश्वर, कर्कोटेश्वर, कुमारेश्वर, सीतेश्वर, मुक्तेश्वर, भूतेश्वर, पिप्लेश्वर, मिल्लेश्वर, नागेश्वर, क्यूँकालेश्वर, नर्मदेश्वर, वीरणेश्वर, सिलेश्वर आदि नाम के शिवालयों के पीछे शिव से जुड़ी कोई न कोई जन–धारणा है।

शैव सम्प्रदाय का अन्यतम उप सम्प्रदाय नाथ पंथियों का है कुमाऊँ अंचल में स्थित नाथान्तक शिव देवालयों में बागनाथ, बद्रीनाथ, केदारनाथ तथा पशुपतिनाथ के उपमन्दिर स्थित है। नागनाथ, गंगनाथ और सत्यनाथ के मन्दिर भी शैव उपासना के स्थल माने जाते हैं।

उपरोक्त के अलावा कुमाऊँ मण्डल में शैव सम्प्रदाय के थलकेदार, भिल्लकेदार, बृद्धकेदार, छिपुला केदार, ध्वज केदार के साथ–साथ उद्यान महारूद्र, नीलकंठ, मृत्यंजय, कालजित्, कर्मजित और भागलिंग के नाम से भी पूजा उपासना करने की परम्परा है और इन नामों से भव्य शिवालय भी अस्तित्व में हैं, यहाँ के मन्दिरों में शैव देवकुल के अन्तर्गत शिव के साथ उनकी पत्नी पार्वती पुत्र गणेश तथा कार्तिकेय विराजमान हैं। भैरव को कहीं शिव का गण माना जाता है तो कहीं साक्षात शिव, काल भैरव सहित अल्मोड़ा नगर में ही विभिन्न नामों के साथ 8 मन्दिर भैरव के स्थित हैं।

गणेश एवं कार्तिकेय की पूजा को कुमाऊँ अंचल में शैव उपासना के अन्तर्गत ही मान्यता प्राप्त है। यही कारण रहा होगा कि यहाँ के देवालयों में गणेश एवं कार्तिकेय की भव्य मूर्तियाँ उत्कीर्ण है। कुमाऊँ अंचल में शाक्त सम्प्रदाय में शक्ति पीठों तथा सिद्धपीठों का बड़ा महत्वपूर्ण स्थान है। इस अंचल में भी शक्तिपीठों की संकल्पना का आधार वर पौराणिक गाथा है जिसमें कहा गया है कि पति का अपमान सहन न कर सकने पर सती ने पिता दक्ष प्रजापति के यज्ञ कुंड में आत्मदाह कर डाला था। इस घटना से विक्षुब्ध शिव सती के दग्ध शरीर को कंधे में लेकर चल पड़े। इस प्रक्रिया में जहाँ–जहाँ सती के विभिन्न शरीरांगों का पतन हुआ था, वहाँ–वहाँ शक्तिपीठों की स्थापना की गयी। शाक्तों के दो प्रधान सम्प्रदाय माने जाते हैं। श्री विद्या एवं कौल सम्प्रदाय, ज्ञानावर्णवतंत्र में 50 शक्तिपीठों की उग्र तथा शान्त रूपों में पूजा अर्चना करने की परम्परा अनादि काल से ही चली आ रही है। कभी यहाँ के देवी मन्दिरों में नरबलि चढ़ाने का भी प्रचलन रहा होगा, इस क्षेत्र में मान्यता है कि कभी यहाँ आराधकों द्वारा चंडी, काली तथा महाकाली को प्रसन्न करने के लिए नरबलि दी जाती थी अथवा तांत्रिकों द्वारा सिद्धि प्राप्त करने के उद्देश्य से नरबलि देने का प्रचलन था। अट्किंसन ने भी लिखा है कि पुण्यागिरी, रणचूला एवं हाट कालिका में देवी को मानव बलि दी जाती थी। आदि

शंकराचार्य ने देवी के उग्र रूप को कीलित कर शान्त किया, तब से नरबलि के स्थान पर प्रतीकात्मक रूप में पशुबलि का प्रचलन हुआ।

कुमाऊँ अंचल में देवी के इतने नामों से मन्दिर बने हैं और पूजा उपासना की जाती है, जितने नामों का उल्लेख दुर्गा सप्तसती में भी नहीं हुआ है, यथा चम्पा चम्पावती देवी, झूमादेवी, हिंगलादेवी, खिलपिती देवी, कोटवी देवी, हिडिम्बा/हिंगला देवी, झाली माली देवी, कोटगाड़ी/कोटगढ़ी देवी, उल्का देवी, उज्यारी देवी, अन्यारी देवी, इग्यारीदेवी, घडदेवी/गढ़देवी, गुडेली देवी, रंभा देवी, रणचूला देवी, कोकिला देवी, कठपुड़िया/कठपतिया देवी, मल्लिका देवी, जाखन देवी, नैथणा देवी, शीतलादेवी, स्वाही देवी, बाराही देवी, हाट कालिका, भीमादेवी, कोट भ्रामरी, नन्दा देवी, पार्वती देवी, गिरिजा (गर्जिया देवी), ज्वाला देवी, कामाख्या देवी, पुष्टि देवी, जयन्ती देवी, अम्बिका देवी, राज राजेश्वरी, दुर्गा, उमा, भ्रामरी, भगवती, काली/महाकाली, उग्रतारिणी/नारसिंही, उल्का, उग्रारी, भद्रकाली, चंडी/चंडिका, गौरी देवी, मनसा देवी, वैष्णवी देवी, नैना देवी, त्रिपुरासुन्दरी देवी, महिषासुर मर्दिनी देवी, कात्यायनी देवी, नारायणी देवी, कंस मर्दिनी देवी, सीता देवी, पूर्णागिरी, श्यामला देवी, अखिलतारिणी देवी, हरद्यों की नन्दा देवी, ऑकोट की देवी, आदि-आदि। नरबलि जैसी वीभत्स परम्परा के उपरान्त अहंकारी भक्त द्वारा देवी को प्रसन्न करने के लिए अष्टबलि। महिष बलि दिया जाना कुमाऊँ अँचल में शक्ति (शाक्त) उपासना का एक दु:खद अध्याय रहा है। जिसमें अब धीरे-धीरे कमी आती दिख रही है, प्रयास चाहे व्यक्तिगत हो अथवा संस्थागत या सरकारी इस प्रथा का शीघ्रातिशीघ्र अन्त होना ही चाहिए। शाक्त सम्प्रदाय की एक शाखा मातृका पूजन अथवा षोडस मातृका-पट्टिकाओं के पूजन की भी रही है। कुमाऊँ अँचल में देवी के कतिपय मन्दिरों की प्रतिमाएँ दिग्वसना है। जगत जननी के इस रूप के दर्शन नग्न आँखों से नहीं होने चाहिए, यह तथ्य समझ में आता है, किन्तु देवी के मन्दिरों में स्त्रियों का प्रवेश निषिद्ध क्यों ? वर्जित क्यों ? यह तथ्य मेरी समझ से परे है। डीडीहाट में स्थित ऑकोट देवी के मन्दिर में भी स्त्रियों का प्रवेश वर्जित है। निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि शिव और शक्ति का सम्बन्ध जितना अन्योन्याश्रित है, उतना ही कुमाऊँ अँचल में उनकी आराधना, उपासना एवं पूजा भी।

- डॉ. जी.सी. पन्त (एसोसिएट प्रोफेसर-हिन्दी)

उत्तराखण्ड के लोक नृत्य

लोकनृत्य प्रकृति की अनोखी देन है। जिस भू-भाग की जैसी प्राकृतिक छटा है, वहाँ का लोकनृत्य भी उसी के अनुरूप है। उत्तराखण्ड दैवीय स्थलों और प्रकृति की अनंत धरोहर से सम्पन्न है, जोकि यहाँ की लोक-संस्कृति में भी प्रतिफलित है। यहाँ के उत्सवों और धार्मिक समारोहों में प्रचलित प्रमुख लोक नृत्यों का विवरण इस प्रकार है -

(1) **सयना लोकनृत्य** - यह लोकनृत्य अत्यन्त मनोहारी एवं मुग्धकारी नृत्य है। इसका प्रचलन मुख्यत: जौनसार-भाबर अंचल में है। प्रतिवर्ष दीपावली के अवसर पर यह विशेष रूप से किया जाता है। क्योंकि यह प्रसन्नता की अभिव्यक्ति है और मनोरंजन का माध्यम है। अत: जब तीज-त्यौहार या खुशी के अवसर पर नाते-रिश्तेदार एकत्र होते हैं, तब आपस में आत्मीय भेंट करते हैं। ऐसे ही अवसरों पर सयना लोकनृत्य का आयोजन किया जाता है। ऐसा प्रतीत होता है कि, ग्रामवासियों की खुशी इस लोकनृत्य में सिमट जाती है। इस अंचल में यह एक प्राचीन सांस्कृतिक परम्परा है। सयना लोकनृत्य में नर्तक परस्पर मिलन के ऐसे ही हाव-भाव व्यक्त करते हैं। इस नृत्य में स्त्री-पुरुष दोनों ही सम्मिलित होते हैं। नृत्य करते समय महिलाओं के बांये हाथ की उंगली में थाली होती है तथा दांया हाथ स्वतंत्र और मुक्त होता है, जिससे वे भाव-भंगिमाऐं प्रदर्शित करती है। पुरुष स्त्रियों के आस-पास हाव-भाव के साथ नृत्य करते हैं। नृत्य कभी घेरे में कभी अर्ध घेरे में तथा कभी स्वतंत्र रूप से छिटककर होता है। वास्तव में यह लोकनृत्य गीत प्रधान है। इस लोकनृत्य के साथ्ज्ञ जो लोकगीत गाए जाते हैं,वे श्रृंगारिक होते हैं, जिससे जनमानस का रूझान इस नृत्य के प्रति सर्वाधिक होता है। उदाहरण स्वरूप एक लोकगीत में भाव इस प्रकार व्यक्त किया गया है कि, ''विवाहित युवतियाँ ससुराल चली गई हैं, अब उनके परिवारजन स्नेहीजन उनके वियोग में व्याकुल हो रहे हैं।'' इस लोकनृत्य की वेशभूषा में अंचल के रोजमर्रा के उपयोग में आने वाले परिधान ही होते हैं जो सादे और सरल होते हैं। महिलाऐं रंगीन, चुन्नटदार घाघरा और पूरी आस्तीन का बेलबूटेदार रेशमी जम्फर पहनती है। कमर में पटका बाँधती है और सिर में दुपट्टा लेती है। पुरुष चूड़ीदार सफेद पायजामा, सफेद कुर्ता और सिर में टोपी पहनते हैं। इस लोकनृत्य में ढोल, भोंपू और शहनाई बजाई जाती है।

(2) **पांडव लोकनृत्य** - पांडव लोकनृत्य उत्तरांचल के टिहरी गढ़वाल जिले का सर्वाधिक लोकप्रिय नृत्य है। यह नृत्य प्राय: फसल कटने के उपरान्त होता है। इस समय कृषक और खेहिहार वर्ग खेती के काम से निवृत्त हो जाता है। परिश्रम से पैदा की गई फसलों को देखकर जन-मानस के मन में उमंग उठती है। उनकी यही उमंग साकार होकर पांडव लोकनृत्य का आकर्षक रूप धारण कर गाँव-गाँव में अभिव्यक्त होती है। अच्छी फसल आने की खुशी में अपने देवता का आभा भी इसी नृत्य के द्वारा प्रदर्शित किया जाता है। ऐसी ही पवित्र भावनाओं के साथ इस लोकनृत्य का आयोजन होता है। इस लोकनृत्य की पृष्ठभूमि में लोगों का विश्वास है देवता प्रसन्न होकर गाँव में सुख-शान्ति के लिए आशीर्वाद देते हैं। बीमारियों को दूर कर रोगियों को अच्छा करते हैं। वे पापियों पर कृपा कर उन्हें क्षमादान देते हैं। यह मनोभावनाएँ जन-जन के हृदय में विद्यमान रहती है और लोकनृत्य के माध्यम से प्रकट होती है। पांडव लोकनृत्य देवता की प्रसन्नता और कृपा कर प्रतीक है। जब यह नृत्य अति द्रुत लय-ताल में होता है तब कतिपय वरिष्ठ लोक-नर्तकों पर देवता की भावनात्मक छाया आ जाती है। इस समय यह लोगों की समस्याओं का निराकरण भी करते हैं। इस नृत्य में दोनों हाथ कमर में रखकर स्त्री-पुरुष अर्ध घेरे में नाचते हैं। पुरुष चोली (गढ़वाली शेरवानी) और चूड़ीदार पायजामा पहनते हैं। कमर में पटका बाँधते हैं। सिर में टोपी और गले में माला धारण करते

हैं। स्त्रियाँ अंगड़ा (गढ़वाली जम्फर) और चुन्नटदार लहंगा पहनती है। इनके अंग भारी आभूषणों से शोभायमान रहते हैं। ढोल, नगाड़ा, रणसिंघ, किपली और झांझ का वादन होता है।

(3) छोलिया लोकनृत्य – उत्तराखण्ड राज्य के कुमाऊँ क्षेत्र का प्रचलित लोकनृत्य है छोलिया। यह यह विशेषकर विवाह एवं अन्य शुभ अवसरों पर किया जाने वाला तलवार नृत्य है। इस नृत्य में नर्तक युद्ध जैसे संगीत की धुन पर क्रमबद्ध रूप से तलवार व ढाल को चलाते हैं, जोकि कृत्रिम लड़ाई का आभास देता है। उनके पास त्रिकोणीय लाल झण्डा (निसाण) भी रहता है। छोलिया को शुभ माना जाता है तथा इसके बारे में यह धारणा प्रचलित रहती है कि, यह बुरी आत्माओं और राक्षसों से बारातियों को सुरक्षा प्रदान करता है। छोलिया नृत्य के कई प्रारूप प्रचलित हैं, जिनमें बिसू नृत्य, सरांव (नकली लड़ाई), रण नृत्य, सरंकार, वीरांगना, छोलिया बाजा, शौका शैली, पैरा बाजा विशेष हैं। इसमे नतंक पारम्परिक कुमाऊँनी पोशाक पहनते हैं, जिसमें सफेद चूड़ीदार पायजामा, सिर पर टांका, चोला तथा चेहरे पर चंदन का लेप होता है। तलवार और पीतल की ढालों से सुसज्जित उनकी वेशभूषा कुमाऊँ के प्राचीन योद्धाओं का स्मरण कराती है। नृत्य की विधाऐं लड़ाई के पैंतरे, युद्ध का जोश तथा युद्ध में विजय का उल्लास दर्शाती है। नृत्य कभी अर्ध घेरे में तथा कभी पंक्ति में बदल–बदल कर होता है। तुरही, नागफनी, ढोल, नगाड़ा और रणसिंह जैसे पारम्परिक मसकबीन, नौसुरिया मुरूली लोक वाद्यों को इसमें प्रयोग किया जाता है।

(4) केदार लोकनृत्य – भारत के उत्तर में स्थित दो प्रमुख तीर्थ (मंडाण) केदारनाथ और बद्रीनाथ है। केदार लोकनृत्य भगवान केदारनाथ की आराधना का लोकनृत्य है, जिसका सम्बन्ध भगवान बद्रीनाथ से भी है। यह एक आराधना लोकनृत्य है जोकि, केदारनाथ और बद्रीनाथ मंदिरों के पट खुलने पर किया जाता है। साथ ही गढ़वाल क्षेत्र के टिहरी और उत्तरकाशी जनपदों में देवी–देवता पूजन और विवाह आदि अवसरों पर इसका आयोजन किया जाता है। नर–नारी देवता के समक्ष नाचते हुए सुखी जीवन की कामना और प्रार्थना करते हैं। एकाग्रता का इसमें प्रमुख स्थान है। लोकवाद्य जैसे–जैसे गति पकड़ते हैं, नृत्य में उसी के अनुसार उठाव आता है। नृत्य का अंत 'चाली' या 'भौर' से होता है। ढोल, नगाड़े मंजीरा आदि लोकवाद्यों का प्रयोग होता है।

(5) थड़िया लोकनृत्य – थड़िया 'थाड़' शब्द से बना है जिसका अर्थ है 'आँगन'। घर के आँगन में आयोजित होने वाला संगीत और नृत्य का उत्सव ही 'थड़िया' कहलाता है। यह बसंत पंचमी के दौरान किया जाता है। इस अवसर पर गाँव की जिन बेटियों का विवाह हो चुका होता है, वह सभी गाँव में आमंत्रित की जाती हैं। सुंदर गीतों और तालों के संग गाँव के लोग कदम से कदम मिलाकर नृत्य का आनन्द लेते हैं।

(6) हारूल लोकनृत्य – जौनसार क्षेत्र में पांडवों का अज्ञातवास होने के कारण यहाँ अनके कई नृत्य अत्यधिक प्रसिद्ध हैं। इस नृत्य के समय 'रमतुला' नामक वाद्ययंत्र अनिवार्य रूप से बजाया जाता है।

(7) पण्डवार्त नृत्य – गढ़वाल क्षेत्र में पाण्डवों के जीवन–प्रसंगों पर आधारित नवरात्रि में 9 दिन चलने वाले इस नृत्य/नाट्य पर आधारित आयोजन में विभिन्न प्रसंगों के 20 लोकनाट्य सम्मिलित होते हैं, चक्रव्यूह, कमल–व्यूह, गैंड़ी–गैंडा वध आदि नाट्य विशेष रूप से विख्यात है।

(8) पवाड़ा या भाड़ौं नृत्य – कुमाऊँ व गढ़वाल क्षेत्र के ऐतिहासिक और अनैतिहासिक वीरों की कथाओं को इस नृत्य के माध्यम से प्रदर्शित किया जाता है। ऐसी मान्यता है कि वीरों के वंशजों में वीरों की आत्मा प्रवेश करती है। ऐसे व्यक्ति जिनमें वह आत्मा प्रवेश करती है उसे 'पस्वा' के नाम से सम्बोधित करते हैं। पस्वा विभिन्न अस्त्रों से कलाबाजियाँ करते हुए पवाड़ा नृत्य करता है।

(9) जागर नृत्य – जागर का अर्थ है 'जगाना'। उ त्तराखण्ड तथा नेपाल के पश्चिमी क्षेत्रों में कुछ ग्राम देवताओं की पूजा की जाती है यथा गंगनाथ, गोलू, भनरीया, काल्सण आदि। इनको जगाने हेतु यहाँ के लोग जागर लगाते हैं। जागर मन्दिर अपवा घर में 'बाइसी' तथा 'चौरास' दो प्रकार से लगाया जाता है। जागर लगाने वाले मुख्य व्यक्ति को 'जगरिया' और जिस पर देवता का आगमन होता है उसे 'उंगरिया' (डगमगाने वाला) तथा अपने घर या मन्दिर में जागर आयोजित करवाने वाले को स्योंकार (सेवाकार) कहते हैं।

जगरिया के साथ दो-तीन लोग और रहते हैं, जो उसके साथ जागर गाते हैं और काँसे की थाली को बजाते हैं। जगरिया हुडका (हुडुक), ढोल तथा दमाऊँ बजाते हुए कहानी लगाता है।

(10) झोड़ा/चांचरी नृत्य – कुमाऊँ क्षेत्र में माघ की चाँदनी रात्रि में स्त्री-पुरूषों के द्वारा किए जाने वाले श्रृंगारिक नृत्य को झोड़ा नृत्य कहा जाता है। मुख्य गायक एक गोलाकार घेरे के बीच में हुड़की बजाता नृत्य करता है। गढ़वाल क्षेत्र में यही चांचरी कहलाता है।

(11) झुमैलो नृत्य – गढ़वाल क्षेत्र में नव-विवाहित कन्याओं द्वारा झूम-झूम कर समकालीन घटनाओं प्रसंगों पर आधारित नृत्य-गायन को झूमैलो कहा जाता है। गीत की पंक्तियों के अंत में झुमैलो की आवृत्ति और नृत्य में झूमने की भावना या गति का समावेश होने के कारण इसे झुमैलो कहा गया है।

(12) चौफला नृत्य – इसका शाब्दिक अर्थ है 'चारों और खिले हुए फूल'। जिस नृत्य में फूल के घेरे की भाँति वृत्त बनाकर नृत्य किया जाता है, उसे चौफुला कहते हैं। चौफुला गढ़वाल क्षेत्र में स्त्री-पुरुषों द्वारा एक साथ अलग-अलग होली बनाकर किया जाने वाला एक श्रृंगार प्रधान नृत्य है। ऐसी मान्यता है कि इस नृत्य को पार्वती ने शिव को प्रसन्न करने के लिए किया था। इसमें किसी वाद्ययंत्र का प्रयोग न करके हाथों की ताली, पैरों की थाप, झांझ की झंकार, कंगन व पाथल की सुमधुर ध्वनियाँ, मनोमुग्धकारी नार उत्पन्न करती है। इसे नृत्य में पुरुष नर्तकों को चौफुला तथा स्त्री नर्तकों को चौफुलों कहते हैं।

(13) तांदी नृत्य – गढ़वाल के उत्तरकाशी और जौनपुर (टिहरी) में यह नृत्य माघ महीने में विशेषतया और कोई प्रसन्नता का अवसर आदि में किया जाता है। इस नृत्य में गाए जाने वाले गीत तत्कालिक विशेष घटनाओं, प्रसिद्ध व्यक्ति के कार्यों पर रचित होते हैं।

(14) छोपती नृत्य – यह गढ़वाल क्षेत्र में माघ माह की चाँदनी या प्रकाश से परिपूर्ण रात्रि में स्त्री-पुरूषों द्वारा किया जाने वाला श्रृंगार रस प्रधान नृत्य है। इसमें मुख्य गायक गोल घेरे के मध्य में हुड़की बजाते हुए नृत्य करता है। कुमाऊँ में यही झोड़ा कहलाता है।

उपरोक्त के अतिरिक्त भी कई लोकनृत्य उत्तराखण्ड में प्रचलित हैं। जिसमें घुघुती नृत्य, लंगविर नृत्य, सरौं नृत्य, भैलो-भैलो नृत्य, सिपैया नृत्य, रणभुत नृत्य, बैर नृत्य, भागनौली नृत्य, बगूल नृत्य विशेष रूप से उल्लेखनीय है। यहाँ के लोकगीतों के समान यहाँ के लोक-नृत्यों में भी पर्याप्त विविधता का समावेश है। यहाँ के लोक-गीत एवं लोक-नृत्य केवल मनोरंजन का साधन न होकर लोक-जीवन के अच्छे-बुरे अनुभवों से सीख लेने की प्रेरणा भी देते हैं। यद्यपि आधुनिक परिवेश के समय चक्र में पहाड़ों में बहुत सारे लोकगीत-नृत्य विलुप्त हो गए हैं। तद्यपि बचे हुए लोकगीत-नृत्यों की अभी भी अपनी एक विशिष्ट पहचान है और आज भी अस्तित्व में है।

-डॉ. शिप्रा पन्त (असिस्टेंट प्रोफेसर)

संगीत (गायन), रा.स्ना.महाविद्यालय, रामनगर

अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष
(International Monetary Fund)

अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (I.M.F.) एक अर्न्राष्ट्रीय मौद्रिक संस्था है। इसकी स्थापना प्रथम व द्वितीय महायुद्ध के मध्य की अवधि में विद्यमान वित्तीय परिस्थितियों के परिणाम स्वरूप हुई थी। संयुक्त राष्ट्रों का वित्तीय एवं मौद्रिक सम्मेलन 22 जुलाई, 1944 में ब्रेटनवुड्स (Brettonwoods) अमेरिका में हुआ। इस सम्मेलन में 44 राष्ट्रों ने हिस्सा लिया था। इसी सम्मेलन में अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष तथा अन्तर्राष्ट्रीय पुर्ननिर्माण एवं विकास बैंक की स्थापना का निर्णय लिया गया। मुद्रा कोष की स्थापना 27 दिसम्बर, 1945 में हुई। किन्तु इसने 1 मार्च 1947 से अपना कार्य आरम्भ किया।

मुद्रा कोष के उद्देश्य –

– अन्तर्राष्ट्रीय मौद्रिक सहयोग की उन्नति करना। (Encouragement to International monetary Co-operation)

– संतुलित अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार को बढ़ाना। (Incouragement to International Trade)

– विनिमय दर में स्थिरता (Stability in Exchange Rate)

– अन्तर्राष्ट्रीय भुगतानों की विषमता को दूर करना। (Removal of Disparities in International Payments)

– आर्थिक सहायता (Financial Assistance)

– विनिमय नियन्त्रण को हटाना (Removal of Exchange Control)

– उत्पादक पूंजी विनियोग (Productive Capital Investment)

– असंतुलित आर्थिक विकास में सहायक (Helpful in Balance Economic Development)

सदस्य – मुद्रा कोष की सदस्यता कोई भी देश प्राप्त कर सकता है, यदि मुद्रा कोष के चार्टर की सब धाराओं का पालन करने का वचन देता है। जो देश कोष का सदस्य न रहना चाहे वह निश्चित सूचना देकर कोष की सदस्यता का परित्याग कर सकता है। यदि कोई सदस्य मुद्रा कोष के समझौता–पत्र की किसी धारा की अवहेलना करता है तो उसकी सदस्यता समाप्त कर दी जा सकती है। 1 मार्च, 1947 को अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष के केवल 40 सदस्य थे, जिसकी संख्या वर्तमान में बढ़कर 189 हो गई है।

अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष के कार्य (Functions of IMF):– अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए मुद्रा–कोष निम्नांकित कार्य सम्पादित करता है –

– आर्थिक सहायता प्रदान करना (Giving of Economic Aid)

– मुद्रा कोष निम्न रूपों में आर्थिक सहायता देता है –

(1) संकटकालीन सहायता (2) सामयिक विनिमय कठिनाई (3) स्थायित्व ऋण (4) चालू भुगतान का संतुलन

– प्राविधिक सहायता (Technical Assistance)

– ऋण एवं ऋण वचन (Loans and stand-by Agreement)

– प्रशिक्षण कार्यक्रम (Training Programme)

– पर्यावरण के प्रति जागरूकता (The Fund and the Environment)
– विदेशी विनिमय नियंत्रण सम्बन्धी सलाह (Advice on Exchange Controls)
– संरचनात्मक समायोजन सुविधा (Structural Adjustment Facility)
– विश्व बैंक से सहयोग स्थापित करना (Fund Bank Collaboration)
– मुद्रा कोष की रिपोर्ट के प्रकाशन (The Publications of IMF Report)

मुद्रा कोष और भारत (IMF & India) –

ब्रेट्नवुड्स में हुए सम्मेलन में भारत 44 देशों में से एक था। शुरू में भारत उन पाँच देशों में से एक था, जिनके अभ्यंश सबसे अधिक थे। अतः भारत को मुद्रा कोष के संचालक मण्डल में स्थायी स्थान दिया गया था, किन्तु सन् 1970 के बाद अन्य देशों का कोटा अधिक हो जाने के कारण संचालक मण्डल में भारत की स्थायी सदस्यता समाप्त हो गई।

भारत का प्रारम्भिक अभ्यंश 400 मिलियन डॉलर था, जो क्रमशः बढ़ते हुए 1976 में 1145 मिलियन SDR तथा नवम्बर 1992 में 3055.5 मिलियन SDR हो गया। 11वीं कोटा (Kota) समीक्षा के बाद भारत का अभ्यंश फरवरी 1998 में बढ़कर 4,158.2 मिलियन SDR हो गया। 13वीं समीक्षा के बाद अप्रैल 2008 में भारत का कोटा 5821.5 मिलियन SDR हो गया तथा कुल कोटा राशि में भारत का अंश 2.44% हो गया। वोटिंग शेयर के आधार पर भारत 24 निर्वाचकों की सूची में 22वें स्थान पर आ गया।

14वीं समीक्षा 26 जनवरी 2016 के बाद की गई।

सबसे बड़ा कोटा धारक – यू.एस.ए.

सबसे छोटा कोटा धारक – तुवालु

15वीं कोटा समीक्षा 2019 को पूरी की जायेगी।

भारत का मुद्रा कोष से लाभ (Advantages to India from membership of the Fund) –

भारत को मुद्रा कोष से अनेक लाभ हुए हैं, जिनमें मूख्य निम्नलिखित हैं –

(1) विश्व बैंक की सदस्यता (Membership of the IBRD) – मुद्रा कोष की सदस्यता के फलस्वरूप भारत विश्व बैंक का सदस्य बन सका है, जिससे भारत को आर्थिक विकास के लिए सर्वाधिक सहायता मिली है।

(2) आर्थिक विकास में उपलब्धता (Availability of Economic Counseling) – देश की आन्तरिक, मौद्रिक व आर्थिक समस्याओं पर भारत को कोष द्वारा समय–समय पर महत्वपूर्ण सलाह मिलती रही है।

(3) संकट में सहायता (Helpful in time of difficulty) – भारत को अपने भुगतान असन्तुलन को दूर करने में मुद्रा कोष से यथासमय सहायता मिली है। प्रथम, द्वितीय व द्वितीय योजनाओं के अंतिम वर्षों में प्रायः भारत को विदेश विनिमय संकट का सामना करना पड़ा और मुद्राकोष ने उस समय उदारतापूर्वक सहायता प्रदान की। सन् 1965 में पाकिस्तानी आक्रमण के फलस्वरूप जब आर्थिक कठिनाईयाँ उत्पन्न हुई तब मुद्राकोष ने भारत को 20 करोड़ डॉलर का ऋण देना स्वीकार किया। 1966, 1974, 1975 तथा 1982 में भी आर्थिक संकट का निवारण करने के लिए मुद्राकोष से विदेशी मुद्रा प्राप्त हुई थी।

(4) अन्तर्राष्ट्रीय विनिमयमान (International exchange) – मुद्राकोष की सदस्यता के फलस्वरूप भारत की मुद्रा का सम्बन्ध संसार की सभी महत्वपूर्ण मुद्राओं से जुड़ गया है, फलस्वरूप भारत को दो लाभ प्राप्त हुए हैं –

– भारत किसी भी देश में सरलता से भुगतान कर सकता है।

– भारत स्टलिंग के गठबंधन से मुक्त हो गया है।

(5) नीति-निर्धारण में हाथ (Policy Formulation) – भारत प्रारम्भ में मुद्रा कोष के कार्यकारी संचालक मण्डल का स्थायी सदस्य रहा है, इस कारण भारत की अपनी व अन्य विकासशील देशों की समस्याओं को प्रभावशाली रूप से प्रस्तुत करने का मौका मिलता रहा है। 1971 में नए अभ्यंश लागू होने के पश्चात् भारत कोष का स्थायी सदरू नहीं रह गया है।

(6) अन्तर्राष्ट्रीय प्रभाव में वृद्धि (Increase in International Influence) – मुद्राकोष के सदस्य बनने के बाद भारत के अन्तर्राष्ट्रीय प्रभाव में वृद्धि हुई है तथा अन्तर्राष्ट्रीय मंच पर भारत की बात पर ध्यान दिया जाता है। भारत को अन्तर्राष्ट्रीय पर्यावरण कोष स्थापित करने की सलाह पर मुद्राकोष एवं विश्व बैंक ने अपनी सहमति व्यक्त की है।

(7) आर्थिक सुधारों एवं उदारीकरण नीति में सहायता (Help in Economic Improvement and liberation Policy)–

सन् 1991 में जब भारत संकट के दौर से गुजर रहा था तब अन्तर्राष्ट्रीय मुद्राकोष ने भारत की आर्थिक सुधारों तथा उदारीकरण की नीति को सफल बनाने के लिए अक्टूबर 1991 से जुलाई 1993 के बीच उद्यत ऋण व्यवस्था (Stand-by Arrangement) के अन्तर्गत 2.2 अरब डॉलर का ऋण स्वीकृत किया।

इस प्रकार अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष जो कि एक अन्तर्राष्ट्रीय मौद्रिक संस्था है, भारत को इसके सदस्य बनने के पश्चात् अन्तर्राष्ट्रीय मंच पर अपनी पहचान बनाने का पूरा मौका मिला। इस कोष के द्वारा दिये जाने वाले ऋणों से भारत की आर्थिक स्थिति को मजबूती मिली तथा भारत विकासशील देशों की आर्थिक प्रगति की गिनती में अग्रणी रहा।

– डॉ. ममता भदोला जोशी (असि. प्रोफेसर-वाणिज्य)

''संसार में जितने प्रकार की प्राप्तियाँ हैं,
शिक्षा सबसे बढ़कर है।''
– निराला

प्रतिकूलताओं से घबराएँ नहीं

आज हम देख रहे हैं कि दुनिया प्रत्येक क्षेत्र में तेजी से प्रगति कर रही है। मनोरंजन के माध्यम हो या वैज्ञानिक विकास, चिकित्सा ने आज मौत को चुनौती दी है फिर भी इस प्रगति के युग में मनुष्य भयग्रस्त, एकांकी तथा खोखला सा प्रतीत हो रहा है न किसी के जीवन में आनन्द, न उल्लास, न संतोष और न ही शान्ति है। किस अभाव में ग्रस्त है मनुष्य ? स्वल्प साधनों में जब करोड़ों वर्षों से शान्ति और संतोषपूर्वक जिया जाता रहा है तो इतने प्रचुर साधनों के रहते इतना उद्वेग क्यों ? इतने असंतोष और नैराश्य का कारण क्या ? यह विचारणीय प्रश्न है।

कारण आज युवा वर्ग की आकाक्षाएँ बहुत प्रबल है। वह आकाश की ऊँचाई को छूना चाहता है, नदी के वेग को पकड़ना चाहता है। लक्ष्यप्राप्ति के दुर्गम रास्तों से अनभिज्ञ वह भविष्य के सुनहरे सपने बुनने लगता है। उन सपनों में असफलता का कहीं कोई स्थान नहीं होता क्योंकि वह केवल जीतना चाहता है। उन कल्पनाओं को पूर्ण करने के लिए जब उसे वास्तविकता के धरातल पर अनेक संघर्षों का सामना करना पड़ता है तो उसके कदम डगमगाने लगते हैं।

अक्सर देखा जाता है कि कितने ही युवा अपनी आकांक्षा पूरी न होने, जरा सा व्यवधान आने पर बुरी तरह घबरा जाते हैं, निराश हो जाते हैं फलस्वरूप वे इतने अधीर व असंतुलित हो जाते हैं कि नशा करने, घर छोड़ने तथा आत्महत्या करने की हिम्मत कर बैठते हैं। युवा वर्ग को आज यह समझना होगा कि कोई भी लक्ष्य प्राप्त करना यदि सरल नहीं तो कठिन भी नहीं होता। यदि सम्भव नहीं है तो असम्भव भी नहीं होगा। जिस प्रकार दिन के साथ रात, धूप के साथ छाँव होती है उसी प्रकार सफलता-असफलता, सुख-दुख संतोष-असंतोष सभी संसार में व्यापत है। यदि यह विरोधाभास न हो तो जीवन नीरस हो जाएगा। ईश्वर ने सृष्टि की रचना करते समय इन विपरित परिस्थितियों को भी स्थान दिया है, जिससे व्यक्ति कठिनाईयों से लड़ना सीखे और परिश्रमी, धैर्यवान, साहसी तथा संकल्पवान् बन सके।

यदि हम लक्ष्य प्राप्त करने के लिए दृढ़ निश्चय कर लें तो कितने भी अवरोध सामने हो, कितने ही सकट आ जायें उन्हें प्राप्त करने के लिए हम अपना सारा साहस लगा देंगे और सफलता प्राप्त करके ही रहेंगे। सर्वप्रथम अभिभावकों का यह दायित्व है कि वे अपने बच्चों से सदैव अच्छे प्रदर्शन की अपेक्षा न रखें। उन्हें सफलता के साथ-साथ असफलता के महत्व को भी समझाऐं। अपने जीवन के अनुभवों से यह सिखाएँ कि प्रगति का मार्ग संघर्षों के मध्य से होकर गुजरता है। आज विश्व भर के मनोवैज्ञानिक भी इसी विषय पर गहन अध्ययन कर रहे हैं।

हाल ही में एक केस अध्ययन मेरे सामने आया जिसने मेरे अर्न्तमन को झकझोर कर रख दिया। एक सम्भ्रान्त परिवार का लड़का जो बचपन से ही पढ़ाई के साथ-साथ अन्य क्षेत्रों में भी प्रतिभावान् था। विज्ञान तथा गणित विषय में विशेष रूचि होने के कारण आगे चलकर आई.आई.टी. चैन्नई से बी.टेक. की उपाधि ली। इसके पश्चात् अमेरिका के कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय से एम.बी.ए. किया। अच्छी जॉब, शादी और फिर बच्चे अर्थात् जीवन में सुख ही सुख लेकिन दुर्भाग्यवश आज से चार वर्ष पूर्व उसने अमेरिका में सपरिवार गोली मारकर आत्महत्या कर ली। उसने अपने सुसाइड नोट में लिखा कि इस परिस्थिति से निपटने का यही सर्वश्रेष्ठ रास्ता था। उसके माता-पिता तथा मित्रों से बातचीत के दौरान पता चला कि अमेरिका मे आर्थिक मंदी आने के कारण उसकी नौकरी चली गयी। बहुत दिन घर पर खाली बैठने के पश्चात् जब नौकरी मिली तो तनख्वाह न्यूनतम होने के कारण मकान की किशत टूट गयी। साल भर यह सब बर्दाशत करने के बाद अन्त में उसने खुदकुशी कर ली। California Institute of Clinical Pyschology के मनोवैज्ञानिकों तथा मानसिक चिकित्सकों ने पूरे केस का अध्ययन एवं विश्लेषण कर यह निष्कर्ष निकाला कि वह सफलता के लिए तो तैयार था परन्तु उसे जीवन में यह नहीं सिखाया गया कि असफलता का सामना कैसे किया जाए।

आज भारत के साथ-साथ विश्व भर के मनोवैज्ञानिक काउंसलिंग के माध्यम से व्यक्ति में हर प्रतिकूल परिस्थिति को धैर्य के साथ झेलने की क्षमता विकसित कर रहे हैं, उसके मनोबल तथा आत्मबल को बढ़ाने का प्रयास कर रहे हैं ताकि वे अवरोधों तथा असफलताओं के आगे हिम्मत न हारें। अपनी पिछली त्रुटियों से सीख लेते हुए दुगने उत्साह और उमंग के साथ आगे बढ़े। तभी मनुष्य अपने व्यक्तित्व को प्रखर व ज्योतिर्मय बनाकर उपलब्धियों को हासिल कर सकेगा और महामानव के रूप में विश्व में अपनी पहचान बना सकेगा।

- डॉ. रंजीता जौहरी (प्रवक्ता मनोविज्ञान विभाग)

भारतीय समाज में नारी : कल और आज

स्त्री का मानव सृष्टि में ही नहीं, वरन् समाज के निर्माण में भी महत्वपूर्ण स्थान है। स्त्री और पुरुष मिलकर परिवार का निर्माण करते हैं। अनेक परिवारों से एक समुदाय और अनेक समुदायों से मिलकर एक समाज निर्मित होता है। किन्तु भारतीय समाज में स्त्रियों की स्थिति समय के साथ–साथ उतार चढ़ावों से परिपूर्ण रही है, इसमें कोई सन्देह नहीं है। सभी युगों में नारी की स्थिति एक जैसी नहीं रही है।

हमारी प्राचीन व्यवस्था में स्त्रियों को उच्च स्थान प्राप्त था। उन्हें सुख, शान्ति, शक्ति, वैभव और ज्ञान का प्रतीक माना जाता था। कहीं नारी की पूजा दुर्गा रूप में हुई तो कहीं माँ सरस्वती के रूप में। महर्षि मनु के अनुसार,

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।

यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्त्राफलाः।।

अर्थात् जहाँ नारी की पूजा होती है वहाँ देवता निवास करते हैं और जहाँ इनकी पूजा नहीं होती है वहाँ सभी कार्य निष्फल हो जाते हैं।

किन्तु धीरे–धीरे स्त्रियों की स्थिति में परिवर्तन होता गया। स्त्री स्वतंत्रता के योग्य नहीं यह कहा जाने लगा।

पिता रक्षति कौमार्य भर्ता रक्षति यौवने।

पुत्रो रक्षति वार्धक्ये न स्त्री स्वतंत्रयमर्हति।।

कौमार्यावस्था में पिता, यौवनावस्था में भाई, वृद्धावस्था में पुत्र स्त्री का रक्षण करते हैं, स्त्री कहीं भी स्वतंत्र नहीं है।

इस प्रकार प्राचीन वैदिक युग में नारी को उच्च स्थान प्राप्त था। नारी और नर की महत्ता समान थी। किन्तु धीरे–धीरे वह पुरुष के अधीन होती गयी।

स्त्रियों और पुरुषों के अधिकारों के दृष्टिकोण से वैदिक युग भारत का स्वर्णिम युग था। इस काल में स्त्रियों के अधिकार पुरुषों के समान थे। बेटियों को शिक्षा ग्रहण करने के पूर्ण अधिकार प्राप्त थे। उस समय अपाला गार्गी, मैत्रेयी तथा विश्वम्भरा जैसी अनेक विदुषी महिलाओं का उल्लेख मिलता है। इस काल में बाल–विवाह का प्रचलन नहीं था। स्त्रियों को परिवार की सम्पत्ति में अधिकार मिलने के साथ ही विधवा स्त्रियों को पुनर्विवाह करने का अधिकार भी दिया गया था। पति का चुनाव करने में भी नारी को पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त थी। इस समय नारी की रक्षा करना नर का सबसे बड़ा धर्म था, जबकि नारी के अपमान को सबसे बड़ा पाप समझा जाता था। यह वह समय था, जब पश्चिमी देशों में स्त्रियों की स्थिति अत्यधिक उच्च और सम्मानजनक थी।

उत्तरवैदिक काल में सामाजिक व्यवस्था में परिवर्तन होना आरम्भ हो गया। स्त्रियों की शिक्षा में कमी आयी, व्यवहार में स्त्रियों के अधिकार तथा स्वतंत्रता पर तरह–तरह के प्रतिबन्ध लगाये गये। धर्मशास्त्र काल में इस प्रकार का प्रसार किया गया कि स्त्रियों में बुद्धि की कमी होने के कारण उन्हें कोई उत्तरदायित्व नहीं दिये जाये चाहिए। अनुलोम विवाह, सती प्रथा,

बालिका हत्या, बहुपत्नी विवाह, बाल विवाह, विधवा पुनर्विवाह पर नियंत्रण, पर्दा प्रथा इसी युग की देन है। इस युग में सर्वप्रथम राजाराम मोहन राय, ईश्वर चन्द विद्यासागर, रानाडे, स्वामी दयानन्द, स्वामी विवेकानन्द तथा एनी बेसेन्ट जैसे समाज सुधारकों ने सती प्रथा, बालिका हत्या, बाल विवाह, विधवा पुनर्विवाह पर नियंत्रण तथा स्त्रियों पर शिक्षा सम्बन्धी प्रतिबंधों पर व्यापक विरोध करना आरम्भ कर दिया।

देश की स्वतंत्रता नारी जागरण और शिक्षा के प्रसार के बावजूद नारी का शोषण नहीं रूका। हाँ हम यह जरूर कह सकते हैं कि आज की नारी इतनी निरीह नहीं रही कि अपने शोषण का बदला न ले सके। यह भारतीय समाज की बिडम्बना है कि यहाँ नारी को विवाह से पहले भी समस्याओं का सामना करना पड़ता था और विवाह के बाद भी।

भारत में अशिक्षा के कारण अनेक अंधविश्वास एवं रूढ़ियाँ व्याप्त हैं और रूढ़ियों और अंधविश्वास से घिरे मस्तिष्क में कोई भी नया विचार या तर्क प्रवेश नहीं पा सकता। अत: इन बंद कपाटों को खोलने का प्रभावशाली साधन शिक्षा ही है। शिक्षा की दीप्ति पाकर ही भारतीय मानस सदियों की गुलामी से मुक्ति पा सका। वर्तमान समय में नारी जागृति के साथ-साथ उसकी सामाजिक प्रतिष्ठा में भी सुधार हुआ है। आज आधुनिक युग में शिक्षा को महत्व दिया जा रहा है। शिक्षित नारी आवश्यकता पड़ने पर घर की चार दीवारों से निकलकर स्वतंत्र हो सकती है, जीविकोपार्जन में सहयोग दे सकती है, उत्पीड़ित होने पर प्रतिशोध ले सकती है और उचित कदम उठाकर सही निर्णय ले सकती है।

वर्तमान समय में नारी अपनी सम्पूर्णता को पाने की राह पर निरन्तर बढ़ रही है, नारी की शिक्षा-दीक्षा और व्यक्तित्व विकास के क्षितिज दिनों-दिन खुलते जा रहे हैं, जिससे नए-नए क्षेत्रों का विस्तार हो रहा है।

अरस्तू ने कहा है कि ''स्त्रियाँ कुछ निश्चित गुणों के अभाव के कारण स्त्रियाँ है'' और संत थॉमस ने स्त्रियों को ''अपूर्ण पुरुष'' की संज्ञा दी थी। पर वर्तमान परिप्रेक्ष्य में ऐसे तमाम सतही सिद्धान्तों का कोई अर्थ नहीं रह गया है।

नारी अपनी जीवटता के दम पर स्वयं को विशुद्ध चित्त के रूप में देख रही है। नारी आज न सिर्फ सशक्त हो रही है, बल्कि लोगों को भी सशक्त बना रही है। इस बात को अंतत: स्वीकार करने की जरूरत है तथा साथ ही साथ विचार मंथन करने की भी आवश्कता है कि नारी को बढ़ावा देकर आप सिर्फ नारी को समृद्ध नहीं कर रहे हैं बल्कि उस पूरे परिवार को समृद्ध कर रहे हैं, जहाँ वह नारी होगी। इस प्रकार हमारे परिवार, समाज, राष्ट्र भी समृद्ध बनेंगे, जिनकी मूल इकाई नारी ही होगी क्योंकि नारी ही बालक की प्रथम शिक्षिका होती है और बालक भावी कल का नागरिक, राष्ट्र निर्माता। जितनी अधिक नींव मजबूत होगी, हमारा राष्ट्र रूपी घर उतना ही अधिक मजबूत होगा। अत: हम कह सकते हैं कि शिक्षित नारी परिवार, समाज और राष्ट्र के लिए सशक्त और समृद्ध सिद्ध होगी। नारी उत्कर्ष आज सिर्फ एक जरूरत नहीं बल्कि विकास और प्रगति का अनिवार्य तत्व है।

हमारा यही प्रयास है आज की नारी शिक्षित हो, आगे बढ़े, जिससे वह स्वयं का, अपने आस-पास के वातावरण का तथा परिवार, समाज और हमारे राष्ट्र का हित कर सके।

- प्रभदीप सिंह (प्रवक्ता-समाजशास्त्र)

राधा और सीता

आज राधा बहुत खुश है। उसकी जिन्दगी का वह पल आने वाला है जिसका उसे बरसों से इन्तजार था। तीन दिन में विवाह होने वाला है उसका। यूँ तो राधा इस दिन की बेसब्री से प्रतीक्षा कर रही है लेकिन उसे एक चिंता भी सता रही है। कारण है उसकी पक्की सहेली सीमा का पालतू कुत्ता 'बिस्किट'।

राधा और सीता बचपन से साथ पली-बढ़ी हैं। उन्होंने साथ पढ़ा, खेला और सपने भी साथ-साथ देखे हैं। इसमें एक बड़ा सपना रहा है विवाह का। बचपन की सहेली राधा का विवाह सीता के लिए महत्वपूर्ण उत्सव था। इसके लिये दोनों ने बहुत सपने देखे थे। दोनों सहेलियाँ 'बिस्किट' से बहुत प्यार करती हैं। शाम को जब दोनों पार्क में घूमने जाती थीं तो बिस्किट को ही साथ ले जाती थी। वो न केवल उनकी बुरे तत्वों (Bad Elements) से रक्षा करता बल्कि खूब खेलकर उनका मन बहलाता था। बॉल के साथ खेल उसे अत्यधिक पसन्द था। उसके साथ उनका समय हँसी-खुशी बीत जाता। लेकिन पिछले एक हफ्ते से बिस्किट का खराब स्वास्थ्य दोनों के लिए चिंता का विषय बना हुआ है। डॉक्टर भी उसकी बीमारी समझ नहीं पा रहे हैं। बिस्किट ने खाना-पीना भी छोड़ दिया है।

राधा ने अचानक सीता से मिलने का विचार किया और पहुँच गयी दोपहर में सीता के घर। वह बहुत उदास थी। हमेशा खेलते रहने वाले बिस्किट को इस हालत में शांत पड़े देखकर राधा की आँखें भर आई। तभी अचानक फोन की घंटी बजी। यह बिस्किट के डॉक्टर का फोन था। उन्होंने बताया कि बिस्किट का इलाज मिल गया है और यदि तीन दिन के अन्दर उसे एक दवा खिलाई जाए तो उसे बचाया जा सकता है। लेकिन दवा उसे खाली पेट कमजोर शरीर में नहीं दी जा सकती, नहीं तो प्राणघातक सिद्ध हो सकती है।

यह खबर सुनकर दोनों बहुत खुश हुई। राधा ने बड़े प्यार से बिस्किट को पुचकार कर खाने को कहा। यद्यपि पहले भी कई बार राधा उसे अपने हाथ से खिला करती थी। लेकिन आज वो पूरे एक हफ्ते बाद बिस्किट से मिलने आयी थी। बिस्किट ने इसी खुशी में पूरी हिम्मत जुटाकर खाने का प्रयास किया व धीरे-धीरे एक-दो ग्रास खा सका। बहुत दिन बाद पेट में भोजन जाने के कारण उसकी भूख धीरे-धीरे खुलने लगी और वह थोड़ा-थोड़ा खाने लगा। यह देख सीता ने तुरन्त डॉक्टर को बुलाया, डॉक्टर ने दो दिन के खाने के बाद दवा देने की सलाह दी।

राधा के विवाह का दिन आ गया। सीता थोड़ी उदास भी थी। कल उसकी सहेली की विदाई हो जाएगी, लेकिन जाने बिस्किट के ठीक होने की उम्मीद और राधा के विवाह में जाने की तैयारी उसकी खुशी दोगुनी कर रही थी और वह शाम भी आ गई। राधा की बारात आने वाली थी। सीता ने नया लाँचा पहना और सोलह श्रृंगार कर राधा के घर जाने से पहले बिस्किट को प्यार किया और खाना लेकर आई।

बिस्किट खाना खाने ही वाला था कि अचानक तेज आवाज हुई और बिस्किट भागकर एक कोने में छिप गया। यह आवाज पटाखों की थी। सीता ने भरपूर कोशिश की उसे खिलाने की पर उसने मुँह तक नहीं खोला। वह डर से काँप रहा था। पटाखे लगातार फूटते जा रहे थे। सीता को बहुत गुस्सा आया लेकिन वह कुछ न कर सकी।

उधर राधा सीता की राह देखती रह गई। सीता नहीं जा सकी। वह रात भर बिस्किट को खिलाने की कोशिश करती रही। सुबह राधा की विदाई हो गई और बिस्किट की भी।

क्या आपको नहीं लगता शादी या बारात में पटाखे जलाना गलत है? इससे न सिर्फ ध्वनि प्रदूषण के कारण लोग परेशान होते हैं बल्कि कई मासूम जानवर भी डर जाते हैं। क्या हमारी खुशी में हमें कोई ऐसा काम करना चाहिए जिससे किसी जीव को एक वक्त का खाना छोड़ना पड़े। वह कहीं बाहर तक न जा सके। शरीर के महत्वपूर्ण वेग को रोककर बस एक कोने में दुबका रहे। भय से काँपता रहे। हम क्यों हर कार्य में सिर्फ अपना फायदा देखते हैं? क्या आपने कभी ध्यान दिया है कि अगर हमे सिर्फ 10/–रु. की भी खरीदारी करनी हो और हमारी जेब में सारे नोट 10/– के हो तो भी हमें पैसे देने में वक्त लग जाता है क्योंकि हम अपनी जेब में पड़ा सबसे खराब नोट ढूँढ रहे होते हैं। ऐसा इसलिए क्योंकि हर कार्य करने से पहले हम ये देखना या सोचना भूल जाते हैं कि औरों पर इसका क्या असर होगा।

क्या आप जानते हैं पटाखों से कितना वायु प्रदूषण होता है? इनमें से सिर्फ सल्फर (S) और कार्बन (C) होता है, बल्कि कुछ अतिरिक्त रसायन होते हैं। जिन्हें Binders, Stabilizers, Oxidizers, Reducing agents और Colouring agents के रूप में इस्तेमाल किया जाता है। इसके अलावा Multicolored glittering effect के लिए रंगों में एंटीमनी सल्फाइड, बेरियम नाइट्रेट, Al, Cu, Li और Sr उपयोग किये जाते हैं। जब पटाखे जलाये जाते हैं तो ये रसायन वायु में Release हो जाते हैं और प्रदूषित करते हैं। इनका Size 2-5u से भी कम होने के कारण ये आसानी से साँस के साथ फेफड़ों में प्रवेश कर जाते हैं। पटाखों से प्रदूषण की वजह से Asthama, Alzheimer's से लेकर Lung Cancer जैसे गंभीर रोग तक हो सकते हैं। दीवाली के दौरान सर्दी के कारण कोहरे के साथ ये तत्व आसानी से Suspend हो जाते हैं। लेकिन हमारे लिये अपनी मौज–मस्ती इतनी महत्वपूर्ण है कि दीवाली के दिन से एक हफ्ते पहले ही हम पटाखे जलाना शुरू कर देते हैं?

मैं जानती हूँ कि असल में हम सब अन्दर से संवेदनशील है। कैसे जब कोई हमारे देश के ऊपर आँख उठाकर देखे तो हमारा खून खौल उठता है। कैसे हम अपने सैनिकों की हिम्मत और ताकत को हमेशा सराहते हैं एवं उनका आत्मविश्वास बढ़ाते रहने का अपनी ओर से हरदम प्रयास करते हैं। हमारे भरपूर जोश का नजारा Social Media में हमारी एकजुट आवाज/संदेश में दिखाई देता है।

देश के लिए जोश है, इसका अर्थ यह है कि देशवासियों के लिए प्यार भी है। सबकी परवाह भी है। बात सिर्फ इतनी है कि कई बार हमारा ध्यान इस ओर नहीं जाता है कि हमारे किये की वजह से हमारे अपनों और आसपास के लोगों पर क्या असर हो सकता है। अतः इस Article के माध्यम से मैं आपका ध्यान इस ओर खींचना चाहती हूँ। मैं कॉलेज प्रशासन एवं संपादन समिति की हार्दिक आभारी हूँ कि उन्होंने इस Magazine के माध्यम से मुझे अपने विचार रखने का अवसर प्रदान किया।

यहाँ सीमित जगह और वक्त की कमी के कारण मैं अपनी पूरी बात लिखने में असमर्थ हूँ। लेकिन उम्मीद करती हूँ कि पाठक विषय के सार और गंभीरता को गहराई से समझ गये होंगे।

आप सभी पाठकों से निवेदन है कि यदि आप मेरी बात से सहमत हैं। तो यह संदेश ज्यादा से ज्यादा लोगों तक पहुँचाने का प्रयास करें। मैं कामना करती हूँ कि आप सभी आस–पास के लोगों और सगे सम्बन्धियों को समझाने में सफल हों।

– डॉ. नवभा जोशी (प्रवक्ता रसायन विभाग)

महिला उत्थान और आपेक्षिक नजरिया

महिलाओं की स्थिति को समझने–सँवारने के जो प्रयास किये जाते रहे है, यदि उन्हें 'घर' से शुरू करें तो, कहीं अधिक स्पष्टता के साथ, वे पहलू भी सामने आयेंगे जो आपेक्षित है और जिनमें सामाजिक तौर पर उत्थान की हमारे समाज को आज आवश्यकता भी है। यही हितकर भी है। महिलाओं की परिवार 'सृजनशीलता' की भूमिका में कोई दो–राय नहीं। उनकी इस क्षमता का विकास सामाजिक रूप में होना (जैसाकि आपेक्षिक भी है) सही मायनों में बदलते समाज के लिए अहम योग होगा और हुआ भी है। हमें परिवार की पोषण–प्रक्रिया में आवश्यक तौर पर इस बात को ध्यान में रखना चाहिए कि यहाँ (परिवार में) बच्चों के साथ सभी पोषण सामाजिकता के साथ–साथ विकास के अधिकाधिक पक्षों में हो। विस्तृत नजरिये से देखें तो समाज की सम्पूर्णता में मूलत: मानव जाति के दोनों रूपों यानि महिला और पुरुष का वही योग है, जैसा कि भूतकाल और वर्तमान से भविष्य का। आज हम बहुमुखी विकसित होती मानव सभ्यता को जी रहे है, लेकिन क्या! हम जिसे सभ्य मान रहे है। क्या वह सच में सभ्यता की कसौटी पर खरी उतरती है? कानून बनाकर महिला कल्याण का सिद्धान्त अधिकाधिक व्यवहारिक कैसे बनाऐ जाएँ? इस पर और अधिक चिन्तन और प्रयोग की आवश्यकता है। सरकार द्वारा चलाई जा रही नीतियों के सफल होने में प्रशासन को आम जन का अवश्य ही असरकारक दिखाई दिया है। पूरे भारत में समसामायिक परिवेश परिवर्तन और महिलाओं के सशक्तिकरण प्रयासों को प्रत्येक स्तर तक पहुँचाने की पहलें हमारे विशाल देश के लिए बेहतर है। स्कूल, कॉलेज और उच्च शिक्षण संस्थानों के साथ ही अन्य सामाजिक क्षेत्रों में संचालित कार्यक्रमों का विस्तार हुआ है। पर यहाँ उन तथ्यों का विश्लेषण अनिवार्य है, कि चलाये जा रहे समस्त कार्यक्रमों की स्थिति, प्रभाव और परिणाम क्या है? और कितने? इसलिए आज पूरे समाज को एकता, स्थिरता और अधिकाधिक आत्मचेतना की जरूरत है। इसमें बौद्धिक–आर्थिक आधारों पर विकसित हो चुके लोगों के सहयोग की बहुत महत्वपूर्ण भूमिका है। महिलाओं की श्रम शक्ति का पक्ष अभी तक अधिकतर अदृश्य ही रहा है। आधुनिक विकास पैमाने पर। जिसका परिाम है कि 72 वर्षों पूर्व आजाद हो चुके देश में आज भी आर्थिक तौर महज 24% महिला श्रम की भागीदारी ही राष्ट्रीय उत्पादकता में हम कर सके हैं, जबकि मुफ्त के किये जाने वाले गृह सम्बन्धी कार्यों में वे हर दिन लगभग 12 से 14 घण्टों तक अपनी शक्ति लगाती हैं। तुलना करने पर हमारी और चाइना की जन आबादी में स्त्रियों का प्रतिशत औसतन लगभग समान ही है। लेकिन चीन जी.डी.पी. में वहाँ महिला ।श्रम का योग 42% है, यानि हमसे करीब–करीब दो गुना। परन्तु आज हमारे देश में प्रत्येक राज्य में महिलाओं की आत्म–अनुभूति बढ़ी है जो सकारात्मक है। वे समझ रही हैं कि सामाजिक जीवन की व्यवस्था में उन्हें अपने व्यक्तित्व विकास और आदर्शों को पाना जरूरी है। सही मायनों में लोकतान्त्रिक समाजवादी भारतीय संविधान की विधि का सार भी इसमें शामिल है।

- डॉ. जे.पी. त्यागी (असि.प्रोफेसर–राज.विज्ञान)

- डॉ. पुष्पा वर्मा (असि.प्रोफेसर–समाजशास्त्र)

नवजागरण की देवी–महादेवी

महादेवी के सन्दर्भ में यह सोचकर पीड़ा होती है कि उन जैसी भारतीय स्वाधीनता आंदोलन में निमग्न कवयित्री के साथ हिन्दी आलोचना ने ऐसा सलूक क्यों किया ? उनके सृजन के नवजागरणवादी पक्ष को अनदेखा करते हुए रहस्यवाद और आध्यात्मवाद में लपेटकर उसे पूरी तरह छिपा दिया गया। आखिरकार क्यों ? ऐसा क्यों हुआ कि देश और समाज के लिए किया गया उनका मौन मुखर विद्रोह पूरी तरह विस्मृति के अंधकार में धकेल दिया गया।

हिन्दी आलोचना में महादेवी को मीरा कहने का एक अजीब सा प्रचलन चला आ रहा है। इस रूढ़ मुहावरे से महादेवी को पूरी तरह मुक्त करने की आवश्कता है। महादेवी के काव्य जगत में पद्य जहाँ हमें मीरा के दर्शन कराता है तो वहीं साथ ही साथ महादेवी का गद्य हमें स्त्री की समस्याओं, समाज में स्त्री का स्थान, नवजागरण की ओर ले जाता है। हमें न केवल अनुभूति पक्ष, रहस्यवादी पक्ष, आध्यात्मिक पक्ष देखना चाहिए वरन् महादेवी की नवजागरणवादी विचारधारा पर भी विचार करना चाहिए, क्योंकि कहीं न कहीं महादेवी जैसी बौद्धिक नारी को मीरा कहते ही हमारी सारी समझ पर पानी फिर जाता है।

महादेवी की काव्यानुभूति की सही समझ के लिए उनके समय और समाज में व्याप्त सांस्कृतिक नवजागरण के अन्तः सूत्रों का गहन अध्ययन करना होगा जिसमें पराधीनताओं से मुक्ति की आकांक्षा का स्वर है। साम्राज्यवाद से मुक्ति, नारी को पराधीनता देने वाले अन्याय से मुक्ति और उस रीतिवाद से मुक्ति, जिसने नारी से जीने का हक छीन लिया है। ''श्रृंखला की कड़ियाँ'' लिखी ही इसलिए गई कि वे भारतीय समाज में नारी का दर्द सामने ला सके।

नारी इतना अधिक विक्षुब्ध और कुंठित हो गई कि वह अपना अस्तित्व ज्ञान ही भूल गई। पूर्व में जहाँ नारी के अन्दर भावुकता विद्यमान थी, ठहराव था, एक स्थिरता थी जो उसकी पहचान थी वो आज कहीं खोती ही जा रही है। भावुकता, ठहराव, स्थिरता का स्थान आज भागदौड़ ने, द्रुतता ने, त्वरण ने ले लिया है। बदलते सामाजिक परिप्रेक्ष्य और क्षुद्र मानसिकता ने स्त्री की तस्वीर ही बदल कर रख दी है। इसमें दो राय नहीं कि इस बदलाव ने नारी से उसका अस्तित्व, पति, संतान, घर–परिवार सब छीन लिया है और यदि कुछ दिया है तो वह है नाममात्र की पहचान। हम इसे क्या कहेंगे ? न तो ये अनुसरण है और न ही अनुकरण। यह रूप और भी विद्रूप हो गया है। हमें इस अवनति के कारण को पहचानना होगा। उन्नति के साधनों की तो बात ही क्या कहें।

आज से पचास–साठ वर्ष पहले का भारतीय समाज अपनी विद्रूपताओं–विकृतियों के साथ दस्तावेज की तरह उपस्थित है। नारी यातना का यह सामाजिक इतिहास आज भी हमारे लिए अतीत कम वर्तमान ज्यादा है। आज तो नारी और ज्यादा संकट में है। पुरुष ने उसे स्वतंत्रता और समानता का झाँसा देकर बाजार की वस्तु बना दिया है। आज महादेवी होती तो देहवाद के विरोध में डट जाती। पूँजीवादी राजनीति के कुचक्र में फँसी मछली की तरह हाँफती नारी के त्राण का वे विकल्प खोजती। वे हर सांस में कहती कि यदि नारी की पावनता, दिव्यता, सुकुमारता और शील को सताकर नष्ट कर दिया जाएगा तो यह समाज रसातल में चला जाएगा। महादेवी के लिए मातृत्व की शक्ति पूजा है, आरती है। शक्ति के अनेक रूप हैं–लेकिन मातृत्व से बड़ी पवित्र शक्ति कोई नहीं है। इस नारी–मन और नारी–देह की पवित्रता और मातृ–शक्ति का अर्थ वे राक्षस नहीं समझ सकते–जिनका मन रूखा है।

पद्य में अपने भावावेगों को दबाने वाली कवयित्री अपने गद्य में भावों को मुक्त छोड़ देती है–कभी रामा के साथ, कभी भक्तिन के साथ, कभी भाभी के साथ, कभी ठकुरी बाबा के साथ। यहाँ लोक ज्यादा है – लोक संस्कृति का समाज ज्यादा है और समाज में व्याप्त दरिद्रता और विधवाओं की विवशता के आँसू ज्यादा है।

उनके रचनाकार व्यक्तित्व में न रिरियाहट है – न खिसियाहट और न ही रीतिवादी मूल्यों की जगह है। धर्म, परिवार, आध्यात्म, समाज, सत्ता, पद किसी का वर्चस्व उन्हें कभी स्वीकार नहीं हुआ। उन्होंने हमेशा माना की स्वाधीन व्यक्ति ही स्वाधीन चिंतन से स्वाधीन समाज को जन्म दे सकता है। सबके लिए जीना सबके साथ जीना ''बहुजन हिताय'' उनका सदैव संकल्प रहा।

उनके लिए ''औरो को हँसते देखो मनु'' का श्रद्धा मंत्र हमेशा प्रेरणा रहा। यह बात अलग है कि अपने समय के आकुलि किलातों से उन्होंने स्वयं टक्कर ली। और यह कहकर ली –

आकुलि किलातों से उन्होंने स्वयं टक्कर ली। और यह कहकर ली –

पंथ होने दो अपरिचित प्राण रहने दो अकेला।

उन्होंने किसी को बुलाया – तो वह पूर्णवतार, भक्तों की, दीनों की पीर हरने वाला कृष्ण ही है। यथा –

जाग बेसुध जाग, वृन्दावन बिहारी जाग।

इस जागरण में भारतेन्दु और माखनलाल चतुर्वेदी की परंपरा संवाद करती मिलती है। पद्य में तो नहीं, लेकिन गद्य में छायावाद का अतिक्रमण बार–बार किया। उनके नारी मन में अपनी बात छिपाकर शालीनता से कही और प्रतीकों का सहारा लेकर कही। यह कोई अपराध नहीं।

महादेवी के गद्य का निर्भय स्वर उनके पद्य की लज्जा भरी छवि को तोड़ता है। महादेवी के खुलेपन का प्रमाण गद्य देता है, पद्य नहीं। कविता छायावाद में ठहर जाती है, लेकिन गद्य जीवन भर उनमें सक्रिय रहता है। कविता महादेवी का संस्कार है, गद्य विचार। गद्य भी ठंडे विचारों का नहीं – दहकते अंगारों के समान। समाज के अँधेरे बंद कमरों में नारी व्यथा को उजागर करता संसार। महादेवी का यह गद्य नारी नवजागरण के इतिहास से भरा गद्य है।

– भावना अग्रवाल (प्रवक्ता–हिन्दी)

रहमतें

करम-ए-खुदा है सांसें अपनी,
पर इसका कोई भान नहीं ?
दूर देश में अच्छा सबकुछ,
अपने घर पर मान नहीं ?
विशाल कमरें और मंहगें बिस्तर,
है क्या तारों की छाँव कहीं ?
रंग बिरंगी दीवारें घर में, पर,
है या कोने में खिलखिलाहट कहीं ?
ये क्या ? बाहर घिरती रोज घटाएं,
पर अपने आंगन में बरसात नहीं ?
घर्म, सियासत पर लड़ें आवाजें,
बुजर्गों की हंसी पर ध्यान नहीं ?
खुद का भवन बनाते तिन-तिन,
पर बस्तियां जलाने में हिचक नहीं ?
दौलत गिनते, जोड़ घटाते, उत्तम !
पर मुस्कानों का है हिसाब कहीं ?
जेहन, ख्याल के बड़े किस्से बनते,
पर नहीं है दो मुट्ठी जज्बात वहीं ?
जमा जोड़ कर घड़ियाँ चलती, खेल है जारी,
देख तो है जिंदगी का हिसाब-ओ-किताब यहीं !

डॉ. रूपाली जोशी *(मनोविज्ञान विभाग)*

रामनगर महाविद्यालय

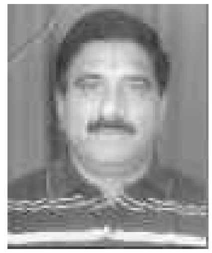

शुभ्र हिमालय की तलहटी में,
है बसा महाविद्यालय हमारा।
वरदायिनी, वीणाधारणी माँ सरस्वती,
करते हैं नित वन्दन तुम्हारा।।
है नमन शत-शत तुझे,
हे पावन-पवित्र राम की नगरी।
भरतपुरी लखनपुर हैं वाम खड़े,
पीछे बसी पम्पापुरी।।
महाराज गूलर सिद्ध जी नित,
करते कृपा इस विद्यापीठ पर।
करते मनोरथ सिद्ध इसका,
निज शुभ हस्त रखते शीश पर।।
है माँ भवानी का पुर यहाँ,
महाबली हनुमान धाम एक छोर पे,
मंत्रमुग्ध है माँ सीताबनी में,
माँ कोसी के कलकल शोर से।।
कर सके नित उन्नति ये मंदिर,
नित नये आयामों की ओर है।
हों सफल इस जीवन यज्ञ में हम,
विनती यही करजोर है।।
करते जतन तन-मन से मिलकर,
शिष्य, सेवक और प्रधान सभी।
लक्ष्य सबका एक ही है,
बिगड़े न इज्ज्त आन कभी।।
है पठन-पाठन में अब्बल,
भौंचक कर देते योग से,
हर खेल में भी नाम इनका,
सब स्वस्थ रहते रोग से।।
करते परिश्रम मिल सभी जन,
पर करी न फल की कामना।
निज कृपा सभी पर कर भवानी,
माँ तू हाथ सबका थामना।।
अन्त में माँ सुनो निवेदन,
तुम हम सभी का ध्यान से।
कर दो सफल जीवन हमारा,
मन-मस्तिष्क भर दो ज्ञान से।।

- आर.सी. तिवारी
(मुख्य प्रशासनिक अधिकारी)

आलेख/कविताएँ
शोध–वर्ग

मैत्रेयी पुष्पा के कथा–साहित्य में स्त्री जीवन की छवियाँ

प्राचीनकाल से लेकर आज तक भारतीय समाज में स्त्री विमर्श किसी न किसी रूप में विचारणीय रहा है। यह सर्वविदित है कि साहित्य समाज का दर्पण है किसी भी रचनाकार की रचना में अपने समयकाल तथा उस समय के प्रचलन सिद्धान्तों का समावेश होता है। समय–समय पर रचनाकारों ने अपनी रचनाओं में नारी चित्रण को महत्व दिया है। भारतेन्दु कालखण्ड से लेकर आज तक के सभी उपन्यासों पर दृष्टि डालें तो यह स्पष्ट दिखाई पड़ता है कि उनके नारी पात्रों में नारी के शोषण उन पर होने वाले अन्याय, अत्याचार आदि समस्याओं को व्यक्त किया है।

वर्तमान युग की सबसे सशक्त तथा विवादास्पद लेखिका मैत्रेयी पुष्पा स्त्री विमर्श के लिए जानी जाती है। उन्होंने अपनी रचनाओं में स्त्री विमर्श को विशेष महत्व दिया है। इसके लिए वह हमेशा चर्चाओ में रहती है। उन्होने हिन्दी साहित्य को जितने सशक्त उपन्यास दिए हैं, उतनी ही सशक्त कहानियाँ भी दी है। मैत्रेयी पुष्पा ने स्त्री विमर्श के कोष को समृद्ध बनाने में अद्वितीय योगदान दिया है। अपने कहानियों के माध्यम से भी वह इसी आधी दुनिया को उसके मनुष्य होने का दर्जा दिलाने की लड़ाई लड़ती है। उसके मनुष्यत्व को स्वीकारना आज मानवता का सबसे बड़ा सवाल है। आज भी मानव की अवधारणा मे स्त्री और पुरुष दोनों को समान रूप से शामिल नहीं किया जाता। जानबूझकर स्त्री को इससे अलगाने की स्थिति खत्म नहीं हुई है।

जब तक स्त्री स्वयं विचार विश्लेषण नहीं करेगी तब तक उसे पुरुष द्वारा प्रस्थापित व्यवस्था के अनुसार ही जीवन बिताना पड़ेगा। अगर उसे मनुष्य की श्रेणी में दाखिल होना है तो स्वयं ही उसे परम्परागत खोखली रूढ़िवादिता के सम्मोहक जाल को तोड़ना होगा। जब से लेखिकाओं, कलाकर्मियों ने इस सत्य को जाना तभी से स्त्री विमर्श सामने आ सका है।

स्त्री विमर्श ने हजारों वर्षो से चला आ रहा पितृसत्तात्मक प्रतिमानों को चुनौती दे दी है क्योंकि वे सिद्धान्त पुरुष द्वारा निर्मित है। पितृसत्तात्मक सिद्धान्तों में ही निहित उन प्रचण्ड आतंविरोधो को सामने रखा है जो स्त्री विरोधी हैं। पुरुष कभी भी स्त्री विमर्श को खुले मन से स्वीकृति नहीं देता। वैदिककाल से ही लड़कियों की उपेक्षा और लड़कों के जन्म को ज्यादा महत्व दिया जाता रहा है। यही कारण है कि पुत्र के जन्म के समय उत्सव एवं मनोरंजन होते हैं। बेटी के जन्म पर सर्वत्र सन्नाटा छाया रहता है जैसा की घर में मातम का माहौल हो।

मैत्रेणी पुष्पा की 'पगला गयी भाग्यवती' कहानी में अनुसूइया की है। ''अनुसूइया पैदा हुई थी जिज्जी की पाँचवीं सतांन। पहले चार लड़के थे। वह सतमासी जनम पड़ी, रोई न कुलबुलाई, महतरानी ने बड़ी निश्चिंतता से एक कोने में तसले समेत धर दी।'' मोड़ी जनमी है, मरी भई द्वारे खबर कर दो। लेकिन वास्तविकता में यह दर्जा देना बहुत ही कठिन है यही स्वयं जन्म देनी वाली जननी ही बेटी के जन्म की घृणा करें तो लड़कियाँ जाए कहाँ।

जब भी हम लड़कियों के दु:ख की बात करते हैं। अक्सर कहा जाता है कि उन्हें ससुराल में न जाने क्या–क्या सहना पड़े, लेकिन लड़कियाँ ससुराल में तो बाद में जाती है पहला अन्याय तो उनके साथ उसी वक्त शुरू हो जाता है। जब वे पैदा होती है और खुशी की जगह आँसू बहाए जाते हैं। इस समस्या की ओर ध्यान खींचती मैत्रेयी पुष्पा की 'तुम किसकी हो बिन्नी ?' कहानी में बिन्नी की माँ आरती को भी पुत्र जन्म से लगाव है पढ़ी–लिखी शहरी वातावरण में जीवन निर्वाह करने वाली

आधुनिक स्त्री आरती वैचारिक स्तर पर परम्परागतही है। पुत्र प्राप्ति के मोह में वह इतनी अंधी हो गई कि वह अपनी कितनी ही बेटियों को भ्रूण में ही खत्म कर चुकी है। इस तरह पुरुष वर्चस्व परिवार के हाथों आज नया अस्त्र लगा हुआ है वह उसका खात्मा मेडिकल साइंस केसहारे करने लगा है। बेटी किसी भी तरह बच ही जाए तो भी उसे वह सारी सुविधाएस्‍ उपलब्ध नहीं होती जो एक बेटे के लिए प्राप्त होती है। लड़की के जन्म के साथ ही उसके स्वास्थ्य और शिक्षा के प्रश्न जुड़े हैं लेकिन हमेशा ही उसे पराया धन या दरिद्र मानकर इस मूलभूत आवश्यकताओं से भी वंचित रखा जाता है। इस समस्या को मैत्रेयी पुष्पा की 'बेटी' कहानी में देखा जा सकता है। लेखिका ने बड़े ही मार्मिक ढंग से बेटा-बेटी को लेकर किए जाने वाले अन्याय का चित्रण किया है।

शिक्षा के प्रचार-प्रसार एवं मानवी विकास के तमाम नारों के बावजूद प्रचलित भ्रष्ट समाज-व्यवस्था में आज भी दहेज प्रभा रूढ़ नजर आती है। समसामयिक समाज में प्रचलित दहेज प्रथा और उसके अमान्य रूप को दर्शाना तथा उसके प्रति विद्रोह की भावना को व्यक्त करना मैत्रेयी पुष्पा की कहानियों का सरोकार है। समस्या तथा समाधान दोनों ही भाव उनकी कहानियों में प्राप्त होता है।

खासतौर पर अगर महिलाओं के आत्म सम्मान की बात की जाए पुरुष प्रधान समाज ने स्त्री का भोग-विलास की वस्तु समझा है। हर दिन कहीं न कहीं महिलाओं के साथ छेड़छाड़, यौन उत्पीड़न आदि जघन्य अपराध दिल दहलाने वाली घटनाएँ सुनने को मिलती है जो अब आम हो चुका है।

मैत्रेयी पुष्पा ने अपनी कहानियों के द्वारा बलात्कार की शिकार स्त्री की जटिल त्रासदी को व्यक्त किया है। उनकी वहेलिया कहानी में बलात्कार का दृश्य आतंकित कर देता है क्योंकि किसी की काम पिपासा की शिकार भोली कुँआरी माँ बन गयी थी। शाहूकार का बेटा अमानवीय बलात्कार कर उसे सम्पूर्ण अंग को क्षत-विक्षत कर देता है। इस तरह से न जाने कितने दंश एक स्त्री को हर दिन झेलने पड़ते हैं। बात की जाए अगर स्त्री की स्वतंत्र अस्तित्व की तो तो आज के बौद्धिक युग में भी सन्देहास्पद है। सामाजिक रीति-रिवाज और सामाजिक बन्धनो में जकड़ी स्त्री मानसिक स्तर पर टूट रही है। उसके परिचय और संवेदनाओं के साथ अत्यन्त निर्दयता पूर्ण व्यवहार किया जा रहा है।

कभी-कभी पति ही पत्नी को आगे बढ़ने का अवसार प्रदान करता है किन्तु पत्नी की प्रतिभा को देखकर वह ईर्ष्यालु हो जाता है और वह पत्नी के विकास को अवरूद्ध कर देना चाहता है।

अतः इस प्रकार से मैत्रेयी पुष्पा ने अपनी कहानियों के माध्यम से स्त्री जीवन की अनेक छवियों को उजागर किया है। स्त्री की समस्याएँ जटिलताएँ आदि के विषय में इन्होंने अपनी रचनाओं में बहुत अच्छे ढंग से चित्रण किया है। इनकी कहानियों में समस्या तथा समाधान दोनों ही भाव मिलते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचियाँ -

(1) मैत्रेयी पुष्पा 'सुनो मालिक सुनो' पृ.सं.-69

(2) मैत्रेयी पुष्पा गोमा हँसती है, किताबघर प्रकाशन नई दिल्ली, पृ.सं.-12

(3) मैत्रेयी पुष्पा ललमानियाँ, पृ.सं.-107

- मीना (शोध छात्रा-हिन्दी)

दलित आत्मकथाओं में स्त्री चिंतन

21वीं सदी की सबसे महत्वपूर्ा विद्या आत्मकथा है। आत्मकथा का जो पुराना ढांचा था वह इस दौर में टूटा। विशेष रूप से दलित आत्मकथाओं ने आत्मकथा के विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। इन दलित लेखिकाओं ने अपनी आत्मकथा लिखकर अपने साथ व सम्पूर्ण दलित स्त्रियों के साथ हो रहे अत्याचार, शोषण, पीड़ा, दुख, दर्द को व्यक्त किया, जो वह सदियों से सहती आई है। इन आत्मकथाओं ने दलित लेखन में हलचल पैदा कर दी है। हलचल पैदा करने का मुख्य कारण है। इन आत्मकथाओं में मानवता को शर्मसार कर देने वाला जीवन यथार्थ जो बेहद अमानवीय है। जिसे इन दलित लेखिकाओं के साथ-साथ सम्पूर्ण समाज ने भोगा है। दलित महिलाओं द्वारा लिखी आत्मकथाएँ समाज में आईने की भाँति उनकी स्पष्ट तस्वीर पेश करती है।

दलित महिलाओं की स्थिति अपने घर परिवार समाज से लेकर हर जगह दोयम दर्जे की है। यही स्थिति साहित्य के क्षेत्र में भी बनी हुई है। फिर भी तमाम तरह के सामाजिक व व्यक्तिगत आक्षेप, लांछन और विरोध सहते हुए भी बिना रूके डरे साहित्य की प्रत्येक विधा में सामाजिक प्रतिबद्धता के साथ शिद्दत से अपने तथा अपने समाज के बारे में लिखते हुए वह अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज करवा रही है। कठिनाईयों से जूझना, आर्थिक सबलता के लिए कठिन प्रयास भूख से लड़ाई, स्त्री होने के कारण घर और बाहर होने वाली अवहेलना, अपमान और शोषण की तिहरी मार को झेलना पड़ता है।

लेखिकाओं ने अपनी आत्मकथा में घटनाओं, संघर्षों का मुख्य रूप से वर्णन किया है। इन लेखिकाओं ने स्वयं अपने जीवन में भी एक स्त्री होने के कारण सारी पीड़ा को सहा है, जो एक स्त्री सदियों से सहती आ रही है। हमारे समाज में सबसे नीचे खड़ी दलित स्त्री ने सामाजिक निषेधार्थ को लाँघते हुए ब्राहमणवादी व्यवस्था के आधार खड़े स्तम्भ, धर्म, पितृ-सत्ता और जाति को हमेशा टक्कर दी है।

हमारे देश में दलित स्त्रियों की स्थिति बहुत दयनीय रही है। दलित स्त्रियों की समस्या और स्वाभिमान जब एक दलित महिला व्यक्ति करती है तो वहाँ अन्य महिलायें भी उस समस्या को अनुभव करती है। अनेक दलित लेखिकाओं ने आत्मकथा के माध्यम से अपने व दलित स्त्रियो के दर्द को उठाने की कोशिश की है। जिनमें प्रमुखरूप से बेबी ताई कांबले की 'जीवन हमारा' कौशल्या बैसन्ती की 'दोहरा अभिशाप' उर्मिला पवार की 'आयदान' कुमुद पावड़े की 'माझी जन्माची चित कथा' और सुशीला टांकभौरे की 'शिकंजे का दर्द' है।

यह मात्र आत्मकथाएँ ही नहीं बल्कि यह दलित-स्त्रियों के जीवन और उनके समाज की दुख-दर्द, पीड़ा की अभिव्यक्ति के मार्मिक दस्तावेज है। ऐसी कठोर दुख-दर्द, पीड़ा की अभिव्यक्ति के मार्मिक दस्तावेज है। ऐसी कठोर दुख-दर्द व पीड़ा जिन्हें वे सदियों से सहती आई हैं। इन दलित लेखिकाओं की आत्मकथाओं में स्वतंत्रता के लिए तड़प और न्याय के लिए आक्रोश है। अपनी आत्मकथाओं में से लेखिकायें अपनी इन पीड़ा-आक्रोश, इच्छाओं, आकांक्षाओं का बड़ी ही निडरता और बहादुरी से चित्रण कर रही हैं। इन दलित लेखिकाओं की आत्मकथायें व्यक्तिगत होते हुए भी सामाजिक हैं। इनका संघर्ष ''मैं'' के लिए ना होकर सम्पूर्ण स्त्री जाति की मुक्ति की कामना के लिए है। इसलिए उनकी आत्मकथा के स्वर सम्पूर्ण स्त्री जाति के स्वर को व्यक्त करते हैं।

कौशल्या बैसंत्री जी की आत्मकथा 'दोहरा अभिशाप' 1999 ई0 में प्रकाशित दलित समाज में महिला के जीवन के संघर्षों की व्याख्या है। इनकी आत्मकथा में दलित समाज की अच्छाई-बुराई सभी का वर्णन मिलता है। दोहरा अभिशाप एक दलित नारी के जीवन की संघर्षरत् करूण गाथा है। लेखिका कौशल्या बैसत्री अपनी आत्मकथा 'दोहरा अभिशाप' की भूमिका में अपनी भोगी पीड़ा को व्यक्त करते हुए कहती है-

पुत्र, भाई, पति सब मुझसे नाराज हो सकते हैं, परन्तु मुझे भी वो स्वतन्त्रा चाहिए कि मैं अपनी बात समाज के सामने रख सकूं। मेरे जैसे अनुभव और भी महिलाओं को आए होंगे परन्तु समाज और परिवार के भय से अपने अनुभव समाज के सामने उजागर करने से डरती और जीवन भर घुटन में जीती है। समाज की आँखें खोलने के लिए ऐसे अनुभव सामने आने की जरूरत है।'' (कौशल्या बैसंत्री, 'दोहरा अभिशाप' भूमिका से)

आत्मकथा में नारी जीवन की दर्द भरी दास्तान मौजूद है। लेखिका अपने हिस्से के शोषण को और समाज की घृणा भरी मानसिकता को आत्मकथा के माध्यम से उजागर करने का साहस करती है। अनेकों विरोधोंके बावजूद लेखिका ने आत्मकथा में अपनी त्रासदी को उजागर किया, उनके पति, भाई और पुत्र ने भी विरोध जताया क्योंकि वे सारे पुरूषीय मानसिकता से ग्रस्त थे। हमारी खोखली मानसिकता व सामाजिक व्यवस्था ने स्त्री को पुरुषों से कम महत्व, मान-सम्मान एवं अधिकार दिये हैं। इस वास्तविकता को कौशल्या जी ने अपनी आत्मकथा में व्यक्त किया है। वही प्रसिद्ध लेखिका बेबी ताई कांबले की आत्मकथा 'जीवन हमारा' जिसमें दलित समाज की भयंकर गरीबी के अनेक भयावह चित्र है और खासकर दलित महिलाऐं जिन परिस्थितियों में जीती हैं वह स्थिति तो बहुत ही भयानक है। कौशल्या बैसन्त्री और बेबी कांबले ने ऐसी अनेक कुरीतियों और अंधविश्वास का वर्णन किया है। जिसके कारण दलित महिलाओं पर अत्याचार होते हैं। 'जीवन हमारा' में बेबी ताई कांबले 'खोड़ा प्रथा' का वर्णन करते हुए कहती है –

''आदमी अपनी प्रभुत्व साबित करने के लिए बहू को पीटता, अत्याचारों से तंग आकर बहू अगर मायके भाग जाती है तो उसे पुनः ससुराल लाया जाता। ससुराल पहुँचने पर उस पर एक नया कहर टूट पड़ता''

पाँच किलो वजन की जकड़ी बढ़ई के पास ले जाकर गोल आकार में कटवाई जाती, उस गोल लकड़ी के बीचों-बीच पाँव घुसने जितना छेद बनवाया जाता। पाँव में पहनाने के बाद वह निकल न जाये इसलिए छेद के बीचों-बीच एक सरिया लगा दिया जाता। इसे बहू के सीधे पाँव में पहना दिया जाता। वहा 'खोड़ा' पहन कर बहु को सारा काम करना पड़ता। उसके पाँव जख्मी होते और उसमें से अक्सर खून बहता-निकलता रहता। (www.neelkranti.com>2013/02/11)

बेबी ताई कांबले अपनी पूरी संवेदना के साथ इस जख्मी औरत के साथ खड़ी नजर आती है। 'आयदान ' की लेखिका उर्मिला पवार ने अपनी माँ के जीवन-संघर्ष को आधार बनाकर अपनी आत्मकथा का नाम 'आयदान' रखा है। लेखिका की माँ दिन भर 'आयदान' यानि टोकरिया बुना करती थी। लेखिका अपनी आत्मकथा में कहती है – आये आयदान बनाती थी, आये का 'आयदान' और मेरे लेखन की बुनाई मुझे एक स्त्री दिखाई देती है जो पीड़ा के धागे से बुनी हुई है।

आयदान की लेखिका उर्मिला पवार का जीवन, संघर्षों से गुजरता है फिर भी वह हार नहीं मानती। उनके मजबूत निर्णयों के संदर्भ में 'आयदान' के एक प्रसंग का वर्णन करना अनिवार्य है, जिसमें वह अपनी बेटी की शादी ऐन वक्त पहले जाहिर इच्छा सुनकर समाज की परवाह न करते हुए उसके मनपसंद लड़के से करवा देती है।

लेखिका के शब्दों में –

निमंत्रण छपे, पोशाके बनवाई गई, बेटी को देने का सामान तैयार हुआ, हॉल निश्चित हुआ और ऐन वक्त बेटी के उस पसन्दीदा लड़के ने अपना प्रेम जाहिर किया मालविका से शदी की इच्छा प्रकट की। उसका इतना कहना था कि यहाँ मालविका ने शादी तोड़ने की इच्छा जाहिर कर दी....................में देख रही थी, नियोजित शादी से तीनो व्यक्ति दुाखी होंगे।

बेटी की जिन्दगी को दुखी होने से बचाने का यही एक अवसर था.......................सही निर्णय मुझे आज ही लेना था............... सही निर्णय मुझे आज ही लेना था..............आज यदि में अपनी बेटी का साथ दूँ तो नियोजित वर के साथ अन्याय जरूर होगा पर अन्याय तो शादी के बाद भी होगा...........नियोजित शादी हॉल पर ही टूट गई.......मेरी काफी थुक्का-फजीहत हुई.........सबने यही कहा कि बेटी के प्यार के बारे में माँ को तो पता ही होना चाहिए। कैसी औरत है ये जो सभा सम्मेलनों, कार्यक्रमों में ही व्यस्त रहती है?................मेरे मातृत्व की धज्जियाँ उड़ा दी गयी। (www.neelkranti.com>2013/02/11)

समाज में बदलाव लाने की लड़ाई सबसे पहले अपने घर में शुरू करनी पड़ती है। यह आत्मकथा इस विचार को पुष्ट करती है। वहीं लेखिका सुशीला टाकभौरे की आत्मकथा 'शिकंजे का दर्द' नारी के शोषण के विरूद्ध संघर्ष की गाथा है। लेखिका ने इस आत्मकथा के माध्यम से यह महत्वपूर्ण संदेश दिया है कि समाज के शोषित शिंकजे से मुक्ति पानी है तो सबसे पहले शिक्षित होना ही पड़ेगा। लेखिका के शब्दों में –

''सच यह था –कब आया यौंवन जान न पाया मन! शिकंजे में जकड़ा जीवन कभी मुक्त भाव का अनुभव ही नहीं कर पाया। जिन्दगी एक निश्चित की गई लकीर पर चलती रही वह उमंग कभी मिली ही नहीं जो यौवन का अहसास कराती। उम्र के साथ कटु अनुभूतियों के दंश महसूस होते रहे। पीड़ा से छटपटाता मन मुक्ति का ध्येय लेकर आगे बढ़ता रहा। तब मुक्ति का मार्ग मैंने शिक्षा प्राप्ति को ही माना था।''

(शिकंजे का दर्द, सुशीला टाकभौरे, पृ.सं.–114)

निष्कर्ष

इस प्रकार उपर्युक्त विवेचना से स्पष्ट होता है कि हिन्दी की दलित आत्मकथा लेखन में दलित महिलाओं की आत्मकथाएँ एक विशिष्ट योगदान रखती है। दलित लेखिकाओं ने अपनी आत्मकथा लिखकर अपने साथ व सम्पूर्ण दलित स्त्रियों के साथ हो रहे अत्याचार शोषण, पीड़ा, दु:ख दर्द को व्यक्त किया है। जो वह सदियों से सहती आई है। दलित महिलाओं की आत्मकथाऐं समाजा में आईने की भाँति उनकी स्पष्ट तस्वीर पेश करती है। इन महिलाओं ने स्वयं अपने जीवन में भी एक स्त्री होने के कारण सारी पीडा को सहा है जो एक स्त्री सदियों से सहती आ रही है। हमारे समाज में सबसे नीचे खड़ी दलित स्त्री ने सामाजिक निषेधार्थ को बाँधते हुए ब्राह्मणवादी व्यवस्था के आधार खड़े स्तम्भ, धर्म, पितृ–सत्ता और जाति को हमेशा टक्कर दी है। दलित स्त्रियों की स्थिति हमारे देश में बहुत दयनीय रही है। दलित स्त्रियों की समस्या और स्वाभिमान जब एक दलित महिला व्यक्त करती है तो वहाँ अन्य महिलायेँ भी उस समस्या को अनुभव करती है।

ये आत्मकथाएँ ही नहीं है बल्कि यह दलित–स्त्रियों के जीवन और उनके समाज की दुख–दर्द, पीड़ा की अभिव्यक्ति के मार्मिक दस्तावेज हैं। इनका संघर्ष मैं के लिए ना होकर सम्पूर्ा स्त्री जाति की मुक्ति की कामना के लिए है। इसलिए उनकी आत्मकथा के स्वर सम्पूर्ण स्त्री जाति के स्वर को व्यक्त करते हैं। दोहरा अभिशाप की लेखिका कौशल्या बैसन्त्री अपने हिस्से के शोषण को और समाज की घृणा भरी मानसिकता को अपनी आत्मकथा के माध्यम से व्यक्त करती है। अनेकोकं विरोधों के बावजूद लेखिका ने आत्मकथा में अपनी त्रासदी को उजागर किया, उनके पति, भाई और पुत्र ने भी विरोध जताया क्योंकि वे पुरूषी मानसिकता से ग्रस्त थे। वहीं बेबी ताई कांबले की आत्मकथा 'जीवन हमारा' जिसमें दलित समाज की भयंकर गरीबी के अनेक भयावह चित्र है खासकर दलित महिलाएँ जिन परिस्थितियों में जीती हैं। वह स्थिति तो बहुत ही भयानक है।

'आयदान' की लेखिका उर्मिला पवार ने समाज में बदलाव लाने की बात को प्रमुख रूप से व्यक्त किया है। वह कहती है अगर समाज में बदलाव लाना है तो सबसे पहले अपने घर यह लड़ाई लड़नी पड़ेगी। वही लेखिका सुशीला टाकभौरे की आत्मकथा ''शिकंजे का दर्द'' नारी के शोषण के विरूद्ध संघर्ष की गाथा है। लेखिका ने अपनी आत्मकथा के माध्यम से यह महत्वपूर्ण संदेश दिया है कि समाज के शोषित शिंकजे से मुक्ति पानी है तो सबसे पहले शिक्षित होना ही पड़ेगा।

अत: यह कहना उचित होगा कि, ये सभी दलित लेखिकायें अपने आसपास ही जीवन से जूझते दिखाई देते हैं। इन लेखिकाओं ने अपने आसपास ही जीवन से जूझते दिखाई देते हैं। इन लेखिकाओं ने अपने जीवन में शोषण, अत्याचार, पीड़ा को सहा है तथा इनके विरूद्ध ये हमेशा खड़ी रही है और समाज की घृणा भरी मानसिकता से संघर्ष करती रही है। जो प्रेरणादायक है और हमेशा महिलाओं को प्रेरणा देंगी।

– कु. प्रियंका (शोधार्थी–हिन्दी)

दहेज प्रथा : एक अभिशाप अथवा दहेज : एक सामाजिक कलंक

प्रस्तावना – दहेज प्रथा के विरोध में लिखने वाले अमर साहित्यकार प्रेमचन्द्र हैं। परन्तु हमने उनकी, उनके विश्वास की और उनके साहित्य की हत्या कर डाली है। समाज के जिन कर्णधारों से प्रेमचन्द्र यह आशा करते थे कि उनकी दहेज–विरोधी यथार्थ दृष्टि के सम्मान में वे दहेज का उन्मूलन कर डालेंगे। वे ही प्रथम पंक्ति के सामाजिकगण, यूँ कहिए कि आज के गणमान्य नागरिक ही दहेज लेन–देन के सफल व्यापारी बने हुए हैं। आज हम प्रेमचन्द्र की आवाज का गला घोंटने में कितने सफल हैं। कितने कृतघ्न हैं। हम उनके प्रति, यदि आत्मविश्लेषण करें तो शायद मुँह छुपाने को भी जगह न मिले। परिणामस्वरूप दहेजरूपी दानव आज भारतीय समाज में विनाश लीला मचाए हुए है।

समाज का यह कलंक निरन्तर विकृत्त रूप धारण करता जा रहा है। समय रहते इसका निदान और उपचार आवयश्क है अन्यथा समाज की नैतिक मान्यताएँ नष्ट हो जाऐंगी और मानव–मूल्य समाप्त हो जाऐंगे।

दहेज का अर्थ – सामान्यत: दहेज से तात्पर्य उन सम्पत्तियों तथा वस्तुओं से समझा जाता है, जिन्हें विवाह के समय वधू–पक्ष की ओर से वर–पक्ष को दिया जाता है। मूलत: इसमें स्वेच्छा का भाव निहित था, किन्तु आज दहेज का अर्थ इससे नितांत भिन्न हो गया है। अब इससे तात्पर्य उस सम्पत्ति अथवा मूल्यवान वस्तुओं से हैं। जिन्हें विवाह की एक शर्त के रूप में कन्या पक्ष द्वारा वर–पक्ष को विवाह से पूर्व अथवा बाद में दिया जाता है। वास्तव में इसे दहेज की अपेक्षा वर–मूल्य कहना अधिक उपयुक्त होगा।

दहेज प्रथा के प्रसार के कारण – दहेज प्रथा के विस्तार के अनेक कारण हैं। इनमें से प्रमुख कारण इस प्रकार हैं –

(क) धन के प्रति अधिक आकर्षण

(ख) जीवन साथी चुनने का सीमित क्षेत्र

(ग) बाल–विवाह

(घ) शिक्षा और व्यक्तिगत प्रतिष्ठा

(ङ) विवाह की अनिवार्यता

दहेज प्रथा के दुष्परिणाम – दहेज प्रथा ने हमारे सम्पूर्ण समाज को पथभ्रष्ट तथा स्वार्थी बना दिया है। समाज में यह रोग इतने व्यापक रूप से फैल गया है कि कन्या के माता–पिता के रूप में जो लोग दहेज की बुराई करते हैं। वे ही अपने पुत्र के विवाह के अवसर पर मुँहमाँगा दहेज प्राप्त करने के लिए लालायित रहते हैं। इससे समाज में अनेक विकृतियाँ उत्पन्न हो गई है तथा अनेक नवीन समस्याएँ विकराल रूप धारण करती जा रही हैं। यथा –

(क) बेमेल विवाह

(ख) ऋणग्रस्तता

(ग) कन्याओं का दु:खद वैवाहिक जीवन

(घ) आत्महत्या

(ङ) अविवाहिताओं की संख्या में वृद्धि

समस्या का समाधान – दहेज प्रथा समाज के लिए निश्चित ही एक अभिशाप है। कानून एवं समाज–सुधारकों ने दहेज से मुक्ति के अनेक उपाय सुझाऐ हैं। यहाँ पर उनके सम्बन्ध में संक्षेप में विचार किया जा रहा है।

(क) कानून द्वारा प्रतिबन्ध – अनेक व्यक्तियों का विचार था कि दहेज को लेन–देन पर कानून द्वारा प्रतिबन्ध लगा दिया जाना चाहिए। फलत: 9 मई 1961 ई. को भारतीय संसद में दहेज निरोधक अधिनियम स्वीकार कर लिया गया।

(ख) अंर्तजातीय विवाहों को प्रोत्साहन – अंर्तजातीय विवाहों को प्रोत्साहन देने से वर का चुनाव करने के क्षेत्र में विस्तार होगा।

(ग) युवकों को स्वावलम्बी बनाया जाऐ – स्वावलम्बी होने पर युवक अपनी इच्छा से लड़की का चयन कर सकेंगे।

(घ) लड़कियों की शिक्षा – जब युवतियाँ भी शिक्षित होकर स्वावलम्बी बनेगी तो वे अपना जीवन–निर्वाह करने में समर्थ हो सकेंगी।

(ङ) जीवनसाथी चुनने का अधिकार – प्रबुद्ध युवक–युवतियों को अपना जीवनसाथी चुनने के लिए अधिक छूट मिलनी चाहिए।

उपसंहार – दहेज प्रथा एक सामाजिक बुराई है। अत: इसके विरूद्ध स्वस्थ जनमत का निर्माण करना चाहिए। जब तक समाज में जागृति नहीं होगी। दहेजरूपी दैत्य से मुक्ति पाना कठिन है। राजनेताओं, समाज–सुधारकों तथा युवक–युवतियों आदि को सहयोग से ही दहेज प्रथा का अंत हो सकता है।

– ***प्रीति (B.A. IInd Sem.)***

कुमाउंनी कविता की परंपरा में 'शेरदा' एवं 'गिर्दा' की कविताएँ

इतिहास लेखन की परम्परा कुमाउनी साहित्य में मुख्य रूप से दो प्रकार से प्रचलित है- (1) मौखिक साहित्य और लोक साहित्य और 2- लिखित साहित्य, इस साहित्य को परिनिष्ठित साहित्य भी कहा जा सकता है मौखिक साहित्य अथवा लोक साहित्य हमारे पूर्वजों से सदियों से हमें श्रवण परम्परा तथा अलिखित रूप में पीढ़ी दर पीढ़ी प्रवाहित होता आ रहा है। जिसे श्रवण के माध्यम से सदियों से रचाया, बसाया गया है इसे सामूहिक धरोहर की भाँति सदैव से संभाला और संजोया गया है।

कुमाउंनी में लिखित शिष्ट साहित्य की परम्परा भी अधिक प्राचीन नहीं है माना जाता है कि सर्वप्रथम लोकरत्न गुमानी पन्त द्वारा लिखित साहित्य प्राप्त होता है कुमाउंनी भाषा का प्रयोग इग्यारवी संदी से उपलब्ध ताम्रपत्रों, सनदों एवं सरकारी अभिलेखों में देखने को मिलता है साहित्यिक अभिव्यक्ति के रूप में लेखन परम्परा सुत्रधार गुमानी जी ही माने जाते है, 'गुमानी' से पूर्व भी कुमाउंनी में साहित्य लिखा जा रहा होगा। किन्तु उसके प्रमाणिक साक्ष्य नहीं होने के कारण वह वर्तमान में जनमानस के समक्ष उपलब्ध नहीं है।

कालक्रमानुसार कुमाउनी के उपलब्ध लिखित साहित्य के इतिहास को निम्नलिखित चरणों में विभाजित किया गया है-

प्रथम चरण – (1800 ई0 से 1900 ई0 तक)

द्वितीय चरण – (1900 ई0 से 1950 ई0 तक)

तृतीय चरण – (1950 ई0 से अब तक)

कालक्रमानुसार और लेखन परम्परा में शेरसिंह बिष्ट 'अनपढ़' 'शेरदा' तथा गिरीश तिवाड़ी 'गिर्दा' दोनों ही तृतीय चरण (1950 ई. से अब तक) में ठहरते हैं, इस काल की रचनाओं में सामाजिक, प्राकृतिक, स्थानीय परिवेश एवं भौगोलिक विशेषताऐं पूर्णत: साकार हुई। उस समय राजनीतिक स्थिति भी डांवाडोल थी। देश आजाद हुआ था स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद लगा कविता लेखन की विषय वस्तु भी बदलने लगी, समस्याओं की अभिव्यक्ति का माध्यम कविताऐं होने लगी, सामान्य से लेकर गंभीर विषय कविताओं के माध्यम से सामने आने लगे उसी समय चीनी आक्रमण और फिर पाकिस्तानी आक्रमण को लेकर भी ओजस्वी और देशभक्तिपरक कविताओं का लेखन कार्य प्रारम्भ हुआ।

ऐसी ही परिस्थितियों में शेरदा एवं गिर्दा दोनों ही महान कवियों ने अपने स्वरों को लेखन रूप में अभिव्यक्त किया। शेर सिंह बिष्ट 'अनपढ़' शेरदा का जन्म सन् 1935 ग्राम माल, अल्मोड़ा के एक निर्धन परिवार में हुआ। पिता का नाम श्री बचे सिंह तथा माता का नाम श्रीमती लछीमा देवी था। पिता की मृत्यु हो जाने के कारण परिवार की आर्थिक स्थिति खराब थी। माँ शहर के अनेक घरों में बर्तन धोने, सफाई और कपड़े धोने आदि के काम से किसी तरह पेट की भूख को शान्त किया करते थे।

'शेरदा' ने भी छोटी उम्र में किसी मास्टरनी के घर पर उसका बच्चा पकड़ने का कार्य करते-करते अक्षरबोध किया। तेरह साल की उम्र में वे घर से भागकर आगरा चले गये, जहाँ भर्ती दफ्तर में पहुँचकर स्वयं को चौथी कक्षा अनुत्तीर्ण बताकर ए.एस.सी. बॉय कम्पनी में नौकरी प्राप्त कर मेरठ चले गये, ट्रेनिंग के बाद इन्हें सिपाही ड्राईवर बना दिया गया। इनका स्वास्थ्य खराब होने पर इन्हें पूना मिलट्री अस्पताल में भर्ती होना पड़ा जहाँ इन्हें सन् 1962 ई. के भारत-चीन युद्ध में घायल हुए अनेक फौजी जवानों के बीच रहने और उनकी मुँह जुबानी उनकी कहानी सुनने का मौका मिला, उनकी आप-बीती और दु:ख भरी दास्तां सुनकर इनका कवि हृदय जाग उठा और ये लेखन कार्य में लग गये। इन्होंने 'ये कहानी नेफा और लद्दाख की' (1962-63) 'दिदी वैणी', 'हसणै बहार' और, 'हमार मैं बाप' (बालम सिंह जनौटी के साथ)(1996)। सेवानिवृत्ति के बाद 'शेरदा' गीत और नाटक प्रभाग में कलाकार रूप में कार्य करने लगे।

'शेरदा' की कविताओं में 'ये कहानी है नेफा और लद्दाख की' में राष्ट्र प्रेम एवं देशभक्ति की प्रधानता है इन कविताओं में 'शेरदा' ने राष्ट्रीय स्वाभिमान और देश भक्ति, देश प्रेम तथा देश की रक्षा की खातिर जिन वीर सपूतों एवं रणबाकुरों ने अक्टूबर 1962 के चीन युद्ध में प्राणों की परवाह करते हुए अदम्य साहस का परिचय दिया है, 'शेरदा' ने उनके आक्रोश को निम्न शब्दों में अभिव्यक्त किया है।

छुरा दिखाया जिस पानी ने, बदले आज प्यार के भाई कह कर गोली चलाई, जिस दुश्मन गद्दार ने,
लेंगे बदला इस धोखे का, इस कपटी मक्कार से, लात मारकर निकाल दो वीरों, नेफा और लद्दाख से।।

'शेरदा' युद्ध भूम में वीरगति को प्राप्त हुए सैनिकों के प्रति संवेदना और उनके बलिदान को अविस्मरणीय बताते हुए देशवासियों की भावनाओं को व्यक्त करते हुए लिखते हैं -

कोटी-कोटी भारतवासी आज करते हैं प्रणाम तुम्हें धन्य-धन्य कह रहा शहीदों, आज सारा जहांन तुम्हें,
रहे जब तक धरती आकाश, बहे गंगा-यमुना में पानी, तब तक वीरों याद रहेगी, तुम्हारी यह अमिट कहानी।

'शेरदा' की कविता सृजन की दूसरी प्रेरक घटना भी पूना में घटित हुई। जब उन्होंने देखा गरीब घरों की औरतें, लड़कियाँ पहाड़ से भगाकर कोठों में देह व्यापार के कार्य में लगा दी गई। उनके नरक जैसे जीवन की कहानी को देखकर 'शेरदा' का हृदय रो-रोकर काँप उठा उनकी यह अश्रुधारा अपनी मातृभाषा कुमाउंनी में कविता रूप में फूट पड़ी। जिन्हें इन्होंने 'दीदी वैणी' शीर्षक से प्रकाशित कराया, इस कविता की कुछ पंक्तियाँ निम्नलिखित है -

नी रयो इमान बाबू, नी रयो धरम।
के नी रई लोक-लाज नी रई शरम।
नान-ठुला दीदी वैणी, भाजण फै गई।
कदुका पहाड़ा वैणी, देशन ए गई।

'शेरदा' ने कुमाउंनी में गंगा को निर्मल और पतित पावनी कहा और ''कठौती में गंगा''(1985) शीर्षक से एक गीत नृत्य नाटिका की भी रचना की, इस नाटिका के अन्त में नेपथ्य गीत के निम्न स्वर भी सुनाई देते हैं।

आज नैं क्वें ऊँच-नीच।

हम सब भाई-भाई।

हम सब धरती लाल।

धरती हमरि माई।

जै-जै भारत माई।

'शेरदा' ने भारतीय राजनीति पर भी व्यंग्य किया है और लोकतंत्र की दशा की ओर भी संकेत किया है। नेताओं के झूठे वादे और भ्रष्टाचार, मूल्यहीनता का परिचय निम्न पंक्तियों में दिया है –

जो बात बात में हात मानी

वै हैती कूनी ग्राम सभा

जाँ हर बात में लात मानीं

वै हैती कूनी विधान सभा....

जाँ सब कूनी और क्वे न सुणन

वै हैती कूनी लोक सभा!

'शेरदा' ने नेताओं के चुनाव के वक्त के चोंचले और चुनाव जीतने के लिए नेताओं की मिथ्या घोषणाएं, जनता को लालच देकर बहला-फुसलाकर वोट मिलने के बाद जनता की सुध तक नहीं लेते न उनकी समस्याऐं देखते हैं इन पंक्तियों में दर्शाया गया है-

नैताज्यू वोटैकि ओट में चटणि चटै गई

यो-ऊ मिलौल के सौ गिन्ती रटै गई।.......

सौ खुखूँल भरि दयूँल कूँछी जो हमौर फोचिन

जे लै छि फोचिन में उ लै टपकै खै गई।

शेरदा 'अनपढ़' की कविताओं में भाव सौन्दर्य एवं कला दोनों ही दृष्टियों से इनकी कविता प्रशंसनीय है। 'बसंत' कविता की कुछ पंक्तियाँ निम्नलिखित हैं।

मखमली उज्याव घुरी रौ ग्यू मसूरै सार

बलाड़ाँ गलाड़ जामि गई, पिडवा दनकार

कौई गई दिन यारो, बौई गई रात।

'शेरदा' गाँधी से बहुत प्रभावित थे, उनकी 'बापू तेरी भौतें याद ऊनै' तथा 'हुलारि आओ बापू' कविताओं में यह प्रभाव स्पष्ट नजर आता है। इन्होंने गाँधी जी पर नाटिका 'समर यात्रा' का अभिनय किया जिसमें इन्होंने गाँधी जी का किरदार निभाया। गाँधी जी उनके हृदय में बसे हुए थे वे लिखते हैं –

तेरि अन्वार मेरि मुखनै छुटनै, बापू तेरि भौते याद ऊनै।

'शेरदा' आगे कहते हैं, गाँधी जी एकमात्र ऐसे महापुरुष थे, जिन्हें बच्चे, बूढ़े, जवान, निरक्षर, अम्मा, से लेकर पढ़े–लिखे शहरी जनता आज भी याद करती है शेरदा लिखते हैं –

हुलरि आओ बापू तुम माठू-माठू

आसै लागि रयूँ मैं बाटैं-बाट।।

'शेरदा' ने कुमाउनी कविता एवं संस्कृति के विकास और प्रसार के क्षेत्र में अत्यधिक योगदान दिया इनके अमूल्य सेवा के लिए विभिन्न संस्थाओं ने इन्हें सम्मानित किया, जिनमें 'ऑखर संस्था लखनऊ', 'गंगा प्रसाद मंत्र', टिहरी, 'शरदोत्सव समिति', पिथौरागढ़, कुमाउनी संस्कृति परिषद कौसानी, हिन्दी संस्थान उत्तर प्रदेश, आदि अन्य अनेक संस्था हैं जहाँ अपनी संस्कृति अपनी धरोहर के रखरखाव हेतु इन्हें हमेशा याद किया जाएगा।

गिरीश तिवारी 'गिर्दा' भी कुमाउनी कविता लेखन के कालक्रमानुसार तृतीय चरण में ठहरते हैं 'गिर्दा' का जन्म 9 सितम्बर सन् 1945 ई0 में अल्मोड़ा के हवालबाग में ज्याली नामक ग्राम में हुआ था। इनके पिता का नाम श्री हंसादत्त तिवाड़ी तथा माता का नाम श्रीमती जीवंती देवी था। इनकी हाईस्कूल तक की शिक्षा राजकीय इंटर कॉलेज अल्मोड़ा से सम्पन्न हुई तथा इंटर की परीक्षा नैनीताल से उत्तीर्ण की। आजीविका चलाने के लिए क्लर्क से लेकर वर्कचार्ज तक काम करना पड़ा फिर संस्कृति और सृजन के संयोग ने कुछ अलग करने की लालसा पैदा की और ये अभिलाषा पूरी हुई जब हिमालय और पर्वतीय क्षेत्र के लोक संस्कृति से सम्बद्ध कुछ करने का अवसार मिला 'गिर्दा' ने जो नाटक निर्देशित किये वे हैं – 'अन्धायुग', 'अन्धेर नगरी', 'थैंक्यू मिस्टर ग्लाड़' भारत दुर्दशा आदि प्रमुख हैं। साथ ही 'नगाड़े खामोश हैं' और 'धनुष यज्ञ' नाटकों का लेखन किया 'गिर्दा' ने कुमाउनी हिन्दी की अनेक कविताऐं लिखी। इन्होंने 'शिखरों के स्वर (1969) हमारी कविता के आँखर(1978) में सहलेखक तथा 'रंग डारि दियो हो अनबेलन में' के सम्पादक रहे और 'उत्तराखण्ड काव्य' (2002) के रचनाकार रहे 'झूसिया दमाई' पर इन्होंने अपने अनेक सहयोगियों के साथ शोधकार्य कर अत्यन्त महत्वपूर्ण संकलन तैयार किया। उन्होंने उत्तराखण्ड के अनेक आन्दोलनों में हिस्सेदारी की इनकी कई बार गिरफ्तारी भी हुई गिर्दा आजीवन जन संघर्षो से जुड़े रहें तथा अपनी कविताओं में जन पीड़ा को सशक्त अभिव्यक्ति देते रहे।

'शेरदा' की भांति 'गिर्दा' की कविताओं में अपने मुल्क अपनी संस्कृति अपने राज्य के लिए सदैव चिंता नजर आती है वो कहते हैं भारत आजाद हुए लगभग कई वर्ष हो गये हैं लेकिन आम जनता के हालात बद से बदत्तर होते जा रहे हैं, इसलिए 'गिर्दा' सचेत करते हैं –

पत्थर सा जिगर, पानी सी जुबां

वालों का भरोसा क्या कीजै।

हर बात में बात पलटते हैं

ऐसो का भरोसा क्या किजै।

जैसा कि हम सभी जानते हैं कि 'गिर्दा' नाटककार और एक रंगकर्मी भी थे तो उनकी गजलें और शेर भी स्वाभाविक हैं इसीलिए उनके शेर कहीं–कहीं नाटकीय तेवर के साथ निकलते हैं। –

हालते सरकार ऐसी हो पड़ी तो क्या करें?

हो गई लाजिम जलानी झोपड़ी तो क्या करें?

गोलियाँ कोई निशाना बाँधकर दागी थी क्या?

खुद निशाने पर पड़ी आ खोपड़ी तो क्या करें?

'गिर्दा' के अनेक गीत पहाड़ की संवेदनाओं में बस गये हैं जिन्हें आज भी मुख्य अवसरों पर गाया जाता है –

आज हिमाल तुमन कै धत्यूछ

जागो जागो हो म्यारा लाल।

तथा

जैता एक दिन तो आलो उ दिन यो दुनी में।

'गिर्दा' अद्‌भुत थे। वे कुमाउनी लोक कविताओं में उपमाएं अद्वितीय देते थे, उन्होंने मालूशाही की उपमाओं को कैसे–कैसे प्रस्तुत किया है –

दुती कसी ज्यून है गैछ, पुन्यू कसी चाना

बैसाखी सुरजि जसी, चैत की कैरूवा जसी

पूस की पालंगा जसी.............

'गिर्दा' का प्रकृति वर्णन अत्यधिक प्रशंसनीय है। उन्होंने गाँव के माहौल वहाँ की स्थिति तथा दिनचर्या का अद्‌भुत वर्णन किया है। इन्होंने कविता में ऐसे बिंब प्रस्तुत किये हैं जिससे वे शब्दों से दृश्य जीवित हो उठते हैं जैसे –

छानी खरिक में धुवां लगा है, ओ हो रे,

आय हाय रे ओ हो रे ऽ ऽ ऽ ऽ ओ दिगो लाली

मुश्किल से आमा का चूल्हा जला है

गीली है लकड़ी कि गीला धुवां है

साग क्या छोंका कि गौं महका है

ओ ऽऽ होऽ ऽ रेऽ आय हाय रे ऽ ऽऽऽ

उत्तराखण्ड आन्दोलन के दौरान उनके द्वारा बनाई कविताओं को क्रमवार संजोया गया। उनके गीतों और कविताओं में आम जन की पीड़ा झलकती थी उनका दु:ख-दर्द, समस्याएं नजर आती थी। खटीमा कांड, मुज्जफरनगर कांड में उत्तराखण्डी माँ-बहनों के साथ जो अन्याय हुआ, उसके खिलाफ 'गिर्दा' कवि आक्रोश को 'बाग्स्यौरौंक गीत' 1995 के माध्यम से प्रस्फुटित होता है, जिसमें उन्होंने बागेश्वर में बहने वाली सरयू-गोमती नदियों के जल गंगाजलि उठाकर पृथक उत्तराखण्ड राज्य हेतु कसम खाकर कहते हैं –

सरजू-गोमती संगम में गंगाजली उठूलों

बागस्याराक बगडू में हितों वै फैसाल करूलों

उत्तराखण्ड ल्हयूलो वैणी! उत्तराखण्ड ल्हय

'गिर्दा' पर्यावरण के भी संरक्षक थे उनकी चिपको आन्दोलन में भी भूमिका रही वे राज्य की जलवायु, पेड़े-पौधों, नदी आदि से लगाव रखते थे। 'गिर्दा' का उत्तराखण्ड जो हमारी मातृभूमि है उससे गहरा स्नेह था वे लिखते हैं –

उत्तराखण्ड मेरी मातृभूमि,

मातृभूमि मेरी पितृभूमि

ओ भूमि तेरी जै-जै कारा, म्यारा हिमाला

ख्वार मुकुट तेरी हयूँ झलको,

छलकी गाल गंगै की धारा, म्यार हिमाला।

'गिर्दा' ने पृथक राज्य उत्तराखण्ड के लिए भी अत्यधिक प्रयास किया वे चाहते हैं कि सभी राज्यवासियों का जीवन स्तर ऊँचा उठे उन्हें भी सभी प्रकार की सुख सुविधाऐं प्राप्त हो वे कहते थे, ''कस होलो उत्तराखण्ड'' काँ होली राजधानी राग-बागी यों आजि करला आपुणि मनैमानी,'''गिर्दा' हिमालय के लगातार टूटने, जंगलों के कटने को पहाड़ के जल, जंगल और संसाधन के दोहन, खनन को विकास के मार्ग में बाधा मानते थे चिपको आन्दोलन के समय 'गिर्दा' कहते हैं –

'ढुंग बेचो, माट बेचो बैची खै बज्याणी,

लिस खोपी-खोपी मेरी उधेड़ी दी खाल,'

बीसवीं सदी के आखिरी दशक में जब अलग उत्तराखण्ड राज्य आन्दोलन परवान चढ़ा तब उस राज्य का सपने में जन अभिव्यक्ति करते हुए 'गिर्दा' आम जनता का मनोबल और जोश को बढ़ाते हुए कहते हैं –

वैणी फांसी नी खाली जां रौली नि पडाल भाई

मेरी वाली उमर नि माजौ तलिऊना कढ़ाई

रम, रैफल, लफ्ट-रैट कसि हुछों बतुलों

हम लड़ते रैया भुली! हम लड़ते रूलों!

उत्तराखण्ड राज्य बन जाने के दस साल बाद तक भी 'गिर्दा' अपने आखिरी दिनों तक इस सपने को अपनी पीठ पर लादे धरने पर बैठे रहे कभी सड़क पर कभी मंच पर, कभी जुलूस में पहाड़ के विनाशकारी मॉडल के विरोध पर अपना मत देते रहें वे एक सच्चे देश भक्त, राज्य भक्त और प्रकृति प्रेमी थे।

'शेरदा' में जहाँ कबीर के दर्शन होते हैं वही 'गिर्दा' में नागार्जुन के दर्शन होते हैं दोनों ही क्रांतिकारी कवि थे दोनों में अपनी मातृभूमि के प्रति लगाव, अपने क्षेत्र के प्रति दयाभाव था दोनों जनमानस की पीड़ा से परिचित थे, सामाजिक परिवर्तन तथा सांस्कृतिक धरोहर की रक्षा करना दोनों का ही संकल्प था। 'गिर्दा' को उत्तराखण्ड का जनवादी कवि माना जाता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

(1) शेरदा समग्र, प्रथम संस्करण 2008 (अंकित प्रकाशन हल्द्वानी)

(2) 'हमारी कविता के ऑखर' तिवाड़ी गिरीश, पाठक शेखर, श्याम प्रकाशन, श्री अल्मोड़ा बुक डिपो, गांधी मार्ग।

(3) उत्तराखण्ड काव्य, तिवारी गिरीश, पहाड़ पोथी (2002)।

(4) कुमाउनी काव्य संकलन, रावत प्रो0 चन्द्रकाल, देवभूमि प्रकाशन।

(5) दुदबोली, मठपाल यशोधर, रामगंगा प्रकाशन।

(6) जनपदीय भाषा साहित्य बिष्ट डॉ. शेरसिंह, जोशी डॉ. सुरेन्द्र, अंकित प्रकाशन।

(7) कुमाउनी लोक साहित्य एवं कुमाउनी साहित्य, पोखरिया देवसिंह, अल्मोड़ा बुक डिपो।

(8) कुमाउनी लोक साहित्य एवं लोक गीत, पोखरिया देवसिंह अल्मोड़ा बुक डिपो।

(9) कुमाउनी भाषा और उसका साहित्य, टण्डन राजर्षि पुरूषोत्तम दास, हिन्दी भवन लखनऊ।

(10) छोड़ो गुलामी किताब, पाण्डे चारूचन्द्र, पहाड़ परिक्रमा, तल्ला डांडा नैनीताल।

– भावना वर्मा (शोधछात्रा-हिन्दी)

वन्य जीव संरक्षण

इस संसार में धरती पर जीवन प्रकृति की देन है जिसके चलते मानव व समस्त प्राणी यहाँ जीवन व्यतीत करते हैं। प्रकृति ने मानव को वन, नदी, पर्वत इत्यादि अनमोल उपहार वरदान में दिये हैं। जो मानव के विकास एवं उन्नति में योगदान देते हैं, इसके बिना किसी भी प्राणी के जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती है।

प्राचीन काल में मनुष्य भी अन्य जीवों की तरह वन्य जीवन ही व्यतीत करता था परन्तु अपनी मष्तिष्क व विलक्षण बुद्धि के कारण मनुष्य वन्य जीवन छोड़कर एक सामाजिक जीव बन गया। लेकिन आज भी प्रकृति के बिना आधुनिक जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती है। प्राचीन समय में कवियों ने अपनी कविताओं में प्रकृति में सुन्दर वर्णन किये हैं। इससे यह पता चलता है कि वह लोग प्रकृति संरक्षण के प्रति जागरूक थे।

सर्वप्रथम भारत में कुछ जीवों के संरक्षण हेतु भारत में नियम कानून बनाए गए परन्तु वर्ष 1972 में सर्वप्रथम वन्यजीव अधिनियम के अनुसार ''वन्य जीव संरक्षण'' की नींव रखी गई। 1970 में प्रोजेक्ट टाइगर और 1992 में प्रोजेक्ट एलिफेंट के द्वारा लोगों को वन्य जीवों के प्रति जागरूक किया गया। अन्तर्राष्ट्रीय वन्य संरक्षण समिति में भागीदारी के बाद भारत में कई सम्मेलन आयोजित हुए जिनमें रामरस सम्मेलन 1971 वन्य जीव एवं लुप्त प्रजातियों में अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार सम्मेतलन 1973 प्रवासी प्रजातियों में सम्मेलन 1979 व जैव विविधता सम्मेलन 1992 आदि सम्मिलित है।

वर्ष 1973 के लुप्त प्रजाति अधिनियम बनाया गया, जिसके अन्तर्गत विलुप्त प्रजातियों तथा विलुप्त होने की कगार पर पहुँच चुकी प्रजातियों का सरंक्षण किया गया। आधुनिक युग में शहरीकरण एवं औद्योगीकरण के कारण प्राकृतिक वन लगातार घटते जा रहे हैं, जिससे वृक्षों एवं वन्य जीवों की कई दुर्लभ प्रजातियों के अस्तित्व पर संकट पैदा हो गया हो, वनों के लगातार कटाव से प्राकृतिक संसाधनों की मात्रा में भारी गिरावट हो रही है।

वन्य जीवों के जीवन के लिए पर्याप्त भोजन, पानी, आश्रय एवं स्थान आदि की आवश्यकता होती है, इनके अभाव में वह धीरे-धीरे विलुप्त होने की कगार पर आ जाते हैं। परन्तु शहरीकरण के लिए वन्य जीवों का शिकार एवं तस्करी अत्यधिक बढ़ गया है। इसके अतिरिक्त फैक्ट्रियों एवं चिमनियों से निकलने वाला धुआँ, नदी-तालाब में फेंके गये रासायनिक पदार्थ व कीटनाशक आदि भी जीवों के लिए घातक विष का कार्य करती है, जिससे जीव अपनी प्रजनन क्षमता खो देते हैं।

वन्य जीवों के संरक्षण हेतु हमें कुछ महत्वपूर्ण बातों का ध्यान रखना चाहिए, जिनसे हम प्रकृति द्वारा दिये अनमोल उपहार को सदैव सुरक्षित रख सके।

1. हमें शिकार के लिए वन्य जीवों की हत्या नहीं करनी चाहिए।
2. प्रयोगों के लिए जीवों को मारने की बजाय तस्वीर से उनकी जाँच करनी चाहिए।
3. सुरक्षित स्थान तक ही वनों में प्रवेश करना चाहिए।
4. अपने आस-पास किसी भी घायल वन्यजीव को जानकारी वन विभाग को दे देनी चाहिए।

- भुवन चन्द्र (शोध छात्र-जन्तु विज्ञान)

ये कैसी गाड़ियाँ

सड़क पे चलती गाड़ियाँ
छोटी बड़ी, बहुत बड़ी गाड़ियाँ
सड़कों पे लोग हैं कम
दौड़ती भागती ज्यादा है गाड़ियाँ
कोई एक कदम पर, कोई दो कदम पर
कोई पान लेके, कोई दूध लेके जाते हैं घर
लोग हो गये हैं सुस्त
पर तेज हो गयीं हैं गाड़ियाँ
शताब्दी एक्सप्रेस भी हुई धीमी
इन दो पहियों चार पहियों वाली से
ऐसा हुआ चलन
बस गाड़ी की है लगन
कहीं हॉरन बजाती, कहीं किसी को ठोकती
खुद कभी न रूकती, पर दूसरों को रोकती
धरती के सीने पर इन गाड़ियों का हुआ राज
मानव था चलता पर बेकार हुआ आज
दया करो उन पैरों पर जिन पर खड़े हो
वहीं तुम्हारे अपने और तुम उनके हों
जैसे पेट को दो वक्त की रोटी चाहिए
वैसे ही इन पैरो को भी चलने दो
जरा तेज कर लो इन पैरों की रफ्तार
कुछ काम पैरों को देकर जीवन करो साकार
ये गाड़ियाँ और कुछ न देती
शोर, कोलाहल, धुआँ और बीमारी देती
इंसान को बड़ा होने का झूठा भरोसा देती
लौट आओ अपने घर, अपने ही पैरों पर
जीना है बिना अपाहिज होकर तुम्हें अगर

- शोध छात्रा-भावना वर्मा (हिन्दी)

पहाड़कि याद में

पैली छया या नर
अब आग्यान बानर।
मैस कर दिन्यान आफूड़ पलायन
बज पड़ गयान यांक कुड़ आँगन।
शहरांक बानर पेकडि भैर या छोड़े हाइन
सब चीज जड़, मूड़ उपाड़ सबै खा हाइन।
पड़ गयों, अकाल अब या पहाड़ पुण
क्वें नहा आब घर पूण।
सबुन के लागिगें बजार कि हाव
अब नी लागन भल के करछा काव।
खेती बाड़ी सब छोड़ि हाछि
गोठफन न थौरी न बाछी।
आमा बुबुक सजाई गौं
आब देखन हो ग्यो छ धौ।
सब नान ठुल आ गयान परदेश
घर पुण आब न झगोड़ न क्लेश।
भाषा बोली अब हराई गे
न रैग्या पैल्याक जास आम-बुब।
न रैगई आम बुबुकी चिलम हुक
बुबुक लठ्ठी आमाक लुकाई चप्पल।
आजकल सैड़ी मैस कुनन गौ नहा भल
घर छन कुड़ छन रूनेर को नहाति।
दिन धोपरी घाम में ले पड़ि रे राति
पैलिक जसि होली पैलिक जैस दीवाली।
अब न म्याल ने त्यार बार सब छ खाली
आओं जरा घरेंक ले राखों फाम
शहर में भीतर रूछा यां तापो घाम।

- शोध छात्रा-भावना वर्मा (हिन्दी)

निर्भया को याद करते हुए

आज 16 दिसम्बर है,
आज फिर से पढ़ी जाएँगी तुम्हारी याद में मर्सियां,
श्रद्धांजलियों और लेखों से अटें रहेंगे अखबार।
आज फिर से निकाले जायेंगे कैंडल मार्च और जुलूस
बहुत जोर-शोर से लगाये जायेंगे 'स्त्री सुरक्षा'
और अस्मिता' के नारे.....और इन्हीं सब के बीच,
कहीं कोई डरी-सहमी स्त्री खोलेगी दरवाजा,
आधी रात के बाद घर लौटे पति के लिए।
कहीं किसी बस स्टॉप पर शोहदे करेंगे पीछा
घर लौटती किसी कामकाजी महिला का।
कहीं कोई शिक्षक, कोई राजनेता, कोई धर्मगुरु,
करेगा शर्मसार इंसानियत को।
अपनी ही ढाई साला भतीजी को वहशी नजरों से घूरेगा
कलयुगी चाचा........
एक पत्ती टूटेगी, एक डाली झुक जायेगी,
शहर के सुनसान तिराहे पर लगा म्युनिस्पैलिटी का बल्ब
अचानक चटक कर टूट जायेगा और
छिजित पर लाल अक्षरों में लिख उठेगा
ब
ला
त्
का
र

- अभिषेक सिंह (शोध छात्र-हिन्दी)

आलेख/कविताएँ
छात्र/छात्राएँ

आरक्षण क्या, क्यों और कैसे, बोलने से पहले समझे

मैं उन सभी लोगों के सारे सवालों के जवाब देना चाहती हूँ, जो आरक्षण विरोधी हैं व आरक्षण के चलते एस.सी., एस.टी. व ओबीसी के लोगों को घृणा व हीन भावना से देखते हैं, जबकि उन्हें सही मायने में आरक्षण का सम्पूर्ण इतिहास भी पता नहीं है।

सर्वप्रथम हमें ये समझना होगा कि हमारे देश में विभाजन के समय हमारे तत्कालीन नेतृत्व ने सभी आदिवासियों एवं दलितों को आश्वासन दिया कि वे भारत में रहना चाहें तो रहे। उन्हें वे उनकी धार्मिक आस्थाओं को किसी प्रकार की ठेस नहीं पहुँचायी जायेगी।

आज के समय में अनेक लोगों को ज्ञात नहीं कि दलित आदिवासी पिछड़ने द्वारा भी अलग राष्ट्र की मांग की गई, जिसे डॉ. भीमराव अम्बेडकर के नेतृत्व में ब्रिटिश प्रधानमंत्री मोहनदास करमचंद गांधी एवं मोहम्मद अली जिन्ना के समक्ष तय हुआ कि डॉ. अम्बेडकर अलग राष्ट्र की मांग छोड देंगे, इसके बदले भारत के मूल निवासी आदिवासियों एवं दलितों को सत्ता में संवैधानिक तौर पर हिस्सेदारी दी जायेगी। लेकिन गाँधी जी ने ब्रिटेन से इंडिया आते ही इस समझौते को एकतरफा नकार दिया एवं सैपरेट इलेक्ट्रोल का अधिकार छोड़ने के लिए दबाव बनाने लगे एवं अंततः सेपरेट इलेक्ट्रोल का हक देने से पूर्व ही छीन लिया व जबरन आरक्षण का जिम्मा अम्बेडकर के हाथों थमा दिया।

क्यों व कैसे :-

1. The Untouchablity practices Act 1995 संविधान के आर्टिकल 17 को लागू करने के लिए बनाया गया। 1976 में इसे संशोधित करके Protection of Civil Rights Acts के नाम से ज्यादा प्रभावी रूप में लागू किया गया। परन्तु लगातार बढ़ते जघन्य अत्याचारों, हिंसा, बलात्कार आदि के फलस्वरूप Scheduled Caste and Scheduled Tribe Act 1989 के नाम से जाना गया इसमें पहले से अधिक कठोर सजाओं का प्रावधान किया गया। फिर भी अत्याचारों का सिलसिला खत्म नहीं हुआ।

2. The Employment of Manual Scavengers And Construction of Dry Latrines (Prohibition) Act 1993 नामक कानून जो दलितों द्वारा हाथ से अन्य नागरिकों के मानव मल को साफ करने की अतिहीन कुप्तया को खत्म करने के लिए बना था। इन नियमों में सबसे महत्वपूर्ण है। जो एक अन्य कुप्तया रोकी जानी थी, वो थी दलित लड़कियों का मंदिर में देवदासी के नाम पर यौन शोषण किया जाता था। इस उच्च वर्ग द्वारा शुरू की गयी, दलित बालिकाओं के शारीरिक शोषण इस नीच धार्मिक परम्परा को गैर कानूनी घोषित करके इसके उन्मूलन और प्रतिबंध के लिए पास किये वो इस प्रकार है।

- Andhra Pradesh Devdasi (Prohibition of dedication) Act 1988
- Karnataka Devdasi (Prohibition of dedication) Act 1992
- Hindu Religious and Charitable endowment Act 1927 of Mysore
- The Bombay Devdasi protection Act 1934

उपरोक्त कानूनों का बनाया जाना इस परम्परा को वजूद उसके प्रचलन व पुरोहित वर्ग के दलित वर्ग के प्रति घृणित व अमानवीय नजरिये का लीगल प्रूफ है।

अंततः मैं यही कहना चाहती हूँ कि इस प्रकार के अत्याचारों व अमानवीय व्यवहारों को सहते हुए भी अघा व अघघा ने स्वयं अपना अस्तित्व स्थापित किया है व आरक्षण उनके लिए किसी का एहसान नहीं अपितु अधिकार है। अतः मेरा आग्रह उन सभी आरक्षण विरोधी लोगों से है जो इसे हीन नजरों से देखते हैं कि अपने पूर्वजों की बात पर अटल रहें व आरक्षण का सम्पूर्ण इतिहास जाने व व समझे क्योंकि इस लेख के द्वारा भी कई और मुद्दे जैसे मंदिरों में न जाना यह भी कोई मुस्लिम नहीं हिन्दुओं की प्रथा है। सभी बिंदुओं को मैं इस लेख के माध्यम से उजागर नहीं कर सकती। अतः अनुरोध है कि आरक्षण को बोलने से पहले समझे क्योंकि यह जरूरी है।–

रिया टम्टा (M.A. IVth Sem.)

पहाड़ के पानी की जल संस्कृति

उत्तराखण्ड के लोग सुप्रसिद्ध लोकगायक नरेन्द्र सिंह नेगी को हिन्दी फिल्मों के मशहूर गायक मोहम्मद रफी के समकक्ष मानते हैं। नेगी जी ने अपने गीतों के माध्यम से पहाड़ की संस्कृति व लोकभाषा बचाने एवं सामाजिक व राजनीतिक बुराईयों को दूर करने में महत्वपूर्ण जोत जलाई। उन्होंने पहाड़ की शुद्ध हवा पानी एवं परिवेश का सुन्दर वर्णन करते हुए हृदय को छूने वाला जोरदार गीत गाया है – ओ–हो–हो........आ हा ठंडो रे ठंडो मेरा पाड़ की हवा ठंडी, पाणी ठंडो........और सचमुच यहाँ के बाँज–बुरांश के मिश्रित वनों व हिमनदों से फूटने वाली जल–धारा, नौला, सेल्वाणी, मंगरा, कुण्ड, कुआँ ताल, चाल–खाल, एवं गाड़–गधेरो आदि, विविध रूपों में बहने वाला ठंडा व शुद्ध पानी हमारी प्यास बुझाता है। इस पानी को छमोट या अंजुली से युक्त ऐसा पानी जो स्वतः फिल्टर होता है। यह पानी अनेक खनीज एवं धातुओं से लबालब भरा है। सचमुच यह जिन्दा पानी है, जिसे पीकर खाना जल्दी हजम होता है, और भूख बढ़ती है।

पहले हमारी जल संस्कृति के साथ प्याऊ जुड़ा था, किन्तु अब प्लास्टिक की बोतल से पानी की विकृति संस्कृति ने पानी को व्यापार एवं प्रदूषण में बदल दिया।

शहरों में पानी को फिल्टर करने के कारण आर.ओ. पानी मशीनों का व्यापार चल रहा है। लेकिन गाँव में ताँबे और पीतल के बर्तन, शुद्धता के प्रतीक माने जाते रहे हैं।

गर्मियों में फ्रीज जैसा ठण्डा पानी यहीं तो है। प्रकृति का विलक्षण उपहार और हमारी जल संस्कृति।

– ***सूरज रावत** (M.Com IVth Sem.)*

भारत में बेरोजगारी की स्थिति : एक आकलन

समाज में फैली भयानक बेरोजगारी हर किसी को साफ–साफ दिखाई देती है। नौजवान बेरोजगारो का उदासी से भरा चेहरा भी हर घर–मुहल्ले में देखा जा सकता है। चंद सरकारी नौकरियों के लिए युवाओं का भारी संख्या में जुट जाना भी आम बात हो गयी है। फैक्टरियों के बाद श्रम मंडियों में काम न मिलने से निराश सैकड़ों लोगों को रोज देखा जा सकता है। बेरोजगारी की इस आम व्यापक समस्या को हमारी सरकारें धूर्तता, मक्कारी से कमतर दिखाने की कोशिश में रात–दिन जुटी है।

बेरोजगारी के स्पष्ट आँकड़ें प्रस्तुत करने के स्थान पर यह पूंजीवादी, साप्ताहिक बेरोजगारी, दैनिक बेरोजगारी आदि–आदि ढंग से आँकड़ें देकर बेरोजगारी की भयावहता को ढकने का काम करती है। असल में सरकार का तो मानना है कि जिनका रोजगार दफ्तर में नामांकन है, वही बेराजगार है और यदि व्यक्ति किसी तरह किन्हीं भी हालात में जिन्दा है तो वह कुछ न कुछ तो कमा ही रहा है जैसी असंवेदनशील मान्यताओं तक सरकार पहुँच गयी है।

सरकार द्वारा बेरोजगारी के स्पष्ट आँकड़ें ना देने की वजह से हमें भारत में बेरोजगारी की वस्तु स्थिति जानने के लिए विभिन्न सरकारी – गैर सरकारी रिर्पोटों का तथ्य परक ढंग से मूल्यांकन करना होगा हम तभी भारत में बेरोजगारी की वास्तविक स्थिति को जान पायेंगे। हम यहाँ सामान्य गणीत का पालन करके बेरोजगारी की स्थिति का आंकलन करेंगे। यानि काम करने योग्य कुल जनसंख्या में से मौजूदा काम करने वाली आबादी को घटा देंगे। तो असल बेरोजगारी का पता चल जायेगा।

भारत सरकार द्वारा 12वीं पंचवर्षीय योजना 2012–13 में प्रस्तुत रिपोर्ट के अनुसार देश की कुल जनसंख्या 123.24 करोड़ है। जिसमें 15–59 आयु वर्ग (काम करने योग्य आबादी)

का प्रतिशत 62.5 प्रतिशत है यानि 76.47 करोड़। यदि इस काम करने योग्य आबादी में से लगभग 8 प्रतिशत को अध्ययनरत मान लिया जाए और काम करने योग्य आबादी से इसे भी घटा लिया जाए तो भी यह संख्या 70.35 करोड़ रहती है। यह संख्या भारत में काम करना चाहती है। यदि इस संख्या के कुल कार्यरत आबादी से 48.67 करोड से घटा दिया जाए तो भारत में कुल बेरोजगारी की संख्या 21.68 करोड बैठती है। यानि भारत में बेराजगारी की दर 30.8 प्रतिशत बनती है। भारत सरकार आँकड़ों की बाजीगरी करके यह दर 3 से 5 प्रतिशत दिखाती है। भारतीय शासकों की यह धूर्तता अपने पापों पर पर्दा डालने जैसी है।

अब यदि 48.67 करोड़ कार्यरत आबादी की कार्य परिस्थितियों को देखें तो स्थिति की भयावकता खुलकर सामने आ जाती है। इकोनोमिक सर्वे 2012–13 के अनुसार कुल 48.67 करोड़ रोजगार में संगठित रोजगार मात्र 2 करोड़ 90 लाख है, जिसमें से सरकारी नौकरियां 1.75 करोड़ ही है। निजी क्षेत्र में 1.14 करोड़ रोजगारों में भी तमाम फैक्टरियों कारखानों में तो नाम मात्र के श्रम कानून भी लागू नहीं होते। यह भयानक शोषण के केन्द्र बने हुए हैं। सरकारी नौकरियों का क्षेत्र लगातार सिकुड़ता जा रहा है।

केन्द्रीय और राज्य के विभागों में लाखों की संख्या में पद रिक्त पड़े हुए हैं। केन्द्रीय मंत्रालयों में ही 7.29 लाख पद खाली पड़े हैं। सरकारी नौकरियों में '3–1' का नियम चल रहा है। यानि हर वर्ष 3 प्रतिशत लोग रिटायर्ड हो रहे हैं। और एक प्रतिशत पद भरे जा रहे हैं इस तरह हर वर्ष 2 प्रतिशत नौकरियां खत्म कर दी जा रही है।

सरकारी विभागों मे भी ज्यादातर भर्तियाँ संविदा, ठेके में की जा रही है। संविदा कर्मियों को कम वेतन देकर अत्यधिक काम करवाया जाता है और नौकरी में अनिश्चितता बनी रहती है। 48.67 करोड़ रोजगार में 51 प्रतिशत (लगभग 24.83 करोड़)

लोग स्वरोजगार में लगे हुए हैं। 16.31 करोड़ की आबादी बेहद बुरी कार्य परिस्थितियों में कार्य करने को मजबूर हैं। इस अनौपचारिक क्षेत्र या असंगठित क्षेत्र में कार्यरत आबादी को किसी प्रकार की कोई सरकारी सुविधा (श्रम कानून, ट्रेड यूनियन अधिकार इत्यादि) हासिल नहीं है। जहाँ तक 24.83 करोड़ की स्वरोजगार शुदा आबादी की बात है तो रोजगार देने में अक्षम यह व्यवस्था लोगों को स्वरोजगार के लिए प्रेरित करती है। सरकारी संस्थाएं व गैर सरकारी संगठन (एनजीओ) विभिन्न योजनाऐं चला लोगों को निचले दर्जे के स्वरोजगार में लगाते हैं। जिससे जीवन चलाना भी भारी होता है। किन्तु समाज में बेरोजगारी की स्थिति को देख नौजवान इसी से संतुष्ट हो जाता है। इन संस्थाओं द्वारा नौजवानों को मधुमक्खी पालन, मुर्गी पालन, पापड़ बनाना, सहायता समूह बनाना जैसे छोटे-मोटे काम में व्यस्त रखती हैं।

सरकार का 'स्वरोजगार करो' का नारा नौजवानों को तो विशेष लाभ नहीं पहुँचाता किन्तु बैंकों के कारोबार में जरूर इजाफा कर रहा है। स्वरोजगार के नाम पर छोटे-छोटे कर्ज बांटकर बैंकों का धंधा चमक रहा है। स्वरोजगार में लगे लोगों की स्थिति क्या है इसका अंदाजा इसी बात से लग जाता है कि सबसे अधिक आत्महत्या का प्रतिशत लगभग 38 प्रतिशत स्वरोजगार से जुड़े लोगों का है।

स्वरोजगार और अनौपचारिक क्षेत्र के एक बहुत बड़े हिस्से को सम्मानजनक रोजगार कहना किसी भी लिहाज से गलत होगा। किन्तु जब हमारी सरकार जिन्दा रहने को रोजगार मानती हो तो उसके लिए यह सब रोजगार है। सरकार की नजर में तो होटल, ढाबों में दो वक्त की सूखी रोटी के लिए बर्तन धोता बच्चा या ऐसे ही तमाम जगह काम करने वाले लोग सभी रोजगारशुदा हैं। क्योंकि वह रोटी चबा रहे हैं और जिन्दा हैं। वाह री सरकार और उसकी घृणित सोच।

<u>शिक्षित बेरोजगार</u> :- पढ़-लिखकर, डिग्रियों की मोटी फाइल लिए दर-दर भटकता नौजवान देश की कड़वी सच्चाई है। यदि ऐसे नौजवानो की आँकड़ों में गणना करें तो हर तीसरा नौजवान बेरोजगार है। लेबर ब्यूरो की वर्ष 2013-14 के अनुसार शिक्षित बेरोजगारों में बेरोजगारी की दर 33 प्रतिशत है। यानि प्रति 1000 शिक्षितों में 330 नौजवान बेरोजगार हैं।

शिक्षित बेरोजगारों के बीच पसरी इस भयानक बेरोजगारी का कोई जवाब किसी सरकार के पास नहीं है।

सरकार की तमाम किस्म की धूर्तता के बीच उसके द्वारा जारी किये गये विभिन्न आँकड़ों का तार्किक विश्लेषण करके स्पष्ट हो जाता है कि भारत में बेरोजगारी की समस्या विकराल है और यह लगातार बढ़ती ही जा रही है। सरकार बेरोजगारी की वस्तुस्थिति छिपाने में जितनी मशक्कत करती है यदि उतनी मेहनत बेरोजगारी दूर करने के लिए की होती तो हो सकता है कुछ बेरोजगारो को रोजगार मिल पाता। पूँजीवादी व्यवस्था का मकसद सभी बेरोजगारों को रोजगार देना नहीं है। इसका मकसद तो कम से कम लोगों से कम से कम पैसा देकर ज्यादा से ज्यादा काम लेकर अधिक से अधिक मुनाफा कमाना है। इसी के चलते बेरोजगारों की भारी संख्या हमेशा समाज में बनी रहती है। जिसका पूँजीपति वर्ग रिजर्व मजदूर फोर्स की तरह इस्तेमाल करता है। पूँजीपति वर्ग की राजनीतिक पार्टियां इसी वजह से बेरोजगारी के सवाल पर गाल बजाने के अलावा कुछ नहीं करती।

– ***नितिन कुमार* (M.A.VIth Sem.)**

प्रकृति और उसका विनाश

धरती संसार का सबसे सुन्दर गृह है। धरती की सुदरता उसमें बसी हुई प्रकृति है जिसकी गोद में हमने बैठकर अद्‌भुत आनन्द प्राप्त किया है। प्रकृति ने धरती को सुन्दर बनने में एक अहम योगदान दिया है, प्रकृति में शामिल जल, हवा, हरियाली, वन-उपवन, पर्वत सभी प्रकृति को एक अतुलनीय सुंदरता प्रदान करते हैं। उस सुंदरता को निहारते हुए हम एक असीम आनन्द की प्राप्ति करते हैं। ये आनन्द कहीं और नहीं मिलता।

इसके उपरांत भी मानव ने विकास को तवज्जो दी है। विलासितापूर्ण विकास की अंधी दौड़ हमें कब प्रकृति की गोद से दूर खींच लायी इसका तनिक भी एहसास न हुआ। शहर में रहते हुए जिसने समय बिताया हो यदि किसी कारण से गाँव चला जाये तो वह प्रकृति का गुणगान करता हुआ दिखाई देगा।

इसी प्रकृति की गोद में बैठकर अनेक कवियों ने इसकी सुंदरता का वर्णन किया है। आज हम भोग विलास और अपनी आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए प्रकृति को भूल जाते हैं। ये कैसे दिन बना लिए हैं हमने कि प्रकृति की सुंदरता का आनन्द लेने के लिए प्रकृति के पास टूरिस्ट बनकर विभिन्न स्थानों मे ंजाना पड़ता है। आधुनिकता के जंजाल में ऐसे फँसे की अपने स्वास्थ्य को ही भूल गए। जो स्वच्छ हवा हमें कभी जीवन प्रदान करती थी आज वही हवा हमारे लिए जहरीली साबित हो रही है। प्रकृति से आखिर हम चाहते क्या हैं ? मनुष्य की आयु घटना कोई अचम्भा नहीं है। ये प्रमाण है हमारी गलतियों का। समय का झड़ना, आँखों की रौशनी कम होना। यही प्रमाण है हमने कितना नुकसान पहुँचाया है प्रकृति को। प्रकृति ने हमेशा हमें कुछ न कुछ दिया है लेकिन बदले में हमने सिर्फ उसको नुकसान पहुँचाया है। फल-फूल, जल, आकाश, पर्वत, हरियाली सब कुछ तो है इस प्रकृति में। इसी प्रकृति में जड़ी-बूटियों के रूप में हमारा जीवन छुपा हुआ है।

वर्ष 2015 में लातूर नामक स्थान पर जल अकाल पड़ा था। नदियाँ, तालाब सब सूख चुके थे। हमने देखा वहाँ जल आपूर्ति का कोई साधन नहीं मिल रहा था। इसी कारण पूरा देश प्रभावित हुआ था। लोगों को वहाँ पीने को पानी भी गंदा पानी, जिससे लोगों की किडनियाँ खराब हुई और उससे कुछ मौते भी हुई। इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं यदि आने वाले वर्षो में पूरे विश्व में व्याप्त हो जाये।

आज हमें प्रण लेना चाहिए कि प्रकृति ने जो हमें सम्पत्ति का और क्षय नहीं होने देंगे। विकास समय की माँग है पर इस कीमत में नहीं होने देंगे। जिंदगी जीने के लिए औषधि के सहारे रहना पड़े। आदिकाल में मानव को प्रकृति पुत्र कहा जाता था क्योंकि अपने जीवन निर्वाह हेतु वह पूरी तरह प्रकृति पर ही निर्भर था। उसका पालन-पोषण प्रकृति की गोद में हुआ, वृक्ष को सदैव उसने माँ के समान माना तथा भगवान से भी ज्यादा क्योंकि ''वृक्ष'' उसको फल देता था। छाया प्रदान करता था, गर्मी में शीतलता प्रदान करता था कुल मिलाकर प्रकृति और मानव का जीवन इतना घुला मिला हुआ है। दोनों को अलग करके बिल्कुल भी नहीं देखा जा सकता था। प्रकृति मानव नहीं देखा जा सकता था। प्रकृति मानव की सुरक्षा के लिए दैव निर्मित कवच था।

नियति का चक्र आगे बढ़ता गया। मानव जगत में ज्ञान का विस्तार होता गया और इस ज्ञान के कारण मानव प्रकृति का रक्षक होने के बजाय भक्षक हो गया। अपने भौतिक सुख–सुविधा के विस्तार तथा उद्योग लगाने के कारण मानव द्वारा वनों की अंधाधुंध कटाई की गई बस यही से मानव के ऊपर संकट शुरू होने लगा। कोई नवजात शिशु जब प्रारम्भ में चलना सीखता है तब वह बिना आगे पीछे देख अपना पाँव अपनी धुन में आगे बढ़ाते रहता है। उसे जरा भी अहसास नहीं होता की ऐसा करने से वह गिर जाएगा या चोट लग जाएगी। कुछ ऐसी तरह का हाल मानव विकास के आरम्भिक युग का है। वृक्षों का धरती पर होना जरूरी है। मानव का जीवन इसके बगैर कभी सुखी नहीं हो सकता है। एक पेड़ अपने जीवन काल में लगभग 10 किलो धूल अपने अंदर सोंख लेता है। वातावरण को प्रदूषण मुक्त रखने में पीपल, तुलसी, नीम, आम, बरगद आदि प्रमुख है।

विशाल क्षेत्र को दुबारा हरा भरा करना हमें इजराइल जैसे देश से सीखना चाहिए। जहाँ के नागरिकों ने सतत् पेड़ लगाकर पूरे क्षेत्र को दुबारा हरा भरा कर दिया। इजराइल में यह प्रथा है कि जब भी वहाँ किसी का जन्म होगा या किसी की मौत होगी तो उसकी याद में एक पेड़ लगाया जाएगा। यदि हमारे यहाँ ऐसी प्रथा विकसित कर लें तो जितनी हमारी आबादी है उसका दुगुना तो वृक्ष हमको मिल ही जाएगा।

आज जिस तेजी से सरकार कारखाना स्थापित करवाते जा रही है, वह भी पर्यावरण का विनाश के कारक हैं। विकास को विनाश की कीमत पर कभी भी स्वीकार नहीं करना चाहिए। भारतीय राजनीति का यह दुर्भाग्य है कि कारखानों की स्थापना को ही विकास का पैमाना मान लिया गया है।

प्रकृति में भी भावनाएँ होती हैं का भावार्थ ये है कि कुछ स्वार्थी लोग ये सोचने लगते हैं कि प्रकृति अमूर्त है और इसके साथ कैसा भी व्यवहार किया जाए, ये कुछ नहीं करती है। पर प्रकृति भी अपने क्रियाकलापों द्वारा मानव के द्वारा प्रकृति पर किए गये अत्याचार या संपोषण पर प्रतिक्रिया व्यक्त करती है। उत्तराखण्ड में बादल फटने की क्रिया मानव की करतूतों का परिणाम है जिसके द्वारा प्रकृति कहना चाहती है कि अति सर्वत्र वर्जयेत।

– ***शालिनी (M.A. IVth Sem.)***

गर्व है हमें भारतीय होने पर

भारत देश का नागरिक होने पर हमें गर्व है। एक माँ हमें जन्म देती है और दूसरी माँ की गोद में पलकर हमारा पोषण होता है। एक माँ हमारी अपनी माँ है, जबकि दूसरी माँ धरती माँ है। जिसकी गोद में पलकर हम बड़े होते हैं। जिस देश में हमने जन्म लिया, वह हमारी मातृभूमि हमें प्राणों से भी अधिक प्रिय है। नागरिक होने का तात्पर्य सिर्फ सरकारों द्वारा उपलब्ध कराई गई सुविधाओं का उपभोग करना ही नहीं है। बल्कि अपने देश के साथ प्रेम करना भी है। देश प्रेम की भावना हृदय में जलने वाली एक ऐसी ज्वाला है, जो अपनी जन्मभूमि को सबसे ज्यादा प्यार करने की भावना जगाती है। हमें आदर्श नागरिक बनना चाहिए। आदर्श नागरिक हमारे समाज के आधार व शोभा है। उनमें अनेक गुण होत हैं, इसलिए उपका जीवन व आचरण अनुकरणीय होता है। उन पर सभी लोगों को गर्व होता है। एक समाज या देश में हर प्रकार के नागरिक होते हैं। अच्छे व आदर्श नागरिक वहीं होते है, जो देश को शक्ति, सम्पन्न समृद्ध देते हैं। देश की हर गतिविधियों यथा राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक व नैतिक से इन का बड़ा महत्व होता है। जितनी अधिक इन आदर्श नागरिकों की संख्या रहेगी, उतना ही देश विकसित होगा। एक आदर्श नागरिक बड़ा देशभक्त होता है। देशभक्त का तात्पर्य है मातृभूमि व देश के लिए अटूट प्रेम, गहरा लगाव और समर्पण और जो सीमा (बार्डर) में रहकर हमारी देश की रक्षा करते हैं, वे देश के सबसे सच्चे आदर्श नागरिक हैं। जो अपने जान की परवाह न करके आतंक से लड़ते हैं और देश की रक्षा करते हैं। हमारे देश को उन जवानों (फौजी) पर गर्व है और हमें अपने देश के जवानों का सहयोग करना चाहिए। यह प्रत्येक आदर्श नागरिक का परम कर्त्तव्य है। लेकिन सभी नागरिक ऐसे नहीं हो सकते न होते हैं। अनेक नागरिक अपनी नादानी से राष्ट्र के समक्ष समस्याऐं खड़ी कर देते हैं। वे अपने निजी स्वार्थ के लिए कोई भी ऐसे बयान दे सकते हैं, जिससे अनावश्यक विवाद तूल पकड़ सकता है। ऐसे लोग समाज के लिए बोझ होते हैं। हमें इनसे सदा सावधान रहना चाहिए। अच्छे नागरिक देश के लिए, राष्ट्रहित के लिए अपने प्राणों की भी परवाह नहीं करते, सुभाषचन्द्र बोस, लाला लाजपतराय, सरदार भगत सिंह आदि आदर्श नागरिकों के शिरोमणि थे। वे देश के लिए जिए व देश के लिए मिट गए। उनके लिए राष्ट्रभक्ति से और अधिक मूल्यवान कुछ भी नहीं था। उन्हीं के बल पर आज हम स्वतंत्र हैं। हमें अपने नागरिक होने पर गर्व होना चाहिए। एक आदर्श नागरिक स्वेच्छा से अनुशासन का पालन करता है। वह देश के नियमों–उपनियमों का पूरी जिम्मेदारी निर्वाह करता है। वह अधिकारियों को कानून व व्यवस्था बनाए रखने में सहयोग करता है। वह कभी कोई ऐसा काम नहीं करता, जो दूसरों के अहित में हो, देश व समाज को नुकसान पहुँचाने वाला हो। वह देश में गलत कार्यों के खिलाफ आवाज उठा रही है। वह कभी करों की चोरी नहीं करता है और नागरिक होने की अपनी सभी जिम्मेदारियों को पूरी निष्ठा से पालन करता है। इसके विपरित कई नागरिक करों की चोरी करते हैं, झूठ बोलते हैं, समाज में गलत अफवाह फैलाकर लोगों को गुमराह करते हैं। इतना ही नहीं संकट के समय भी अपनी आदतों से बाज नहीं आते। जैसे कश्मीर के पत्थरबाज अपनी आदतों से बाज नहीं आते। हमारे भारतीय फौज अपने अधिकारों और कर्त्तव्यों के प्रति अधिक जागरूक होते हैं। यही आदर्श नागरिक के उत्तम गुण होते हैं। वह उन पत्थरबाजों को सही राह में चलने की सीख देते हैं। हमें अपने देश के जवानों का साथ देना चाहिए। यही आदर्श नागरिक

का कर्त्तव्य है और आदर्श नागरिक को अपने कर्त्तव्यों के प्रति अधिक जागरूक होना चाहिए। नागरिक होने का गर्व किसी न किसी अर्थ में देशभक्ति से जुड़ा है। हम कहीं भी चले जाए, विदेशों में कितने भी सुख मिले। हम वापस अपने देश में ही आना चाहते हैं। हम अपना देश, अपनी जन्मभूमि कभी नहीं भूलते, क्योंकि हमारा प्यारा देश विश्व के सबसे सुन्दर देशों में से एक है। यहाँ जन्म लेने के लिए देवता भी तरसते हैं। हमें गर्व है कि इस धरा पर हमने जन्म लिया है। हमें कोई ऐसा कार्य नहीं करना चाहिए, जिससे हमारे देश की प्रतिष्ठा पर आँच आए। पूरे विश्व भर में अपनी महान संस्कृति व पारम्परिक मूल्यों के लिए हमारा देश प्रसिद्ध है। हमारे देश में अनेक सांस्कृतिक, धार्मिक उत्सव भी मनाए जाते हैं। जैसे – होली, दीपावली और रक्षाबन्ध, ईद, गुरूपर्व आदि पर्व मनाये जाते हैं। हमारे देश में बड़ा कुम्भ का मेला आयोजित किया जाता है। जहाँ दूर–दूर से लोग आते हैं और विदेशों से भी लोग आते हैं। सबसे महत्वपूर्ण बड़े–बड़े ऋषि–मुनि आते हैं जो हमारे कुम्भ के मेले का मान–सम्मान होते हैं। यह एक समृद्ध देश है, जहाँ साहित्य, कला व विज्ञान के क्षेत्र में महान लोगों ने जन्म लिया। रविन्द्रनाथ टैगोर, सारा चन्द्रा, प्रेमचन्द्र, सी.वी. रमन, जगदीश चन्द्र बोस, ए.पी.जे. अब्दुल कलाम कबीर जैसे महान लोगों ने देश को पूरे विश्व मे गौरवान्वित किया है। भारत देश विश्व में क्षेत्र की दृष्टि से 7 (सातवें) नम्बर पर है। विश्व की सबसे बड़ी डाक व्यवस्था भारतीय डाक व्यवस्था है। 700 ईसा पूर्व में भारत का पहला विश्वविद्यालय तक्षशिक्षा खुला था। भारत में सबसे ज्यादा हिन्दी भाषा बोली जाती है। हिन्दी भाषा हमारे देश की मातृ भाषा है, लेकिन हिन्दी के साथ–साथ भारत में अन्य भाषाऐं बोली जाती हैं। जैसे–पंजाबी, उर्दू, मराठी, तेलुगु, तमिल, गुजराती, संस्कृत आदि भाषाएँ बोली जाती है और अंग्रेजी भी बोली जाती है। अंग्रेजी भाषा बोलने वाले देशों में भारत का 24वाँ स्थान है। भारत में गणित के सबसे महत्वपूर्ण नम्बर शून्य का आविष्कार आर्यभट्ट जी ने किया था और भारत के लगभग 2600 साल पहले पहली बार सुश्रुत द्वारा सर्जरी की गई थी। यह प्रदर्शित करता है कि भारत का चिकित्सा विज्ञान उस समय भी कितना सुविकसित था। भारत प्राचीन समय से ही स्व्यं के पैरो पर खड़ा है। इसके पश्चात् आज हमारा (भारत) कई बार गुलाम रहा। किन्तु वह अपने संघर्ष की वजह से 15 अगस्त को आजाद हुआ, जिसमें हमारे देश ने वीर सपूतों ने बलिदान दिए, हमारे देश को आजाद करने में स्त्रियों (वीरागंना) की भी अहम भूमिका रही। जिन्होंने देश को नई सोच दी और देश को आगे बढ़ाया। आज भी हमारे देश में वीर, साहित्यकार जन्म लेते हैं, जिनके कारण आज हमारा देश प्रगति की ओर बढ़ रहा है। गर्व है मुझे भारत पर।

– ***नेहा (M.A. IVth Sem.)***

आतंकवाद

भूमिका : विविधता में एकता भारत की प्रमुख विशेषता है। उक्त विविध जनों को हमारे संविधान ने अपने आप में समान रूप से समाहित किया है। लेकिन विविध संस्कृतियों के इस अद्भुत सामस्य को देखकर बहुत से देश निस्तब्ध रह जाते हैं। वे इस देश के एकीकरण को तोड़कर देश को बिखेरना चाहते हैं।

वे हमारे देश को मिलकर रहता हुआ नहीं देख सकते हैं। वे अपने दलालों को भेजकर हमें तोड़ना चाहते हैं। हमारे समाज में विविध प्रकार से विघटन करके जनसाधारण को अपने कुकृत्यों से आतंकित कर देते हैं। आतंकवाद आधुनिक युग की सबसे भयंकर समस्या है। आतंकवाद की समस्या सिर्फ हमारे ही देश की नहीं अपितु सभी देश की एक बड़ी समस्या बन चुकी है। आतंकवादी अपने-अपने गिरोह बनाकर रखते हैं। वे किसी भी देश की कानूनी व्यवस्था को स्वीकार नहीं करते। अपनी इच्छा से लोगों की हत्या करते हैं। आज के समय में जब हम विभिन्न समस्याओं के बारे में सोचते हैं तो हमें यह पता चलता है कि हमारा देश अनेक प्रकार की समस्याओं से घिरा हुआ है। एक तरफ भुखमरी, दूसरी तरफ बेरोजगारी, कहीं पर अकाल पड़ रहा है।

आंतकवाद का अर्थ – आतंकवाद दो शब्दों आतंक+वाद। आतंक का अर्थ होता है – भय या डर और वाद का अर्थ होता है-पद्धति। आतंकवाद शब्द आतंक से बनता है समाज को कुकृत्यों से भयभीत कर देना आतंकवाद कहलाता है। जो उन्हें भयभीत करते हैं वो आतंकवादी कहलाते हैं।

आतंकवादियों का केवल एक ही उद्देश्य होता है, सरकार और देश के लोगों में भय उत्पन्न करके अपनी अनुचित बातों को मनवाना। आतंकवादियों का कोई देश, धर्म या जाति नहीं होती है। आतंकवादी भोले-भाले बच्चों, स्त्रियों, बूढ़ों और जवानों की बहुत ही बेरहमी से हत्या कर देते हैं। कानूनी व्यवस्था को ताक पर रखकर आतंकवादी देश में अराजकता फैलाते हैं।

आतंकवाद पर नियन्त्रण – भारत सरकार को आतंकवादी गतिविधियों को खत्म करने के लिए कठोर कदमों को उठाना चाहिए। ऐसा करने के लिए सबसे पहले कानून व्यवस्था को सुदृढ़ बनाना चाहिए। जहाँ-जहाँ पर अर्न्तराष्ट्रीय सीमा हमारे देश को छू रही है। उन समस्त क्षेत्रों की नाकाबंदी की जानी चाहिए, जिसकी वजह से आतंकवादी सीमा पार से हथियार, गोला-बारूद और प्रशिक्षण प्राप्त करने में असफल हो जाऐं।

जो लोग या युवक युवतियाँ अपने रास्ते से भटक चुके हैं। उन्हें समुचित प्रशिक्षण देकर उनके लिए रोजगार के बहुत से पर्याप्त अवसर ढूँढने चाहिए। अगर युवा वर्ग को व्यस्त रखने तथा उनको उनकी योग्यता के अनुरूप कार्य दे दिये जाएँ तो वे कभी भी रास्ते से नहीं भटकेंगे।

आतंकवाद रोकने के उपाय : भारत सरकार को आतंकवादी गतिविधियों को खत्म करने के लिए कठोर कदमों को उठाना चाहिए। ऐसा करने के लिए सबसे पहले कानून व्यवस्था को करनी चाहिए। आतंकवाद से मानवता को बहुत हानि हो चुकी है। आतंकवाद ने पता नहीं कितने बच्चों को अनाथ बना दिया, कितनी औरतों को विधवा कर दिया और कितने ही लोगों को बेसहारा कर दिया। सबसे पहले सरकार को आतंकवादियों के साथ बहुत कठोरता से कार्यवाही करनी चाहिए। जो युवक आतंकवाद के जाल में फँस गए हैं उन्हें सही रास्ते पर लाकर रोजगार देना चाहिए। इसी तरह से लोगों में देशभक्ति की भावना को उत्पन्न करना चाहिए।

उपसंहार – हमारा देश शान्ति और अहिंसा की जन्म भूमि है। इस देश में महात्मा गाँधी जी जैसे मानवता प्रेमियों का जन्म हुआ था। यहीं महान संतों, ऋषियों, मुनियों का जन्म हुआ था और गुरुओं की वाणी का पूरे देश में प्रचार करना चाहिए। हमें संगठित होकर ईंट का जवाब पत्थर से देना चाहिए। जिससे उनका मनोबल समाप्त हो जाए तथा वे जान सके कि उन्होंने अपना पैर गलत मार्ग पर रख लिया है। जब वे आत्मग्लानी से वशीभूत होकर अपने किए का पश्चाताप करेंगे तभी सभी को देश की मुख्य धारा में सम्मिलित किया जा सकेगा।

हमें आतंकवादी समस्या का समाधान जनता और सरकार दोनों के मिले-जुले प्रयासों से ही संभव हो सकता है। हिन्दू, सिख, मुसलमान, ईसाई सब भारत के सपूत है।

– ***कंचन (M.A.IVth Sem.)***

बेरोजगारी – समस्या और समाधान

बेरोजगारी समस्या और समाधान – सोने की चिड़ियाँ कहलाने वाली हमारे भारत की दशा आज कुछ ऐसे हो गई है कि आजादी के इतने सालों बाद भी हमारा देश हर दिन किसी न किसी समस्याओं से लड़ता रहता है। आज भारत के सामने जो समस्याऐं फन फैलाए खड़ी हैं, उनमें से एक महत्वपूर्ण समस्या है बेरोजगारी। लोगों के पास हाथ है पर काम नहीं, प्रशिक्षण है पर नौकरी नहीं, योजनाएँ और उत्साह है पर अवसर नहीं है। बेरोजगारी समाज के लिए एक अभिशाप है, इससे न केवल व्यक्तियों पर बुरा प्रभाव पड़ता है बल्कि बेरोजगारी पूरे समाज को प्रभावित करती है।

भारत में सवा अरब लोग रहते हैं। यहाँ पर बेरोजगारी की समस्या बहुत ही विकराल रूप धारण करे हुए है, बेरोजगारी की समस्या राष्ट्र के मस्तक पर कलंक की टिके के समान है। बेराजगार होने से तात्पर्य होता है कि काबिलियत तथा शिक्षा से पूर्ण होने के बावजूद भी रोजगार प्राप्त करने में असमर्थ होना। यह समस्या तब उत्पन्न होतीहै जब काम की कमी होती है और काम करने वालों की अधिकता होती है।

आज हमारे देश में बेरोजगारी की समस्या में निरंतर वृद्धि हो रही है, जिसका प्रत्यक्ष प्रमाण है हमारा बेरोजगार युवावर्ग। हमारे आस–पास इतने युवा है जिन्होंने ऊँची–ऊँची डिग्रियाँ हासिल की है लेकिन वे आज भी रोजगार की तलाश में इधर–उधर भटक रहे हैं। नौकरी की तलाश में लोग प्रतिदिन दफ्तरों के चक्कर लगाते रहते हैं तथा अखबारों और इण्टरनेट में दिए गए विज्ञापनों द्वारा अपनी योग्यता के अनुरूप नौकरी की खोज में लगे रहते हैं, परन्तु उन्हें रोजगार की प्राप्ति नहीं होती।

बेराजगारी के प्रकार – बेरोजगारी भी बहुत से प्रकार के होते हैं, जिसमें शिक्षित बेरोजगार, अशिक्षित बेरोजगार, मौसमी बेरोजगार, अल्प बेरोजगार और प्रछन्न बेरोजगार जैसे कई सारी चीजे शामिल हैं। अशिक्षित बेरोजगार के सम्मुख यह समस्या विकराल रूप में नहीं होती है, क्योंकि ये लोग किसी न किसी रूप में छोटे–छोटे लाभ धंधे कर अपनी दो वक्त की रोटी का इन्तेजाम कर लेते हैं। लेकिन जो शिक्षित बेरोजगार होते हैं वो पढ़े–लिखे होते हैं, ये लोग अशिक्षित व्यक्तियों की तरह छोटे–छोटे काम करने के लिए कभी राजी नहीं होते क्योंकि ये लोग मेहनत–मजदूरी करने में अपनी योग्यता और विद्या का अपमान समझते हैं, जो की सही भी है आखिर इतने पढ़ने–लिखने का फायदा ही क्या जब हमें मजदूरों की नौकरी ही करनी है। ऐसे बेरोजगार लोगों की वास्तविक संख्या ज्ञात से कहीं अधिक होती है, क्योंकि जो सरकारी आँकड़ों में गिने जाते हैं, उनकी गिनती तो हो जाती है। लेकिन जिनके नाम रोजगार कार्यालय में अंकित नहीं होते हैं, लेकिन जिनके नाम रोजगार वे इस गिनती में नहीं आ पाते हैं। बेकार व्यक्तियों की संख्या प्रतिवर्ष लाखों में बढ़ जाती है। एक अनुमान के अनुसार इस वक्त हमारे देश में लगभग 12 करोड़ लोग बेराजगार हैं।

मौसमी बेराजगार – जैसा कि शब्द से ही स्पष्ट है यह उस तरह की बेरोजगारी का प्रकार है जिसमें वर्ष के कुछ समय में ही काम मिलता है। मुख्य रूप से मौसमी बेरोजगारी से प्रभावित उद्योगों में कृषि उद्योग, रिसोर्ट्स और बर्फ कारखाने आदि शामिल होते हैं। कृषि में लगे लोगों की कृषि की जुताई, बोवाई, कटाई आदि कार्यों के समय तो रोजगार मिलता है लेकिन जैसे

ही कृषि कार्य खत्म हो जाता है तो कृषि में लगे लोग बेरोजगार हो जाते हैं।

प्रछन्न बेरोजगार – प्रछन्न बेरोजगारी उस बेरोजगारी को कहते हैं जिसमें कुछ लोगों की उत्पादकता शून्य होती है अर्थात् यदि इन लोगों को उस काम में से हटा भी लिया जाये तो भी उत्पादन में कोई अंतर नहीं आएगा।

अल्प बेरोजगारी – जब कोई व्यक्ति जितने समय काम कर सकता है, उससे कम समय उसे काम मिलता है या कह सकते हैं कि उसे अपनी क्षमता से कम काम मिलता है, उसे अल्प बेरोजगारी कहते हैं। इस अवस्था में व्यक्ति वर्ष में कुछ समय बेरोजगार रहता है। इसके अलावा कुछ ऐसे बेरोजगार भी होते हैं, जिनको मजदूरी भी ठीक मिल सकती है लेकिन फिर भी ये लोग काम नहीं करना चाहते हैं। जैसे – भिखारी, साधू इत्यादि।

बेरोजगारी के कारण – बेरोजगारी की बढ़ती समस्या निरंतर हमारी, प्रगति, शांति और स्थिरता के लिए चुनौती बन रही है। हमारे देश के बेरोजगारी के अनेक कारण हैं।

1. बेरोजगारी का सबसे बड़ा कारण है – बढ़ती हुई जनसंख्या। भारत में जनसंख्या का विस्फोट जितना जबरदस्त है, कामों के अवसरों का विकास उतना तीव्र नहीं है। हर वर्ष बढ़ती हुई जनसंख्या बेरोजगारों की कतार और अधिक लम्बा कर जाती है। जनसंख्या में वृद्धि के अनुपात की वजह से रोजगारों की कमी और अवसर में बहुत कम वृद्धि हो रही है इसी वजह से बेरोजगारी बढ़ती जा रही है।

2. यंत्रीकरण अथवा मशीनीकरण ने भी असंख्य लोगों के हाथ से रोजगार छिनकर उन्हें बेरोजगार कर दिया है, क्यूंकि एक मशीन कई श्रमिकों का काम निपटा देती है। फलस्वरूप बड़ी संख्या में लोग बेरोजगार हो रहे हैं।

3. इसका दूसरा कारण हमारी शिक्षा व्यवस्था है। कई सालों से हमारी शिक्षा पद्धति में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। बेरोजगारी के लिए हमारी शिक्षा प्रणाली भी दोषपूर्ण है। यहाँ व्यवसाय प्रधान शिक्षा का अभाव है। व्यवहारिक या तकनिकी शिक्षा के अभाव में शिक्षा पूरी करने के बाद विद्यार्थी बेरोजगार रहता है।

4. भारत में व्याप्त अशिक्षा भी बेरोजगारी का मुख्य कारण है।

बेरोजगारी के समाधान – प्रत्येक समस्या का समाधान उसके कारणों में छिपा रहता है। अत: यदि ऊपर–कथित कारणों पर प्रभावी रोक लगाई जाये तो बेरोजगारी की समस्या का काफी सीमा तक समाधान हो सकता है। व्यावसायिक शिक्षा, लघु उद्योगों को प्रोत्साहन, मशीनीकरण पर नियंत्रण, रोजगार के नए अवसरों की तलाश, जनसंख्या पर रोक आदि उपायों को शीघ्रता से लागू किया जाना चाहिए। जब तक इस समस्या का उचित समाधान नहीं होगा तब तक समाज में न तो सुख–शांति रहेगी और न ही राष्ट्र का व्यवस्थित एवं अनुशासित ढाँचा खड़ा हो सकेगा। बेरोजगारी कई समस्याओं को जन्म देती है, जैंसे–भ्रष्टाचार, आतंकवाद, अशांति, उपद्रव, दंगे, चोरी, डकैती, अपहरण इत्यादि। युवा वर्ग की शक्ति एवं ऊर्जा का प्रयोग के लिए उन्हें सही शिक्षा और उसके बाद उचित मार्गदर्शन मिलना जरूरी है। वरना युवक भटक जाते हैं और समाज में बुराईयाँ फैलती है।

– कमलेश सिंह भण्डारी (M.A.IVth Sem.)

समय का सदुपयोग

जिन्दगी का सबसे बहुमूल्य शब्द है समय। यह एक मात्र शब्द है। जो व्यक्ति के जन्म उसकी अन्तिम साँस तक उसके साथ होता है। परन्तु बदलते जमाने के साथ इस शब्द का महत्व लोगों ने बदल सा दिया है। बहुत ही चर्चित वाक्य है।

हमे समय नहीं मिला

कभी यह सोचा है कि ऐसा क्यों हो रहा है। यदि कभी इस विषय पर सोचा जाए, तब हमें पता चलेगा की बदलते वक्त के साथ हमने खुद को इतना बदल दिया है कि हम एक पल पीछे पलट कर देखे तो पता चलेगा कि हमने तो अपनों को ही खो दिया है या यह भी कहा जा सकता है कि हमने स्वयं को खो दिया है तो भी अतिश्योक्ति ना होगी।

समय का सदुपयोग

क्या समय में कोई परिवर्तन हुआ है नहीं। परिवर्तन इंसान में हुआ है। बदलती सदी के साथ इंसान बदल गया है। एक बार हम सोचे कि पहले जब हमारे पूर्वज हुआ करते थे तब कभी इस तरह की समस्या आती थी। 24 घंटे तब भी थे आज भी तो ही 24 घंटे हैं। समय के इस चक्र में परिवर्तन नहीं हुआ है। वह तब से अब तक निरंतर चल रहा है। बीसवीं सदी पूर्व कभी ऐसी समस्या नहीं आती थी कि लोगों के पास समय नहीं हुआ करता है। जबकि तब सुख-सुविधा की कोई वस्तु उपलब्ध नहीं हुआ करती थी। मीलों दूर यात्रा करने के लिए ना ही यातायात के साधन उपलब्ध होते थे ना ही मनोरंजन के कोई साधन, ना ही विलासिता के कोई साधन उपलब्ध हैं। तब काम करने के लिए रात-रात भर जगना नहीं होता है। वास्तव में तब जीवन ज्यादा सरल हुआ करता है। क्योंकि उस समय व्यक्ति का जीवन घड़ी का गुलाम नहीं था।

बदलते वक्त के साथ, जैसे-जैसे मशीनों का आविष्कार हुआ कल-कारखानों का निर्माण हुआ नौकरी का दौर शुरू हुआ, समय भागता चला गया। जिन्दगी मानो रेल की पटरी से तेज चलने लगी है।

ऐसा सब क्यों हो रहा है?

क्या सही माइनों में मशीन बनाते-बनाते और उसके साथ काम करते हुए हम भी बिल्कुल उसी तरह बन गये हैं। हमें आज फिर से जरूरत है कि हम कुछ पल के लिए रूके और देखे की आखिर जो अनमोल जीवन भगवान ने हमें दिया है। हम उसे व्यर्थ ना गवायें। समय को जानने के लिए बहुत छोटा सा गणित लगाए सिर्फ एक दिन का।

24 घंटे – 8 घण्टे सोने के
2 घण्टे नित्यकर्म के
6-8 घण्टे जॉब के।

बचा जो समय है। वो हमारे लिए हैं। मात्र 6–8 घंटे अर्थात् जिन्दगी के 30–40 प्रतिशत भाग हमारे हाथ में जो सिर्फ हमारे लिए है। हम अपने इस जीवन में वह सभी करे जिसके लिए हमें जन्म मिला है। यह सब तभी होगा जब हम अपने सही और सुचारू रूप से करेंगे।

देखा जाये तो मनुष्य को बहुत छोटी सी जिन्दगी मिली है। उसे व्यर्थ गवाने के बजाय पूरी सूझबूझ के साथ हर एक दिन की योजना बनाकर जिये इससे हमारी जिन्दगी बहुत आसान और खुशनुमा हो जायेगी।

कैसे करे अपने समय का सदुपयोग

''ऐसा कहा जाता है कि जो बीत गई वो बात गई''। बहुत छोटी सी बात है कि जो भी भूल या गलतियाँ पहले हुई है। जो समय हमने बर्बाद किया है। उनमें कुछ सीख कर आगे कि जिन्दगी को व्यर्थ ना गवाए।

लक्ष्य तय करे

समय का सदुपयोग तब ही हो जायेगा जब हम अपनी जिन्दगी में लक्ष्य तय करेंगे। हमें कब क्या और कितने समय में पूरा करना है। बड़े लक्ष्य तक पहुँचने के लिए हमें छोटे–छोटे लक्ष्य तय करने होंगे, जोकि हर दिन के लिए अलग–अलग हो। समय का सदुपयोग करने के लिए हमने लक्ष्य को दो भागों में विभाजित किया है।

1. सामान्य लक्ष्य   2. निश्चित लक्ष्य

इस समय सामान्य लक्ष्य में मेहनत, परिश्रम कार्यकुशलता बड़ा कर कार्य तो पूरा कर ही लेंगे अर्थात् कार्य तो होगा परन्तु समय तय नहीं है।

निश्चित लक्ष्य

लक्ष्य भी तय है। हम प्रतिदिन 8 घण्टे कार्य करेंगे या हमें साल में 2 लाख रुपये कमाऐंगे अर्थात् यह है। निश्चित लक्ष्य जिसे अपनी उन्नति के साथ जाँचा जा सकता है।

समय सदुपयोग अनमोल वचन

वक्त के साथ चलने में भलाई है। ना आगे भागने में ना पीछे रहने में।।

समय का फेरा ही मनुष्य को अच्छे–बुरे का ज्ञान देता है।

समय के अनुरूप ढलना ही बुद्धिमता का परिचय है।

– ***डिम्पल (M.A. IInd Sem.)***

बैठकी होली

बैठकी होली उत्तराखण्ड के कुमाऊँ मण्डल की सरोवर नगरी नैनीताल और अल्मोड़ा जिले में होली के अवसर पर आयोजित की जाती है। यहाँ नियत तिथि से काफी पहले ही होली की मस्ती और रंग छाने लगते हैं। बैठकी होली को परम्परागत ढंग से किया जाता है। इसमें शास्त्रीय संगीत के मिठास से भरी ठुमरियाँ होती है। बैठकी होली में गाये जाने वाले गीत रागों के समय पर आधारित होते हैं। इन गीतों में मीराबाई से लेकर नजीर और बहादुर शाह जफर की रचनाएँ सुनने को मिलती है। गीत बैठकी में जब रंग छाने लगता है तो बारी–बारी से हर कोई छोड़ी गई तान उठाता है और इसी तरीके से यह सिलसिला चलता रहता है।

होली का त्यौहार कुमाऊँ में बसंत पंचमी के दिन शुरू हो जाता है। कुमाऊँनी होली के तीन प्रारूप है, बैठकी होली, खड़ी होली और महिला होली।

इस होली में सिर्फ अबीर गुलाल का टीका ही नहीं होता, वरन बैठकी होली और खड़ी होली गायन की शास्त्रीय परम्परा भी शामिल होती है। बसंत पंचमी के दिन से ही हौल्यार प्रत्येक शाम घर–घर जाकर होली गाते हैं और यह उत्सव लगभग 2 महीनों तक चलता है। बैठकी होली पारम्परिक रूप से कुमाऊँ के बड़े नगरों में ही मनाई जाती है। जैसे – अल्मोड़ा और नैनीताल।

कुमाऊँनी होली की उत्पत्ति विशेष रूप से बैठकी होली की संगीत परम्परा की शुरूआत तो 15वीं शताब्दी में चम्पावत के चन्द राजाओं के महल में और इसके आस–पास स्थित काली कुमाऊँ, सुई और गुमदेश क्षेत्रों में मनाई जाती है। बाद में चन्द राजवंश के प्रसार के साथ ही यह सम्पूर्ण कुमाऊँ क्षेत्र तक फैली।

सांस्कृतिक नगरी अल्मोड़ा में तो इस त्यौहार पर होली गाने के लिए दूर–दूर से गायक आते हैं। कुमाऊँ के प्रसिद्ध जनकवि गिरीश गिर्दा ने बैठकी होली के सामाजिक शास्त्रीय संदर्भों के बारे में गहराई से अध्ययन किया है और इस पर इस्लामी संस्कृति और उर्दू का असर भी माना है।

कुमाऊँनी होली (बैठकी होली) की कुछ पंक्तियाँ जंगला काफी राग में –

"मैं तो ठाड़ी रही बस
अँखियाँ मूंदें
सजन बालों बालों में,
बालों में गजरा गूँथे
सजन
मोरा बालों में बालों में बालों में
गजरा गूँथे
लाज से हो गई पानी
सखी छाई छाई तपोवन लाली"

–

मानसी रावत (B.A. IVth Sem.)

भारतीय संगीत का संक्षिप्त इतिहास

वैदिक युग में 'संगीत' समाज में स्थान बना चुका था। सबसे प्राचीन ग्रन्थ 'ऋग्वेद' में आर्यों के आमोद-प्रमोद का मुख्य साधन संगीत को बताया गया है। अनेक वाद्यों का आविष्कार भी ऋग्वेद के समय में बताया जाता है। 'यजुर्वेद' में संगीत को अनेक लोगों की आजिविका का साधन बताया गया फिर गान प्रधान वेद 'सामवेद' आया जिसे संगीत का मूल ग्रन्थ माना गया। 'सामवेद' में उच्चारण की दृष्टि से तीन और संगीत की दृष्टि से सात प्रकार के स्वरों का उल्लेख है सामवेद का गान (सामगान) मेसोपोटामिया, फैल्डिया, अक्कड़, सुमेर, बवेरू, असुर, सुर, यरूशलम, ईरान, अरब, फिनिशिया व मिश्र के धार्मिक संगीत से पर्याप्त मात्रा में मिलता-जुलता था।

उत्तर वैदिक काल में 'रामायण' ग्रन्थ में मेरी दुंदुभि, वीणा मृदंग व घड़ा आदि वाद्य यंत्रों व भँवरों के गान का वर्णन मिलता है तो 'महाभारत' में कृष्ण की बाँसुरी के जादुई प्रभाव से सभी प्रभावित होते हैं अज्ञातवास के दौरान अर्जुन ने उत्तरा को संगीत-नृत्य सिखाने हेतु बृहन्नाता का रूप धारण किया। पौराणिक काल के 'तैत्तिरीय उपनिषद' 'ऐतरेय उपनिषद', शतपथ ब्राह्मण के 'याज्ञवल्कयरत्न प्रदीपिका' 'प्रतिभाष्यप्रदीप' और 'नारदीय शिक्षा' जैसे ग्रन्थों से भी हमें उस समय संगीत का परिचय मिलता है। चौथी शताब्दी में भरतमुनी ने नाट्यशास्त्र के छः अध्यायों में संगीत पर ही चर्चा की। इनमें विभिन्न वाद्यों का वर्णन उत्पत्ति, उन्हें बजाने के तरीकों, स्वर, छन्द, लय व विभिन्न कालों के बारे में विस्तार से लिखा गया है। इस ग्रन्थ में भरतमुनी ने गायकों और वादकों के गुणों और दोषों पर भी खुलकर लिखा है बाद में छः राग 'भैरव', 'हिंडोल', 'कैशिक', 'दीपक', 'श्रीराम' और 'मेघ' प्रचार में आये। पाँचवीं शताब्दी के आस-पास मंगत मुनि द्वारा रचित महत्वपूर्ण ग्रन्थ 'वृह्ददेशी' से पता चलता है कि उस समय तक लोग रागों के बारे में जानने लगे थे। लोगों द्वारा गाये - बजाये जाने लगे वाले रागों को मतंगमुनि ने देशी राग कहा और देशी रागों के नियमों को समझाने हेतु 'वृह्देशी' ग्रन्थ की रचना की। मतंग ही पहले व्यक्ति थे जिन्होंने अच्छी तरह से सोच-विचार कर पाया कि चार या पाँच स्वरों से कम में राग बन ही नहीं सकता। पाणिनी के अष्टाध्यायी में भी अनेक वाद्यों जैसे मृदंग, झार्झर, हुड़क तथा गायकों व नर्तकों सम्बन्धी कई बातों का उल्लेख है। सातवीं-आठवीं शताब्दी में 'नारदीय शिक्षा' और 'संगीत मरूरंद' की रचना हुई। संगीत मकरंद में राग में लगने वाले स्वरों के अनुसार उन्हें अलग-अलग वर्गों में बाँटा गया है और रागों का गाने बजाने के समय पर भी गम्भीरता से सोचा गया है।

ग्यारहवीं शताब्दी में मुसलमान अपने साथ फारस का संगीत लाए उनकी और हमारी पद्धतियों के मेल से भारतीय संगीत में काफी बदलाव आया। उस दौर के राजा-महाराजा भी संगीत-कला के प्रेमी थे और दूसरे संगीतज्ञों को आश्रय देकर उनकी कला को निखारने-सँवारने में मदद करते थे। बादशाह अकबर के दरबार में 36 संगीतज्ञ थे। उसी दौर के तानसेन, बैजूबावरा, रामदास, व तानरंग खाँ व विलास खाँ नामक संगीतज्ञ थे। कहा जाता है कि शाहजहाँ तो खुद भी अच्छा गाते थे। मुगलवंश के एक और बादशाह मुहम्मदशाह रंगीले का नाम तो कई पुराने गीतों में आज भी मिलता है। 12वीं शताब्दी में संगीतज्ञ जयदेव ने गीतगोविन्द नामक संस्कृत ग्रन्थ लिखा। इसे सकारण 'अष्टपदी' भी कहा जाता है। तेरहवीं शताब्दी में पण्डित शांरगदेव ने 'संगीत रत्नाकर' की रचना की इस ग्रन्थ में अपने दौर के प्रचलित संगीत और भरत व मतंग के संगीत का गहन अध्ययन मिलता है। सात अध्यायों में रचे होने के कारण इस उपयोगी ग्रन्थ को सप्ताध्यायी भी कहा जाता है। शारंगदेव द्वारा रचित संगीत रत्नाकर के अतिरिक्त चौहदवीं शताब्दी में विद्यारण्य द्वारा 'संगीत सार', पन्द्रहवीं शताब्दी में लोचन कवि द्वारा 'राग तरंगिणी', सोलहवीं शताब्दी में पुण्डरीक विट्ठल द्वारा 'सद्रागचंद्रोदय', रामामात्य द्वारा 'स्वरमेल कलानिधी', सत्रहवीं शताब्दी में हृदयनारायण देव 'चतुर्दंडिप्रकाशिका' अहोबल द्वारा 'संगीत परिज्ञात', दामोदर पण्डित द्वारा 'संगीत दर्पण', भावभट्ट द्वारा 'अनूप विलास' व 'अनूप संगीत रत्नाकार', सोमनाथ द्वारा 'अष्टोन्तरशतताल लक्षणाम' और अठारहवीं शताब्दी में श्रीनिवास पण्डित द्वारा 'राग तत्व विबोधः' तुलजेन्द्र भोंसले द्वारा 'संगीत सारामृतम' व 'राग लक्ष्मण' ग्रन्थों की रचना हुई। स्वामी हरिदासः विट्ठल कृष्णदास त्यागराज, मुथ्थुस्वामी दीक्षितर और श्यामा शास्त्री जैसे अनेक संत कवि-संगीतज्ञों ने भी उत्तर आदि दक्षिण भारत के संगीत को अनगिनत रचनाएँ दी। कहा जा सकता है कि भारतीय संगीत शताब्दियों के प्रयास व प्रयोग का परिणाम है।

– ***करूणा तिवारी*** **(B.A. IVth Sem.)**

दहेज प्रथा : एक अभिशप्त परम्परा

आधुनिक भारतीय समाज में दहेज की समस्या बढ़ते हुए औद्योगिक सभ्यता के प्रकाश में और भी जटिल हो गई है। आज दहेज प्रथा के दुष्परिणाम महिलाओं की जघन्य हत्या या आत्म हत्या के रूप में हमारे सामने आ रहे हैं। इन परिणामों ने विवाह जैसे पवित्र संस्कार पर ही प्रश्नचिन्ह लगा दिए हैं। निश्चय ही इन प्रश्नों पर कानूनविद् समाज सुधारक एवं राजनेताओं के पुर्नविचार करने की अत्यन्त आवश्यकता है।

यह कैसी विडम्बना है कि शिक्षा, विज्ञान सभ्यता के निरन्तर विकसित होने के साथ ही दहेज हत्याओं या आत्महत्या के आँकड़ों में भी वृद्धि होती रही है। ये बढ़ते आँकड़े हमारे पारिवारिक सद्‌भाव, विवाह संस्कार, पति-पत्नी के पारस्परिक प्रेम और अन्ततः समाज के नैतिक आचरण पर कालिख पोतते जा रहे हैं। दहेज प्रथा आधुनिक समाज में एक अभिशप्त परम्परा बनकर रह गई है जो निरन्तर हमारी पारिवारिक संस्कृति की जड़ों को खोखला कर रही है।

दहेज का प्राचीन रूप

भारत में मानव जीवन के विविध संस्कारों में विवाह संस्कार का विशेष महत्व रहा है। विवाह संस्कार परिवार निर्माण की आधार शिला है। भारतीय संस्कृति में विवाह को दो आत्माओं का पवित्र बन्धन कहा गया है। जबकि पाश्चात्य संस्कृति में विवाह केवल स्त्री-पुरुष के साथ रहने का एक समझौता या कसर मात्र है। भारतीय संस्कृत में विवाह को लेकर गहरी आस्था है।

आधुनिक सभ्यता के बढ़ते उपभोक्तावादी परिवेश में वर-पक्ष दहेज लेना अपना जन्मसिद्ध अधिकार मानने लगा, जो दहेज अपनी हैसियत और स्वेच्छा से दिया और लिया जाता था, वहीअब कन्या के पिता के लिए अभिशप्त विवशता बन गया क्योंकि वर-पक्ष की बड़ी-बड़ी माँगें दहेज के साथ जुड़ती गई। दहेज से दान और उपहार का स्वरूप लुप्त हो गया और वह कन्यापक्ष के लिए एक तरह से अर्थदण्ड बन गया। इस 'अर्थ दण्ड' ने समाज में इतना क्रूर रूप धारण कर लिया कि कन्या का जन्म ही परिवार में दु:ख का कारण माना जाने लगा।

आधुनिक समाज में दहेज की स्थिति

आधुनिक समाज के सभी वर्गों में (धनी-निर्धन, शिक्षित-अशिक्षित, कर्मचारी-अधिकारी ऊँच-नीच) दहेज एक व्यापारिक लेन-देन की तरह भयावह रूप लेता जा रहा है। दहेज का दानव न जाने कितनी तरूणियों के स्वप्नों को कुचलता हुआ, कितनी की जीवनलीला को निर्ममता से समाप्त करता हुआ और न जाने कितने परिवारों से समाप्त करता हुआ और न जाने कितने परिवारो को पीढ़ियों तक ऋण के पहाड़ के नीचे सिसकता छोड़कर निर्मम अट्‌ठाहस कर रहा है।

माँग पूरी न हो पाने की स्थिति में विवाह करने से इन्कार कर देते हैं। यदि बीच-बचाव या समझौता करके किसी प्रकार विवाह हो जाता है तो बाद में दहेज पूरा करने के बाद पत्नी पर दबाव डाला जाता है। उसे तरह-तरह से शारीरिक और मानसिक यत्रंणा दी जाती है। पत्नी के परिवार वालों को अपमानित किया जाता है। इस अत्याचार में लड़के के माता-पिता, भाई-बहन भी सहायक होते हैं। अत्याचारों से त्रस्त होकर और अपने माता-पिता की विवशता को ध्यान में रखकर भावुक लड़कियाँ आत्महत्या कर लेती है अथवा दहेज पूरा न करने पर उन्हें ससुराल वालों द्वारा ही किसी बहाने से जलाकर मार दिया जाता है।

दहेज प्रथा के दुष्परिणाम

दहेज प्रथा के वर्तमान रूप से समाज में अनेक दुष्परिणाम सामाजिक विकृति के रूप में सामने आये हैं। दहेज प्रथा के कारण युवा समाज में धन के प्रति अनैतिक लोभ में सामने आये हैं। दहेज प्रथा के कारण युवा समाज में धन के प्रति अनैतिक लोभ में वृद्धि हुई है। मानवीय सद्‌भाव के स्थान पर धन की प्रतिष्ठा बढ़ी है। नवयुवक धनी से धनी परिवार की कन्या से विवाह करने को उत्सुक हुए है। डॉक्टर, इन्जीनियर प्रशासनिक अधिकारी, यूनिवर्सिटी अध्यापकों के विवाह के लिए दो लाख से लेकर दस लाख तक का बाजार भाव चलता है। धनी परिवारों के द्वारा विवाह में अनावश्यक दहेज प्रदर्शन से सामान्य परिवार भी आकर्षित होते हैं।

दहेज विरोधी कानून

दहेज प्रथा के दुष्परिणामों को रोकने के लिए शारदा एक्ट के बाद 1 जुलाई 1961 को एक कानून बनाया गया। इस कानून के अन्तर्गत विवाह तय करते समय किसी प्रकार की शर्त लगाना दण्डनीय अपराध होगा और इसके लिए जिम्मेदार व्यक्ति को 6 महीने का कारावास तथा 5 हजार रुपये का आर्थिक दण्ड दिया जा सकता है। इस कानून के बनने से आशाजनक परिणाम नहीं निकले बल्कि दहेज से जुड़े मामलों में तीव्र वृद्धि हुई। दहेज हत्या के अनेक मामलों में मृत्युदण्ड तक दिया गया किन्तु समाज ने इसे भी अनदेखा कर दिया।

हाल ही में केन्द्र सरकार ने सभी राज्यों को प्रत्येक जिले में दहेज विरोधी सेल गठित करने का सुझाव दिया है। यह सेल जिले के दहेज मामलों की सुनवाई करेगी और उस पर निर्णय देगी। कानून कितने भी कठोर क्यों न हो, उनकी अपनी सीमायें हैं। सामाजिक जागरण तथा सहयोग के अभाव में कानून कितना असहाय और निष्फल होता है, यह दहेज मामलों को देखकर जाना जा सकता है।

समाधान की दिशायें

सरकारी व्यवस्थाओं के साथ ही यदि सामाजिक स्तर पर प्रयास किये जायें तो दहेज मामलों पर नियन्त्रण पाया जा सकता है। केवल सरकार के भरोसे हाथ पर हाथ रखकर बैठना आत्मघाती होगा। दहेज के सामाजिक अभिशाप से समाज को मुक्त करने के लिए सामाजिक चेतना का जागृत होना आवश्यक है। इस दिशा में स्वयंसेवी संस्थायें सक्रिय सहयोग कर सकती है। इन संस्थाओं से जुड़े युवक–युवतियाँ दहेज न लेने व न देने का संकल्प करें। जिलों में तहसील स्तर पर दहेज विरोधी समितियाँ गठित की जायें जो अपने दहेज विरोधी समितियाँ गठित की जायें जो अपने क्षेत्रों में दहेज मामलों पर निगरानी रखें।

दहेज के कारण बहू की हत्या या आत्महत्या पर विवश करने वालों का सामाजिक बहिष्कार किया जाय तथा समाचार पत्र–पत्रिकाओं में उस काँड की निन्दा की जाय। दहेज के विरूद्ध व्यापक–चेतना जगाने के लिए दूरदर्शन, रेडियो, समाचार पत्र–पत्रिकाओं का उपयोग किया जा सकता है।

सरकार अपने स्तर से दहेज विरोधी कानून को अधिक कठोर बनाये। दहेज मामलों की सुनवाई सामान्य अदालतों के बजाय विशेष अदालतों में की जाय तथा इन पर शीघ्र निर्णय दिये जाने की व्यवस्था हो।

– ***सुनीता (B.A. IInd Sem.)***

जीवन में शिक्षक का महत्व

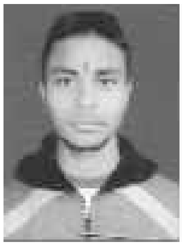

भूमिका – यहाँ हम हमारे जीवन में शिक्षक का महत्व क्या है उसका वर्णन करेंगे।

गुरु-ब्रह्मा, गुरुर्विष्णु, गुरु देवो महेश्वरः,
गुरु साक्षात् परमं ब्रह्मा तस्मै श्री गुरुवे नमः।

इन पंक्तियों का अर्थ यह है कि गुरु ही ब्रह्मा है, गुरु ही विष्णु है और गुरु ही भगवान शंकर है। गुरु ही साक्षात् परब्रह्म है। ऐसे गुरु को मैं प्रणाम करता हूँ।

शिक्षक या गुरु का अर्थ है (गु = अन्धकार), (रु = प्रकाश) अर्थात् जो हमें अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाते हैं उसे गुरु (शिक्षक) कहते हैं।

शिक्षक का योगदान – हमारे जीवन में शिक्षक का महत्वपूर्ण योगदान है। एक शिक्षक ही होता है जहाँ से हम अपनी कामयाबी का बुलंद झण्डा फहराते हैं शिक्षक उन लोगों की तुलना में अधिक सम्मान के पात्र होते हैं जो उन्हें जन्म देते हैं क्योंकि माता-पिता जन्म देते हैं और एक शिक्षक जीवन जीने की कला सिखाता है एक शिक्षक की तुलना उस शिरीष के फूल से की जा सकती है जिस प्रकार कड़ी धूप में शिरीष का फूल खिला रहता है वह मुरझाता नहीं है उसी प्रकार एक शिक्षक भी कड़ी से कड़ी परेशानी में हमेशा ज्ञान व मार्गदर्शन देने के लिए तत्पर रहता है।

शिक्षक एक मोमबत्ती की समान है जो खुद जलकर दूसरों को प्रकाशित करता है एक शिक्षक ही होता है जो निःस्वार्थ ज्ञान देता है। यदि किसी शिक्षक के कोई शिष्य को सफलता प्राप्त होती है तो सबसे अधिक खुशी एक शिक्षक की होती है दुनिया के कामयाब लोगों के पीछे भी एक शिक्षक का ही हाथ होता है शिक्षक को ईश्वर से पहले दर्जा दिया जाता है।

माता-पिता-गुरु-देवता – दुनिया में गुरु को माता के बाद स्थान दिया जाता है, क्योंकि माता के बाद एक शिक्षक ही होता है जो कुम्हार की तरह चाँक पर लाठी घुमाकर कच्ची मिट्टी की प्यास बुझाता है तथा दीपक अन्धकार को दूर करता है। जीवन में हर कोई साथ छोड़ सकता है लेकिन एक शिक्षक ही होता है जो कभी अपने शिष्य का साथ नहीं छोड़ता, चाहे शिक्षक मृत्यु को प्राप्त भी हो जाये लेकिन उसके द्वारा दिया गया ज्ञान कभी खत्म नहीं होता है। शिक्षक को एक भविष्य निर्माता कहा जाता है। सिकन्दर महान ने भी कहा था कि मैं जीवन के लिए अपने माता-पिता का ऋणी हूँ लेकिन एक अच्छा जीवन जीने के लिए अपने गुरु का ऋणी हूँ। और हमारे देश के महान व्यक्ति ए.पी.जे. अब्दुल कलाम पूर्व राष्ट्रपति जिन्हें मिसाइल मैन के नाम से भी जाना जाता है, उन्होंने कहा है कि तीन लोगों की आवश्यकता है माता, पिता तथा शिक्षक तथा आज के युग में टेक्नोलॉजी एक उपकरण है। बच्चों को प्रेरित करने के लिए लेकिन जीवन में शिक्षक जरूरी है क्योंकि जो शिक्षक और शिष्य के बीच जो मिलन से ऊर्जा आती है वही इंसान को सफलता प्रदान करवाती है। हमारे देश में शिक्षक के सम्मान के लिए 5सितम्बर को शिक्षक दिवस मनाया जाता है।

वर्तमान में शिक्षक के प्रति दृष्टि – वर्तमान में शिक्षक के प्रति दृष्टि निंदनीय है क्योंकि वर्तमान में शिक्षक के प्रति आदर सम्मान बहुत कम देखने को मिल रहा है। अतः आज के विद्यार्थियों से निवेदन है कि अपने शिक्षकों का हमेशा आदर करना चाहिए। शिक्षक हमें कड़वी बातें जरूर बोलते हैं लेकिन जो शिक्षक बचपन में डाँटा करते थे आज वही शिक्षक सबसे प्यारे होते हैं या लगते हैं। **हर किसी की सफलता के पीछे एक शिक्षक का हाथ होता है, कृपया उनका सम्मान करें, जो गुरु का सम्मान नहीं कर सकता, वो किसी का सम्मान नहीं कर सकता।** शिक्षक की नजर में हर शिष्य बराबर होता है।

आजकल वर्तमान में लोग कहते हैं वो शिक्षक नहीं पढ़ाते, ये गलत है। आइये हम आपको इस श्लोक से समझाते हैं।

तीन लोंक नौ खंड फेके सदगुरु डोर,

चढे हंसा न चढ़े सदगुरु का क्या दोष।

अर्थात् – यहाँ सद्‌गुरु का अर्थ (शिक्षक) से है तथा हंसा का अर्थ (विद्यार्थी) से। अत: शिक्षक हर जगह अपने ज्ञान की डोर फेंकता है, अब कोई उसे सम्पूर्ण तरीके से पाकर सफलता प्राप्त कर लेता है तथा कोई नहीं कर पाता है तो उसमें शिक्षक का कोई दोष नहीं है।

शिक्षक ही एक ऐसा व्यक्ति होता है जो हमें हमारी आत्मा से साक्षात्कार करा देता है, चाहे वो कड़वा ही बोले लेकिन वह सत्य बोलता है। इसलिऐ आइऐ इन पंक्तियों को याद रखें।

मीठा बोलने वाला हमेशा हितेषी नहीं होता है, बल्कि नमक की तरह कड़वा ज्ञान देने वाला हमेशा हितेषी होता है, क्योंकि अभी तक का इतिहास है कि नमक में कभी कीड़े नहीं पड़े और मीठे में कीड़े के साथ बीमारियाँ होती है।

शिक्षक के प्रति कुछ अनमोल पक्तियाँ –

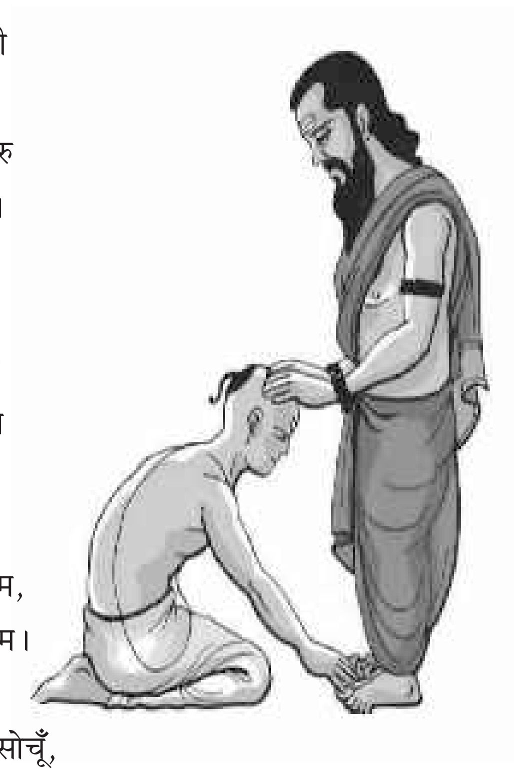

अहंकार को हटाकर प्रकाश की
ओर ले जाने वाला गुरु
जीवन की राह दिखाने वाला गुरु
इंसान को इंसान बनाता है गुरु।

आप ने बनाया मुझे इस योग्य
कि प्राप्त करूँ मैं अपना लक्ष्य
दिया है हर समय अपना सहारा
जब भी लगा मुझे मैं हारा।

गुरु का महत्व कभी होगा ना कम,
भले कर ले कितनी भी उन्नति हम।

क्या दूँ गुरु दक्षिणा, मन ही मन मैं सोचूँ,
चुका ना पाऊँ ऋण मैं तेरा,
अगर जीवन भी अपना दे दूँ।

गुरु तेरे उपकार का, कैसे चुकाऊँ मैं मोल,
लाख कीमती धन भला, गुरु है मेरे अनमोल।

– *सोबन कुमार (B.Sc.IInd Sem.)*

महिला सशक्तिकरण

महिला सशक्तिकरण को बेहद आसान शब्दों में परिभाषित किया जा सकता है कि इससे महिलाएं शक्तिशाली बनती है, जिससे वो अपने जीवन से जुड़े हर फैसले स्वयं ले सकती है और परिवार और समाज के अच्छे से रह सकती है। समाज में उनके वास्तविक अधिकार को प्राप्त कनरे के लए उन्हें सक्षम बनाना महिला सशक्तिकरण है। जैसा कि हम जानते हैं कि पुरुष प्रधान समाज है, जहाँ पुरुष का हर क्षेत्र में दखल है और महिलाएँ सिर्फ घर–परिवार की जिम्मेदारी उठाती है साथ ही उन पर कई पाबंदियाँ भी होती है। भारत की लगभग 50 प्रतिशत आबादी केवल महिलाओं की है मतलब पूरे देश के विकास के लिए इस आधी आबादी को जरूरत है जोकि सशक्त नहीं है और कई सामाजिक प्रतिबंधों से बँधी हुई है। ऐसी स्थिति में हम नहीं कह सकते कि भविष्य में बिना हमारी आधी आबादी को मजबूत किये हमारा देश विकसित हो पायेगा। अगर हमें अपने देश को विकसित बनाना है तो ये जरूरी है कि सरकार पुरुष और खुद महिलाओं द्वारा महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा दिया जाय। महिला सशक्तिकरण की जरूरत इसलिऐ पड़ी क्योंकि प्राचीन समय से भारत में लैंगिक असमानता थी और पुरुष प्रधान समाज था। महिलाओं को उनके अपने परिवार और समाज द्वारा कई कारणों से दबाया गया तथा उनके साथ कई प्रकार की हिंसा हुई और परिवार और समाज में भेदभाव भी किया गया, ऐसा केवल भारत में ही नहीं बल्कि दूसरे देशों में भी दिखाई पड़ता है। महिलाओं के लिए प्राचीन काल से समाज में चल रहे गलत और पुराने चलन को नये रीति–रिवाजों और परंपरा में ढाल दिया गया था। भारतीय समाज में महिलाओं को सम्मान देने के लिए माँ, बहन, पुत्री, पत्नी के रूप में महिला देवियों को पूजने की परम्परा है, लेकिन इसका ये कतई मतलब नहीं कि केवल महिलाओं को पूजने भर से देश के विकास की जरूरत पूरी हो जायेगी।

आज जरूरत है कि देश की आधी आबादी यानि देश महिलाओं का हर क्षेत्र में सशक्तिकरण किया जाए जो देश के विकास का आधार बनेगी। भारत में एकता के मुहावरे को साबित किया है, जहाँ भारतीय समाज में धर्मों को मानने वाले लोग रहते हैं। महिलाओं को हर धर्म में एक अलग स्थान दिया गया है। प्राचीन भारतीय समाज दूसरे भेदभावपूर्ण दस्तूरों के साथ सती प्रथा, नगर वधू व्यवस्था, दहेज प्रथा, यौन हिंसा, घरेलू हिंसा, गर्भ में बच्चियों की हत्या, पर्दा प्रथा, कार्य स्थल पर यौन शोषण, बाल मजदूरी, बाल विवाह तथा देवदासी प्रथा आदि परम्परा थी। इस तरह की कुप्रथा का कारण पितृसत्तामक समाज और पुरुष श्रेष्ठता मनोग्रन्थि है। पुरुष पारिवारिक सदस्यों द्वारा सामाजिक, राजनीतिक अधिकार काम करने की आजादी, शिक्षा का अधिकार आदि को पूरी तर प्रतिबंधित कर दिया गया। महिलाओं के द्वारा कुछ बुरे चलन को खुले विचारों के लोगों और महान भारतीय लोगों द्वारा हटाया गया जिन्होंने महिलाओं के खिलाफ भेदभाव पूर्ण कार्यों के लिए अपनी आवाज उठाई। राजाराम मोहन राय की लगातार कोशिशों की वजह से ही सती प्रथा को खत्म करने के लिए अंग्रेज मजबूर हुए। बाद में दूसरे भारतीय समाज सुधारकों ईश्वर चन्द्र विद्यासागर, आचार्य विनोभा भावे, स्वामी विवेकानन्द आदि ने भी महिला उत्थान के लिए अपनी आवाज उठाई और कड़ा संघर्ष किया।

भारत में विधवाओं की स्थिति को सुधारने के लिए ईश्वर चन्द्र विद्यासागर ने अपने लगातार प्रयास से विधवा पुनर्विवाह अधिनियम 1856 की शुरूआत करवाई। पिछले कुछ वर्षों में महिलाओं के खिलाफ होने वाले लैंगिक असमानता और बुरी

प्रथाओं को हटाने के लिए सरकार द्वारा कई सारे संवैधानिक और कानूनी अधिकार बनाए और लागू किये गये हैं। हालाँकि ऐसे बड़े विषय को सुलझाने के लिए महिलाओं सहित सभी का लगातार सहयोग की जरूरत है। आधुनिक समाज महिलाओं के अधिकार को लेकर ज्यादा जागरूक है, जिसका परिणाम हुआ कि कई सारे स्वयंसेवी समूह और एनजीओ आदि इस दिशा में कार्य कर रहे हैं। महिलाऐं ज्यादा खुले दिमाग की होती है और सभी आयामों में अपने अधिकारों को पाने के लिए सामाजिक बंधनों को तोड़ रही है, हालाँकि अपराध इसके साथ–साथ चल रहा है। कानूनी अधिकार के साथ महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए संसद द्वारा पास किये गये कुछ अधिनियम है – एक बराबर पारिश्रमिक एक्ट 1976 दहेज रोक अधिनियम 1961 अनैतिक व्यापार (रोकथाम अधिनियम) 1956 बाल विवाह रोकथाम एक्ट 2006, लिंग परीक्षण तकनीक एक्ट 1994, कार्य स्थल पर महिलाओं का यौन शोषण एक्ट 2013, भारतीय समाज में सच में महिला सशक्तिकरण लाने के लिए महिलाओं के खिलाफ बुरी प्रथाओं के मुख्य कारणों को समझना और उन्हें हटाना होगा जोकि समाज की पितृसत्तामक और पुरुष प्रधान युक्त व्यवस्था है। जरूरत है कि हम महिलाओं के खिलाफ पुरानी सोच को बदले और संवैधानिक और कानूनी प्रावधानों में भी बदलाव लायें।

– ***पूजा (M.A. IVth Sem.)***

भारत के उन्नति की ओर बढ़ते कदम

हमारे देश की उन्नति हम पर ही निर्भर करती है। हमें हमारे देश की उन्नति पर महत्व देते हुए सबसे पहले हमारे क्या कर्त्तव्य है यह समझना जरूरी है। एक व्यक्ति उन्नति उसके राष्ट्र उसकी स्वयं की उन्नति है। इसके लिए सबसे पहले हमारे क्या कर्त्तव्य है ये समझना होगा। आर्थिक विकास में वृद्धि, अनुशासन, अच्छी शिक्षा हमारे देश की गरीबी को मिटाने, सभी राजनीतिक और सामाजिक मुद्दों को मिटाना जरूरी है। उन्हें खत्म करना, वह बाधाएँ खत्म होगी तभी देश और हमारी उन्नति सम्भव है। भारत ने आज अत्यधिक उन्नति की है। भारत देश की गिनती आज विश्व के विकासशील देशों में होती है। हम देश के चहुँमुखी विकास को महसूस कर सकते हैं।

हमारे देश की उन्नति के कुछ महत्वपूर्ण तत्व इस प्रकार है –

अनेकता में एकता भारत की राष्ट्रीय विशेषता है। हमारे देश भारत के उन्नति का एक महत्वपूर्ण तत्व अनेकता में एकता की भावना ही है। हमारे देश में विभिन्न जाति और धर्म के लोग रहते हैं जो आपस में मिलकर रहते हैं, जो हमारी उन्नति का एक अति आवश्यक तत्व है। भारत देश में हर एक हजार किलोमीटर पर बोलियाँ बदली जाती है। तरह-तरह की बोलियाँ हमारी संस्कृति है जो हमारे देश को एक धागे में बाँधे रखती है और यही कारण है कि इस एकता की वजह से ही हमारा देश भारत नित्य नए आयाम कायम कर रहा है और उन्नति को प्राप्त कर रहा है।

सशस्त्र बल देश की उन्नति में महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं। हमारे देश की सशस्त्र बल में चार बड़ी सैन्य शक्ति है जो हर युद्ध में विजय प्राप्त करती है और इसकी वजह से ही कोई आतंकवादी या घुसपैठिया हमारे देश को कोई नुकसान नहीं पहुँचा पाते हैं। इसकी सैन्य शक्ति की रक्षा की वहज से ही हमारे देश में इतनी उन्नति हुई है। हमारे देश के पास स्वयं की आधुनिक मिसाइलें हैं।

आज देश में अनेक हवाई अड्डे बनाए जा चुके हैं। देश ने इतनी उन्नति की है कि वर्ष 2015 में सालाना 25 से 40 मिलियन यात्री श्रेणी में एयरपोर्ट काउंसिल इंटरनेशनल नई दिल्ली स्थित इंदिरा गांधी अन्तर्राष्ट्रीय आईजीआई हवाई अड्डा को सर्वश्रेष्ठ हवाई अड्डा का खिताब दिया गया।

वर्ष 1947 में स्वतंत्रता के बाद भारत का पुराना रेल नेटवर्क विरासत में मिला। स्वतंत्रता के समय 42 अलग-अलग रेलवे प्रणालियाँ थी जिसके मालिक भूतपूर्व भारतीय रियासतों के प्रमुख थे। ये लाइनें करीब 33000 किलोमीटर थी। वर्ष 1951 में इसका राष्ट्रीयकरण किया गया। अब भारतीय रेलवे दुनिया का सबसे बड़े नेटवर्क में से एक है। इसमें 68312 किलोमीटर मार्ग पर 115000 किमी का ट्रैक और 7112 स्टेशन हैं।

उत्पादन के क्षेत्र में देश ने उन्नति की है। सबसे सस्ती दरों पर हमारे देश भारत ने वायसलेस टेलीफोन प्रदान करने वाला देश बना। दुनिया का सबसे कम लागत वाला सुपर कम्प्यूटर भारत ने तैयार किया है। नैनो सबसे सस्ती वाहनों में से है जो कि हमारे देश में बनी। दोपहिया वाहनों के उत्पादन में भी भारत सबसे आगे है। दूध और मक्खन में हमारा भारत दुनिया का सबसे बड़ा देश है। भारत सोने का बड़ा आयातक और उपभोक्ता राष्ट्र भी है।

शिक्षा के क्षेत्र पर उन्नति और डिजिटल इंडिया में भारत ने स्वतंत्रता के बाद लगातार विकास दर बढ़ रही है। भारत की वर्तमान

साक्षरता दर 74.4 प्रतिशत हो चुकी है। शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए सरकार कई योजनाएँ चला रही है। इसके साथ ही समाज में चल रही कुप्रथाएँ जैसे बाल विवाह, बालश्रम, कन्या भ्रूण हत्या, बलात्कार भी कम होती जा रही है। शिक्षा के माध्यम से स्त्री, पुरूष भेद में कमी आई है। लिंग अनुपात भी कम हुआ है आज महिला भी हर क्षेत्र में पुरुष के समान है यह सब शिक्षा के कारण ही सम्भव हुआ है।

शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए और गरीब बच्चों को शिक्षा प्राप्त हो सके, इसके लिए सरकार ने मिड डे मिल योजना चलाई है जिसमें स्कूलों में बच्चों को खाना मिलता है, गरीब बच्चों के लिए जो कपड़े, किताबे नहीं खरीद पाते उनके लिए स्कूलों में मुफ्त किताबें प्रदान किए जाते हैं। हमारा राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार दुनिया में सबसे बड़े कार्यक्रम में से एक है। आज गाँव और शहर में सुविधाऐं प्राप्त हो रही है। शहर की तरह ही गाँवों में सड़कें हैं, विद्यालय चिकित्सक केन्द्र, बैंक आदि सुविधाऐं प्राप्त हो रही है। सरकार ग्रामीण क्षेत्रों के विकास के लिए अनेक योजनाएँ बना रही है और गाँव का विकास कर रही है।

कृषि के क्षेत्र में हरित क्रांति की वजह से खाद्यान्न उत्पादन में चार गुना से भी अधिक बढ़ोत्तरी हुई है। कृषि से हमारे देश के आधे से अधिक लोगों का जीवन यापन चलता है और इसमें भी हमारे देश ने बहुत उन्नति की है।

हमारे देश की महिलाएँ आज हर क्षेत्र में अग्रणी है और देश की उन्नति में सहायता प्रदान कर रही है। प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति, लोकसभा अध्यक्ष नेता, डॉक्टर, वकील, पुलिस, सेना में सभी जगह आज हमारे देश की महिला अग्रणी है। यहाँ तक की पूरी दुनिया में मिस यूनिवर्स, मिस वर्ल्ड बनकर देश का नाम रोशन कर रही हैं। खेल जगत में महिलाओं ने अपना योगदान दिया है। हमारे देश में अभी कई महिलाएँ मुख्यमंत्री के पद पर अपनी सेवाएँ दे रही हैं। हमारे देश की उन्नति में महिलाओं ने साबित कर दिया है कि वह किसी से कम नहीं है।

भारत इस प्रकार चर्तुमुख विकास की ओर अग्रसर है परन्तु इसे अभी बहुत सारी बाधाओं का सामना करना पड़ रहा है। इसमें सबसे प्रमुख है भ्रष्टाचार। सरकारी बाबुओं और नेताओं के भ्रष्टाचार के किस्से आये दिन हमें सुनने को मिलते हैं। आतंकवाद भारत की प्रमुख समस्याओं में से एक है। हाल ही में हुए पुलवामा आतंकी हमले से भारत को एक बड़ा झटका लगा है। इससे देश की अखण्डता पर भी आँच आई है।

यदि हमें भारत को विश्वशक्ति के रूप में स्थापित करना है तो हम सब भारतीयों को यह प्रण लेना होगा कि किसी भी प्रकार के भ्रष्टाचार को बढ़ावा नहीं देंगे। शिक्षा को बढ़ावा देंगे।

हमारे देश में क्षमता की कोई कमी नहीं है। जिस दिन हम अपनी योग्यता का सही आकलन कर लेंगे एवं सभी बुराईयों को दूर करने का प्रण कर लिया तो फिर वो दिन नहीं जब भारत पुन: सोने की चिड़िया कहलायेगा।

– ***स्वराज (M.A. IVth Sem.)***

व्यक्तित्व विकास में एन.एस.एस. तथा एन.सी.सी. की भूमिका

''आसमा को छूना है, कुछ कर दिखाना है।
नये चमकते तारों से, जीवन को सजाना है।।''

आधुनिक युग में यदि हम मानव सभ्यता की बात करते हैं तो उसने खूब ऊँचाईयाँ प्राप्त कर ली है, लेकिन यदि हम बात करते हैं कि सामाजिक सेवा में व्यक्ति का कितना योगदान प्राप्त हुआ है। सामाजिक क्षेत्र में समाज की सेवा करने वाले व्यक्तियों की संख्या मात्र 5 प्रतिशत है। समाज से ही हमारा विकास हुआ है, समाज में रहकर ही हमें अपने लक्ष्य को निर्धारित करने में सहयोग मिलता है। अपने लक्ष्य को प्राप्त करना सभी की इच्छा होती है। लेकिन सफलता सभी को प्राप्त नहीं होती। जीतता वही व्यक्ति है जो संघर्षों से लड़ता हो।

आज के युग में मानव की सभ्यता में बहुत अन्तर आया है। यह अन्तर आधुनिक शिक्षा के द्वारा हुआ है। भारत सरकार द्वारा आज विद्यार्थियों को सामाजिक शिक्षा का ज्ञान उसके विकास के लिए दिया जा रहा है।

यह शिक्षा है एन.एस.एस. व एन.सी.सी. की। एन.एस.एस. (राष्ट्रीय सेवा योजना) के माध्यम से व्यक्ति ने अपना जीवन सफल बनाया है। रा.से.योजना का उद्देश्य है – ''सामाजिक सेवा करते हुए व्यक्तित्व विकास करना''। व्यक्ति का सम्मान समाज में होता है। समाज में ही व्यक्ति प्रतिष्ठित होता है, समाज ही व्यक्ति की पूजा करता है और समाज ही व्यक्ति को अपमानित भी करता है। एन.एस.एस. व्यक्ति (छात्र) के जीवन में सामाजिक सेवा की भावना सांस्कृतिक व्यवहार तथा धार्मिक भावना को प्रबल करता है। एन.सी.सी. के माध्यम से छात्र देश के विभिन्न क्षेत्रों में जाकर वहाँ की जलवायु, संस्कृति, अर्थव्यवस्था तथा मानव व्यवस्था का अध्ययन करके सामंजस्य स्थापित करता है तथा अपने को उसके साथ मिलाकर देश सेवा का प्रण लेकर अपने जीवन की शुरूआत एक नये जोश के साथ करता है। एन.एस.एस. के छात्रों की पहचान उनकी मधुरमयी मुस्कान है। इस मुस्कान की सीमा ब्रहमाण्ड के समान है तथा ब्रह्माण्ड हमारी छत है। समाज में जो भी कुरीतियाँ तथा अन्धविश्वास फैले हैं, स्वयं सेवकों का कर्त्तव्य होता है कि उनके खिलाफ जंग लड़े। राष्ट्रीय सेवा योजना में विशिष्ट कार्य करने वाले स्वयं सेवकों को राज्यस्तरीय पुरस्कार तथा राष्ट्रीय स्तर पर सर्वोत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले को इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया जाता है। राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर पर सम्मान के अतिरिक्त (15) अंक दिये जाते हैं।

एन.सी.सी. के माध्यम से छात्र को विशेष रूप से भारतीय सैन्य प्रणाली का प्रशिक्षण दिया जाता है। एन.सी.सी. कैडेटों का उद्देश्य भी देश सेवा ही होता है। एन.सी.सी. का उद्देश्य है- देश के युवाओं में चरित्र, सहचर्य, अनुशासन, नेतृत्व, धर्मनिरपेक्षता, रोमांच तथा निःस्वार्थ सेवा भाव का संचार करना और संगठित, प्रशिक्षित व प्रेरित युवकों का एक मानव संसाधन तैयार करना तथा सशस्त्र सेना में जीविका बनाने के लिए युवाओं को प्रेरित करने हेतु उचित वातावरण प्रदान करना।

एन.सी.सी. का ध्येय सूत्र–एकता और अनुशासन है। इन सब बातों का अध्ययन करने के उपरान्त हम आसानी से कह सकते हैं कि पढ़ाई के साथ–साथ एन.एस.एस. व एन.सी.सी. में प्रतिभाग करने से हमें उचित मार्गदर्शन प्राप्त होता है। यह मार्गदर्शन छात्रों को प्रतिष्ठित बनाने हेतु दिया जाता है, जिससे हमारे देश के नागरिक विश्व में कहीं भी अपना सीना तानकर खड़े हो सकते हैं। एन.सी.सी. कैडेटों को भारतीय सुरक्षा के बारे में पूरी जानकारी दी जाती है, जिससे उन्हें रक्षा क्षेत्र में जाने का मौका मिलता है तथा देश सेवा में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

वास्तव में छात्र जीवन से ही छात्रों को अपने उद्देश्यों के प्रति सजग रहते हुए सामाजिक सेवा करते हुए अपने व्यतित्व को विकसित करना चाहिए। एक लम्बी भीड़ का हिस्सा न रहते हुए उस भीड़ से अलग पहचान बनानी चाहिए। इसके लिए हमें अच्छे मार्ग निर्देशक की आवश्यकता होगी। हमारा मार्ग निदेशन करने के लिए है – एन.एस.एस. तथा एन.सी.सी. प्रमुख स्त्रोत हैं।

नन्हा सा बीज हम बो दे, वही वृक्ष बन जायेगा।
छोटा सा दीप जला दें हम, अन्धकार मिट जायेगा।

– रूपाली नेगी (B.A. VIth Sem.)

मानसिक स्वास्थ्य
(Mental Health)

मानसिक स्वास्थ्य किसी भी चीज को हमारी सोचने, समझने और महसूस करने की प्रक्रिया है। आज के भागदौड़ भरे माहौल में ज्यादातर लोगों को मानसिक सुकून नहीं है। इसकी कई वजह है जो मेंटल हैल्थ को प्रभावित करती है। स्वस्थ खान-पान का अभाव, खुद को समय न देना या फिर माहौल। लेकिन जिस तरह आप अपने शरीर की देखभाल करते हैं उसी तरह आपको अपने मस्तिष्क का भी ख्याल रखना पड़ेगा। इसके लिए पाँच तरीके हैं जिन्हें अपनाकर आप मस्तिष्क को भी स्वस्थ बना सकते हैं –

1. शरीर का ध्यान रखें (Take care of your Physical Health) – आप अपने खाने पर नियंत्रण कर सकते हैं। इसके लिए आप ध्यान रखें कि आप कितना मीठा खा रहे हैं। मीठा खाने से उस वक्त ऊर्जामय महसूस कर सकते हैं लेकिन कुछ समय बाद आप पहले से भी ज्यादा थका हुआ महसूस करने लगेंगे। एल्होहल से दूर रहे। एल्कोहल पीने से सेडनेस (Sadness) बढ़ सकती है।

2. व्यायाम (Physical Exercise) – व्यायाम से आपका शरीर दुरूस्त और मस्तिष्क स्वस्थ रहता है। व्यायाम करने के लिए बहुत ज्यादा समय देने की जरूरत नहीं है। पूरे दिन में केवल 30 मिनट का व्यायाम भी आपके मानसिक स्वास्थ्य में सकारात्मक बदलाव ला सकता है।

3. भरपूर नींद लें (Enough Sleep) – सोने का आपके मानसिक स्वास्थ्य पर गहरा प्रभाव पड़ता है। जब हम अच्छी और पर्याप्त नींद लेते हैं तो हम तनाव पर अच्छी तरह काबू पा सकते हैं। कान्सन्ट्रेट (Concentrate) कर पाते है और सकारात्मक सोच पाते हैं। सोने से पहले कुछ अच्छा पढ़े, व्यायाम न करें, भारी खाना ना खाऐं तथा सोने के लिए नींद की गोलियाँ कभी न लें।

4. सकारात्मक सोचे (Think Positive) – अच्छे मानसिक स्वास्थ्य का मतलब यह नहीं है कि सिर्फ अच्छे विचार ही सोचने हैं। जीवन में उतार-चढ़ाव लगे रहते हैं ऐसे में समस्या का निदान सकारात्मक रूप से करना और सोचना ही अच्छे मानसिक स्वास्थ्य को दर्शाती है। सकारात्मक सोचने के लिए कुछ यूँ करें – अपने साथ हुए किसी बुरे हादसे या घटना को हमेशा सोचते रहने से बचें। किसी भी कार्य को लेकर यह न सोचे कि केवल बुरा ही होगा न कि यह केवल अच्छा ही होगा।

5. जल्दबाजी न करें (Have Potencies) – किसी भी कार्य को जल्दबाजी में न करें। न ही किसी भी कार्य को बोझ समझे। ऐसा करने से आप अनावश्यक दबाव में आते हैं जिसका प्रभाव आपके मस्तिष्क पर भी पड़ता है। बेहतर होगा कार्यको करने के लिए पर्याप्त समय रखें और तनाव रहित होकर कार्य करें।

6. हॉबी के लिए समय निकालें (Nurture your Hobby) – चाहें जितने भी व्यस्त हों लेकिन अपनी हॉबी के लिए समय जरूर निकालें। ऐसा करने से आपका मानसिक रूप से भी विकास होता है और शारीरिक रूप से भी।

7. सकारात्मक लोगों से मिलें (Meet Positive People) – घर में बंद रहने से बेहतर बाहर निकले, दोस्तों से मिले। हफ्ते में एक दिन ऐसे लोगों से जरूर मिले जो सकारात्मक सोच रखते हैं और आपको सकारात्मक सोचने के लिए प्रेरित करते हैं। ऐसा करने से आपका मानसिक विकास होता है।

निष्कर्षत: हम यह कह सकते हैं कि आज के समय में लोग इतने व्यस्त हैं कि वे अपने स्वास्थ्य की देखभाल करना भूल जाते हैं। यह समझना आवश्यक है कि स्वास्थ्य पहले है। अपने स्वास्थ्रू का ध्यान रखना अति आवश्यक है। जब आप स्वस्थ होंगे तो आप जीवन के अन्य पहलुओं की भी देखभाल करने में सक्षम होंगे। स्वास्थ्य का मतलब केवल आपकी शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य नहीं है बल्कि इसके बारे में बताए गए विभिन्न तरीके भी इसमें शामिल होने चाहिए।

– ***प्रीति* (M.A. IVth Sem.)**

स्मृति (Memory)

हमारी यादें हमारे व्यक्तिव का एक प्रमुख अंग है। हम क्या याद रखते हैं और क्या भूल जाते हैं, यह सब बहुत सारी चीजों पर निर्भर करता है। भाषा, दृष्टि, श्रवण, प्रत्यक्षीकरण, अधिगम तथा ध्यान की तरह स्मृति (मेमोरी) भी मस्तिष्क की एक प्रमुख बौद्धिक क्षमता है। हमारे मस्तिष्क में जो कुछ भी अनुभव, सूचना और ज्ञान के रूप में संग्रहीत है वह सभी स्मृति के ही विविध रूपों में व्यवस्थित रहता है। मानव मस्तिष्क की इस क्षमता का अध्ययन एक काफी व्यापक विषय वस्तु है। मुख्यत: इसका अध्ययन मनोविज्ञान, तंत्रिकाविज्ञान एवं आयुर्विज्ञान के अन्तर्गत किया जाता है। प्रस्तुत आलेख में स्मृति के विविध रूपों, इसके जैविक आधार, स्मृति संबंधी प्रमुख रोग तथा कुछ प्रमुख स्मृति युक्तियों पर प्रकाश डाला जाएगा।

स्मृति की क्रियाविधि : सूचनाओं को कूटबद्ध करना – हमें अपने आसपास के वातावरण को महसूस करने के लिए पहले आवश्यक है कि वातावरणीय उद्दीपनों को उससे संबंधित ज्ञानेन्द्रियों द्वारा ग्रहण किया जाए। उदाहरण के लिए किसी भी वस्तु को देखने के लिए हम उस पर से परावर्तित प्रकाश को नेत्रों द्वारा ग्रहण करते हैं। अब इस परावर्तित प्रकाश को नेत्र की रेटिना में उपस्थित संवेदी तंत्रिका कोशिकाऐं (रॉड और कोन) क्षीण वैद्युतीय तरंगों में बदलती है। अब यह कहा जा सकता है कि रेटिना द्वारा वातावरण में उपस्थित प्रकाश उद्दीपन का कोडीकरण वैद्युतीय रूप में किया गया। अब यह हल्की वैद्युतीय तरंग मस्तिष्क के दृष्य क्षेत्र में जाती है और यहाँ इसकी व्याख्या की जाती है। इस व्याख्या के आधार पर हम अपने मन में सामने के दृश्य का एक प्रतिबिंब बनाते हैं। इस समूची प्रक्रिया को दृश्य प्रत्यक्षीकरण (visual perception) या देखना कहते हैं। कोडिंग के समय सूचनाएं मुख्यत: स्थान, समय तथा आवृत्ति के आधार पर कोड की जाती हैं।

सूचनाओं का संग्रहण – सूचनाओं को कोड करने के बाद उनके संग्रहण का स्थान आता है। यह संग्रहण संवेदी स्तर या अल्पकालीन स्मृति के स्तर या दीर्घकालीन स्मृति के स्तर पर हो सकता है। यहाँ यह उल्लेखनीय होगा कि हमारे मस्तिष्क में संग्रहण के समय सूचनाओं में थोड़ा परिवर्तन हो सकता है। मतलब कि सूचनाएं वहीं नहीं रहेंगी जैसी वे वास्तविक रूप में थीं। उनमें हम अपने पास से कुछ मिला सकते है या फिर उस सूचना के किसी भाग को निकाल भी सकते हैं। अगर आधी अधूरी सूचना है तो हम उसे अपनी कल्पना शक्ति के आधार पर गढ़ भी सकते हैं।

स्मृति युक्तियाँ – हम अपने आस–पास ऐसे अनेक लोगों को देखते हैं जिनकी स्मृति क्षमता बहुत अच्छी होती है। कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो कि अपने भुलक्कड़ स्वभाव के कारण जाने जाते हैं। हम में से सभी सोचते हैं कि हमारी यादाश्त क्षमता बढ़ जाए तो कितना अच्छा हो। एक अच्छी यादाश्त का मुख्य लक्षण है कि यह सभी सम्बन्धित बातों को क्रमबद्ध रूप से व्यवस्थित करें और आवश्यकता पड़ने पर तुरन्त ही इनकी उपलब्धता सुनिश्चित करें। कुछ ऐसी दवाइयाँ उपलब्ध हैं जिनके लिए एक और विधिै फ3त्त (Survey, Question, Read, Recite, Review) बहुत ही उपयोगी होती है। इसमें पहले पाठ्य सामग्री का मन में एक खाका तैयार करते हैं, फिर खुद से ही उस पर ''क्या, क्यों और कैसे'' आधारित कुछ प्रश्न बनाते हैं। अब इन प्रश्नों को ध्यान में रखते हुए पाठ्य सामग्री को ध्यानपूर्वक पढ़ा जाता है और फिर उसे क्रम से दुबारा पढ़ते हैं। अंत में पाठक द्वारा इसकी समीक्षा की जाती है।

अच्छी स्मृति के लिए अच्छा मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य जरूरी है। इसके साथ ही जो पढ़ा जा रहा है उससे भावनात्मक लगाव भी आवश्यक है। कुछ एकाग्रता बढ़ाने वाली विधियाँ जैसे कि ध्यान और प्राणायाम आदि भी स्मृति की क्षमता बढ़ाने में बहुत उपयोगी सिद्ध हुई है।

– संजोली शर्मा **(M.A. IVth Sem.)**

मात्रात्मक तथा गुणात्मक चर

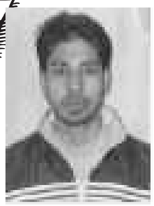

चर–चर वह गुण व विशेषता है जो हमारे व्यवहार को प्रभावित करती है। चर के मुख्यत: दो रूप होते हैं –

1. गुणात्मक चर – गुणात्मक शोध, गुणात्मक तथ्यों पर आधारित होता है।

गुणात्मक चर की विशेषताएँ –

(1) गुणात्मक चर उन विशेषताओं को कहते हैं जो स्वभावत: एक–दूसरे से भिन्न मूल वाले होते हैं मनोविज्ञान में साथ–साथ प्राणीगत चर गुणात्मक होते हैं।

(2) धर्म, व्यवहार, जीवन की अवस्थाएँ (बाल्य, किशोर, प्रौढ़ इत्यादि) व्यक्तित्व प्रकार लिंग ऋतुऐं इत्यादि गुणात्मक चर के उदाहरण हैं।

(3) जिन चरो को उनके गुण धर्मों के आधार पर परस्पर भिन्न वर्गों में रखकर उनके लक्षणों का निर्धारण किया जा सकता है।

(4) विभिन्न गुणात्मक चरो के वर्गों के बीच मात्रात्मक भिन्नता न होकर गुणात्मक भिन्नता होती है।

(5) गुणात्मक चरो का मात्रात्मक आधार पर व्यवस्थित नहीं किया जा सकता है।

2. मात्रात्मक चर – मात्रात्मक अनुसंधान मात्रा पर आधारित होता है यह उन तथ्यों पर आधारित होता है, जिसे मात्रात्मक रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है।

मात्रात्मक चर की विशेषताएँ –

(1) वह जो आवश्यक रूप से मात्रात्मक अथवा परिणात्मक होती है।

(2) किसी भी चर के बारे में जब हम ''कितनी मात्रा का'' प्रश्न पूछ सकते हो तो वह मात्रात्मक चर होता है।

(3) व्यक्ति की आयु बुद्धि प्रत्याहानित शब्दों की संख्या, परीक्षा के लब्धांक उद्दीपक की तीव्रता पुरूस्कार की मात्रा अभियोजन प्रश्नावली पर प्राप्तांक इत्यादि मात्रात्मक चर है।

(4) जिनके बारे में कम या अधिक होने का दावा किया जा सकता है।

मात्रात्मक तथा गुणात्मक में अंतर

(1) **उद्देश्य** – कारण और प्रभाव में सम्बन्ध का अध्ययन करना।	(1) तथ्य का विश्लेषण व व्याख्यात्मक अध्ययन करना।
(2) **उपागम** – सिद्धांतों का निरीक्षण करना।	(2) सिद्धांतों का निर्माण करना।
(3) **डिजाइन** – अध्ययन से पूर्व निर्धारित।	(3) लचीली, अध्ययन के समय विकसित।
(4) **उपकरण** – पहले से निश्चित किए गए।	(4) शोध ही प्राथमिक आंकड़ों संग्रहण का उपकरण।
(5) **प्रतिदर्श** – व्रहत प्रतिदर्श।	(5) लघु प्रतिदर्श।
(6) **विश्लेषण** – आंकिक आँकड़ों का संरचित विश्लेषण।	(6) विश्लेषण व व्याख्या।

– *कादिर (M.A. IVth Sem.)*

विचार

यह हमारा हिन्दुस्तान है, इसकी भी एक अपनी अलग पहचान है।
सारी दुनिया जो मेरे भारत की दीवानी, यही इसकी इक अलग कहानी है।।

मेरा भारत है ही ऐसा जिसने जो चाहा उसने मेरे भारत से वही पाया, चाहे वो मेरे भारत का पानी, कपड़ा, सब्जियाँ हो सब कुछ वो मेरा भारत ही तो देता है। मेरी इच्छा तो मेरे भारत के विकास में पूर्ण होगी और जब यह भारत का विकास होगा तभी पाकिस्तान का विनाश होगा। क्योंकि एक मेरा भारत ही तो है जो पाकिस्तानी आतंकवादियों को खत्म कर सकता है। कमस है भारत माता की एक दिन यह सारे आतंकवादी मेरे भारत के सामने झुक जाऐंगे, और हमारे सैनिक अपने आप पर गर्व करेंगे। मेरा भारत बहुत ताकतवर है और हिन्दुस्तान की अलग पहचान है। मेरे भारत की बहनें, भाभी, बच्चे और माँ अपने उन सभी जो उनके भाई, पति, पिता और अपने बेटे को गले लगा सके, हर बार की तरह घर देख सके और मेरे सैनिक अपने घर सलामत लौट सके। 14 फरवरी 2019 में पुलवामा में हुई घटना में उन सभी सैनिकों से और उनके बच्चों का बचपन, सपनें सब छीन लिए, इसी कारण उन सब आतंकवादियों को माफ नहीं किया जा सकता।

यह भारत दोबारा से ऐसी घटना अपने भविष्य में और आने वाले 70 हजार सालों में कभी न दोहराने देगा, क्योंकि हमारा एक मौका देना उन्हें भारत की हार मानने के बराबर और हमारे शहीद फौजी को धोखा देने के बराबर होगा।

बस यही चाहा है मैंने अपने इस सुन्दर भारत के विकास के लिए।

बदल दिए मेरे देश ने भी अपने उसूल,
जो मेरे देश को सलाम करेगा,
वही अपने देश की सलामती चाहेगा।

– मुनिशा खान (M.A. IVth Sem.)

नारी शक्ति

या देवी सर्व भुतेषु, स्त्री रूपेण संस्थिता

नमस्तस्यै नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमो नमः।

नारी शक्ति रूप में स्त्री शक्ति , नारी शक्ति आधार शक्ति।

धार्मिक संदर्भ में हिन्दुओं ने स्त्रियों को देवत्व के स्तर तक उन्नत किया है। भारत के बारे में संसार की एक भूल है कि यह पुरुष प्रधान समाज है तथा धर्म पर पुरुषों का वर्चस्व है तथा सच्चाई यह है कि वास्तव में ऐसा नहीं है। यह वह धर्म है जो स्त्री की ताकत और बल को सूचित करता है। 'शक्ति का तात्पर्य 'बल' और 'ताकत' पुरुष में समस्त शक्तियों का कारण स्त्रियाँ है। त्रिमूर्ति (ब्रह्मा, विष्णु, शिव) अपने नारी सहायक अंग के बिना शक्ति विहीन हैं।

हे स्त्री शक्ति ! तुम्हारे द्वारा ही यह सार्वभौम उत्पन्न हुआ है, तुम्हारे द्वारा इस सृष्टि की रचना हुईहै। तुम्हारे द्वारा ही रक्षित है। अंत में तुम्हारे द्वारा ही यह विनष्ट होती है। हे नारी शक्ति आप परम विदुषी हो तथा समान रूप से समझदार तथा भाव पुंज हो वेदों में नारी को समाज में ऊँचा स्थान दिया गया है। उसे जननी कहा गया है, जननी उसे कहते हैं जो निर्माण करें। जननी संतान को पैदा ही नहीं करती, उसका निर्माण भी करती है। जननी ही संतान को सुसंतान बनाकर उन्नत मार्ग पर अग्रसर करती है। जननी संतान को ऊँचे आसान तक पहुँचाने के लिए तप करती है। सुख सुविधाओं को त्याग, भूखे रहकर भी उसके सुखों में कमी नही आने देती, इस कारण ही वह जननी है। इस कारण ही विश्व में नारी का सम्मान का ह्यस हुआ। जिसका कारण गुलामी तथा वेद विद्या का अभाव ही कहा जा सकता है। वेद में नारी को जगत की जननी तथा त्याग की मूर्ति कहते हुए उसे उच्च आसन देने का आदेश दिया है।

नारी को प्रशस्ति पूर्ण स्थान देने के लिए वेद में अनेक स्थानों पर नारी का गुणगान किया गया है। ऋग्वेद (3.53.4) में कहा गया है कि – गृहिणी अर्थात् नारी ही गृह है, घर है। नारी के बिना गृह की कल्पना भी नहीं की जा सकती।

जायेदसत्ल मघवनत्सेदु योनीः

तदित तवा युक्ता।

हरयो पछन्तु यदा कदा च

सुनवाय सोमम अग्निष्ट्वा दूतो धन्वात्यच्छ।।

शब्दार्थ – हे ऐश्वर्य युक्त इन्द्र। पत्नी ही घर है और वह ही संतान उत्पादन का आधार है। उसी घर में तेरा रथ घोड़े तुझ को लेकर जावें और वहीं आनन्द अमृत सोमरस प्राप्त होगा। वहीं अग्नि देव भी तुम्हारे पास आऐंगे। यह मंत्र हमे बताता है कि – गृहस्थ का आधार क्या है ? उसका मूल क्या है ? तथा उसके मूल में क्या पदार्थ डालने की आवश्यकता है ? इन बातों का उत्तर देते हुए मंत्र कहता है कि पत्नी ही घर का आधार है , संस्कृत में भी कहा है कि– न गृहं गृहमित्याहः गृहिणी गृहमुच्याते। अर्थात् घर को घर नहीं कहते अपितु, गृहिणी को ही घर कहते हैं कहा भी है कि गृहिणी के बिना घर में भूत का डेरा होता है। गृह में क्या कार्य होता है? गृह में मुख्य कार्य होता है। गृह की सुरक्षा, गृह की व्यवस्था, गृह का संचालन, गृह का निरीक्षण तथा समुन्नयन। यह सब कार्य गृहपत्नी अथवा नारी ही करती है। पुरूष तो गृह व्यवस्था के साधन अर्थात् धनोपार्जन के लिए प्रायः अधिकांश समय गृह से बाहर ही रहता है। इस कारण इन सब कार्यों को वह नहीं कर सकता इन कार्यों को करने के लिए अधिक समय वहाँ उपस्थित होना आवश्यक होता है। किन्तु पुरुष के लिए ऐसा सम्भव न हो पाने के कारण यह सब व्यवस्था

पत्नी ही देखती है। यदि गृहिणी न हो गृह की यह व्यवस्था छिन्न-भिन्न हो जाती है। मंत्र न केवल पत्नी के कर्त्तव्यों पर ही प्रकाश डालता है अपितु उसके महत्व का भी वर्णन करता है। यदि हम गृहस्थ को एक वृक्ष माने तो पत्नी उस वृक्ष मूल अर्थात् जड़ होती है। जब तक मूल नहीं हैं, तब तक वृक्ष का अस्तित्व ही नहीं होता। मूल अर्थात् जड़ ही समग्र वृक्ष का भार वहन करता है। इस आधार पर हम कह सकते हैं कि नारी गृह का मूल आधार होती है। उसके कंधों पर ही पूरा परिवार खड़ा होता है। नारी के बिना यह स्वप्न साकार नहीं हो सकता। वृक्ष की जड़ तो केवल वृक्ष को खड़ा रखने तथा उसे भोजन पहुँचाने का कार्य करती है। किंतु नारी न केवल जड़ का अर्थात् परिवार का आधार अथवा परिवारके खड़े होने की परिकल्पना को साकार करने वाली होती है अपितु संतानोत्पति का कार्य अर्थात् बीज व भूमिका कार्य भी करती है।

नारी ही गृह की समृद्धि, सरसता और वृद्धि का आधार है। नारी के बिना संतानोत्पत्ति संभव नहीं। नारी के बिना परिवार की समृद्धि भी संभव नहीं। अत: नारी परिवार की अच्छी समृद्धि का कारण होती है। एक उत्तम नारी ही परिवार में सुखों की वर्षा करती है। तभी तो इसे योनि अथवा मूल कहा गया है। यह परिवार का मूल कारण होती है परिवार के सुखों की वृद्धि का चिंतन नारी का ही होता है। नारी के बिना किसी प्रकार के सुख व समृद्धि की कल्पना ही नहीं की जा सकती।

नारी है तो कल है – आज जीवन के सभी क्षेत्रों में नारी ने अपना स्थान बनाया है। आज वही अपनी सदियों पुरानी लाचार छवि 'अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी, आँचल में है दूध और आँखों में पानी।' को बहुत पीछे छोड़ चुकी है। बच्चे को जन्म देकर उसे अपने पाँव पर खड़ा करना, राष्ट्र निर्माण का महत्वपूर्ण कार्य है। यह कार्य नारी का मातृरूप ही करता है। बहन के रूप में मानवमात्र को अपनी स्नेहमयी छाया से अभिभूत किए रहना भी राष्ट्र निर्माण का कार्य है। प्राचीन काल से ही हमारे राष्ट्र के निर्माण में नारी की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। आज शिक्षा, चिकित्सा, रक्षा, स्वास्थ्य और फैशन जैसे सभी क्षेत्रों की सूत्रधार भारतीय नारी है।

शिक्षा के साथ नारी का सशक्तिकरण – भारत में महिलाओं को प्राचीन काल से कई सीमाओं में बांधा जाता था। जिन्हें धार्मिक कानून का नाम दिया गया है। भारत के संविधान के तहत महिलाओं के अधिकारों में मुख्य रूप से समानता, गरिमा और भेदभाव से स्वतंत्रता शामिल है। इसके अतिरिक्त भारत की महिलाओं के अधिकारों को नियंत्रित करने वाले विभिन्न कानून हैं। महिला का शिक्षित होना व केवल उसके निजी कार्यों बल्कि सामाजिक क्षेत्रों मेँ भी कारगर साबित होता है। आज की महिला पुरुषों के साथ कदम से कदम मिलाकर आगे बढ़ रही हैं।

– ***कंचन*** ***(B.A.IInd Sem.)***

वृद्धाश्रम

वृद्धाश्रम शब्द से ही स्पष्ट है कि जहाँ बूढ़े स्त्री–पुरुष रहते हैं या जिनके लिए इन्हें बनाया गया है। वृद्ध+आश्रम वृद्धों के लिए बनाया गया आश्रम। शहरों में इनकी संख्या निरन्तर बढ़ती जा रही है। जगह–जगह वृद्धाश्रम दिखाई दे रहे हैं।

इसका कारण क्या है? क्यों बढ़ रही है वृद्धाश्रमों की संख्या?

वर्तमान में परिवार में व्यक्तियों की संख्या सीमित रह गई है, जिसमें माता–पिता व उनके बच्चे ही रह गये हैं। संयुक्त परिवार पहले थे, जहाँ बुजुर्गों को घर का मुखिया माना जाता था व उनका आदर–सम्मान होता है। माता–पिता के घर से बाहर होने पर भी बच्चे अपने दादा–दादी तथा मामा–मामी या भाई–बहनों के साथ रहते थे। ऐसे में न केवल बच्चों की अपितु बुजुर्गों की भी देखभाल भली–भाँति हो जाती थी। यदि बच्चा पढ़ाई या नौकरी हेतु शहर जाता भी था तो उसके मन में मोह, प्रेम व स्नेह, परिवार से मिलने की इच्छा रहती थी।

आजकल हर माता–पिता की यही इच्छा रहती है कि उनका बेटा अंग्रेजी शिक्षा ग्रहण करें व पैसा कमाये। बच्चे को पढ़ाई करने में परेशानी न हो, इसलिए उसे बचपन से ही घर से किसी हॉस्टल में भेज दिया जाता है। जहाँ वह पढ़ता है, खाता–पिता है और सो जाता है। तथा दूसरी ओर पति–पत्नी दोनों ही जॉब वाले होते हैं। सुबह निकल जाते हैं। शाम को आते हैं। इनके बच्चों के लिए आया (नौकरानी) रखी जाती है, जो बच्चों का पूरा ध्यान रखती है।

जब बच्चा बड़ा होता है तो वह वही सब सीखता है जैसा देखता है, उसका व्यवहार वैसा ही हो जाता है। क्योंकि मानव एक सामाजिक प्राणी है, वह जैसे माहौल में रहता है खुद को उसी तरह ढाल लेता है। मनुष्य के बच्चे को चलना, बैठना, खाना–पीना, बात करने का तरीका सबकुछ सिखाना पड़ता है। परन्तु इसके विपरीत जानवरों का बच्चा जन्म के कुछ घण्टों के भीतर, चलना, उठना, खाना खुद ही सीख लेता है।

मानव को सर्वश्रेष्ठ प्राणी माना गया है, वह फिर भी सबकुछ अपने समाज के तरीके से सीखता है, अर्थात् जैसा उसके आस–पास का माहौल होगा वह खुद भी वैसा ही बन जाता है। पति–पत्नी दोनो के कार्य पर जाने के बाद घर पर बूढ़े माता–पिता अकेले रह जाते हैं। वहाँ उनकी देखभाल करने वाला कोई नहीं होता और उनका मन नहीं लगता, या तो वे खुद घर से चले जाते हैं या मौत को गले लगा लेते हैं या वृद्धाश्रम चले जाते हैं और उन नौकरीपेशा जोड़े की परेशानी भी खत्म हो जाती है।

इनके साथ रहने वाला बच्चा सभी परिस्थितियों से भली–भाँति परिचित रहता है व उसके मन में भी वही भावना जन्म लेती है। उसका उद्देश्य भी सिर्फ पैसा कमाना रह जाता है। बड़ा होकर वह बी.टेक, एम.टेक, बी.कॉम जैसे और अन्य मंहगे कोर्स पूरा कर नौकरी करने लगता है तथा जब उसके माता–पिता रिटायर हो जाते हैं वह उन्हें छोड़कर अपनी दुनिया में मस्त रहता है जैसा उसने बचपन में देखा था। बुलाने पर भी नहीं आते। बच्चे का जवाब देखिए – ''हम नहीं आ सकते छुट्टी नहीं मिलती, आप लोग किसी आया को रख लो जो आपका ध्यान रख सके। पैसा भेज देंगे।''

इसमें उस बच्चे का कोई दोष नहीं है, दोष उनके माता–पिता का ही है। उन्होंने उसे ऐसा ही समाज दिया था। 20–25 साल खुद से दूर रखा तो उनके अन्दर माया–मोह, स्नेह आपके लिए हो ही नहीं सकता। आपने भी युवावस्था में अपने माता–पिता के लिए यही सब किया, पैसे को सबकुछ समझा, अन्त में जब उन्हें तुम्हारी जरूरत थी वृद्धाश्रम भेज दिया व दोबारा कभी पलट कर नहीं गये। बच्चे ने आपका ही आचरण अपनाया है और ऐसे में उन माता–पिता को भी वृद्धाश्रम जाना पड़ता है।

जिस समय बच्चा प्यार, स्नेह चाहता है उस समय माता–पिता धन कमाने में रहते हैं उन्हें खुद से दूर रखते हैं। बच्चों के अन्दर प्रेम–स्नेह उन लोगों के लिए होता है जो उनके साथ रहते हैं। हॉस्टल में कॉलेजों में वो उन्हीं के साथ रहना पसन्द करता है।

वर्तमान में लड़के–लड़कियाँ दोनो उच्च शिक्षा ग्रहण करते हैं। विदेश या अन्य बड़े शहरों में चले जाते हैं। अपना सिर्फ पैसा कमाना मूल उद्देश्य बना लेते हैं। क्योंकि उनको न तो घर के किसी सदस्य से स्नेह होता है और न वे नातेदारों को जानते हैं। किसी से मेल–जोल नहीं होता। न संस्कार, न आदर होता है, पहले के लोगों की तरह।

ऐसे में बहू अपने सास–ससुर के साथ सामन्जस्य नहीं बैठा पाती, क्योंकि उसने अंग्रेजी संस्कृति देखी है और रात देर तक घर आना, जॉब, क्लब, पार्टी फिर झगड़े होते हैं, बेटा भी ऐसी ही संस्कृति में रहा है। ऐसे में उसे या माता–पिता को वृद्धाश्रम छोड़ना पड़ता है या उन्हें छोड़कर जाना पड़ता है। क्योंकि उसकी नजरों में उसमें कुछ भी गलत नहीं है जो उसकी पत्नी करती है।

परन्तु जब परिवार छोटे होते हैं तो वृद्धाश्रम की आवश्यकता पड़ती है, क्योंकि बूढ़ों की देखभाल करने वाला कोई नहीं होता और जिन्होंने अपनी युवावस्था में किसी के साथ कोई सम्बन्ध नहीं रखे थे, उन्हें बुढ़ापे में बहुत कठिनाई होती है, न तो कोई उनसे मिलने जाता है न ख्याल रखता है, यहाँ तक कि उनकी पैसा कमाने वाली मशीन पैसा फेंककर चली जाती है। वे जिन्दा या मरे किसी को पता नहीं रहता।

सभी गलतियाँ माता–पिता की है, वे हमें शिक्षा तो उच्च दे रहे हैं, पर संस्कार, संस्कृति, समाज गलत दे रहे हैं, इसलिए विदेश से पढ़ाई करके लौटा बच्चा उनके साथ सामन्जस्य नहीं बैठा पाता, फिर घर से चला जाता है, माता–पिता अपनी देखभाल के लिए नौकर रखते हैं या स्वयं वृद्धाश्रम की शरण ले लेते हैं।

याद रखना है जब हम बच्चे को चलना, बैठना, बोलना सिखा रहे हैं तो उसे धर्म, संस्कार, संस्कृति, आदर–सम्मान भी सिखाना है। उसका वातावरण ऐसा रखना है जैसा हम चाहते हैं, बुढ़ापे में हमारा भी हो। उच्च शिक्षा दीजिए परन्तु धन कमाने वाली मशीन मत बनाइये, क्योंकि जब वे मशीन बनते हैं तो उनका भगवान पैसा होता है, माता–पिता नहीं।

माता–पिता की सेवा करना पुण्य है, आप भी कीजिए तभी आशा कीजिएगा की आपके बच्चे आपकी करेंगे सेवा, सम्मान।

– ***चेतना (B.A. IInd Sem.)***

उत्तराखण्ड का इतिहास

पौराणिक काल जितना पुराना है, उतना ही पुराना उत्तराखण्ड का इतिहास भी। उत्तराखण्ड का शाब्दिक अर्थ उत्तरी भाग होता है। इस नाम का उल्लेख प्रारम्भिक हिन्दू ग्रंथों में भी मिलता है, जहाँ पर केदारखण्ड (वर्तमान गढ़वाल) और मानस खण्ड (वर्तमान कुमाऊँ) के रूप में इसका उल्लेख हुआ है। उत्तराखण्ड प्राचीन पौराणिक शब्द भी है जो हिमालय के फैलाव के लिए प्रयुक्त किया जाता है। वर्तमान में इसे देव भूमि भी कहा जाता है, क्योंकि यहाँ पर असंख्य हिन्दू तीर्थ स्थल है, पौरव कुशान, गुप्त, कत्यूरी, रायक, पाल, चन्द परमार और अंग्रेजों ने बारी–बारी यहाँ शासन किया था।

अंग्रेज इतिहासकारों के अनुसार हुण, नाग, खश आदि जातियाँ भी हिमालय क्षेत्र में निवास करती हैं, किन्तु पौराणिक ग्रंथों में केदारखण्ड व मानसखण्ड के नाम से इस क्षेत्र का व्यापक उल्लेख है। इसे देव–भूमि व तपो भूमि माना गया है। मानसखण्ड का कुर्मांचल व कुमाऊँ नाम चन्द राजाओं के शासनकाल में प्रचलित हुआ। कूर्मांलय पर चन्द राजाओं का शासन 1780 तक रहा। सन् 1780 में नेपाल की गोरखा सेना ने कुमाऊँ पर आक्रमण कर कुमाऊँ राज्य को अपने अधीन कर लिया।

गोरखा शासन से राज्य स्थापना तक का घटनाक्रम

उत्तराखण्ड में ईस्ट–इंडिया कम्पनी का आगमन 1815 में हुआ। वास्तव में यहाँ अंग्रेजों का आगमन गोरखों के 25 वर्षीय सामन्ती सैनिक शासन का अन्त भी था।

1815 से 1857 तक यहाँ कम्पनी का शासन का दौर सामन्यत: शान्त और गतिशीलता से वंचित शासन के रूप में जाना जाता है। ईस्ट इंडिया कम्पनी के अधिकार में आने के बाद यह क्षेत्र ब्रिटिश गढ़वाल कहलाने लगा था, 1856–1889 तक उत्तराखण्ड हैनरी रैमजे के शासन में रहा तथा यह युग ब्रिटिश सत्ता के शक्तिशाली होने के काल के रूप में पहचाना गया।

इसी दौरान सरकार के अनुरोध समाचारों का प्रस्तुतीकरण करने के लिए 1868 में 'समय विनोद' तथा 1871 में 'अल्मोड़ा अखबार' की शुरुआत हुई। 1905 में बंगाल के विभाजन के बाद अल्मोड़ा की नंदा देवी नामक स्थान पर विरोध सभा हुई। 1996 में हरीराम त्रिपाठी ने वंदेमातरम जिसका उच्चारण ही तब देशद्रोह माना जाता था उसका कुमाऊँनी अनुवाद किया। भारतीय स्वतन्त्रता में आंदोलन की एक इकाई के रूप में उत्तराखण्ड में स्वाधीनता संग्राम के दौरान 1913 के कांग्रेस अधिवेशन में उत्तराखण्ड के ज्यादा प्रतिनिधि सम्मिलित हुए।

मध्यकाल में उत्तराखण्ड

कस्तूरी राजा वीर देव के पश्चात् कत्यूरियों के साम्राज्य का पूर्ण विभाजन हो गया तथा यह न केवल अपनी जाति के, अपितु कुछ बाहरी कबीलों के भी अधीन बँट गया। गढ़वाल का एक बहुत बड़ा भाग कत्यूरियों के हाथों से निकल गया तथा शेष कुमाऊँ क्षेत्र छः कबीलों में बँट गया। तत्पश्चात् कत्यूरी साम्राज्य को नेपाली राजाओं अहोकछला 1191 तथा करछला देव 1223 ई0 ने अपने राज्य में मिला लिया। यह दोनों आक्रमण विभिन्न कबीलों में परस्पर शत्रुता के कारण निर्णायक साबित हुए। तत्पश्चात् सम्पूर्ण साम्राज्य 64 अथवा कुछ मतों के अनुसार 52 गढ़ों में विभाजित हो गया। इन सभी गढ़ों के सरदार अक्सर आपस में झगड़ते रहते थे। सोलहवीं शताब्दी के प्रारम्भ में कनक पाल ने वंशज की अजय पाल ने जो कि चांदपुर गढ़ी कबीलों का सरदार था, सम्पूर्ण गढ़वाल को एक कर दिया था।

पाडुकेण्जर की तांबे की प्लेट (ताम्रपत्र) दर्शाती है कि बेराज की राजधानी कार्तिकके पुरा नीति–माना घाटी में और आगे चलकर कत्यूर घाटी में स्थिति थी अटकिंसन ने काबुल की घाटी से वंश की उत्पत्ति का पता लगाया तथा उनको कटोरो से जोड़ा।

गौरौला और नौटियाल के अनुसार कस्तूरी छोटी खासा जनजाति थी। मूलतः गढ़वाल के उत्तर में जोशीमठ में रहती थी तब बाद में कुमाऊँ की कत्यूरी घाटी में चली गयी। कत्यूरियों ने पौरवों और तिब्बती हमलावरों के पतन के बाद अपनी ताकत बढ़ाई तथा 7वीं शताब्दी के अन्त और 8वीं शताब्दी के आरम्भ में स्वतन्त्र हो गए।

गुरूत्वाकर्षण सिद्धान्त के खोजकर्ता – भास्कराचार्य

आज विज्ञान के छात्र से पूछा जाए कि पृथ्वी की गुरूत्वाकर्षण शक्ति के सिद्धान्त का प्रतिपादन किसने किया था तो उसका रटा–रटाया उत्तर होगा – **'न्यूटन'।** लेकिन यह गलत है पृथ्वी का चपटापन, ग्रहण लगने का कारण, वस्तु का ऊपर फेंकने पर पुनः पृथ्वी पर लौटाना आदि भौतिकी के अनेक प्रश्नों का उत्तर प्राचीन भारतीय विद्वानों ने खोज लिया था।

12वीं शताब्दी में भारत में ज्योतिषी एवं गणित के प्रकाण्ड विद्वान भास्कराचार्य हुए थे। इनके द्वारा रचित 'सिद्धान्त शिरोमणी' ग्रन्थ गणित व ज्योतिष में ऊँचा स्थान रखता है। यह पुस्तक अत्यन्त मूल्यवान है। इसके दो अध्याय लीलावती एवं बीजगणित और अंकगणित बीजगणित उच्च सिद्धान्तों का परिचय कराते हैं।

अपने ग्रन्थ में भास्कराचार्य ने पृथ्वी के गोल होने व उसमें गुरूत्वाकर्षण शक्ति के होने की बात कही है। संस्कृत साहित्य से अनभिज्ञ लोग न्यूटन को इस सिद्धान्त का प्रतिपादन समझते हैं, जो कि गलत है। यह सही है कि इस सिद्धान्त की सबसे पहले सम्पूर्ण व्याख्या न्यूटन ने की थी। परन्तु उससे कई शताब्दियों पहले भास्कराचार्य इसका उल्लेख अपने सिद्धान्त 'शिरोमणि ग्रंथ' में कर चुके थे। उनकी इस पुस्तक का यह श्लोक उल्लेखनीय है।

आकृष्टि शक्तिश्च मही तथा यत् खस्थं गुरू स्वभिमुख स्वशक्या।
आकृष्यते तत्पनतीव भांति समे समन्तात्र क्व पर्वात्वमे खैं।।

अर्थात् पृथ्वी में एक आकर्षण शक्ति है। उसी शक्ति से आकाश स्थित भारी वस्तु उसके द्वारा स्वाभिमुख आकृष्ट की जाती है। वह गिरती हुई सी प्रतीत होती है।

इस श्लोक में पृथ्वी में निहित गुरूत्वाकर्षण शक्ति का स्पष्ट उल्लेख है। फिर हम भारतवासी अपने इस महान विद्वान की महत्वपूर्ण खोज की उपेक्षा कर इस नियम के प्रतिपादन का सारा श्रेय एक पाश्चात्य विद्वान को दे रहे हैं। आज भी हमारी शिक्षण संस्थाओं में विद्यार्थियों को यही पढ़ाया जाता है कि इस सिद्धान्त के प्रवर्तक न्यूटन थे। भास्कराचार्य व उनके अमर ग्रन्थ 'सिद्धान्त शिरोमणी' का कहीं भी कोई उल्लेख नहीं किया जाता है। इस प्रकार की उपेक्षा हमारे देश के एक प्राचीन विद्वान की उपलब्धि एवं खोज के साथ विश्वासघात के अतिरिक्त और क्या है?

इसी तरह संख्या प्रणाली का आविष्कार भारत में हुआ तथा आर्यभट्ट शून्य (0) का प्रयोग करने वाले प्रथम गणितज्ञ थे। दशमल प्रणाली का आविष्कार भारत में 100 ई0पू0 हुआ था। आज के खगोलशास्त्र के सैकड़ों वर्ष पूर्व भास्कराचार्य ने पृथ्वी द्वारा सूर्य के चारों और भ्रमण करने के सही समय 365.2587566434 दिन की गणना की थी। पाइथागोरस का प्रमेय, पाई का मूल्य, समयहीनता का सिद्धान्त, बीजगणित, त्रिकोणमति, कैलकुलस तथा उच्चपदीय समीकरणों का उपयोग प्राचीन भारत में प्रचलित था।

यदि भारत ने विश्व को ये सिद्धान्त, नियम व खोजें न दी होती तो शायद आज मानव का चन्द्रमा पर पहुँचना मुश्किल था। उन्हें शुक्रगुजार होना चाहिए भारतीय विद्वानों का जिन्होंने आज विश्व को इस मुकाम तक पहुँचाया है। इसी तरह विश्व के वैज्ञानिकों ने यह सिद्ध कर दिया है कि तार–रहित संप्रेषण के शोधकर्ता महान भारतीय वैज्ञानिक जगदीश चन्द्र बसु थे, न कि मारकोनी।

अन्त में अल्बर्ट आइंस्टाइन के इस कथन को नहीं भूलना चाहिए कि – ''हम ऋणी हैं भारतीयों के जिन्होंने हमें गणना क्रिया से परिचित कराया। उसके बिना कोई भी अच्छा वैज्ञानिक अन्वेषण करना असंभव होता।''

हम सभी भारतवासियों को अपने भारतीय विद्वानों का आदर करना चाहिए तथा उनके द्वारा दिए गए सिद्धान्तों नियमों को विश्वपल पर लाना चाहिए जिससे भारत अपने प्राचीन गौरव को फिर से प्राप्त कर सके।

– हिमांशु नेगी **(B.Ed.VIth Sem.)**

रूपकुण्ड झील (रहस्य झील)
चमोली जिले का अद्भुत ताल!!

रूपकुण्ड झील – हिमालय के ग्लेशियरों के गर्मियों में पिघलने से उत्तराखण्ड के पहाड़ों में बनने वाली छोटी सी झील है। 'यह झील 5029 मीटर (16499 फीट) की ऊँचाई पर स्थित है।' जिसके चारों और ऊँचे–ऊँचे बर्फ के ग्लेशियर हैं। यहाँ तक पहुँचने का रास्ता बेहद दुर्गम है। इसलिए यह जगह एडवेंचर ट्रेकिंग करने वालों कि पसंदीदा जगह है। यह झील यहाँ मिलने वाले नरकंकालों के कारण काफी चर्चित है यहाँ पर गर्मियों में बर्फ पिघलने के साथ ही कहीं पर भी नरकंकाल दिखाई देना आम बात है। यह झील बागेश्वर से सटे चमोली जनपद में बेदनी बुग्याल के निकट स्थित है।

रूपकुण्ड झील को मुर्दा और कंकाल का कुण्ड भी कहा जाता है। यह कुण्ड ना केवल अपनी सुन्दरता बल्कि मुर्दों के कुण्ड जैसी रहस्यमय इतिहास के लिए मशहूर है। ''स्थानीय लोगों के अनुसार इस कुण्ड की स्थापना या निर्माण संसार के रचयिता भगवान शिव ने अपनी पत्नी पार्वती नंदा के लिए करवाई है'' कहा जाता है कि देवी पार्वती अपने मायके से ससुराल हिमालय को जा रही थी, तो तब उन्हें रास्ते में प्यास लगती है और वह भगवान शिव से पानी की प्यास बुझाने की इच्छा जाहिर करती है और तभी भगवान शिव माता पार्वती की प्यास बुझाने के लिए उसी जगह पर त्रिशूल से एक कुण्ड का निर्माण कर देते हैं और जब माता गौरी कुण्ड से पानी पीने जाती है तो माता के पानी में पड़ने से सुन्दर प्रतिबिम्ब को देखते हुए शिव जी द्वारा इस कुण्ड को रूपकुण्ड का नाम दिया।

नरकंकालों से जुड़ा रहस्य – (नर कंकालों से जुड़ी घटनाऐं) ''स्थानीय लोगों के अनुसार'' एक बार एक राजा जिसका नाम जसधावन था, नंदा देवी की तीर्थ यात्रा पर निकला उसको संतान की प्राप्ति होने वाली थी इसलिए वो देवी के दर्शन करना चाहता था। स्थानीय पण्डितों ने राजा को इतने भव्य समारोह के साथ देवी दर्शन जाने को मना किया जैसा कि तय था इस तरह के जोर–शोर और दिखावे वाले समारोह से देवी नाराज हो गई और सबको मौत के घाट उतार दिया। राजा उसकी रानी और आने वाली संतान को सभी के साथ खत्म कर दिया गया, मिले अवशेषों में कुछ चूड़ियाँ और अन्य गहने मिले, जिससे पता चलता है कि समूह में महिलाऐं भी मौजूद थी।

एक दूसरी किवदंती के अनुसार – तिब्बत में सन् 1841 के युद्ध के दौरान सैनिकों का एक समूह इस कठिन रास्ते से गुजर रहा था, लेकिन वो रास्ता भटक गये और खो गये और वे सारे सैनिक कभी नहीं मिले हालांकि यह एक फिल्मी प्लान जैसा जगता है। इस स्थान में मिलने वाली हड्डियों के बारे में यह किवंदनी काफी प्रचलित है।

एक और अन्य रिसर्च के अनुसार – इस स्थान पर पाये जाने वाली हड्डियों पर रोशनी पड़ी रिसर्चके अनुसार ट्रेकर्स का एक समूह इस स्थान में हुई भारी ओलावृष्टि में फँस गया जिसमें सभी की अचानक दर्दनाक मौत हो गयी और हड्डियों का एक्स–रे और अन्य प्रयोग में पाया गया कि हड्डियों में दरारे पड़ी हुई थी। जिससे पता चलता है कि कम से कम क्रिकेट बॉल के आकार बराबर ओले रहे होंगे, वहाँ कम से कम 33 किमी. तक कोई गाँव नहीं है और सर छुपाने की कोई जगह भी नहीं थी। रिसर्चके अनुसार यह माना जाता है कि यह घटना 850 A.D के आसपास की रही होगी।

विभिन्न मतों के आधार पर भी रूपकुण्ड में नरकंकालों का रहस्य यथावत् अभी भी बना हुआ है।

– आशा (M.A. IVth Sem.)

सत्य वचन

शिक्षक और सड़क दोनों एक जैसे होते हैं,
खुद जहाँ है वही पर रहते हैं,
मगर दूसरों को उनकी मंजिल तक पहुँचा देते हैं।

इतना कड़वा मत बनो कि लोग थूक दें,
पर इतना भी मीठा मत बनो कि लोग तुम्हें निगल जायें।

''पंचतत्व'' के बने शरीर के
''पंचत्व'' में विलीन होने पर दुःख कैसा।
घर जाने वाला पथिक मार्ग में मिलने वाले का
साथ छोड़ ही जाता है।।

उम्र बस बुजुर्ग करती है......
सबक तो जिन्दगी देती है।

मुस्कराहट – मसले को हल करने के लिए और
खामोशी–मसलों से दूर रहने के लिए।

इंसान खुद की नजर में सही होना चाहिए,
दुनिया तो भगवान से भी दुखी है।

यदि पुराने वस्त्रों को उतार कर,
नये वस्त्र पहनना सुखकर लगता है।
तो फिर पुराने शरीर से,
आत्मा के जाने पर दुःख कैसा।।

इतना अहंकार ना कर अपने किस्मत पर क्योंकि,
शमशान ऐसे लोगों की राख से भरा पड़ा है।
जो समझते थे कि दुनिया उनके बिना चल नहीं सकती।

अच्छे लोगों के साथ अच्छा रहो,
लेकिन बुरे लोगों के साथ बुरा मत बनो,
क्योंकि पानी से खून साफ कर सकते हैं,
लेकिन खून से खून साफ नहीं हो सकता है।

किसी का सरल स्वभाव उसकी कमजोरी नहीं होता है,
संसार में पानी से सरल कुछ भी नहीं,
किन्तु उसका बहाव बड़ी से बड़ी चट्टान के भी
टुकड़े कर देता है।

शमशान वह स्थान है जहाँ मनुष्य का
पार्थिव शरीर भस्म हो जाता है।
किन्तु, उसके कार्य और कर्म का यश
चारों दिशाओं में फैल जाता है।

दुनिया में एक ही इंसान ऐसा है
जो चाहता है आप उनसे भी ज्यादा तरक्की करें
और वो है पिता

जीवन में कभी भी मुसीबत आए तो
किसी से मदद मत माँगना क्योंकि
मुसीबत थोड़ी देर की होती है
और अहसान जिंदगी भर का होता है।

जब हम दिन की शुरूआत करते हैं
तब लगता है कि पैसा ही जीवन है
लेकिन
जब शाम को लौटकर घर आते हैं,
तब लगता है शान्ति ही जीवन है।

व्यक्ति अपने विचारों से निर्मित एक प्राणी है,
वह जो सोचता है, वह बन जाता है।

लगातार हो रही असफलताओं से
निराश नहीं होना चाहिए..
कभी–कभी गुच्छे की आखिरी चाभी
ताला खोल देती है।

– ***नितिन कुमार*** **(M.A.VIth Sem.)**

उत्तराखण्ड के प्रमुख पर्यटन क्षेत्र

हिमालय के ऊँचे शिखर, नदियाँ, झरने, सर्पाकार सड़क, घने चीड़, देवदार के जंगल, फूलों की घाटी, मनलुभावन झीलों का किनारा और हर पहाड़ पर पवित्र मंदिर। जी हाँ हम बात कर रहे हैं देवभूमि के नाम से प्रसिद्ध उत्तराखण्ड की जो चारों ओर से लाजवाब प्राकृतिक दृश्यो से घिरा है। हिंदुओं की आस्था के प्रतीक चारों धाम हरे-भरे जंगल 'नेशनल पार्क' और वाइल्ड लाइफ अभ्यारणों के लिए आदर्श बनाते हैं। हिल स्टेशनों की सुरम्यता व रोमांचकारी खेल दुनिया भर के लोगों की पहली पसंद है।

उत्तराखण्ड के 10 प्रमुख हिल स्टेशन -

(1) औली - उत्तराखण्ड के चमोली जिले में स्थित औली अच्छी बर्फबारी देखने की सबसे बेहतरीन जगह है। आप यहाँ स्कीइंग व विंटर स्पोर्ट्स का आनन्द भी ले सकते हैं।

(2) लैंसडाउन - पौड़ी गढ़वाल जिले में मौजूद लैंसडाउन में काफी सुंदर बर्फबारी होती है। लैंसडाउन को ब्रिटिश शासन के दौरान विकसित किया गया।

(3) कौसानी - कुमाऊँ मण्डल का खूबसूरत हिल स्टेशन है। यहाँ की प्राकृतिक खूबसूरती से प्रभावित होकर महात्मा गाँधी ने कभी इस स्थान को 'भारत का स्विटजरलैंड' कहा था।

(4) बेरीनाग - पिथौरागढ़ जिले में नैनीताल से 160 किमी. दूर बेरीनाग एक खूबसूरत हिल स्टेशन है। यह नाग देवता को समर्पित एक प्रसिद्ध मंदिर है।

(5) मंसूरी - देहरादून जिले से 35 किमी. दूर मंसूरी लोकप्रिय हिल स्टेशन है। इस जगह को 'पहाड़ों की रानी' के नाम से भी जाना जाता है।

(6) नैनीताल - कुमाऊँ क्षेत्र में स्थित सबसे लोकप्रिय अतिसुंदर पहाड़ी स्टेशन नैनीताल है। यह हिल स्टेशन झीलों के लिए काफी प्रसिद्ध है।

(7) मुनस्यारी - प्राकृतिक सुंदरता का शानदार हिस्सा मुनस्यारी पिथौरागढ़ जिले में स्थित सुंदर गांव है, जो हिमालयों की मस्तिस्कियों की बर्फ से ढकी हुई चोटियों में बसा है। सर्दियों में काफी बर्फ गिरने तथा हिमालय शिखरों से घिरा होने के कारण इसे हिमनगरी का नाम भी दिया गया है।

(8) चकराता - औली के बाद चकराता ऐसी जगह है जहाँ कम समय में पहुँचकर अच्छी बर्फवारी को देखा जा सकता है। नार्दन एरिया में चकराता ट्रैकिंग और स्कीइंग के लिए फेमस जगह है।

(9) धनोल्टी - टिहरी जिले में स्थित धनौल्टी मंसूरी से 24 किमी दूरी पर मौजूद है। सर्दियों के मौसम में यहाँ आसानी से बर्फवारी को लाइव देखा जा सकता है।

(10) रानीखेत - अल्मोड़ा जनपद के अंतर्गत स्थित देवदार और बलूत के वृक्षों से घिरा रानीखेत बहुत ही रमणीक हिल स्टेशन है। इस स्थान से हिमाच्छित मध्य हिमालय श्रेणियाँ स्पष्ट देखी जा सकती है।

– ***किरन देवरानी*** ***(M.A. VIth Sem.)***

नशामुक्ति

सद्वृत्तियाँ बनाम दुष्प्रवृत्तियाँ – मानव जीवन बहुत ही निर्मल होता है मानव जीवन में सात्विकता, सज्जनता, उदारता और चरित्र का उत्कर्ष होता है। वह खुद का ही नहीं बल्कि अपने विरूद्ध तामसी वृत्तियाँ मनुष्य को पतनोन्मुखी करती है, उनका मजाक करती है। एक पतनोन्मुखी व्यक्ति समाज और राष्ट्र के लिए भी बहुत ही घातक सिद्ध होता है इसलिए समाज सुधारक और धार्मिक नेता समय–समय पर दुष्प्रवृत्तियों की निंदा करते हैं और उनसे बचने के लिए भी प्रेरणा देते हैं। मदिरापान और नशा सब बुराईयो की जड़ होते हैं।

मदिरापान बुराईयों की जड़ – किसी विद्वान ने यह बात बिल्कुल सत्य कही है कि मदिरापान सब बुराईयों की जड़ होती है। मदिरा मनुष्य को असंतुलित बनाती है। शराबी व्यक्ति से किसी भी समाज की बुराई की अपेक्षा की जा सकती है। इसी कारण से हमारे शास्त्रों में मदिरापान को पाप माना जाता है। शुरू में तो व्यक्ति शौक के तौर पर नशा करता है उसके दोस्त उसे मुफ्त में शराब पिलाते हैं, कुछ लोग ये बहाना बनाते हैं कि वे थोड़ी–थोड़ी दवाई की तरह शराब को लेते हैं लेकिन बाद में उन्हें आदत पड़ जाती है। उनकी शराब की आदत फिर कभी भी नहीं छुटती।

मदिरापान पारिवारिक बर्बादी का कारण – कहने को तो कम मात्रा में शराब दवाई का काम करती है। डॉक्टर और वैद्य भी इसकी सलाह देते हैं लेकिन ज्यादा तो प्रत्येक वस्तु का बुरा है ज्यादा पीने से ये शराब जहर बन जाती है। नशे की लत से हमने बड़े–बड़े घरों को उजड़ते हुए देखा है, जिस पैसे को व्यक्ति खून–पसीना एक करके सुबह से लेकर शाम तक कमाता है, जिसके इंतजार में पत्नी और बच्चे बैठे होते हैं। वह नशे की हालात में लड़खड़ाता हुआ घर पहुँचता है। पड़ोसी उसे देखकर मजाक उड़ाते हैं। मोहल्ले वाले उसकी बुराई करते हैं, लेकिन बेचारी पत्नी कुछ नहीं कह पाती है वह केवल एक बात से डरती रहती है कि उसका शराबी पति उसे आकर बहुत पीटेगा। इसलिए वह बेचारी दिल पर पत्थर रखकर जीवन को गुजार देती है।

विशैली शराब के दुष्परिणाम – विशैली शराब के दुष्परिणाम को रोज अखबारों में पढ़ा जा सकता है। आर्थिक संकट होने की वजह से वह घटिया शराब पीता है, शराब वाले भी ज्यादा पैसे कमाने के लिए शराब में मिलावट कर देते हैं। इस तरह की मिलावटी शराब हजारों की जान ले चुकी है, तब भी यह प्रक्रिया समाप्त नहीं हुई है। पुलिस और सरकार की आँखों के नीचे यह काम बहुत ही तेजी से चल रहा है, लोग शराब पी रहे हैं और मर रहे हैं।

नशाबन्दी कानून के लाभ – पश्चिमी सभ्यता के अन्धानुकरण ने शराब सेवन को बहुत ही बढ़ावा दिया है। शराब को पश्चिमी राष्ट्र के लोगों के लिए अनुकूल माना गया है क्योंकि वहाँ पर सर्दी अधिक पड़ती है। हमारा भारत एक कृषि प्रधान

देश है। शराब को यहाँ के वातावरण के प्रतिकूल माना जाता है। प्राचीन काल में मदिरालयों के सामने धरने दिए जाते थे। गाँधी जी ने इसके विरूद्ध रोजगार अभियान चलाया था, नशे से होने वाली हानियों को सामने रखकर भारत सरकार ने नशाबन्दी कानून बनाया था। इस कानून के अनुसार सिर्फ वो लोग शराब का कारोबार करने लगे थे।

आज के युवाओं में नशे के सेवन का प्रचलन बहुत ज्यादा देखने को मिलता है। वह शराब, गुटखा, सिगरेट आदि नशीले पदार्थों का सेवन करते हैं। युवाओं का जीवन अंधकार में है, नशे में रहने वाला व्यक्ति अस्थाई रूप से संवेदशील रहता है, जिस व्यक्ति को नशे की लत लग जाती है, वह अपनी पारिवारिक, सामाजिक और आर्थिक छवि को खो बैठता है। आज के युवा नशा करने को फैशन और बड़े गर्व की बात समझते हैं। नशे में धुत व्यक्ति अपने ही घर में चोरी तक कर बैठते हैं। नशा बहुत संगीन अपराधों को जन्म देता है। युवाओं और देश के भविष्य को उज्ज्वला बनाने के लिए लोगों को नशे के जाल से निकालना होगा इसके लिए बहुत से नशा मुक्ति केन्द्र भी खोले गए हैं टीवी पत्रिका आदि के माध्यम से लोगों को नशे से होने वाली हानियों के प्रति जागरूक करना होगा। नशा कर रहे लोगों और नशीले पदार्थ खरीदने और बेचने वालों को सख्त से सख्त सजा दी जानी चाहिए। देश को नशा मुक्त करने के लिए परिवार समाज और देश को मिलकर कोशिश करनी होगी और नशे में फँस चुके व्यक्ति को प्यार और सहानुभूति से ही नशे से मुक्ति दिलानी होगी। ज्यादातर नशे का सेवन युवाओं में देखा जाता है, क्योंकि वह विदेशों की संस्कृति अपनाना चाहते हैं। वह नशा करने को फैशन समझते हैं और गर्व महसूस करते हैं। नशे की वजह से देश के युवा अंधकार में है। नशा करने वाला व्यक्ति अपना मान–सम्मान सब कुछ खो देता है वह अपनी पारिवारिक, सामाजिक और आर्थिक स्थिति खराब कर लेता है। नशे की लत में पड़कर यह लोग पहले धन देकर नशीले पदार्थ खरीदते हैं, बाद में घर के सामान आदि भी बेचने लगते हैं, नशे की लत में पड़ा हुआ मनुष्य अस्थाई रूप से असंवेदनशील हो जाता है। नशे की लत के चलते लोग बहुत से अपराधों को भी अंजाम देते हैं। वह चोरी छिपे भी विदेशों से नशीले पदार्थ मंगवाते हैं। नशा बहुत सी गम्भीर बीमारियों को जन्म देता है, इसकी वजह से लीवर और अमाशय कमजोर होता है, कैंसर जैसी गंभीर बीमारियाँ भी इसी से उत्पन्न होती है।

छा गया है मातम और वक्त रो रहा है,
अरे देखिए जनाब, ये मेरे देश को क्या हो रहा है?
जम चुका है खून रगों में आज के नौजवानों के,
मिल जाती है गिरी हुई जवानी, आजकल मयखानों में।
परिवार जाग रहा है राह तकते हुए
आने वाला कहीं सड़कों पे गिरा सो रहा है,
अरे देखिए जनाब, ये मेरे देश को क्या हो रहा है?

देश के लोगों को नशे से मुक्ति के लिए जागरूक करने व देश के युवा वर्ग को उनकी जिम्मेदारी का अहसास करने के लिए हर साल देश में 13 मई को तम्बाकू मुक्त दिवस व विश्व तम्बाकू निषेध दिवस के रूप में मनाया जाता है। हर रोज नशा के सेवन से मरने वालों लोगों की संख्या तमिलनाडु – 205, पंजाब–186, हरियाणा–76, केरल – 64, मध्यप्रदेश – 40 है। नशे की अधिकता से मरने वालों की संख्या में तमिलनाडु सबसे आगे है।

विधवा हो रही है सुहागिने राखी पकड़ रोती है बहनें,

माँ बाप का सहारा बनना था जिसको, वही बोझ बनता रहा है।

जल रहा है नशे की आग में घराने का इकलौता वारिस,

बढ़ानी थी शान-ओ-शौकत जिसने, वही कुल का नाम मिटा रहा है।

अरे देखिए जनाब, ये मेरे देश को क्या हो रहा है?

गिर गया है जमीर शाने ऊँची है

कल का क्या होगा ये बातें किसने सोची है,

चरस है, गांजा है, भांग और हैराइन यहाँ,

यही है कारण जो देश को डुबा रहा है।

अरे देखिए जनाब, ये मेरे देश को क्या हो रहा है?

– *शीतल (B.A. IInd Sem.)*

भारत के 10 प्रसिद्ध द्वार

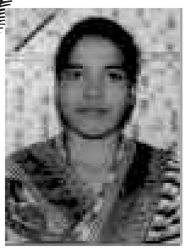

1. गेटवे ऑफ इण्डिया – यह मुंबई में स्थित है, इसे जॉर्ज पंचम की भारत यात्रा का यादगार के तौर पर बनाया गया था।

2. इण्डिया गेट – यह युद्ध स्मारक दिल्ली में स्थित है। इसे प्रथम विश्व युद्ध में शहीद भारतीय सैनिकों की याद में बनाया गया।

3. बुलंद दरवाजा – उत्तर प्रदेश के फतेहपुर सीकरी में स्थित है। मुगल शासक अकबर ने गुजरात विजय के स्मारक के रूप में बनवाया था।

4. रामगढ़ जिले का मुख्य द्वार – दुनिया का सबसे ऊँचा लकड़ी का प्रवेश द्वार है। इसकी नींव बिलासपुर, हिमाचल प्रदेश के राजा ने रखी थी।

5. भटकल गेट – महाराष्ट्र के औरंगाबाद में स्थित है। इसे मुगलों पर अहमदनगर के मुर्तजा निजाम शाह की विजय के स्मारक के रूप में बनवाया गया।

6. अजमेरी गेट – नई दिल्ली रेलवे स्टेशन के समीप स्थित है। वह मुगलकालीन बाजार चाँदनी चौक से जुड़ा पुरानी दिल्ली की चारदीवारी के पाँच दरवाजों में से एक है।

7. दिल्ली दरवाजा – पुरानी और नई दिल्ली के बीच स्थित है। मुगल शासक शाहजहाँ ने इसे दक्षिणी छोर के नगर रक्षक द्वार के रूप में बनवाया था।

8. कश्मीरी गेट – यह शाहजहाँनाबाद (अब पुरानी दिल्ली) में स्थित है। इसका निर्माण सैन्य इंजीनियर रॉबर्ट स्मिथ ने कराया था।

9. खूनी दरवाजा – यह पुरानी दिल्ली के ठीक दक्षिण में स्थित है। इसे शेरशाह सूरी ने बनवाया था। इसे काबुली दरवाजा भी कहते हैं।

10. गेट-वे ऑफ मुगल – यह पंजाब में जालंधर के निकट स्थित सराय नूरमहल का द्वार है। इसे मुगल शासक जहाँगीर की पत्नी नूरजहाँ ने बनवाया था।

– प्रियंका चन्द्र (M.A.IVth Sem-Geography)

प्रथम नागरिक : राजेन्द्र प्रसाद से कोविंद तक....

नाम	दिनांक	पदभार ग्रहण करते समय उम्र
डॉ. राजेन्द्र प्रसाद	13 मई 1952 से 13 मई 1962	65 वर्ष
डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन	13 मई 1962 से 13 मई 1967	73 वर्ष
डॉ. जाकिर हुसैन	13 मई 1967 से 13 मई 1969	70 वर्ष
वराह वेंकट गिरि	24 अगस्त 1974 से 21 फरवरी 1977	69 वर्ष
नीलम संजीव रेड्डी	25 जुलाई 1977 से 25 जुलाई 1982	64 वर्ष
ज्ञानी जैल सिंह	25 जुलाई 1982 से 25 जुलाई 1987	66 वर्ष
आर.वेंकटरमण	25 जुलाई 1987 से 25 जुलाई 1992	76 वर्ष
डॉ. शंकर दयाल शर्मा	25 जुलाई 1992 से 25 जुलाई 1997	73 वर्ष
के.आर. नारायणन	25 जुलाई 1997 से 25 जुलाई 2002	76 वर्ष
ए.पी.जे. अब्दुल कलाम	25 जुलाई 2002 से 25 जुलाई 2007	70 वर्ष
प्रतिभा पाटील	25 जुलाई 2007 से 25 जुलाई 2012	72 वर्ष
प्रणव मुखर्जी	25 जुलाई 2012 से 25 जुलाई 2017	76 वर्ष
रामनाथ कोविंद	25 जुलाई 2017	71 वर्ष

– प्रियंका चन्द्र (M.A.IVth Sem-Geography)

सदैव सत्य बोलें

हम सब बचपन से ही यह सुनते आये हैं कि हमें सत्य बोलना चाहिए, सबने गांधी जी की कहानी और राजा हरिश्चन्द्र की कहानी भी जरूर सुनी होगी। यहाँ पर मैं सत्य बोलने यानि सत्यवादिता से सम्बन्धित कुछ बिन्दुओं पर आपका ध्यान आकृष्ट करना चाहूँगी।

सच ही कहा गया है कि 'सत्यवादिता तप है' इसका पुण्य प्राप्त करने के लिए मानव को केवल यही प्रयत्न करना पड़ता है कि जिस वस्तु को जिस रूप में पढ़े, देखे या सुने उसे उसी वास्तविक रूप में प्रकट कर दें। इस छोटे से प्रयत्न का ही नाम सत्यवादिता है। इसके विपरित सब कार्य असत्य भाषण के अन्तर्गत आ जाते हैं। इनसे आत्म-सम्मान को ठेस पहुँचाती है। सत्यवादी का आचरण सदैव शुद्ध रहता है, उसक अन्तःकरण के पाप इस गुण से सदैव के लिये पुण्य का रूप धारण कर लेते हैं। उनका मनरूपी चन्दू निष्कलंक हो जाता है। उसका कालिमायुक्त हृदय गंगाजल के समान उज्ज्वल और पवित्र हो जाता है। सच बोलने वाला यानि सत्वादी वीर और निडर होता है। वह कठिन से कठिन मुसीबत में भी विचलित नहीं होता। राजा हरिश्चन्द्र ने अपना राज्य त्यागा अनेक कष्टों को झेला, पत्नी को बेचा, दूसरे के घर दास बने, परन्तु सत्य नहीं छोड़ा। अंत में उन्हीं की विजय हुई और उनका नाम स्वर्णाक्षरों में लिखा गया। सत्यवादी की चिन्तन-शक्ति दृढ़ होती है, उसके चरित्र का निर्माण हो जाता है। विश्व में उसका विश्वास होता है। उसके प्रियजन प्राण न्यौछावर करने के लिए हर समय तत्पर रहते हैं। वह देव तुल्य पूजा जाता है, उसके त्याग और तपस्यापूर्ण जीवन से भगवान भी प्रसन्न रहते हैं। दूसरी तरफ झूठे यानि असत्यवादी का विश्व में सम्मान नहीं होता है। उसकी आत्मा का हनन हो जाता है। उसकी उन्नति का मार्ग सदा के लिए बंद हो जाता है। उसकी शक्ति दिन प्रतिदिन क्षीण होती जाती है। वह आत्म-सम्मान से हाथ धो बैठता है। लोग उसकी छाया तक से घृणा करने लगते हैं।

हमें सत्यवादिता का अभ्यास जीवन की प्रारम्भिक घड़ियों से ही करना चाहिए। इसी के द्वारा सच्चा सुख, आत्मिक शांति, श्रद्धा-भजन, आत्म-सम्मान और सामाजिक उन्नति पा सकते हैं। सत्य की सदा जय और असत्य का पराजय होती है। सत्य बोलना एक आदत होती है। सभी को सत्य बोलने का प्रयास करते रहना चाहिए। लोग प्रायः छोटी-छोटी बातों में प्रायः झूठ बोलते हैं। कहा भी गया है कि एक सच को छिपाने के लिए सौ झूठ बोलने पड़ते हैं, इसलिए सत्य का अनुगामी बनें। सत्य का मार्ग थोड़ा कठिन अवश्य होता है लेकिन दुरूह नहीं।   सत्यमेव जयते !

– कु. शिवा बिष्ट (बी.एड. चतुर्थ सेमेस्टर)

अनमोल वचन

- विद्या की जड़े कड़वी व फल मीठा होता है।
- दोस्तों को बढ़ाने से अच्छा है, दोस्ती निभाना सीखो।
- तीन चीजें मानव को, जीवन में एक बार मिलती है– माता, पिता और सौन्दर्य।
- तीन चीजें निकलकर वापस नहीं आती – बात जुबान से, तीर कमान से, आत्मा शरीर से।
- मनुष्य में तीन चीजें विद्यमान होती हैं – मनुष्यता, पशुता, दिव्यता।
- कौन कहता है कि इंसान खाली हाथ आता है और खाली जाता है –
  इंसान भाग्य लेकर आता है और कर्म लेकर जाता है।
- कभी भी किसी की मजबूरियों पर मत हँसियें। कोई मजबूरियाँ खरीद कर नहीं लाता, डर रखिये वक्त की मार से, बुरा वक्त किसी को बता कर नहीं आता।
- उम्र में चाहे कोई बड़ा हो या छोटा, लेकिन वास्तव में बड़ा तो वही है, जिसके मन में सभी के लिए प्रेम, स्नेह और सम्मान है।
- परमात्मा कभी भाग्य नहीं लिखता। जीवन के हर कदम पर, हमारी सोच हमारे व्यवहार एवं हमारे कर्म ही हमारा भाग्य लिखते हैं।
- भगवान पर विश्वास बिल्कुल उस बच्चे की तरह करो जिसको आप हवा में उछालो तो वो हँसता है, डरता नहीं क्योंकि वह जानता है कि आप उसे गिरने नहीं दोगे।
- सारी दुनिया छोटी पड़ जाती है लेकिन भगवान का घर और माँ का आँचल कभी छोटा नहीं पड़ता।
- कर्मो से ही पहचान होती है। इंसान की मंहगें कपड़े तो 'पुतले' भी पहनते हैं, दुकानों में।
- प्रभु, सुख देना तो बस इतना देना कि 'अहंकार' न आ जाए और दु:ख देना तो बस इतना देना कि 'आस्था' न चली जाए।
- दिल के सच्चे लोग भले ही जीवन में अकेले रह जाते हैं, लेकिन ऐसे लोगों का साथ भगवान जरूर देता है।
- थकान कभी भी काम के कारण नहीं होती, बल्कि चिंता, निराशा, भय और असंतोष के कारण होती है।
- भक्ति बुद्धि से होती है तो, जुबान सुधरती है, लेकिन जब भक्ति दिल से होती है तो कर्म सुधरते हैं।
- परिवर्तन से डरना और संघर्षो से कतरना मनुष्य की सबसे बड़ी कायरता है। जीवन का सबसे बड़ा गुरु वक्त होता है, क्योंकि जो वक्त सिखाता है, वो कोई नहीं सिखा सकता।
- माँ–बाप का दिल जीत लो, कामयाब हो जाओगे वरना, सारी दुनिया जीतकर भी सब कुछ हार जाओगे।
- माँ–बाप की आँखों में, दो बार ही आँसू आते हैं, एक तो लड़की घर छोड़े तब, दूसरा लड़का मुँह मोड़े तब। पत्नी पसंद से मिल सकती है, मगर माँ–बाप पुण्य से मिलते हैं।
- जीवन में सुखी होने के लिए दो शक्तियों की जरूरत होती है– एक सहन शक्ति, दूसरी समझ शक्ति।
- जिसका जैसा चरित्र होता है,
  उसका वैसा ही मित्र होता है।
  शुद्धता होती है विचारों में,
  आदमी कब पवित्र होता है।
  फूल में भी कीड़े पाये जाते हैं।
  पत्थर में भी हीरे पाये जाते हैं।
  बुराईयों को छोड़कर, अच्छाई देखिये तो सही,
  नर में भी नारायण पाये जाते हैं।
  मैं आप के साथ हूँ, ये मेरा भाग्य है।
  पर भगवान मेरे साथ है, यह मेरा सौभाग्य है।
- कर्म करो तो फल मिलता है,
  आज नहीं तो कल मिलता है।
  जितना गहरा अधिक हो कुआँ,
  उतना मीठा जल मिलता है।
  जीवन के हर कठिन प्रश्न का,
  जीवन से ही हल मिलता है।

– ***कु. डौली*** ***(B.A. IInd Sem.-Hindi)***

हवाई जहाज जैसी जीवन यात्रा

एक शिक्षक की कथा, जिसमें छात्रों को हवाई जहाज के उदाहरण से जीवन की तैयारी के गुर बताए।

शिक्षक ने पूछा, हवाई जहाज और आम इंसान में क्या समानताएँ होती हैं? सभी बच्चे शिक्षक की तरफ देखने लगे। शिक्षक बोले, आपने कभी सोचा है कि एक हवाई जहाज कुछ ही देर में कितने सारे लोगों को एक जगह से दूसरी जगह पहुँचा देता है। पक्षियों से भी ऊँची उड़ान भरता है और कितनी बारीकी और सफाई से अपना गंतव्य हासिल कर लेता है। सभी बच्चे शिक्षक की बात गौर से सुन रहे थे। शिक्षक बोले हम सब भी एक जहाज की तरह होते हैं। हमारे इस जहाज का ईंधन होता है हमारा ज्ञान हम जितना ज्यादा ज्ञान प्राप्त करते हैं, हम उतनी ही लम्बी उड़ान भर सकते हैं।

हर उड़ान से पहले हमें बहुत सारा ज्ञान प्राप्त करना होता है, तभी हम लंबी उड़ान भर पाते हैं। हमारे इस जहाज का इंजन होता है हमारा विवेक जो हमें सिखाता है कि हमें ज्ञान का किस तरह उपयोग करना है कि हम आगे बढ़ पाऐं। और हमारे पंख होते हैं हमारा आत्मविश्वास जो हमें हर उड़ान लेते वक्त हवा में और नीचे उतरते वक्त हमारा संतुलन बनाए रखते हैं। कई बार जब हमें बादल रूपी विपरीत परिस्थितियाँ हमें घेर लेती है तो यही विश्वास भरे पंख हमें उनसे बाहर निकालते हैं। कभी अगर ईंधन खत्म भी हो जाए, तो ये पंख हमें हवा के बहाव के साथ बहाते हुए नीचे ले आते हैं और नीचे जो रनवे होता है, वह होता है हमारा परिवार, हमारे मित्र, हमारे हितैषी।

हमारा रनवे ही हमें सही मार्ग पर बढ़ने और अपनी उड़ान भरने में हमारी मदद करता है और हमारी जिंदगी में एक और बहुत महत्वपूर्ण भूमिका होती है, हमारे एयर कंट्रोल टावर की।

यानि हमारे मार्गदर्शक, हमारे शिक्षकों की, जो हमें हर वक्त हमारी स्थिति का सटीक ब्यौरा देते रहते हैं।

– ***मंजू (M.A.IInd Sem.)***

कविताएं

"सच्ची कविता तो प्रतिभा से उत्पन्न होती है और प्रतिभा शिव का तीसरा नेत्र है।"

– *अरविन्द घोष*

मोबाइल टेक्नोलॉजी

मोबाइल टेक्नोलॉजी का नायाब नमूना,
बात कराता दूर-दूर रिश्तेदार मित्रों से,
मोबाइल इन्टरनेट देता समाचार, देश-विदेश के।
मोबाइल टेक्नोलॉजी का नायाब नमूना,
आज मोबाइल बना टीचर,
आज मोबाइल बना पुस्तक,
आज मोबाइल बना अलार्म क्लॉक,
आज मोबाइल बना डारेक्ट्री,
आज मोबाइल बना DSLR कैमरा,
आज मोबाइल बना टाइम-पास मशीन,
आज मोबाइल बना ऑल इन ऑल।
मोबाइल टेक्नोलॉजी का नायाब नमूना,
पर मोबाइल पहुंचाता नेत्रक्षति,
पर मोबाइल निकालता विकिरणीय किरणें,
पर मोबाइल हरता कीमती पल।
पर मोबाइल करता हर एक को अतिव्यस्त,
पर मोबाइल करता अनेक बार दुर्घटना,
पर मोबाइल करता अपनों से दूर,
मोबाइल टेक्नोलॉजी का नायाब नमूना।

– *राहुल शाह (B.A.VIth Sem.)*

कविता प्रेरणा

एक-एक यदि 'पेड़' लगाओ, तो तुम ''बाग'' लगा दोगे।
एक एक यदि 'ईंट' जोड़ो, तो तुम महल लगा-दोगे।।
एक-एक यदि ''पैसे'' जोड़ो, तो बन जाओगे ''धनवान'',
एक-एक यदि अक्षर जोड़ो, तो बन जाओगे ''विद्वान''।

– *राहुल शाह (B.A.VIth Sem.)*

पावन है यह पी.एन.जी.पी.जी. कॉलेज हमारा

रामनगर कॉलेज में उच्च शिक्षा पढ़कर बनते महान,
यहाँ पर हर बच्चा पढ़ता लिखता बनता महान,
इस कॉलेज में एन.सी.सी. करके बच्चे बनते हैं फौजी,
जो सीमा में रहकर करते अपने देश की रक्षा महान,
पी.एन.जी.पी.जी. कॉलेज है हमारे ज्ञान का मन्दिर।
यहाँ धरती है हरी भरी, अति सुन्दर माँ सरस्वती,
दे रही विद्यादान, जिनके आशीर्वाद से हो रहा कल्याण।
पी.एन.जी.पी.जी. कॉलेज है प्यारा-प्यारा,
कोसी की जलधारा से जुड़ा है, यह कॉलेज प्यारा-प्यारा,
पी.एन.जी.पी.जी. कॉलेज है न्यारा-न्यारा,
इसका पूरा नाम है प्यारेलाल नंदकिशोर गलवलिया राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
हमारा पी.एन.जी.पी.जी. कॉलेज है प्यारा-प्यारा।
'कॉर्बेट सिटी' नाम से जग में रामनगर है जाना जाता,
इसकी किरण से मेरा कॉलेज है शोभित पाता।
माँ सरस्वती का है वरदान जहाँ हर बार बच्चे होते हैं पास,
पी.एन.जी.पी.जी.कॉलेज में अध्ययन करते उनका होता नाम।
'माँ गिरिजा' के पावन तट पर कोसी की है जलधारा,
जहाँ मजा आता बहुत सारा,
पी.एन.जी.पी.जी. कॉलेज है प्यारा प्यारा।
यहाँ अध्ययन करते यह सौभाग्य हमारा,
बाँधो से संरक्षण होता जंगल सारा,
यहाँ जो है पढ़ते, वह आगे जरूर है बढ़ते,
यह पी.एन.जी.पी.जी. कॉलेज का ज्ञान।
पी.एन.जी.पी.जी. कॉलेज है प्यारा-प्यारा।

– *राहुल शाह (B.A.VIth Sem.)*

बेटियाँ

बेटियाँ हमारा गुरूर है, बहुए हमारा अभिमान है।
बेटियाँ हम कल है, तो बहुए हमारा आज,
बेटियाँ दिल का दर्द है, तो बहुए दर्द की दवा,
किसी की बेटी ही किसी की बहू होती है,
दोनों का ही मोल अनमोल है।

माँ

माँ की ममता ईश्वर का वरदान है।
सच पूछो तो माँ इन्सान नहीं भगवान है।।
माँ के चरणों में जन्नत का हर रूप होता है।
माँ में ही ईश्वर का स्वरूप होता है।।
मुसीबत में एक नई राह होती है माँ।
बड़ी ही जतन से पाला है माँ ने,
हर एक मुश्किल को टाला माँ ने,
उंगली पकड़ के चलना सिखाया,
जब भी गिरे तो संभाला है माँ ने।
उंगली को पकड़ चलाया था, पढ़ने विद्यालय भेजा था।
मेरी नादानी को भी निज, अन्दर में सदा सहेजा था।
मेरे सारे प्रश्नों का वो, फौरन जवाब बन जाती थी,
मेरी राहों के काँटे चुन, वो खुद गुलाब बन जाती थी।
मैं बड़ा हुआ, तो कॉलेज से एक रोग प्यार का ले आया,
जिस दिल में, माँ की मूरत थी,
वो राम कली को दे आया, चाँदी की पति से भाप,
बना अपनी रिश्तों में झूल गया, अब करवाचौथ मनाता हूँ।
माँ की ममता को भूल गया।
हम भूल गये, उसकी ममता को, मेरे जीवन की थाती थी।
हम भूल गये, अपना जीवन, वो अमृत वाली छाती थी।
हम भूल गये, वो खुद भूखी रहकर के, हम को खिलाती थी।
हम को सूखा विस्तर, देकर वो खुद, गीले में सो जाती थी।
हम भूल गये उसने ही, होठों को भाषा सिखलाई थी।
मेरी नींदों के लिए, रात भर, उसने लोरी गाई थी।
हम भूल गये हर गलती पर, उसने डांटा-समझाया था।
बच जाऊँ बुरी नजर से, काला टीका उसने लगाया था।
हम बड़े हुए तो ममता वाले, सारे बन्धन तोड़ आये।
बंगले में कुत्ते पाल लिए, माँ को वृद्धाश्रम छोड़ आये।
हम माँ को घर के बंटवारे की, अभिलाषा तक ले आये।
उसको पावन मंदिर से, गाली की भाषा तक ले आये।
माँ की ममता को देख, मौत भी, आगे से हट जाती है।
घर को पूरा जीवन देकर, बेचारी माँ क्या पाती है।
रूखा-सूखा खा लेती है, पानी पीकर सो जाती है।
जो माँ जैसी देवी को, मंदिर में नहीं रख सकते हैं।
वो लाखों पुण्य भले कर लें, इन्सान नहीं बन पाते हैं।
माँ के चरणों को छूकर पानी, गंगाजल बन जाता है।
माँ के आँचल में युगो-युगो से, भगवानों को पाला है।
माँ के चरणों में जन्नत है, गिरजाघर और शिवाला है।
माँ आंगल की तुलसी जैसी, पावन बरगद की छाया है।
माँ वेद ऋचाओं की गरिमा, माँ महाकाव्य की काया है।
माँ मानसरोवर की ममता का, माँ गोमुख की ऊँचाई है।
माँ परिवारों का संगम है, माँ रिश्तों की गहराई है।
माँ की उपमा केवल माँ है।
माँ हँसती है तो, धरती का जर्रा-जर्रा मुस्कराता है।
देखो तो दूर क्षितिज अम्बर, धरती को शीश झुकाता है।
मेरे घर की दीवारों में चंदा सी सूरत है।
पर मेरे मन के मंदिर में, बस केवल माँ की मूरत है।
माँ सरस्वती लक्ष्मी दुर्गा, अनुसूया मरियम सीता है।
माँ पावनता में राम चरित्र, मानस है भगवद्गीता है।
अम्मा तेरी हर बात मुझे, वरदान से बढ़कर लगती है।
है माँ तेरी सूरत मुझको, भगवान से बढ़कर लगती है।
सारे तीरथ के पुण्य जहाँ, मैं उन चरणों में लेता हूँ।
जिनके कोई संतान नहीं, मैं उन माँओं का बेटा हूँ।
हर घर में माँ की पूजा हो, ऐसा संकल्प उठाता हूँ।
में दुनिया की हर माँ के, चरणों में ये शीश झुकाता हूँ।
मैं दुनिया की हर माँ के, चरणों में ये शीश झुकाता हूँ।

– ***नवीन कुमार* (B.A.VIth Sem.)**

भारत के वीर सैनिक

पत्नियों की कलाईयाँ सूनी रह गयी,
माँ बेटा-बेटा पुकारती रह गयी।
जब लौट के न आया जाबाज,
माँ ने कहा, कहाँ है मेरे सिर का वो ताज,
बहनों की थाल में सजाई राखी रह गई,
माँ बेटा-बेटा पुकारती रह गयी।
पत्नी ने सोचा साजन घर लौट के आयेंगे,
अपने हाथों से माँग में सिंदूर सजाऐंगे।
पत्नियाँ इंतजार करती रह गयी,
माँ बेटा-बेटा पुकारती रह गयी।
बूढ़ा पिता बेटा-बेटा पुकारता रहा,
वो जाबाज दुश्मनों से लड़ता रहा।
उम्मीदें बूढ़े पिता को दिलासा दिलाती रह गयी,
माँ बेटा-बेटा पुकारती रह गयी।
वीर सैनिक घर वालों को बहुत याद कर रहा था,
जब वो अपनी आखिरी साँसे गिन रहा था।
आखिर लड़ते-लड़ते उसकी चली गयी जान,
अपने देश के लिए उसने दे दिए प्राण।
वो लड़ाई वीर सैनिक को शहीद बना गयी,
माँ बेटा-बेटा पुकारती रह गयी, पुकारती रह गयी।

– कु. निश्मा (B.A.IInd Sem.)

अनमोल वचन

1. शिक्षा सबसे ताकतवर हथियार है, जिसका इस्तेमाल आप दुनिया बदलने के लिए कर सकते हैं।

   – नेलसन मंडेला

2. हर व्यक्ति में कुछ विशेष गुण एवं विशेष प्रतिभाएँ होती है। इसलिए व्यक्ति को सफलता प्राप्त करने के लिए अपने गुणों की पहचान करनी चाहिए।

   – रतन टाटा, मशहूर उद्योगपति

3. हमारे सभी सपने सच हो सकते हैं, अगर हम उन्हें आगे बढ़ाने का साहस रखते हो।

   – वाल्ट डिज्नी

4. पारदर्शिता की कमी से अविश्वास और असुरक्षा की गहरी भावना फैलती है।

   –दलाई लामा

5. हमें विकास के ऐसे ढाँचें को बढ़ावा देने की जरूरत है, जो पर्यावरण का विनाश न करें।

   – वंगारी मथाई

6. बच्चों और भोजन के बीच एक नया रिश्ता बनाने की जरूरत है, जो उन्हें संस्कृति और कृषि से जोड़ता है।

   – एलिस वाटर्स

7. बीते कल से सीखें आज में जिएं, भविष्य के सपने बुने। सबसे जरूरी है कि आप सवाल करना कभी बंद न करें।

   – अल्बर्ट आइंस्टीन

– मंजू (M.A.IInd Sem.)

मेरी माँ

ओ मेरी माँ, ओ मेरी प्यारी माँ
जब-जब हूँ मैं रोयी, तुने मुझे चुपाया,
जब-जब हूँ मैं सोयी, तूने मुझे जगाया,
तूने ही सपने दिखलाए, खुली आँखों से
तूने ही सपने सच कराये, अपनी ही बातों से
तू ही है मेरा जीवन, तू ही मेरा संसार,
तूने ही किया है मुझ पर इतना उपकार,
तू ही मेरा चैन है माँ, तू ही मेरे नैन,
तेरे आँचल में सोने को मन कब से है बैचेन,
अपने पास बुला ले माँ, अपने गले लगा ले माँ,
अपने आँचल में बैठाकर, मुझको लोरी सुना दे माँ।
ओ मेरी माँ, मेरी प्यारी माँ।

– ***भारती पाठक*** **(B.A.IInd Sem.)**

स्त्री पर बढ़ते अत्याचार

अंदर से खुश हूँ।
मेरी सखी बहन नहीं कोई भी।
मुझको नहीं चिन्ता
कि वो चैन से सोयेगी
मैं नहीं स्वार्थी।
ये दर्द मुझको जँचा नहीं।।
हम जानवर व नपुंसक है।
क्योंकि मर्द आजकल बचा नहीं।।
चल एक डिल करें।
तू मेरी बहन मैं तेरी बहन।।
तुझे मेरी बहन का दिखता तन।
और खुद की बहन पर होती जलन।।
फिर क्यों नजरों से उसको नंगा करता है।
औरत को छेड़ता नियत को गंदा करता है।
मिलता क्या है जब तुझको जाना है जेल में।
और मेरी बहन बनी जिंदा लाश तेरे
छोटे से खेल में.....

– ***सोबन कुमार*** **(B.Sc. IInd Sem.)**

आज है बेटी सबसे आगे

आज है बेटी सबसे आगे, खुशियों के वो दीप जलाके,
रोशन करती घर आँगन को, खुश है गर बेटी तो,
जगमग ये जग सारा है, अँगना में खुशियों का उजियाला है।
दु:खी जो बेटी होती है, धरती उदास हो जाती है।
बेटा कुल का दीपक है, तो बेटी कुल की ज्योति है।
बेटा तो थक जाता है, पिता की ढाल न बन पाता है,
उम्र के अन्तिम पड़ाव में, पिता को छोड़ जाता है।
बेटी परायी होकर भी, पिता की ढाल बन जाती है,
माँ के सूने आँचल को, मुस्कान से अपनी भर देती है।
कौन कहता है, बेटियाँ परायी होती है,
बेटा तो पिता को छोड़ जाता है, लेकिन........
बेटी पीहर जाकर भी, मायके का संग निभाती है,
अपने स्नेह और प्यार से, कुल को अपने चमकाती है।

– *शमा परवीन* (B.A. IInd Sem.)

उत्तराखण्ड है शान हमारी उत्तराखण्ड है पहचान हमारी

उत्तराखण्ड है शान हमारी, उत्तराखण्ड है पहचान हमारी,
है ये देवों की भूमि, पर्वतों की रानी, सबने ये बात खूब है मानी,
पहचान हमारी भाषा है,
इसका जन्मदिवस 9 नवम्बर को आता है।
उत्तराखण्ड हमारा खास है,
इसके हर जिले में शुद्धता का एहसास है।
गैरसैंण बर्फीला है, मंसूरी है पर्वतों का टीला,
पाश्चात्य कला का कम है नाम, लोकसंस्कृति का बड़ा है स्थान,
हर कला कुछ कहती है, उत्तराखण्ड में समृद्धता बहती है।
बेटी हो या बेटा, हर क्षेत्र में अग्रणी है रहता,
हर क्षेत्र में अपनी लोक-संस्कृति को खोज है लेता,
हर जिले में देवों का वास है,
हमारा उत्तराखण्ड जड़ी-बूटियों का आवास है।
अमरनाथ की नगरी है बाबा केदारनाथ
की नगरी है, हरी की नगरी है, संजीवनी की गगरी है,
हूँ मैं उत्तराखण्ड की बेटी, नाम मेरा शमा परवीन है।

– *शमा परवीन* (B.A. IInd Sem.)

मेरे देश की क्या खूब है शान

मेरे देश की क्या खूब है शान,
संघर्ष और बलिदान है इसकी पहचान।
मेरा देश सोने की खान है,
अपना भारत एकता की मिसाल है।
यहाँ पाण्डवों और कौरवों का इतिहास है,
मर्यादा पुरुषोत्तम का आवास है,
कम नहीं यहाँ नारी का बलिदान है।
पुरुष प्रधान समाज में, रजिया बनी सुल्तान है।
अंग्रेजों की गुलामी, उसने है ठुकराई,
खूब लड़ी मर्दानी वो तो झाँसी वाली रानी कहलायी।
मेरे देश की अनोखी है दास्तां,
यहाँ की वनस्पतियों में भी है जान।
चलो अब याद करें, अपने देश का संविधान,
महापुरुषों का है इसमें योगदान।
संघर्ष, संशोधन, ईमानदारी और सत्यता का है परिणाम,
लिखित और कठोर है, मेरे देश का संविधान।
मेरा देश था गोरों से डरा, गोरों ने षड्यन्त्र रचा,
धर्म की खाई में गिरकर, मेरे देश का विकास पिछड़ गया।
खुशहाली का सवाल पहाड़ था बना,
तब लौहपुरुष ने लौहा लिया, देश में राज्यों का विलय किया।
प्रधानमंत्री ने फिर विकास शुरू किया,
पंचवर्षीय योजनाओं का निर्माण किया।
ये है मेरे देश का संघषमयी इतिहास, महापुरुषों का बलिदान,
राजनेताओं का योगदान, देवताओं का स्थान,
जहाँ वनस्पतियों की खान है, वो उत्तराखण्ड मेरा जन्म स्थान है,
हूँ मैं इस देश की बेटी, मुझे अपने राष्ट्र पर अभिमान है।

– *शमा परवीन* (B.A. IInd Sem.)

कैसी हो गई मेरे देश की दशा

कैसी हो गई मेरे देश की दशा,
सुन ले बापू अपने देश की कथा,
भ्रष्टाचार चरम सीमा पर है,
हर नेता राष्ट्र की आबरू लुटाने पर है।
आधुनिक भारत के नेताओं ने,
देश को लूटने का नया हथियार बनाया है।
इण्टरनेट सुविधा को सस्ता करके,
जी.एस.टी. का बाजार लगाया है।
वर्तमान की भारत सरकार ने,
धर्म को राजनीतिक खेल का आधार बनाया है।
बापू तेरे सपनों के आशियाँ की,
देश के गद्दारों ने अपराध का दीपक लगाया है।
हाय बापू! तेरे राष्ट्र में, इण्टरनेट नामक नया रोग आया है,
बेरोजगार युवाओं में इस रोग का, संक्रमण ऐसा फैला है।
हर वर्ग का छात्र और युवा,
स्मार्ट फोन और इंटरनेट के जाल में फंसा है।
अरे ओ! आदर्श राष्ट्र के राष्ट्रपिता
आधुनिक भारत जाति धर्म का दास है बना,
तेरे आदर्श विचारों का अब नहीं है किसी को पता ,
तेरा संघर्ष, और तेरे आदर्श विचार,
अब किताबों के चन्द पन्नों में दफ्न हैं,
आधुनिक भारत के राजनेता,
धन के लोभी और विलासिता सम्पन्न हैं।
ओ! साबरमती के सन्त, तूने क्या खूब किया कमाल,
अपने अहिंसारूपी हथियार से,
गोरों को कर दिया अपने राष्ट्र से बाहर,
गोरों को तूने अपने राष्ट्र से जब निकाला,
तो अपनों ने ही कर दिया भ्रष्टाचार से
अपने देश का मुँह काला,
भ्रष्टाचार की नीति है आज, भ्रष्टाचार ही धर्म है आज,
सर्वधर्म सम्भाव की भावना का, सरेआम कत्ल हुआ है आज।
धर्म का मुद्दा हर वर्ग का, हथियार बना है आज,
गरीब की बेबसी आत्महत्या की वजह बन रही है आज।
युवाओं की बेरोजगारी,अपराध का कारण बन रही है आज,
धर्म की आँधी भारत की कहानी बन रही है आज।
धर्म के पौराणिक मुद्दे ने तोड़ दी उस खाई की दीवार,
जिसे राष्ट्र के वीरों ने अपने रक्त से खड़ा किया था,
बाबरी मस्जिद को तोड़कर,
ईश्वर के नाम एक ईमारत का निर्माण हो रहा है।
हिन्दू और मुसलमान, दो धर्मों के भाईचारे के,
पतन का निर्माण हो रहा है।
ओ बापू प्यारे! आज मन उदास है,
आज अपना देश जाति, भेद और भ्रष्टाचार का दास है।
ओ प्यारे बापू!
आज मन उदास है, इसलिए मैंने तुझसे की ये अरदास है,
देश का बदलता स्वरूप देख,
आज मन उदास है, आज मन उदास है।।

– *शमा परवीन* (B.A.IInd Sem.)

माँ तेरी याद में

तू देवी है ममता की, तू परछाई है प्यार के एहसास की,
तू है तो जीवन का गुलशन गुलजार है,
तेरे आँचल के साये में, दु:ख भी नादान है।
तेरी वात्सल्य मुस्कान में, संसार का हर गम बेजान है।
तेरे प्यार की छाँव में, फूलों की खुशबू का एहसास है।
छूटा जो तेरी ममता का आँचल,
तेरे प्यार का एहसास तो बरकरार है, लेकिन.....
इस जीवन का गुलशन बेजान है,
बिन तेरे साये के दु:ख भी बलवान है।
है जिस हँसी से दुनिया का, हर गम बेजान था,
अब बिन तेरी हँसी से, इस दुनिया में ये दिल भी गुमनाम है।
क्यूँ बिन तेरे प्यार के, फूलों की खुशबू काँटों का एहसास है,
क्यूँ माँ तेरे बिन ये जीवन बेकार है।
क्यूँ बिन तेरे आँचल के, यह घर भी मकान है।
ऐ माँ! तुझे शत्-शत् प्रणाम है।

– *शमा परवीन* (B.A.IInd Sem.)

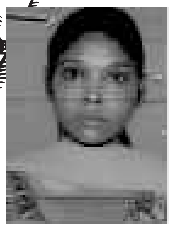

वक्त

इस वक्त को तो अब बताएगें हम,
जब इससे भी आगे बढ़ जाऐंगे हम।
हौंसलों की दास्तान तो सुनी बहुत,
लेकिन अपना जज्बा तो दिखाऐंगे हम,
समंदर में उतरना तो फितरत है इंसान की,
इस समन्दर से भी मोती लाऐंगे हम।
उड़ना है तो ऐसे उड़ो कि आसमा भी कहे,
कि उसको भी ऐसा उड़ना सिखाओगे कब।
दुनिया लगेगी इतनी छोटी जब हमें,
इस दुनिया में भी अम्बर बन जाऐंगे हम।
ये परेशानियाँ पूछती रहेगी पता हमारा,
क्योंकि इन्हें हवाओं में यूँ ही उड़ाऐंगे हम।
ये वक्त टकटकी लगाकर देखता रहेगा हमें,
इसे पता है कि इसे भी पिछे छोड़ जाऐंगे हम।

– आरती चन्द्रा (M.A.Ist Sem.)

सर्दी आई

सर्दी आई, सर्दी आई, ठंडी की पहने वर्दी आई।
सबने लादे ढेर से कपड़े, चाहे दुबले, चाहे तगड़े।
नाक सभी लाल हो गई, सुकड़ी सबकी चाल हो गई।
ठिठूर रहे हैं, काँप रहे हैं, दौड़ रहे हैं, हाँफ रहे हैं।
धूप में दौड़े तो भी सर्दी, छाँव में बैठे तो भी सर्दी।
बिस्तर के अन्दर भी सर्दी, बिस्तर के बाहर भी सर्दी।
बाहर सर्दी, घर में सर्दी, पैर में सर्दी, सर में सर्दी।
इतनी सर्दी किसने कर दी, अंडे की जम गई जर्दी।
सारे बदन में ठिठुरन भर दी, जाड़ा है मौसम बेदर्दी।

– आरती चन्द्रा (M.A.Ist Sem.)

मेरा कॉर्बेट नेशनल पार्क

रामनगर में स्थित है यह, जिला है नैनीताल,
सुन्दर सौम्य प्रफुल्लित दृश्य यह, कोयल की मधुर आवाज,
देख के लोग प्रसन्न हुए, यह है मेरा कॉर्बेट नेशनल पार्क।

हाथी है यहाँ बन्दर है, लंगूर खरगोश बुलबुल भी,
बाघ लोमड़ी हिरन है यहाँ, मोर मोरनी का मिलन है,
पानी है पशु पक्षी है, यहाँ है टेड़ा-मेड़ा मार्ग
पूरी दुनिया में छाया है, यह मेरा कॉर्बेट नेशनल पार्क।

प्रकृति को देखने विदेशी आए, हुए देख इसे खूब प्रसन्न,
खाया-पिया घूमा चारों ओर, किया संस्कृति का आदान-प्रदान
टूरिस्ट ने तारीफ इतनी की, कि लगा दिया ग्रीन मार्क,
पूरी दुनिया में छाया है, यह मेरा कॉर्बेट नेशनल पार्क।

सुन्दर गर्जिया मन्दिर है यहाँ, चोटी पर है यह समाया,
कोसी बहती दूसरी ओर को, जिसने मन्दिर की शोभा को बढ़ाया।
दर्शनार्थी जाते दर्शन करने, माँगे जो माता से वरदान,
कोसी में भी खूब नहाते, लेते जीवन का आनन्द,
ऐसा अद्‌भुत दृश्य यहाँ का, जो मन मे उकसाए भाव
पूरी दुनिया में छाया है, यह मेरा कॉर्बेट नेशनल पार्क।

उत्तराखण्ड का गौरव है यह, उत्तराखण्ड का सौरभ है,
कोसी बहती बीच रामनगर, बैराज भी यहाँ की शोभा है।
पंचवटी है छोटा बगीचा, जिसे कोसी के पानी से सींचा,
कॉर्बेट फॉल नजदीक जो इसके, सीतावनी का हरा भरा जंगल है।
टाईगर रिजर्व के नाम से प्रसिद्ध, अनेकानेक यहाँ है बाघ,
पूरी दुनिया में छाया है, यह मेरा कॉर्बेट नेशनल पार्क।

– भारती पाठक (B.A.IInd Sem.)

जिन्दगी की धूप–छाँव

कभी गम, तो कभी खुशी है जिन्दगी,
कभी धूप, तो कभी छाँव है जिन्दगी।
विधाता ने जो दिया, वो अद्‌भुत उपहार है जिन्दगी,
कुदरत ने जो धरती पर बिखेरा वो प्यार है जिन्दगी,
जिससे हर रोज नये–नये सबक मिलते हैं
यथार्थों का अनुभव कराने वाली ऐसी कड़ी है जिन्दगी,
किसे कोई न समझ सके ऐसी पहेली है जिन्दगी,
कभी तन्हाईयों में हमारी सहेली है जिन्दगी,
अपने–अपने कर्मों के आधार पर मिलती है ये जिन्दगी,
कभी सपनों की भीड़, तो कभी अकेली है जिन्दगी,
जो समय के साथ बदलती रहे, वो संस्कृति है जिन्दगी,
खाट्टी–मिठी यादों की स्मृति है जिन्दगी,
कोई ना जानकर भी जान लेता है सबकुछ, ऐसी है जिन्दगी,
तो किसी के लिए उलझी हुई पहेली है जिन्दगी,
जो हर पल नदी की तरह बहती रहे ऐसी है जिन्दगी,
जो पल–पल चलती रहे, ऐसी ही है जिन्दगी,
कोई हर परिस्थिति में रो–रोकर गुजारता है जिन्दगी,
तो किसी के लिए गम में भी मुस्कुराने का हौंसला है जिन्दगी,
कभी उगता सूरज तो कभी अंधेरी निशा है जिन्दगी,
ईश्वर का दिया, माँ से मिला अनमोल उपहार है जिन्दगी,
तो तुम यूँ ही न बिताओ अपनी जिन्दगी,
दूसरों से हटकर तुम बनाओ अपनी जिन्दगी,
दुनिया की शोर में न खो जाए ये तेरी जिन्दगी,
जिन्दगी भी तुम्हें देखकर मुस्कुराए,
तुम ऐसी बनाओ ये जिन्दगी।

– ***सीमा सिंह*** ***(M.A.IInd Sem.)***

हिन्दी दोहा

हिन्दी भारत देश को, देती है पहचान।
हिन्दी जन गण मन रहे, हिन्दी हिन्दुस्तान।।
सब भाषाओं का रखे, हिन्दी भी सम्मान।
है उदार सबके लिए, हिन्दी तभी महान्।।
सब भाषाएँ दे रहीं, हमको यह सन्देश।
हिन्दी से ही बँध रहा, एक सूत्र में देश।।
हिन्दी के ही ह्रदय में, पले प्यार का नूर।
अपने पन को बाँटती, हिन्दी ही भरपूर।।
हर भाषा से आ रही, हर पल यह आवाज।
हिन्दी ही सोहे सदा, बन कर सिर पर ताज।।
हिन्दी–सा इस जगत् में कोई कब है और।
भाषाएँ जितनी यहाँ सबकी है सिरमौर।।
आओ हिन्दी को करें, मिलकर आज प्रणाम।
रोम–रोम इसके बसे, जैसे चारों धाम।।
हिन्दी आँखों में बसा, सपना है साकार।
साक्षरता की सिद्धि का, हिन्दी ही आधार।।
हिन्दी को मानो सदा, संस्कृति का आधार।
हिन्दी भारत देश का, सबसे पहला प्यार।।
तुलसी सूर कबीर ने, सदा किया गुणगान।
सदियों से होता रहा, हिन्दी का सम्मान।।
हम सब हिन्दी की यहाँ सदा बचायें लाज।
अपने ही घर में विवश, सुबक रही वह आज।।

– ***सीमा सिंह*** ***(M.A.IInd Sem.)***

मेरा बचपन

एक वक्त एक जमाना, एक कहानी एक किस्सा,
हम सबके जीवन का, एक अनमोल हिस्सा।
– बचपन
जिसका आरम्भ माँ की कोख से होता है, वह जीवन है।
जिसका आरम्भ माँ के आँचल से होता है, वह बचपन है।।
दादा–दादी की परवाह, चाचा–चाची का प्यार।
माँ–बाप की गोद, भाई बहनों में तकरार–प्यार।
बसता है इसमें मेरे, बचपन का छोटा सा संसार
दादी की रोज परियों की कहानी,
नींद मेरी जिनकी थी दीवानी।
सुकून था जो उनकी गोद–थपकियों में,
मिलता नहीं है, अब बिस्तर तकियों में।
पापा, चाचा जब घर काम से आते,
संग अपने खेलने की चीजें ले आते।
खुशी अनमोल थी जो उन गुड़ियाँ–खिलौनों से,
मिलती नहीं है अब, मोबाइल फोनों से।
प्रथम शिक्षक बना, मेरा परिवार महान।
मिला है जिनसे मुझे, संस्कारों का अमर ज्ञान।
सीखा मैंने उनसे, एक सभ्य व्यवहार।
करना बड़ों का आदर और छोटों से प्यार।
बचपन मेरा बहुत ही रंग–बिरंगा था,
साथियों संग प्रेम ज्यादा, दंगा थोड़ा–सा था।
खेल–कूद की, उस सुहानी मस्ती में,
में वो थी अपने बचपन की कश्ती में।
समय ने फिर से था, अपना मन बना लिया,
लम्हें गुजर गये, बचपन चला गया।
यादों की खुशबू से, जीवन महका गया,
बचपन चला गया, मेरा बचपन चला गया।

– कु. प्रियंका (शोधार्थी–हिन्दी)

माँ

''माँ''
मिला ना प्यार जिसे माँ का उम्र भर
उसको हर एक चेहरे पर माँ दिखाई देती है।
रब पर हम पे करम नहीं होते, माँ नहीं होती तो हम नहीं होते,
माँ से अच्छी मेरे भगवान की, सूरत ही अच्छी नहीं,
माँ है मौजूद तो मंदिर की जरूरत ही नहीं,
माँ से बढ़कर कोई तस्वीर नहीं होती।
''माँ''
जब आँख खुली तो, अम्मा की गोदी का, एक सहारा था।
उसका नन्हा सा आँचल, मुझको भूमण्डल से प्यारा था,
उसके चेहरे की झलक देख के, चेहरा फूलों सा खिलता था।
उसके आँचल की एक बूँद से, मुझको जीवन मिलता था।
हाथों से बालों को नोंचा, पेरों से खूब प्रहार किया।
फिर भी उस माँ ने पुचकारा, हम को जी भरकर प्यार किया।
मैं उसका राजा बेटा था, वो आँख का तारा कहती थी।
मैं बनूँ बूढापे में उसकी, बस एक सहारा कहती थी।

– भारती पाठक (B.A.IInd Sem.)

फूल

फूलों से हमने क्या सीखा,
काँटों से जीना सीखा,
हर मौसम में हँसना सीखा,
खुद टूट के डाली से,
दो लोगों को मिलाना सीखा,
धूप में जलकर भी मुस्कुराना सीखा,
रस देकर अपना मधुमक्खी को,
दूसरों के लिए जीना सीखा,
तेज हवाओं से खुद को बचाकर,
मुश्किलों से लड़ना सीखा,
माली जब पानी देता,
प्यार से झुककर शुक्र अदा करना सीखा,
काँटों में खिलकर, काँटों को महत्व देना सीखा,
सूख कर पत्ती में बिखरकर,
गुलकन्द बन कर दूसरों को मिठास देना सीखा,
फूलों से हमनें क्या सीखा?

–फरहत अंजुम (बी.ए. 6th Sem.)

महान सैनिक

सलाम उन सैनिकों को,
गए जो पाकिस्तान में,
लिया बदला शहीदों का,
जाके आतंकवाद से,
आतंकवाद तू तो गया,
खैर नहीं तेरी अब,
जाग गया हिन्दुस्तान है,
सेना हमारी तुम पर भारी,
देख लेना बारी अब हमारी,
नापाक इरादें तेरे ना,
अब बच पायेंगे,
आतंकवाद पनपता जहाँ से,
उसी को मिटायेंगे,
कब तक तू बचेगा,
कब तक खैर मनाएगा,
हिन्दुस्तान की सेना से,
कब तक तू बच पायेगा,
वीर है वो रणवीर है,
नाश तेरा कर देंगे,
बच के तू रहना अब,
जान तेरी वो ले लेंगे,
जय जवान, जय हिन्दुस्तान।

बेटी है तो कल है

अगर बेटा वारिस है, तो बेटी पारस है।
अगर बेटा वंश है, तो बेटी अंश है।
अगर बेटा आन है, तो बेटी गुमान है।
अगर बेटा संस्कार है, तो बेटी संस्कृति है।
अगर बेटा आग है, तो बेटी बाग है।
अगर बेटा दवा है, तो बेटी दुआ है।
अगर बेटा भाग्य है, तो बेटी विद्याता है।
अगर बेटा शब्द है, तो बेटी अर्थ है।
अगर बेटा गीत है, तो बेटी संगीत है।
जब इतनी कीमती है बेटियाँ,
तो क्यों खटकती है मन को बेटियाँ।
जबकि सबको पता है,
बेटों को भी जन्म देती है बेटियाँ।

– ***मनमोहन सिंह बिष्ट* (M.Sc. IInd Sem.)**

माँ की ममता

दुनिया में कोई न अनाथ, जब माँ है तुम्हारे साथ।
माँ का बच्चों पर हितप्राण, माँ का दूसरा नाम है भगवान।
बचपन में जीत लिया माँ ने हमारा मन,
बड़े होकर बन गये हम उनके दुश्मन।
माँ ने हमें पाल–पोषकर बड़ा करा,
हमने सोचा हम पर एहसान करा।
पालती है हमें सबसे डर–डरकर,
हर समय रहती उन्हें हमारी फिकर।
यही है माँ की ममता, समझों बच्चों तुम इनकी क्षमता।
माँ का मानो कहना, देंगी वो आशीर्वाद तुम्हें,
बेटा सदा सुखी रहना।

–***रिया आर्या* (B.Sc. IInd Sem.)**

शिक्षा का ज्ञान

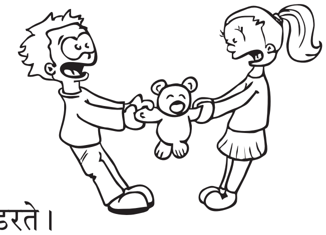

एक गाँव में दो थे भाई बहन,
एक रानी तो एक चमन।
दोनों आपस में थे लड़ते,
इस व्यवहार से उनसे सब थे डरते।

कभी नहीं वह खुशी से रहते,
फिर भी उन्हें हम भाई–बहने कहते।
उनकी माँ थी उनसे परेशन,
वो लेते थे एक दूसरे की जान।

अपना करते थे आराम,
माँ करती थी सारा काम।
उनकी लड़ाई से माँ चूर–चूर,
हो गये दोनों भाई–बहन दूर–दूर।

माँ ने सोचा मिलकर रहेंगे,
फिर भी वे दोनों थे मजबूर।
एक–दूसरे की नहीं देख सकते थे शक्ल,
खो गयी उनसे उनकी अक्ल।

एक बार घर में मामा आए,
उनके अकल के ताले खुलाएँ।
मामा बोले जो तुम मिलकर रहोगे,
अपने अन्दर की शक्ति एकत्र करोगे।

मिल गया शिक्षा का ज्ञान,
हो गये वह कल्याण–कल्याण।
खाना खाया मिलकर साथ,
मामा को दिया धन्यवाद।

–***रिया आर्या* (B.Sc. IInd Sem.)**

औरत क्या है?

औरत वो है
जिसे हर एक मजहब ने खुदा बनाया,
और हर एक मजहबी ने लाचार बनाया।
जिसने खुद को खोकर, इस दोजख को जन्नत बनाया,
लेकिन इस कायनात ने, हर औरत को अहसान तले
दबाया।
औरत वो है
जिसने हर मर्द को, अपने जिस्म से पैदा किया,
लेकिन आज उन्हीं में से कुछों ने, उसे बेआबरू कर डाला।
जिसने हर जहाँ के आँगन को महकाया,
लेकिन उसी आँगन ने, उसे उसकी जमी पर बोझ बनाया।
औरत वो है
जिसने मजबूर होकर,
अपनी औलाद की भूख के लिए खुद को सरेआम कराया,
और जमाना इतना जाहिल कि उसने उसे तबायफ बनाया।
जिसने जरूरत पड़ने पर पुरूषों के साथ, कंधे से कंधा
मिलाकर शोषण के विरूद्ध मुट्ठियाँ भी तानी।
औरत वो है
जिसको बोझ समझकर, हमने कौडियों के भाव
हवस के मीना बाजार में धकेल दिया,
जिसका दर्द समझने में हम नाकामयाब रहे।
औरत वो है
जिसने कभी झाँसी की रानी, तो कभी रजिया सुल्तान बनकर
साहस की बुलंदियों का इतिहास रचा।
जिसकी आजादी को हमने एक चुनौती बना दिया,
जिसके ख्वाबों को हमने एक बगावत बना दिया।

–वन्दना आर्या (मेघा) ***(B.Com VI Sem.)***

चुनाव

चुनाव निपट जाते हैं, नेता जीत जाते हैं,
हमें खबर नहीं रहती, कि जनता हार जाती है,
और पार्टियाँ जीत जाती है।
जमीर बेच दिये जाते हैं, वोट खरीद लिए जाते हैं।
और हम बिक जाते हैं, लूट का दायरा बढ़ जाता है,
और हम खुश हो जाते हैं,
क्योंकि पार्टियाँ जीत जाती है।
उम्मीदें धर जाती हैं, फर्ज शूली चढ़ जाते हैं,
आवाजें दफन हो जाती हैं, दलाल जीत जाते हैं
और हम खुश हो जाते हैं,
क्योंकि पार्टियाँ जीत जाती है।
इरादें हार जाते हैं, वादे भुला दिये जाते हैं,
और हम जश्न मनाते हैं, जबकि अंहकार जीत जाते हैं।
और हम खुश हो जाते हैं,
क्योंकि पार्टियाँ जीत जाती है।

–वन्दना आर्या (मेघा) ***(B.Com VI Sem.)***

तमाशबीन

मजहब का फर्द ओढ़ चुका है ये जमाना,
जबकि दिल से इंसानियत खिसकती जा रही हो।
दारोमदारी दी थी जिन्हें ताजीम समझकर,
अवाम मुब्तिला लेकिन अय्याशी बढ़ती जा रही हो।
उसे भूलना ना और भूल भी गया अपनी फर्ज अदायगी,
नौजवान बेखबर जिसकी याद्दाश्त घटती जा रही हो।
कोई गरज नहीं, क्या डगर है, ये कैसी गुमराही,
मेरी रखनगी जहाँ आँखों पर पर्दा डालती जा रही हो।
मैं बे-रू-ब-रू रहा, मैं गुनेहगार रहा,
मैं वहाँ तमाशबीन रहा, जहाँ मेरी तालीम मरती जा रही हो।

–वन्दना आर्या (मेघा) ***(B.Com VI Sem.)***

कलयुग का श्राप : वृद्धाश्रम

माता-पिता को तूने अपने, वृद्धाश्रम क्यों भेज दिया?
धिक्कार तुम्हें निष्ठुर संतान, अपने सम्मान को बेच दिया।
अपने सम्मान को बेच दिया, कर दिया जिन्होंने तुम पर अपना,
सब कुछ था न्यौछावर रे,
उन मात-पिता के उपकारों को पल-भर में क्यों भुला दिया?

जिस माँ ने रक्त से सींच-सींच, तुझे अपनी कोख में पाला रे,
जिस माँ ने जीवन गरल को पी, तुझे अमृत पान कराया रे,
जिस माँ ने खुद काँटों में सो, तुझे फूलों का बिस्तर था दिया।
उसकी ममतामयी बगिया को, क्षण-भर में तूने रौंद दिया।

जिस पिता ने तुझको पग-पग पर, ठोकर खाने से बचाया था,
खुद सारी उम्र मशक्कत कर, पैरों पर खड़ा कराया था।
जिस पिता ने अपने सपनों को सदा तुझमें ही जीवन्त किया,
उस पिता के सारे अरमानों का, पल-भर में क्यों खून किया?

हे कलयुग के कुत्सित कपूत, धिक्कार है, धिक्कार है।
जो अपने फर्ज को भूल गई, औलाद नहीं अभिशाप है।
माँ-पिता को अपने तुम यूँ भला, क्यों वृद्धाश्रम में भेजते हो?
जिसने तुमको जीवन ये दिया, क्यों उनका जीवन छीनते हो?

माँ-बाप की सेवा कर न सके, सन्तान से सुख क्या पाओगे?
जब खुद बूढ़े हो जाओगे, तब आप कहाँ फिर जाओगे?
माँ-बाप को तुमने ठुकराया, तुम भी ठुकराएँ जाओगे,
और जैसी करनी वैसी भरनी, करनी पर पछताओगे।

हो ऐसा कोई कठोर विधान, जो मात-पिता ठुकराएगा,
ताउम्र कभी सम्मान से फिर वो, शीश उठा नहीं पाएगा।
जीवन भर ऐसा कर न सकें, उन्हें ऐसा सबक सिखाए हम,
माँ-बाप के मान की खातिर, उनकी नानी याद कराए हम।

माँ-बाप को बहलाने वाले, जो सम्पत्ति के भूखे हैं,
धन के मिलते ही कुलकलंक, वो अपना रूप दिखाते हैं।
उन बहरूपियों को कोई तो, कानून बना कर तंग करो,
उन माता-पिता की सम्पत्ति, पुनः उनके नाम सम्पन्न करो।

जो मात-पिता से वंचित हैं, ऐसे कुलश्रेष्ठ कुलीन पूत,
ठुकराए गए माँ-पिता को तुम, जाकर वृद्धाश्रम ग्रहण करो।
दुनिया में रखो नयी मिसाल, उन बेटों को भी मिले सबक,
जिनको तुमने ठुकराया है, हँस हमने गले लगाया है।

है अब भी हमारे पास समय, इन वृद्धाश्रमों को बंद करें,
जिनके हैं मात-पिता इनमें, उन्हें कारागृह में बंद करें।
ताकि सृष्टि में कोई कभी, माँ-पिता को अपने भूले ना,
उनके चरणों की रज से हम, निज जीवन को प्रफुल्ल करें।

रश्मि अग्रवाल *(शोध छात्रा-हिन्दी)*

अब विश्वास जगाना है

चिरागों को जलाकर के, अब अंधेरों को मिटाना है।
नफरत के इन बीजों को, अब जड़ से उखाड़ना है।।
कोई आकर हमसे ये पूछे, हमको क्या करना है।
मिटाकर नफरतें दिल से, उजाला वहाँ पे भरना है।।
जो रूठे हुए हैं अभी तक, उन्हें अब मनाना है।
नफरत की चढ़ी है धूल, दिल से उसे हटाना है।।
एक छोटी सी किरन को अब, अंगारा बनाना है।
धधकती आग है जो दिल में, उसे और बढ़ाना है।।
अपनी इस हिम्मत को, हमें और बढ़ाना है।
दुश्मन की हर चालों को, हमें दे दे वह शक्ति
अब शक्ति बढ़ाना है।।
जगाकर विश्वास दिल में,
अब विश्वास जगाना है।।

बेटी बचाओ–बेटी पढ़ाओ

मुझे मेरा निदान चाहिए, मुझे मेरा निदान चाहिए।
एक छोटी सी तिनके जैसी, मैंने ना देखी ये दुनिया।
पर दुनिया देखने से पहले ही, मर गई वह छोटी गुड़ियाँ।
क्या गलती थी मेरी? जिसका तुमने संहार किया,
अब इस गलती का कारण मुझे बताइए, मुझे मेरा निदान चाहिए।

जब रूलाते हैं बेटे, तब आँसू पोंछती है बेटियाँ।
पढ़ाते हैं बेटों को, पर अफसर बन जाती है बेटियाँ।
ठुकराते हैं बेटे, पर संभालती है बेटियाँ।
बेटी बाँटे दर्द सभी का, बेटी बाँटे मर्ज सभी का।
मारते क्यों हो उसे गर्भ में, उसे भी है अधिकार जीने का।
सीखो और सिखाओ, बेटी को बचाओ।
जिन्हें नहीं है ज्ञान इसका, उन्हें भी यह बताओ।
मुझे मेरा निदान चाहिए।

जब होगा शिक्षित बेटी को ज्ञान,
तभी होगा भारत का भविष्य निर्माण।
जन–जन को जगाऐंगे, बेटी को बचाओगे।
एक नहीं दो–दो बातें, हम उन्हें बताऐंगे।
बेटी को बचाऐंगे, बेटी को पढ़ाऐंगे।
बेटी को उसके बंचित अधिकार दिलाऐंगे।
मुझे मेरा निदान चाहिए।

सोचा तो था बहुत मैंने भी,
बेटी है तो आँख का तारा, शिक्षित होकर बने सहारा
पर भूल गई थी 'एक बात मैं, इस दुनिया में ना कोई है मेरा,
बेटे को तो अपनाया सभी ने, पर मैंने ना देखा नया सवेरा।

मेरी क्या कोई गलती थी? जो दिया दर्द मुझे इतना सारा,
गलती तो थी उस मनुष्य की, जिसमें गर्भ में मुझे मारा था।
क्यों मारा उसने मुझे गर्भ में? जरा मुझे भी यह बताइए।
मुझे मेरा निदान चाहिए।

मैं तो थी नादान परिंदा, हँसती–कूदती, कूदती–खेलती।
पता नहीं वह आया कहाँ से, मनुष्य रूप नहीं था, वह दरिन्दा।
भूल गया था वह यह भी, पैदा हुआ था वह जिससे,
वह भी तो एक बेटी थी।
पर कहता था वह बेटा है, बेटा ही चाहिए मुझे इस जंग से।
पर भूल गया था वह, यदि बेटी है तो भविष्य है।
वरना है सब कुछ शून्य, मैं रोई, सुनी ना जग ने मेरी,
क्यों दिया दर्द उसने मुझको? क्या कुछ नहीं मैं इस दुनिया की।
जो उसने मुझे सताया था, इस सताने का कारण मुझे बताइए।
मुझे मेरा निदान चाहिए।

बेटी को बचाऐंगे, उज्ज्वल भविष्य पाऐंगे।
बेटी का पढ़ाऐंगे, भारत को आगे बढ़ाऐंगे।
बेटी पढ़ाओ – बेटी बचाओ।

– ***अर्चना रावत* (B.A. IInd)**

बदलता समाज

वर्तमान समाज बदलता समाज,
आधुनिक काल में आधुनिक अन्दाज है,
मानव मस्तिष्क का कमाल है, कम्प्यूटर का काल है,
यह आधुनिक काल बड़ा कमाल है,
पृथ्वी का हर रहस्य समझना बहुत आसान है।
स्मार्ट फोन में इंटरनेट का तड़का,
विश्व में कर रहा धमाल है,
इसमें गूगल का अधिक योगदान है,
अंतरिक्ष का रहस्य हो या हो पृथ्वी का इतिहास,
गूगल सम्भव बनाता हर असम्भव काम,
आज हर समस्या का समाधान सरलता से मिल रहा है,
अब हर मानव कम्प्यूटर का दास बन रहा है।
स्मार्ट फोन का आकर्षण, इंटरनेट का सस्ता प्रसारण,
लुभावन बन रहा नर–नारी का है, ये बदलता समाज ?
अब इतना बदल रहा है, बुजुर्गों का मान, संस्कारों का ज्ञान,
किताबों के चन्द पन्नों में सिमट रहा है,
आज जहाँ दृष्टि घुमाओ, सिर्फ कम्प्यूटर के पास मिल रहे हैं,
मुख से नहीं उगंलियों से बात कर रहे हैं,
इंटरनेट के महत्व को, समझ नहीं रहे हैं,
75% लोग इंटरनेट का, दुरूपयोग कर रहे हैं।
नौजवान युवा आकर्षण को, प्रेम का नाम दे रहे हैं,
इस आकर्षण के जाल में फँसकर,
अपने ही भविष्य का विनाश कर रहे हैं।
बड़ों का आदर, गुरुओं का सम्मान,
युवा विद्यार्थियों को परिहास लग रहा है,
स्वदेशी मिट्टी के होकर, पाश्चात्य को अपना रहे हैं,
इस बदलते समाज में, मानव अपनी मानवता खो रहा है।
धर्म के नाम पर व्यापार हो रहा है,
पूज्यनीय गाय माता का, निर्यात विदेशों को हो रहा है,
राजनीतिक नेताओं का, इसमें बड़ा योगदान है,
राम मन्दिर के नाम पर, धर्म को बाँट रहे हैं,
कहीं हिन्दू सभा, कहीं मुस्लिम सभा करके,
धार्मिक एकता को, खोखला कर रहे हैं।
भारत माँ की सन्तान होकर,
भारत माता के ही सीने पर, वार कर रहे हैं,
ये कैसे भारतवासी हैं ? जो अपने ही देश का विनाश कर रहे हैं,
आज के आधुनिक समाज ने, कमाल कर दिया है।
मानवता को भूलकर मानव ने, अपराध का मार्ग अपना लिया है
मेरा ये प्यारा वतन, न जाने किस मोड़ पर आ गया है,
कहीं गरीबी, कहीं भुखमरी है, कहीं बीमारी,
तो कहीं बेराजगारी है।
ये कैसा मेरे देश का, हाल हो गया है,
स्मार्ट फोन के जाल में फँसकर,
हर युवा नकलचियों की दौड़ में, शामिल हो गया है,
वीरों की शहादत, वीरांगनाओं की परिभाषा,
इतिहास में कहीं, दफ्न होती जा रही है,
इंटरनेट का दुरुपयोग करके, अश्लीलता की हद (सीमा),
पार होती जा रही है,
इस बदलते समाज में, मेरा वतन,
संस्कारों में पिछड़ रहा है, अब तो यहाँ भी,
पाश्चात्य संस्कारों का विकास हो रहा है,
बूढ़े माता–पिता के लिए, वृद्ध आश्रमों का विकास हो रहा है,
मेरे वतन के वासी, अपने देश के संस्कारों को नहीं,
पाश्चात्य रिवाजों को अपना रहे हैं,
न जाने ये वर्तमान के युवा, किस ओर जा रहे हैं,
इस बदलते समाज के युवा,
अपने ही अस्तित्व को, मिटा रहे हैं।

(मेरी कलम से)

– ***शमा परवीन*** ***(B.A. IInd Sem.)***

मत बाँटों इंसान को

मंदिर–मस्जिद–गिरजाघर ने, बाँट लिया भगवान को।
धरती बाँटी, सागर बाँटा, मत बाँटों इंसान को।।
अभी राह तो शुरू हुई है, मंजिल बैठी दूर है।
उजियाला महलों में बंदी, हर दीपक मजबूर है।।
मिला न सूरज का संदेशा, हर घाटी–मैदान को।
धरती बाँटी सागर बाँटा, मत बाँटों इंसान को।।
अब भी हरी भरी धरती है, ऊपर नील वितान है।
पर न प्यार हो तो जग सूना, जलता रेगिस्तान है।।
अभी प्यार का जल देना है, हर प्यासी चट्टान को।
धरती बाँटी सागर बाँटा, मत बाँटों इंसान को।।
साथ उठें सब तो पहरा हो, सूरज का हर द्वार पर।
हर उदास आँगन का हक हो, खिलती हुई बहार पर।।
रौंद न पाएगा फिर कोई, मौसम की मुस्कान को।
धरती बाँटी सागर बाँटा, मत बाँटों इंसान को।।

–भावना आर्या (B.A. VI Sem.)

संस्कारों की परम्परा

संस्कारों की परम्परा से, भारत रहा महान,
संस्कारों की गरिमा से, भारत रत्नों की खान,
संस्कारों से मानव बने, बने वह स्वाभिमान,
न रहे किसी प्रकार का, उसमें दूर अभिमान।
संस्कार ही कर लेते हैं, मन चाहा निर्माण,
संस्कारों की परम्परा से भारत रहा महान।
यह वह परम्परा है जिसने, घर–घर दिये जलाये,
हर बसन्त ऋतु में ही, इसने हर घर में फल खिलाये।
लेकिन संस्कारों को जब से, लेकिन संस्कारों को जब से,
देश गया है भूल, तब से हर घर से नहीं खिलते फूल,
संस्कारों की परम्परा से, भारत रहा महान।

–भावना आर्या (B.A. VI Sem.)

भारत के वीर जवान

हे, भारत के वीर जवान,
तुम हो हमारे मित्र समान,
देश की रक्षा की कमान,
करते हो तुम सुबह और शाम,
हे, भारत के वीर जवान।

अगर तुम न होते देश में हमारे,
रात में न सो पाते हम,
दिन रात और सुबह शाम को,
दु:ख के गीत गाते हम।।

गलत राह को छूना मत,
राष्ट्र प्रेम से हो जाओ लतपत,
भारत माँ को माँ मानकर,
आगे बढ़ो सीना तानकर।

भारत को विकसित बनाओ,
विश्व में भारत का नाम बढ़ाओ।
एक पल भी मत गवाओ,
आगे बढ़ो और बढ़ते जाओ।

मन मे यह संकल्प ठानकर,
सीमा पर जाओ, सीना तानकर,
युद्ध भूमि में युद्ध मचाकर,
घर लौटना दुश्मन को हराकर।

–भावना आर्या (B.A. VI Sem.)

जिन्दगी

जिस राह से भी गुजरे हम, एक नाम सुना जिन्दगी,
कोई हमको भी बता दे क्या चीज है जिन्दगी?
थके हुए राही ने कहा रूकना ही है जिन्दगी।
और अपाहिज ने कहा चलना ही है जिन्दगी।
गरीबी में तड़पते हुए इन्सान ने कहा पैसा ही है जिन्दगी।
भूख से मरे आदमी ने कहा रोटी है जिन्दगी।
मगर कोई हमसे भी पूछे, कि क्या चीज है जिन्दगी।
मगर कोई तो ठोकर खाकर संभलने का नाम ही है जिन्दगी।
मन के हारे हार है, मन के जीते जीत,
जिन्दगी में आज, ,भागदौड़ भरी है जिन्दगी।

–***कविता रावत* (BA IV Sem.)**

ये वक्त न ठहरा है, ये वक्त न ठहरेगा।
यूँ ही गुजर जायेगा घबराना कैसा,
हिम्मत से काम लेंगे घबराना कैसा।
सागर के सीने से पाऐ हैं जब मोती,
लहरें कभी बलखाये घबराना कैसा,
हिम्मत से काम लेंगे घबराना कैसा।
ये सुख दुख जीवन में आते और जाते हैं,
दुख पहले आ जाये घबराना कैसा,
हिम्मत से काम लेंगे घबराना कैसा।
जब कदम बढ़ाये हैं मंजिल मिल जाएगी,
बस राह जरा मुश्किल घबराना कैसा,
हिम्मत से काम लेंगे घबराना कैसा।

– ***पूनम* (B.A. IV Sem.)**

प्रमुख विचार

यदि संसार में कहीं कोई पाप है तो वह है दुर्बलता हमें हर प्रकार की कमजोरी या दुर्बलता को दूर करना चाहिए, दुर्बलता पाप है, दुर्बलता मृत्यु के समान है।

– ***पूनम* (B.A. IV Sem.)**

मेरी माँ

लक्ष्य देती है, लक्ष्य की आस देती है।
मेरी माँ मेरे काम को नया विश्वास देती है।
गिरती हूँ मैं तो बढ़कर थाम लेती है,
मेरी माँ मुझको नित नया जीवनदान देती है।
मुझको नया उल्लास और आत्मविश्वास देती है।
मेरी माँ न जाने कैसे सब कुछ जान लेती है।
जादू चलाकर अपना, ये मुझको बाँध लेती है।
शत-शत नमन मेरा मेरी माँ को,
जो चलती मेरे संग और मेरी अंगुली थाम लेती है।

–***कविता रावत* (BA IV Sem.)**

संगीत दिलों का उत्सव है

जब सुर खनकते हैं, बेजान साजों से,
आवाज के पंखों पर उड़ने लगता है कोई गीत जब,
झूम-झूम लहराते हैं ये दिल क्योंकि,
संगीत दिलों का उत्सव है।
संगीत दिलों का उत्सव है, उत्सव है.........
गीतों के रंग न हो तो, नीरस है ये जीवन,
सरगम के सुर न छिड़े तो, सूना है मन आँगन,
हवाओं में संगीत है, लहरों में संगीत है,
संगीत है बारिश की रिमझिम में,
धड़कन में संगीत है, साँसों में संगीत है,
संगीत है कुदरत के कण-कण में,
जब ताल से उठे, दिल की सदा कोई,
हौले से ख्वाबों को, सहला जाता है कोई गीत जब,
घूम-घूम बलखाते हैं ये दिल क्योंकि........
संगीत दिलों का उत्सव है।
संगीत दिलों का उत्सव है, उत्सव है.........
गहरे ये, रिश्ते हैं, संग रोते हँसते हैं,
सुख-दु:ख के सब मौसम, गीतों में बसते हैं,
कभी गूँजे बाँसुरी, वीणा की धूम कभी,
कभी ढोल मंजीरे बजते हैं, तबले की थाप पर,
कभी नाचता है मन, कभी सुर सितार के बहते हैं,
जब ताल से उठे, दिल की सदा कोई,
धीमे से यादों को, धड़का जाता है कोई गीत जब,
साथ-साथ गुनगुनाते हैं ये दिल क्योंकि......
संगीत दिलों का उत्सव है।
संगीत दिलों का उत्सव है, उत्सव है.........

– ***हरेन्द्र सिंह* (बी.ए. 4th Sem.) (Music Department)**

बेटी बचाओ

मेरे होने का एहसास नहीं है
पर वो दिन क्या खास नहीं है।
जिस दिन मैं घर आई थी।
मम्मी तो मुस्कुराई थी, पापा भी चहक उठे थे।
पर फिर क्यों दुनिया ने नहीं दी बधाई थी?
लड़की हुई है यह सुनकर सबके मुँह उतर गए।
बधाई देने वालों के शब्द क्यों तानों में बदल गए।
लड़की हूँ मैं बोझ नहीं किस-किस को समझाऊँ मैं।
लड़कों से हूँ कम नहीं क्यों तुमको बतलाऊँ मैं।
भूल गये हो तुम सब शायद लड़की से है ये जग सारा।
तुम ना होते आज अगर,
माँ ने न होता तुमको 9 महीने कोख में पाला।
तो क्यों खुश नहीं होते हो तुम लड़की के होने पर,
क्यों कुछ मासूमों को मार देते हो उनके होने पर?
उनका क्या कसूर उनको भेजा है इस जग में भगवान् ने।
तुम कौन होते हो ये फैसला करने वाले,
कि हम रहेंगे या नहीं इस संसार में।
लड़की से ही तुम भी हो, लड़की से है ये जग सारा।
कद्र करो और समानता लाओ,
कहीं हो न जाए बंजर जग सारा।

-बबीता कड़ाकोटी **(B.A. II Sem.)**

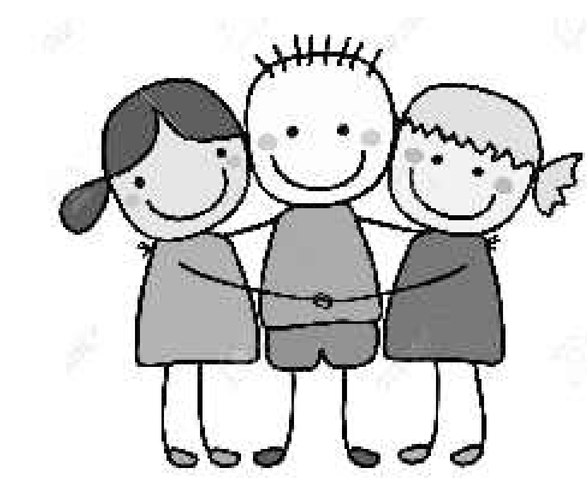

आशाएँ

ये क्या है जो अपने आप खिल जाती है,
किसी के आने की आहट से अपने आप मचल जाती है।
ध्यान बदल देने से सिमट तो जाती है।
पर खत्म नहीं होती सुलगती जाती है।
मेरे मन में भीतर कहीं पड़ी हुई, पली हुई, खोई हुई,
दबी हुई और अनेकों परतों से घिरी हुई,
क्या ये आशाऐं है जो शायद उम्मीदें कही जाती है।
मेरे मन में मुरझाई हुई सी, घबराई हुई सी,
शायद ये आशाएँ ही है, जो सपनों के पानी से,
फिर हरी हो जाती है, फिर महक सी जाती है।
हाँ ये आशाऐं ही है जो अपने आप खिल जाती है,
किसी के आने की आहट से अपने आप मचल जाती है।

-बबीता कड़ाकोटी **(B.A. II Sem.)**

बेटी

बेटी एक दीपक है, जिसे हमेशा जगमगाने दे।
बेटी एक लाज है, जिसे हमेशा सम्मान दे।
बेटी एक लहर है, जिसे हमेशा लहराने दे।
बेटी एक उपकार है इसे बोझ न समझे।
बेटी एक पक्षी है, जिसे हमेशा उड़ने दे।
बेटी एक बीज है, जिसे पूरी ईमानदारी से बोए
ना कि उसे कोई नोचे या धिक्कारे।
बेटी किसी की माँ भी हो सकती है,
या किसी की बहन भी हो सकती है।
इसे ना कोई ललकारे।
8 मार्च को इसे सम्मान दिया जाता है,
पर कुछ संकल्प करो,
कि इसे हर घर में रोज सम्मान मिले।
उसी को हम इंसान माने जो इसे माने,
क्योंकि बेटी एक मान है, रास्ते पे पड़ा कोई सामान नहीं।

- मोनिका **(B.A. VI Sem.)**

उत्तराखण्ड और महिलाएँ

उत्तराखण्ड का जब भी जिक्र होता है,
जिक्र होता है पर्वत पहाड़ का, ऊँचाई का,
सच्चाई का, अच्छाई का, खूबसूरती का,
कर्मठता का, शान्ति का, सुन्दरता का।
पर मैं देखती हूँ यहाँ की औरतों को,
देखती हूँ इनकी मेहनत, संघर्षों को।
आकर्षित करती है इनकी सरलता,
कष्टों के बावजूद इनकी प्रसन्नता।
पूरा दिन ये काम करती है, शायद ही कभी आराम करती है।
मुख पर एक अद्‌भुत तेज लिए हुए,
हर मुश्किल परिवार की आसान करती है।
आकर्षित करता है इनका परिधान,
श्रृंगार व साजो सज्जा से अनजान।
थकान चेहरे की, है श्रृंगार इनका, मुसकान होठों की लाली है।
आँखों की उम्मीदें है काजल इनका,
अदाऐं इनकी खुशमिजाजी है।
आकर्षित करती है इनकी दृढ़ता, काम के प्रति इनकी लगन।
प्रेम में इनकी नि:स्वार्थता, मुश्किलों भरा इनका रहन-सहन।
किसी से कोई शिकायत नहीं, पहाड़ों में इनकी मगनता।
आकर्षित करता है इनका आतिथ्य संस्कार,
अन्जानों पर लूटाना प्यार बेशुमार।
अपनी छोड़ सबकी परवाह करती हैं,
मेहमान देख खुश हुआ करती हैं।
इतना अपनापन अपनों से नहीं पाया है,
जितनी सरलता से इन्होंने अपनाया है।
कम बात करती हैं, लेकिन बड़ी बात करती है।
घरेलू हैं लेकिन सारा ज्ञान रखती है
इनकी सोच का दायरा बड़ा है,
भले ही पहाड़ सीना ताने खड़ा है।
इसी सीने को चूमती हुए आगे बढ़ी हैं,
फिसली हैं कई बार, कई बार गिरी हैं,
लेकिन पर्वत हैं छोटे इनकी हिम्मत बड़ी है।
इनकी व्यथा को, इनकी पीड़ा को जब-जब महसूस करती हूँ
खुद को छोटा बहुत छोटा महसूस करती हूँ।
झुकी इनकी कमर जब-जब देखा करती हूँ,
मन ही मन इनकी मेहनती मिजाजों को,
मेहनत से किये हर काम को सलाम किया करती हूँ।
सलाम किया करती हूँ।

***-बबीता कड़ाकोटी* (B.A. II Sem.)**

देश का हाल

देश की हालत देश की चाल, बदला-बदला सा है हाल।
लाचारी और भूख-गरीबी, फैल रहा ये कैसा जाल।

दो वक्त की रोटी कपड़ा, मिला नहीं मकान।
बिन माँगे ही दिल मिल जाता है, जिल्लत और अपमान।

बेसहारा बेघर मजदूर, रहता है अपनो से दूर।
करता है मेहनत भरपूर, भूखा सोने को मजबूर।

दिन रात पिसता एक इंसान, कहते है जिसको किसान,
भूखों के जो पेट है भरता, खुद ही भूखे पेट है मरता।

जमींदार लाला व्यापारी, करते सबकी दूर बेकारी,
भर-भर झोली भरते अपनी, फिर भी सबसे बड़े भिखारी।

एक है अपने देश का नेता, जिस पर अपना देश भी रोता,
जिस थाली में रोटी खाता, उस थाली में छेद वा करता।

चारों और मचा कोहराम, आया है कैसा तूफान,
क्या है आज दिनों में दूरी, मुँह में राम बगल में छूरी।

***- डीपी कल्पना* (M.Com. 4th Sem.)**

संघर्षों की दुनियाँ

इस छोटी सी जिन्दगी में, बहुत कुछ देख लिया
और काफी कुछ देखना बाकी है।
ये तो सिर्फ आँधी है, अभी तूफान देखना बाकी है।
जीवन ही संघर्ष है, संघर्ष है तो क्या हुआ,
हम जिन्दा ही हर, मुकाम के लिए बाकी है।
हर गम जी लेना ही, आदत सी हो गई,
अब बस चेहने पर, मुस्कान देखना बाकी है।
विरोधी करते हैं लाख प्रयास हमें तोड़ने की,
हर कदम को अंजाम देना बाकी है।
स्वीकार करने योग्य ही करूँ स्वीकार,
रूढ़ियों का प्रतिकार करना अभी बाकी है।
खुद पर विश्वास और कड़ी मेहनत करो,
तुम्हें पहचान देना बाकी है।
जो ख्वाब है इन तेरे इन नयनों में,
उनकों एक उड़ान देना बाकी है।
कोशिश करनी है हर पल, बोझ ना समझना मेहनत को,
इस तरह काँटों भरी राहों को, आसान करना बाकी है।
हैवान बनकर भी कोई जीना नहीं,
पहले तुझे इन्सान बनना बाकी है।
मान-सम्मान के बिना भी कोई जीना नहीं,
अपना स्वाभिमान जिन्दा रखना जरूरी है।
कब तक भटकोगे यूँ ही, एक आसमान बनाना बाकी है।
अपनी जिन्दगी को संघर्षों की शान बनाके,
हर कदम दूसरों के लिए जीना ही जिन्दगी है।
सीमित रहे है रास्ते जो स्त्री के,
तुम्हें हर रास्ते पर निशान देना बाकी है।

– *गीता* (M.A. II Sem.) *स्वरचित*

संघर्षों के आगे जब-जब, टूट-टूटकर बिखरते है हम,
लड़खड़ाते कदमों को संभाल, कर तो निखरते है हम।
इस दौर में ही अक्सर अपनों से बिछड़ते है हम,
तब अकेला पाकर अकेले में बिलखते है हम।
आँखों के स्त्रोत अक्सर होते हैं विराने में ही खाली,
क्योंकि भीड़ में भी दिखावटी मुस्कुराहट है डाली।
छलावटी दुनियाँ में हमने भी, दिखावटी मुस्कुराहट अपना ली।

क्यों प्यार में मिठास नहीं मिलावट है,
क्यों घरों में संस्कार नहीं सजावट है।
क्यों रिश्तों में कदर नहीं कड़वाहट है,
क्यों स्नेही भी लगता अब छलावट है।
क्यों अपनों के बीच भी घबराहट है,
क्यों हमारी ये सब जानने की चाहत है।

जब ये धरती डोल पड़ेगी, सारी दुनियाँ बोल पड़ेगी,
सबकी पट्टी खोल पड़ेगी, यहाँ सच को लगी है फाँसी,
और झूठ को उपहार, मेहनतकश को घर ना रोटी,
चोर लुटेरों के बंगले - कार।
पड़े लिखे तो पड़े हुए हैं, बेचारे बेबस बेरोजगार,
जिसकी अच्छी सांठ-गांठ है, पद पर बैठे रहे डकार,
नेताओं ने की नेतागिरी और दुशकर्मियों ने बलात्कार।
भ्रष्टाचारियों ने किया समाज भ्रष्ट, दिखावटी रह गए अखबार
कब तक ऐसा धन्धा होगा, और ना खुदा अब अन्धा होगा।
अब ये दुनियाँ बोल पड़ेगी, सबकी पट्टी खोल पड़ेगी।

– *गीता* (M.A. II Sem.) *स्वरचित*

जीत बड़ी निराली होगी

दिन तुझे देखकर नहीं सोचा कि रात इतनी काली होगी,
दु:ख तुझे महसूस कर सोचा नहीं, खुशियाँ बड़ी प्यारी होगी।
संघर्ष सहकर कभी ना सोचा, सफलता से खुशहाली होगी।
दिन तुझे देखकर नहीं सोचा, कि रात इतनी काली होगी।

हार कर भी बार-बार, कभी ना हुआ मुझे एतबार,
सोचा एक दिन जीत जाऊँगी, हारना फिर मैं भूल जाऊँगी।
आलोचनाओं से कभी ना सोचा, प्रतिष्ठा इतनी महान होगी,
काँटों पर चलकर कभी ना सोचा, फूलों की सी राह भी होगी।
दिन तुझे देखकर नहीं सोचा, कि रात इतनी शीतल होगी।

लड़कर दुनियाँ से ना सोचा, दुनियाँ लगती प्यारी है,
मुड़कर पीछे फिर ना देखा, मीलों मुकाम अभी बाकी है।
माँ के चेहरे ने ना सोचा, बेटी मेरी मर्दानी है,
मेहनत करके मुझे पढ़ाया, मेरी सफलता की रानी है।
मजबूरियों को देखकर नहीं सोचा,
कि मंजिल इतनी शानदार होगी।
दिन तुझे देखकर नहीं सोचा, कि रात इतनी शीतल होगी।

– ***ज्योति जमनाल*** ***(B.Sc. III Sem.)*** *स्वरचित*

अपने-अपने उसूल (नियम)

माना की हम थोड़े सीधे हैं, हर दर्द को खुशी से जीते हैं,
दर्द देने से दुनियाँ चूकती नहीं, मैं कभी रूकती नहीं।
तरक्की की फसल, हम भी काट लेते,
थोड़ी सी तलवे अगर हम भी चाट लेते।
बस मेरी जुबान पर, 'जी हाँ' ना था,
इसके अलावा मेरा कोई कसूर ना था।
अगर पल भर को भी, मैं बे-जमीर हो जाती,
यकीन मानिए मैं कब के अमीर हो जाती।

अगर हाँ पर हाँ कहती, अभी तक उनका जुर्म सहती,
जिद तो मेरी अपनी ही थी, तभी मंजिल से दूरी थी।
जिन्दगी अभी ही शुरू हुई है, बस दु:खों से घिरी हुई है।
जी हूजूर यदि कह दिया होता, शान-शौकत तब अपना होता।
दिल है सच्चा, मन है नेक, ऐसा ही सोचें प्रत्येक।

– ***ज्योति जमनाल*** ***(B.Sc. III Sem.)*** *स्वरचित*

उम्मीदों का धुआँ

ख्वाहिशें सांस नहीं ले पाती, जरूरतों के घर में धुआँ बहुत है,
ताकि शाम को खरीदकर कुछ, घर ले जा सकूँ
मैं शाम तक अपना वक्त, दफ्तर में बेचती हूँ।
घर की पुरानी सी अलमारी, अब चूँ-चै, चूँ-चै करती है
तवा भी साथ नहीं देता, रोज रोटी जलाता है।
वो आस थी दुनियाँ से, जो धुएँ सी उड़ रही है।
क्या खूब कहा नेताजी ने, 5 करोड़ आऐंगे
उम्मीद की खुशी में चादर फैलाए
हमें क्या पता था फरियाद भी झूठी है।
वो शख्स जो मर रहा था, जी रहा है उस आस में,
कभी तो आऐंगे, एक उम्मीद की किरण साथ है।
ख्वाहिशें बहुत है ताउम्र पूरी करने के लिए,
मात्र उम्र ही नहीं, उन्हें पूरा करने के लिए।
पंखा भी अब धीरे-धीरे, आवाज करने लगा है,
चलो इस घर की खामोशी से, किसी को शिकायत तो है।

– ***ज्योति जमनाल*** ***(B.Sc. III Sem.)*** *स्वरचित*

तुम सही हो यदि

तुम सही हो मात्र सही, सही सोच के लिए
तुम अपने, दिल की सुनते हो, उनकी नहीं,
तभी लोग अफवाह फैलाते हैं,
क्योंकि वे खिलाफ हैं मात्र सही के।
तुम्हारे रंगीन परिधानों से, वे अन्दर ही जलते हैं
तुम सदैव साथी सच के, रहना सदा इनसे बचके।
चिंता इसकी मत करो तुम, ये दुनियाँ कहती क्या है,
सच्चाई को मत छोड़ो तुम सुनो सदा आत्मा की तुम।
सही राह पर चलता जो है, दुनियाँ दुश्मन है उसकी।
इस राह में कठिन है चलना, लेकिन इसमें भीड़ नहीं।
तुम सही हो मात्र, सही नजरों के लिए,
व्यवहार तुम्हारा है चरित्रवान,
इसी राह पर चलते-चलते, मानव ही होता महान।
तुम सही हो यदि, सारी दुनियाँ जलने लगे तुमसे,
अपवाहें फैलाऐं तुम्हारे बारे में, तुम्हें देखकर मुँह सिकोड़ने लगे
हर जगह तुम्हारे जिक्र हो।
तुम सही हो यदि बूढ़े-वृद्ध तुम्हें सही समझें,
टीचर्स सही समझे तुम्हें, माँ को विश्वास हो तुम पर,
तुम्हें विश्वास हो खुद पर।
तुम सही हो यदि, तुम खुश हो अपने कामों से,
तुम्हें सूकून मिलता है हर समय,
तुम माफ करते हो सभी को, तुम्हें दया भी आती है।
तुम सही हो यदि, ढल जाते हो सही वक्त के साथ,
बदल देते हो अपने आप को, करते नहीं बुराई, बुरे की भी
भेदभाव नहीं करते गरीबी में भी।
तुम सही यदि, दिल में कपट ना हो, दूसरों का दुःख समझते हो,
लोग तुम्हें बुरा कहें, और तुम बुरा ना कहो।

– ***ज्योति जमनाल* (B.Sc. III Sem.)** *स्वरचित*

जय बोलो हिन्दुस्तान की

इतिहास सुनाऐंगे गाथाएँ, उन वीरों की शान की।
हम करेंगे रक्षा मिलकर, भारत माँ की आन की।।
वायु सेना ने मारा है, थप्पड़ पाकिस्तानी गालों पर।
जय बोलो-जय बोलो-जय बोलो, हिन्दुस्तान की।।
जय बोलो-जय बोलो-जय बोलो, हिन्दुस्तान की।।
उन वीरों की कुर्बानी का, मान तुमने दिखा दिया।
इस माटी का दुनिया को, अभिमान तुमने दिखा दिया।।
और उन कुत्तों की फाड़ के छाती, तुम तो ऐसा करके गए।
छप्पन इन्ची सबको तुमने, हिन्दुस्तान दिखा दिया।
भारत माता की जय। वन्दे – मातरम्।

– ***ऋचा कबड़वाल* (B.A. VI Sem.)**

मेरा कुमाऊँ

पर्वतों की गोद में, बसा मेरा कुमाऊँ।
सोचती हूँ मैं, बार-बार यहाँ आऊँ।
प्रकृति ने जन्म दिया, पहाड़ों ने है पाला।
सचमुच मेरा कुमाऊँ, है ही बड़ा निराला।
लाड़-प्यार से इसे, पर्वतों ने आकर्षक बनाया।
खूबसूरत वादियों से, है इसे सजाया।
ईश्वर ने पहाड़ हमें, उपहार में दिया है।
पर हमने इस पहाड़ के लिए, आखिर क्या किया है ?
चारों ओर प्रदूषण और सुन्दर वनों को काटकर,
हमने अपना कौन-सा कर्त्तव्य पूरा किया है ?

– ***ऋचा कबड़वाल* (B.A. VI Sem.)**

फौजी

जन्म तेरा हुआ था, सुनाई माँ ने कहानी है,
जिस मिट्टी में खेला तू उसी के लिए कुर्बानी है।
खून बहा था मेरा, लहू बहेगा तेरा,
सरहद पर जो तैनात है वो फौलाद है मेरा।
मेरी बात का तू मान रखेगा, सबसे पहले हिन्दुस्तान रखेगा।
जिम्मेदारी से ना मुँह मोड़ेगा, मुसीबत में साथ न छोड़ेगा।
कुछ तू ऐसा कर गया, देश का दिल ये भर गया।
भाई का फर्ज है निभाया, बहन से तू मिल न पाया।
फासले मीलों के थे जब, दिल में हिन्दुस्तान बसाया।
जिस्म मिट्टी में समा जो गया, दिलों में जगह बना जो गया।
बेटे गौरव है माँ का तू साबित कर चला,
कफन में तिरंगा, दिल में हिन्दुस्तान कर चला।

– ***कनिका बोरा* (B.Com. V Sem.)**

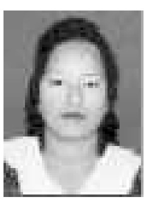

मत बाँटों इन्सान को

(आज का सच बताती कविता)

मानो राम रहमान को, मानो आरती और अजान को,
मानो गीता और कुरान को, पर मत बाँटों इन्सान को।
ये धरती है सबकी एक सी, अम्बर भी है,
एक सा है सूरत सबकी एक सी और
लहू का रंग भी एक सा फिर क्यों बाँटे है मुल्क सभी ?
क्यों सरहद की लकीरें खींची है ?
क्यों द्वेष अहिंसा और नफरत से,
ये प्यार की गलियाँ खींची हैं।
क्यों बाँट दिए हैं धर्म सभी ?
क्यों जात पात का खेल रचा ?
इसी के अन्तर्गत ही अब, इन्सान में न ईमान बचा।

– ***नीलम मनराल* (B.A. VI Sem.)**

"बदलना है"

सपना है मेरा कुछ कर गुजरा है,
अपनों के लिए एक घर बनाना है।
जिसमें रह सकूँ मैं पल दो पल सुकून से,
इबादत करता हूँ खुदा से, ऐसा वक्त लाना है।
भुला सकूँ मैं गुजरे पल, ये एहसास न हो ,
बस जिंदगी को अपनी खुशनुमा बनाना है।
नदी के किनारों की तरह गुजारी सारी,
बस अपनों को थोड़ा और करीब लाना है,
मुझे इस कदर ठुकराया जैसे मेरा कोई नहीं,
किस सोच में डुबा मैं क्या मुझे पाना है।
मिले थे कभी तन्हाईयों में बहारों को भूल गया,
मैं बुरा हूँ लाख चाहे जालीम सारा जमाना है।
मुझ अकेले का सहारा कौन है यहाँ भला,
गुजरे दिन भूल के आया वक्त अपनाना है।

– ***रजत जोशी* (B.Sc. VI Sem.)**

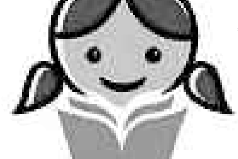

बालिका शिक्षा

टॉफी गुड़िया तुम मत लाना, लेकिन पुस्तक ला देना,
अपनी बिटिया रानी को तुम, विद्या ज्ञान करा देना।
बिटिया रानी स्वाभिमान से, शीश उठाना सीखेगी,
शोषण अत्याचार से लड़ना, और निकलना सीखेगी।
नाम करेगी रोशन बिटिया, बस तुम राह दिखा देना,
मन्दिर, मस्जिद चाहे मत ले जाना,
विद्यालय जरूर भिजवा देना।
बिटिया की खुशियों की खातिर, बस एक कदम बढ़ा देना,
झाड़ू, पौंछा हाथ से लेकर, एक कलम भी पकड़ा देना।
टॉफी गुड़िया तुम मत लाना, लेकिन पुस्तक ला देना।

– ***ज्योति बधानी* (B.Ed. IV Sem.)**

देखा है

ऐ हवा इतना शोर न कर,
मैंने तूफानों को बिखरते देखा है।
तूने उजाड़ा था जिन घरों को,
उन्हें फिर से सँवरते देखा है।

क्या हुआ जो बिखर गए,
मेरे सपने होकर तिनका–तिनका।
मैंने तो तिनका–तिनका हुए
सपनों को भी सँवरते देखा है।

तू मेरी हस्ती को न मिटा सकेगा कभी,
ऐ जमाने सुन ले, मैं वो नहीं हूँ
जिन्हें तूने जिंदगी के लिए तरसते देखा है।

मेरी खामोशी पर ना हँस,
मेरी आँखों की नमी को न देख,
मैंने तुम्हे बेगुनाह लोगों की,
खामोशी से भी डरते देखा है।

वो होंगे कोई ओर जो,
बिखर जाते हैं वक्त की आँधी में,
मैंने हौंसले के आगे वक्त की आँधियों को ठहरते देखा है।
ऐ हवा इतना शोर न कर,
मैंने तूफानों को बिखरते देखा है।

– पूजा डंगवाल (B.Sc. VI Sem.)

मातृभूमि

(पुलवामा में शहीद जवानों को सादर समर्पित रचना)

वह अभिनव अभिमन्यु, गया जब व्यूह भेदने,
साहस भरा, निर्भीक, मनस्वी, युद्ध विशारद
गिरा दिया लघु मिग विमान से बड़े यान को।
यान और दुश्मन दोनों ही,
नभ के युद्धक्षेत्र से हुए तत्काल नदारद,
तभी पीठ पीछे से हुआ वार दुश्मन का,
वह आहत हो गिरा भूमि पर,
वहीं अचानक दुश्मन की थी भूमि, युद्धबंदी बनना था।
तब भी वह सिंह सा निडर था, अंतिम क्षण तक।
आततायी शत्रु के घर में बंदी होगा,
निश्चय हर कष्टोपमान से गुजरना ही था।
पर भारत के गौरव की रक्षा के हित में,
जो कुछ किया वीर ने, उसको करना ही था।
सलाम वीरता को, उस बलिदानी मानस को,
सलाम संकल्पों को, जोश से भरी नस–नस को,
सलाम भारत के सैन्य शिक्षण की प्रखरता को।
जो कुंदन में बदल देती है, स्वर्णिम साहस को,
सलाम, मोदी–सुप्रभा की, कूटनीति के वैश्विक यश को,
लानत राफेल पर विलापियों की हीन कस–मस को।

– रविन्द्र सिंह रौतेला (छात्र संघ अध्यक्ष)

ये पल भी बीत जायेगा

हर कोई यहाँ रोता है,
क्योंकि वह सोचता है, कि बुरा मेरे साथ ही क्यों होता है,
मैं भी इस सोच में डूबी और मेरी यही खता है.....
सोचा क्यों खोई है, मेरी मंजिलें,
क्या मुझसे मेरा खुदा खफा है ?
अनजान हूँ मैं खुद से जबकि मुझे सब पता है,
फिर भी उदास-सी हूँ लगता है, मुझसे मेरा वक्त खफा है।
सोचती हूँ कुछ लोग मुश्किलों में भी खुश कैसे रहते हैं,
लगता है वह वक्त को नहीं बस पल को बुरा कहते हैं।
मन में उलझनें रहती है, मैं खुद से खफा रहती हूँ।
शायद मैं पल को नहीं वक्त को बुरा कहती हूँ।
अब सोचती हूँ कि क्यों हारूँ, मैं जिन्दगी से,
जबकि मेरा खुदा तो मेरे साथ है....
जब मेरे सर पर मेरी प्यारी माँ का हाथ है।
माँ कहती है कि जिंदगी में हौंसला रख,
तेरा हौंसला ही तुझे आगे सफल बनाएगा....
और बुरा हो या अच्छा,
एक दिन ये पल भी बीत जाएगा।

– ***ज्योति बधानी (B.Ed.IV Sem.)***

रंगभेद

इस मुल्क में पैदा होने की गलती करने वालों...
चले जाते हैं जो विदेश,
बोलते हैं परायी भाषा-पहनते हैं अजनबी पोशाक,
और भूल जाते हैं इस मुल्क को, उन्हें मेरा सलाम!
और जो नहीं भूलते,
सदियों तक पीटे जाने के बाद भी नहीं बदलते,
ऐसे बेगैरतों से मैं पूछती हूँ,
क्या कहोगे अगर किसी ने पूछा तुमसे – क्या होता है छुआछूत ?
क्या यह ईश्वर की तरह दिखता है ?
क्या वह खुद में कोढ़ की तस्वीर होता है, या फिर,
धर्माधीशों का दुश्मन ?
क्या वह विधर्मी होता है-एक पापी या फिर नास्तिक ?
बताओ मुझे!
क्या जवाब होगा तुम्हारा ?
क्या तुम बगैर हिचकिचाए कह सकोगे
मैं ही हूँ अछूत ?
इसी से मैं कहती हूँ –
इस मुल्क में पैदा होने की गलती करने वालो!
तुम्हें अब गलती सुधारनी होगी-
या तो देश छोड़ो या युद्ध करो!

– ***श्रद्धा अवस्थी***

(M.A. IInd Sem.)

संघर्ष

संघर्ष करते रह तू साथी, रण में डट कर रह खड़े,
चाहे बना हो चक्रव्यूह, अभिमन्यु जैसा लड़ तो ले।
यूँ ही नहीं मिलती सफलता, हाथ में रख हाथ को,
काँटों भरी राहों पे, नगें पाँव चलना सीख ले।
उपहार फूलों का तुझे, यूँ ही नहीं मिल पाएगा,
जब तक तू तप कर आग में, शोला नहीं बन जाएगा।
सारी सफलताएँ है, चूमेंगी तेरे चरणों को जब,
संघर्ष का प्रण ले के पथ में, तू अकेला चल पड़े।
लग शक्ति का जब बाण लक्ष्मण, ले धारा पे गिर पड़ा,
हनुमान रातों रात हिम से, लंका पर्वत ला पड़ा।
संघर्ष था ये खुद से ही, हनुमान को,
प्रभु काम में विघ्न न हो, उठ जाए जो प्रभु लाल तो।
संघर्ष करते रह तू साथी, रण में डट कर रह खड़े,
चाहे बना हो चक्रव्यूह, अभिमन्यु जैसा लड़ तो ले।
सत्यवान के जब प्राण हर कर, ले गये यमराज थे,
सावित्री भी चल दी यम के पीछे, वापस मुझे पति प्राण दे,
यम हो गए प्रसन्न, पति प्रेम उसका देख कर,
बोलो है मांगो वर कोई, पति प्राण अपने छोड़कर।
वरदान में 100 पुत्र मांगे यम ने भी वर दे दिया।
देने पड़े पति प्राण वापस, यम भी पीछे हट गया,
हो जाएगा तू भी सफल, खुद के बनाए लक्ष्य पर।
बस जीत मन में ठान ले, विश्वास अपने पर तो कर,
संघर्ष करते रह तू साथी, रण में डट कर रह खड़े।
चाहे बना हो चक्रव्यूह, अभिमन्यु जैसा लड़ तो ले।
चल बैठ अब संघर्ष रथ पर, लक्ष्य की तू ओर चल।
और नींद चैन तू त्याग दे, संघर्ष का आरम्भ कर,
तू भेद दे हर लक्ष्य को, अपने ये तीर कमान से,
और जीत कर, तू दुश्मन को भी अपने नाम कर।
असफल अगर हो जाए, तो उठ फिर से एक प्रयास कर।
और छोड़ दे उस हार से, क्या रह गया प्रयत्न में,
इस बार फिर प्रयत्न कर, अनुभव भी अपना डालकर,
संघर्ष करते रह तू साथी, रण में डटकर रह खड़े,
चाहे बना हो चक्रव्यूह, अभिमन्यु जैसा लड़ तो ले।

– ***टिंकी मौलेखी*** **(M.A. IV Sem.)**

खुशी की बहार

जब आप आये तो,
खुशी की बहार आयी।
बागों में खिले गुलशन,
कलियों पर मुस्कान आयी।

हुई जो रात चाँद के संग ही
तारों की बारात आयी
हुआ जो सबेरा
पक्षियों ने शुरू किया चहचहाना।

निकला जो सूरज किरणों
को भी साथ लाया,
जब आप आये तो
खुशी की बहार आयी।

लहरों ने भी सुर-ताल किया
पत्तों ने भी साथ दिया
हवा ने भी मंद-मंद
गीत गाकर आपका स्वागत किया।
''जब आप आये
खुशी की बहार आयी।''

– ***नरेन्द्र कुमार 'प्रेम'*** **(M.A. IInd Sem.)**

भारत माँ की पुकार

भ्रष्टाचार मिटा दो तुम, मेरा देश अमर कर दो,
बन जाओ वीर मेरे, भारत को अमर कर दो।
मैं जंजीर से जकड़ी हूँ, जंजीर को तुम तोड़ो,
जब देश को हो खतरा, यह भेदभाव छोड़ो।
एक तिरंगा लहराकर, तुम मेरी शान अमर कर दो,
बन जाओ वीर मेरे, भारत को अमर कर दो।
भ्रष्टाचार मिटाना है, आज कसम खाएं
फिर से इस भारत को, जन्नत सा चमकाएं।
आतंकवाद मिटाकर तुम, मेरी शान अमर कर दो,
बन जाओ वीर मेरे, भारत को अमर कर दो।
कुछ प्रेम करें ऐसा, जीवन ये बने मधुवन,
हम निकलें जहाँ से भी, महके आँगन-आँगन।
ऐसी महक फैलाकर तुम, मेरी शान अमर कर दो,
बन जाओ वीर मेरे, भारत को अमर कर दो।

– ***नरेन्द्र कुमार 'प्रेम'*** **(M.A. IInd Sem.)**

मजा बचपन का

शब्द नहीं जिनको मैं, लफ्जों में कह सकता हूँ।
बच्चों की पटखटता को, आँखों में बसा सकता हूँ।।
इनको जब भी मैं देखूँ, बस स्तब्ध सा रह जाता हूँ।
भूलकर बस सारी दुनिया, बच्चों में खो जाता हूँ।।
कोई मुझसे कुछ भी कहे, कहाँ मैं किसी की सुनता हूँ।
ऐसे पलों को फिर से जी, बचपन में जा सकता हूँ।।
अब फिर से मैं तो, मन का धनी हो ही सकता हूँ।
जाकर बचपन में फिर से, मजा बचपन का ले सकता हूँ।।
सारी चिंता और फिकर को, बस चुटकी में उड़ा सकता हूँ।
उनकी तरह मुस्कुरा न सकूँ, तो भी संग खेल सकता हूँ।।
रात और दिन के अंतर को, कभी भी भुला सकता हूँ।
जीवन जीने की इस कला को, बस बच्चों के संग कर सकता हूँ।।
भूलकर सारी दुनियादारी, अब फिर से मैं रह सकता हूँ।
जगाकर इस पागलपन को, मजा बचपन का ले सकता हूँ।।

– ***पूनम** (M.A. IInd Sem.)*

माँ पर कविता

लबों पर उसके कभी बद्दुआ नहीं होती,
बस एक माँ है जो कभी खफा नहीं होती,
इस तरह वो मेरे गुनाहो को धो देती है।
माँ बहुत गुस्से में होती है, तो बस रो देती है,
मैंने रोते हुए पोंछे थे किसी दिन आँसू,
मुद्दतो माँ ने नहीं धोया दुपट्टा अपना।
अभी जिन्दा है मेरी माँ मुझे कुछ नहीं होगा,
मैं जब घर से निकलता हूँ तो दुआ भी साथ चलती है मेरे,
जब भी कश्ती मेरी सैलाब में आ जाती है।
माँ दुआ करती हुई ख्वाब में आ जाती है।
ऐ अँधेरे देख ले तेरा मुँह काला हो गया,
माँ ने आँखे खोल दी और घर में उजाला हो गया।

– ***पूनम** (M.A. IInd Sem.)*

माँ

सब का गम कागज पे लिखता हूँ,
आज सोचा की माँ तेरी दास्ताँ भी बयान कर दूँ।
वैसे तो मेरी हर साँस तेरी रहमत की,
मोहताज हूँ मगर मैं आज सबके सामने,
अपनी जिन्दगी तेरे नाम कर दूँ।
मैंने अपनी आँखों के सामने जब–जब तुझे बिलकता देखा है,
माँ तब–तब अपने दिल को धड़कने से रोका है।
मुझे तो याद नहीं वो मंजर बचपन का,
लेकिन लोगों से मैं तेरी दांस्ता सुनता आया हूँ।
तुझे तकलीफों के बदले लाख खुशियाँ दूँ मैं।
माँ में ऐसे लाखों सपने आज तक बुनता आया हूँ।
माँ सुना है तू अपने एक बेटे को खोकर टूट सी गयी थी,
तब कितनी मन्नतों के बाद रब ने,
मुझे भेजकर तेरी गोद फिर से भरी थी।
खुशी से तू फूली समाई नहीं थी कहते हैं
बार–बार माथा चूमती थी।
सुना है उस वक्त तूने खाना पीना छोड़ दिया था,
मुझे तूने सिने से लगाकर जहाँन से मुँह मोड़ लिया था।
टूटी हुई छतों पर से जब रातों को पानी टपकता था,
तब सुना है माँ तब तेरी ममता का अमृत मुझ पर था।

– ***पूनम** (M.A. IInd Sem.)*

जीवन

जीवन एक अवसर है – उसे खोइये मत।
जीवन एक चुनौती है – उसका सामना कीजिए।
जीवन एक सफर है – उसको पूरा कीजिए।
जीवन एक कर्त्तव्य है – उसका पालन कीजिए।
जीवन एक पहेली है – उसे सुलझाइये।
जीवन एक गीत है – उसे गाईए।
जीवन एक प्रण है – उसका पालन कीजिए।
जीवन एक संघर्ष है – उसका द्वन्द्व कीजिए।
जीवन एक अवसर है – उसका सदुपयोग कीजिए।

– ***कविता रावत (B.A. IVth Sem.)***

अनमोल वचन एक चीज

जीतने के लिए कोई चीज है तो – **प्रेम**
पाने के लिए कोई चीज है तो – **क्रोध**
खाने के लिए कोई चीज है तो – **गम**
देने के लिए कोई चीज है तो – **दान**
दिखाने के लिए कोई चीज है तो – **दया**
कहने के लिए कोई चीज है तो – **सत्य**
रखने के लिए कोई चीज है तो – **इज्जत**
फेंकने के लिए कोई चीज है तो – **ईर्ष्या**
छोड़ने के लिए कोई चीज है तो – **मोह**

आज नहीं तो कल हम लोगों को ये एहसास हो ही जायेगा कि अनमोल वचनों का महत्व क्या है, और क्यों।

–***कविता रावत (B.A. IVth Sem.)***

गुरू और शिष्य का अस्तित्व

जैसे कि बच्चे के बिना माँ का अस्तित्व नहीं, भक्तों के बिना भगवान का अस्तित्व नहीं, वैसे ही शिष्य के बिना गुरू का कोई अस्तित्व नहीं होता।

शिष्य ही गुरू का अस्तित्व बनाते हैं, परन्तु गुरु बिना शिष्य ही अधूरा है, बिना गुरु के ज्ञान संभव नहीं है, क्योंकि एक पढ़ा–लिखा परिवार अपने बच्चों को स्कूल भेजता है, कम से कम दो–तीन क्लास तो वो घर में ही पढ़ा सकते हैं लेकिन ऐसा नहीं होता, क्योंकि जब तक बच्चा गुरु की शरण में नहीं जाएगा, उसको सही रास्ता नहीं मिलेगा। एक बच्चे पर माता–पिता से अधिक प्रभाव उसके गुरु का पड़ता है और शिष्य गुरु पर आँखे मूँद कर (अटूट) विश्वास करता है।

गुरु हमारे जो भी कहें, वो पत्थर की लकीर है।
ज्ञान मंगल को तत्पर हम, बने खड़े फकीर हैं।।

इतने बड़े विश्वास पर गुरु का यह कर्तव्य बनता है कि वो अपने शिष्यों को कभी गलत राह ना बताऐं। कभी उनका विश्वास न तोड़े, वही सच्चा गुरु है जो अपने शिष्य का मार्गदर्शन समय पर करता है।

– ***कविता रावत (B.A. IVth Sem.)***

एक सोच

केवल पैसों से आदमी धनवान नहीं होता, असली धनवान वो है, जिसके पास अच्छी सोच, अच्छे दोस्त और अच्छे विचार हैं। यदि खेत में बीज नहीं डाला जाए तो कुदरत उसे घास–फूस से भर देता है। उसी तरह यदि दिमाग में सकारात्मक विचार न डाले जायें तो नकारात्मक विचार वहाँ अपनी जगह बना लेंगे। अब डर लगता है उन लोगों से जो कहते हैं मेरा यकीन तो करो दुनिया में सबसे सुंदर और अच्छी बात हमारी सोच है।

– ***कविता रावत (B.A. IVth Sem.)***

संस्कृतम्

<u>शिक्षक / छात्र–छात्राएं</u>

"वेदों की भाषा संस्कृत सभी भाषाओं की जननी है।"

आख्यानपरम्परायां मेघदूस्य समीक्षणम्

(मूलचन्द्र शुक्लः, असि.प्रोफेसर – संस्कृत विभागे)

महाकविकालिदासविरचितस्य मेघदूतस्य प्रतिनिधिगीतिकाव्यत्वेन महनीयं स्थानं वरीवर्ति। सर्वप्रथमं मेघदूतस्य समीक्षावसरे गीतिकाव्यं किमिति प्रश्ने तस्य लक्षणं केनचिद् विदुषा पुरस्क्रियते –

''भावानामात्मनिष्ठानां कल्पनावलितं लघु।

स्फुरणं गेयरूपेण गीतिकाव्यं निगद्यते।।'' [1]

गीतिकाव्ये प्रायः अधोवर्णितानि तत्त्वानि विलसन्ति –

(1) भावातिरेकः (2) कल्पनात्मकता (3) सङ्गीतात्मकता (4) संक्षिप्तता (4) गेयता इत्यादीनि।

मेघदूतस्य समीक्षात्मकमध्ययने यानि तृत्वानि अपेक्षितानि तानि विधीयन्ते। तद्यथा – ग्रन्थः – मेघदूतम्, रचनाकारः – महाकविकालिदासः, काव्यविधा–गीतिकाव्यं (लघुत्रयी) द्वौ भागौ – पूर्वमेघः। उत्तरमेघः प्रमुखरसः – वियोगश्रृङ्गारः (विप्रलम्भश्रृङ्गार नायकः – यक्षः (हेममाली) एवं नायिका – यक्षिणी (विशालाक्षिणी)। उपजीव्यः – रामायणम् (परं कथानकस्याधारो ब्रह्मवैवर्तपुराणं सन्तिष्ठति)। कवेर्कालः 150 B.C.J : 475 A.D. यावत्। मेघ एव दूतः यस्मिन् (काव्ये) तद् मेघदूतं निगद्यते।

महाकविकालिदासविरचितं मेघदूतं खण्डकाव्यं वर्तते यद् आधुनिक–समीक्षकैः मैक्डोनल–प्रभृतिभिः गीतिकाव्यत्वेनोररीक्रियते (Lyric)।

मन्दाक्रान्ताच्छसि निबद्धस्यास्य श्लोकसङ्ख्याविषये विद्वत्सु मतवैभिन्यं विलोक्यते, तत्र टीकाकारशिरोमणिना मल्लिनाथेन 121 पद्यानि समुल्लिखितानि परं तेन षड् पद्यानि प्रक्षिप्तानि उद्घोष्य न व्याख्यायितानि। अतः 115 पद्यानि प्रायः सर्वमान्यानि सन्ति (पूर्वमेघे 63 उत्तरमेघ च 52 पद्यानि)।

मेघदूते प्रायः पञ्चाशत्तमोऽपि (50) अधिकाः टीकाः विविधभाषासु अस्मत्समक्षं समायान्ति। तत्र विल्सन–महोदयेन 1813 ई0 तिथौ आङ्गलपद्यानुवादेन सह अन्य–वैदेशिक–भाषाभिश्च सह कलिकाता इत्यतः प्रकाशितं काव्यामिदम्। काव्यस्यास्य कथानकं काल्पनिकं विद्यते। कविना कल्पितं यत् अलकापुरी निवासी कश्चन यक्षनामा स्वप्रियतमामत्यन्तं स्निह्यति। स्वामिना कुबेरेण सः एकवर्षाय अभिशप्तः सन् रामगिरौ उवास। रामगिरितः अलकापुरीं यावद् मार्गं मेघं प्रति उवाच च।

ततो मार्गेऽग्रेसरन् पूर्वमेघे मालप्रदेशः नर्मदा, विदिशा, उज्जयिनी, महाकालमन्दिरम् सिप्रानदी, कुरुक्षेत्र, कनखल, गंगानदी, हिमालयः, कैलासः, मानसरोवरः एतेषां समेषां स्थनानां मनोहारि वर्णनं विदधाति। उत्तरमेघे च अलकापुरैः वैभवं वर्णयन् यक्षः कुबेरस्य राजप्रासादस्योत्तरे भागे स्वगृहं सङ्केतयति। तत्र सौन्दर्ययुता मम भार्या निवसति या साम्प्रतं खिन्ना कृशा तुषाररहिता कमलिनी सदृशा भवितुमर्हति तां सम्यक् परिचीय मम सन्देशं ददातु।

मेघदूतस्य भावपक्षः – ''वाक्यं रसात्मकं काव्यम्'' इति विश्वनाथोक्त्या महाकविना काव्येऽस्मिन् भाषासौन्दर्येण सह सौन्दर्य लालित्यपूर्णाः मनोभावा अपि वर्णिताः।

रस : – कुबेरशापेन स्वप्रियावियुक्तस्य यक्षस्य तस्यां प्रेमैव विप्रलम्भत्वे निगद्यते। ''न विना विप्रलम्भेन श्रृङ्गारः पुष्टिमश्नुते'' इत्यनेनोत्कृष्टत्वमपि प्रदर्शितम्। व्यञ्जनावृत्तिद्वारा अन्तरङ्गं बहिरङ्गं स्फुरणशक्तिर्वा काव्येऽस्मिन् प्रत्येकं पङ्क्तौ दरीदृश्यते। अत्र प्रकृतिरपि मानवीयभावनामभिव्यक्तौ साधनं दृष्टिपथमायाति। अधोलिखिते पद्ये मध्यप्रदेशीया विर्विन्ध्या नदी मेघस्य प्रेयसीरूपेण उल्लिखिता यथा –

निर्विन्ध्यायाः पथि भव रसाभ्यन्तरः सन्निपत्य,

स्त्रीणामाद्यं प्रणयवचनं विभ्रमोहि प्रियेषु।[2]

उत्तरमेघे (2/45) इत्यत्र यक्षस्य मनोदशात्यन्तं मार्मिकी विलोक्यते। वियोगे रूष्टायाः प्रियतमायाः चित्रं धातुरागैः शिलातले निर्मीय आत्मानं तस्याः चरणयोः पातयति, कालेऽस्मिन्नेव अश्र ुभिः तस्य दृष्टिः लुप्ता सञ्जायते, अश्रुपूरिते नयने प्रियायाः समागमः कथं भवितुमर्हति। अतएव विधातारं ''क्रूर'' इति पदेन सम्बोध्य उपालभते –

''त्वामालिख्य प्रणयकुपितां धातुरागैः शिलाया –

मात्मानं ते चरणपतितं यावदिच्छामि कर्तुम्।

अस्रैस्तावन्मुहुरूपचितैर्दृष्टिरालुप्यते मे,

क्रूरस्तस्मिन्नपि न सहते सङ्गमं नौ कृतान्तः।।''[3]

वर्णनवैविध्यम् – कालिदासेन मेघदूतनामके लघुग्रन्थे विविधानि सौन्दर्य–लालित्यसंयुतानि मनोहारीणि च वर्णनानि विहितानि वरीवृत्यन्ते। उज्जयिनी–अलकापुरी–इत्यादीनां वर्णनम्।

रामगिरितः अलकापुरीवर्णनक्रमे यद्यपि उज्जयिनी न मिलति तथापि ''वक्रः पन्थाः'' इत्यनेन तस्याः सांस्कृतिकं महत्त्वं विलोक्य कालिदासेन उपेक्षा न कृता। तत्र महाकालमन्दिरे आरतीदर्शनम् अभिसारिकाणांमभिसारञ्च श्लाघ्यं वर्तते।

अलकापुरीवर्णने नारीणां श्रृङ्गारः प्राकृतिकी छविः, आनन्दमयं जीवनं, तत्रत्यं यक्षाणां भोगविलास इत्यादीनि वैविध्यपूर्णानि वर्णनानि पुरस्कृतानि।

पूर्वमेघस्यात्यधिकं भागो बाह्यप्रकृतिं समुपस्थापयति। अत्र प्राकृतिकसौन्दर्यं नैकानि उपादानानि (स्थलानि) वर्णितानि पुरः समायान्ति। यदा मेघः क्लान्तः सञ्जाततदा पर्वतेषु विश्रमति पिपासाशमनाय नदीनां जलं पिबति। तद्यथा –

''खिन्नः-खिन्नः शिखरिषु पदं न्यस्य गन्तासि यत्र।

क्षीणः क्षीणः परिलघु पयः स्रोतसां चोपभुज्य।।''[4]

आषाढमासे आदर्शभारतीयग्रामाणां स्थितिवर्णने दशार्णदेशस्य वैविध्यं पुरस्करोति महाकविः –

''पाण्डुच्छायोपवनवृतयः कैतकैः सूचिभिन्नै –

र्नीडारम्भैर्गृहबलिभुजामाकुलग्रामचैत्याः।''

त्वय्यासन्ने परिणतफलश्यामजम्बूवनान्ताः,

सम्पत्स्यन्ते कतिपय दिनस्थायिहंसा दशार्णाः।। [5]

उत्तरमेघेऽन्तः प्रकृतिवर्णनप्रसङ्गे अलकापुर्याश्च शोभावर्णने, तत्र सर्वाण्यपि वस्तूनि स्वयमेव सर्वदैव सुलभानि सम्भवन्ति यतः षण्णामृतूनां पदार्थानामुपयोगः तत्रत्याभिः स्त्रीभिः (सुन्दरीभिः) क्रियते –

''हस्ते लीलाकमलमलके बालकुन्दानुविद्धं

सीमन्ते च त्वदुपगमजं यत्र नीपं वधूनाम्।।''[6]

मेघदूतस्य कलापक्ष : – अत्र भाषाशैली छन्दचयनम् अलङ्कारनिवेशश्च सन्दर्भेऽस्मिन् विचार्यते।

भाषालालित्यदृष्ट्या काव्यमिदं स्वाभाविकेन सह ध्वन्यात्मकतां द्विगुणयति। यथा –

जातं वंशे भुवनविदिते पुष्करावर्तकानां,

जानामि त्वां प्रकृतिपुरुषं कामरूपं मघोनः।।[7]

सम्पूर्णेऽपि काव्ये मन्दाक्रान्ताच्छन्दो वर्णिता वर्तते।''मन्दाक्रान्ताम्बुधि रसनगैर्मोभनौ तौ गयुग्मम्''इति लक्षणात्।

एवमेव उपमा–उत्प्रेक्षा – अर्थान्तरन्यास – इत्यादय अलङ्काराः महाकविना स्वाभाविकरूपेण विन्यस्ताः सन्ति, परं ''उपमाकालिदासस्य''इत्यनया सूक्त्या उपमायाः अत्यधिकं वैशिष्ट्यपूर्णं वर्णनं पुरस्कृतम्। तद्यथा–

''बर्हेणेव स्फुरितरुचिना गोपवेषस्य विष्णोः''[8]

''अर्थान्तरन्यासस्य सन्दर्भे कालिदासो विशिष्यते'' इत्याभाणकेनार्थान्त रन्याससन्दर्भ उपस्थाप्यते –

''राशीभूतः प्रतिदिनमिव त्र्यम्बकस्याट्टहास''[9]

मेघदूतसमीक्षणम् – प्राक्कालिकविद्वद्भिः ''माघे मेघे गतं वयः'' इत्याभाणकेन कालिदासस्य प्रातिभज्ञानविज्ञानं शिखर–मधितिष्ठति। अतएव मेघकाव्यस्य लोकप्रियत्वं भावप्रवणताञ्च दृग्गोचरीभवति। आचार्यभामहेन ''काव्यालङ्कारे'' अचेतनमेघ–द्वारा प्रणयसन्देशप्रेषणे ''अयुक्तिमत्'' दोषः पुरस्क्रियते। परं महाकविना विषयोऽयं ''कामार्ता हि प्रकृतिकृपणाश्चेतनाचेतनेषु'' इत्यनेन परिहार्यते।

मेघदूतस्थभावव्यञ्जनया प्रभावितः सन् जर्मनमहाकविः ''गेटे'' महोदय अवोचत् –

''मेघदूत एक ऐसा काव्य है जिसे अपनी हृदय–स्वामिनी के पास कौन नहीं भेजना चाहेगा ? ऐसे ग्रन्थ से परिचय होना जीवन की महत्त्वपूर्ण घटना होती है।''[10]

ए.बी.कीथ महाभान काव्यमिदं ''शोककाव्यं'' निगदितम्, यन्न समीचीनं प्रतिभाति। यतोहि काव्येऽस्मिन् विप्रलम्भश्रृङ्गारः न तु करुणरसो वर्णितः। एक वर्षानन्तरमुभयोः समागमो भविता इति कल्पयित्वा सन्देशं मेघमाध्यमेन प्रेषयति, तत्र साम्प्रतं चत्वारो मासा अवशिष्यन्ते।

''पश्चादावां विरहगुणितं तं तमात्माभिलाषं,

निर्वेक्ष्यावः परिणत – शरच्चन्द्रिकासु क्षपासु।।''[11]

विप्रलम्भश्रृङ्गारे रतिः स्थायिभावेन निवसति, केवलं नायक–नायिकयोः विरहो वर्ण्यते, न तु शोकाभित्यक्तिः भवति तत्र।

पुनश्च भामहेन काव्यमिदं काव्यालङ्कारे स्वीक्रियते यत्–

''यदि चोत्कण्ठया यत्तदुन्मत्त इव भाषते।

तथा भवतु भूम्नेदं सुमेधोभिः प्रयुज्यते।।''

''वैदर्भीरीसन्दर्भे कालिदासो विशिष्यते'' अस्मै काव्याय ''नियतिकृतनियमरहिता कविनिर्मितिः''
इति सर्वथोपयुज्यते।
कथानकस्याधारत्वेन वाल्मीकीयरामायणं विद्वद्भिः मन्यते,
प्रमाणीक्रियते च ''जनकतनयास्नानपुण्योदकेषु''[12]

मल्लिनाथेनापि मेघदूतस्थप्रथमपद्यटीकावसरेऽभिव्यनक्ति यत्- ''सीता प्रति रामस्य हनुमत्सन्देशं मनसि निधाय मेघसन्देशं कविः कृतवानित्याहुः''। गीता मेघदूतञ्च काव्यद्वयमपि अत्यधिकं लोकप्रियं ग्रन्थरत्नं समाजे समानीतम्। संस्कृतसाहित्ये मेघदूतस्यानुकरणं द्विविधं कृतं वर्तते। जैनकविभिः समस्यापूर्तये अन्यैश्च सन्देश प्रेषणाय।
मन्दाक्रान्ताच्छन्दसि निबद्धेऽस्मिन् काव्ये भारतीयभौगोलिकं वैविध्यं सुतरां वर्णितं विलोक्यते।
निष्कर्षतः वक्तुं शक्यते यत् काव्यमिदं भाषा-भाव-उभयविधदृष्ट्या निश्चप्रचं वैशिष्ट्यसमन्वितं सन्तिष्ठति।

सन्दर्भाः -

1. डॉ. उमाशङ्कर शर्मा, सं0सा0 इति0, पृष्ठ-326
2. कालिदास, पूर्वमेघ (1/30)
3. मेघदूतम् (2/45)
4. मेघदूतम् (1/13)
5. मेघदूतम् (1/25)
6. मेघदूतम् (2/2)
7. मेघदूतम् (1/5)
8. मेघदूतम् (1/15)
9. मेघदूतम् (1/16)
10. विष्टरनित्स, भा0सा0 इति0, हि0 अनु0 भाग-03, खण्ड-01, पृष्ठ-150
11. मेघदूतम् (2/50)
12. मेघदूतम् (01/1)

संस्कृत भाषा

प्रत्येकस्य देशस्य स्वभाषा भवति यस्य देशस्य स्वभाषा नास्ति हस्य गणना स्वतन्त्ररूपेण न भदितुं शक्नोति। भारतस्य इयं संस्कृतभाषा संसारस्य सर्वासु भाषासु प्रीचनतमा सरला मधुरा सुगनावषोधा च अस्ति! पुरा इयमेव भाषन भारतस्य राष्ट्रभाषा आसीत्। द्वादशशतकयर्यन्तं तु राज्ञः भोजस्य शासने इयमेव भाषा जनसामान्यस्य भाषा राष्ट्रभाषा च आसीत। ततः परमापि अस्यामेव भाषायां अनेके काव्यानाटकारिसंस्कृतग्रन्था: लिखिता मिलन्ति अद्यापि इयं भाषा जीविता अस्ति, अतः आकाशवाणीतः प्रतिदिनं संस्कृतभाषायां समाचाराः प्रसारिता भवन्ति। इयमेव भाषा देवभाषा देववाणी, गीर्वाणवाणी भारती इति पदैः व्यवहना भवित।

अस्याम् भाषायां विश्वविश्रुताः वेदाः ब्राह्मणग्रन्थाः आरव्यकग्रन्थाः उपनिषदः धर्मसूत्राणि, स्मृतिग्रन्थ आदि महाकाव्यम् रामागयम् अष्टादशपुरात्रादि, धनुर्वेद अष्टांग आयुर्वेद ग्रन्थाः व्याकरण कल्प, ज्योतिष-कल्प-न्याय मीमांसाः इति षडङ्गम् साहित्यम् सहत्रशः कान्यनाटक-कथा-साहित्य ग्रन्थाः लिखिता सन्ति। इर्दशं विशालं ज्ञानेन विज्ञानेन च परिपूर्ण साहित्यम् अन्यासु विश्व भाषासु न उपलभ्यते। आधुनिकासु प्रचलिताषु भारतीय भाषासु संस्कृत-भाषा मूलरूपेण स्थिता अस्ति। काश्मीरतः कन्याकुमारी यावत गुजराततः आसामं पर्यन्तं गृहे-गृहे अस्माकं धार्मिक-संस्काराः संस्कृत भाषायामेव सम्पदिताः भवन्ति। यत् सत्यम्-इयमेव भाषा भारतम् एकसूत्रे बधनाति।

यदा प्रभृटि भारतदेशः पराधीनः अभवत् तदा प्रभृटि वैदेशिक भाषायाः प्रचारेण प्रसारेण च संस्कृत-भाषा स्वल्पप्रवादा जाता। कुटनीतिज्ञाः वैदेशिकाः भारते स्वभाषां प्रोत्साहयितुं संस्कृतभाषां च हतोत्साहयितुं राजभाषा-पदे स्वरं भावाम् आरोपिताम् अकुर्वन। ते च भारतीयानां ताहशी मानसिकदुर्दलताम् अकुर्वन यतः वयं स्वाधीनोर्ऽडन स्वभारते स्वगृहे, समाजे राजभार्ये च स्वभाषा प्रयोक्तुं लज्जामहे। संविधाने राष्ट्रभाषा पदे हिन्दी भाषा आदि मंजूषायां वद्धा इव दृश्यन्ते। अतः अस्मानं भारतीयानां परमं कर्तव्यमस्ति यत् राष्ट्रभाषा हिन्द्याः प्रचाराय प्रसाराय अस्माभिः संस्कृतभाषायाः अध्ययनम् अध्यापनम् करणीयम्।

हिन्दी भाषा अपि संस्कृतभाषायाः अपभ्रंश भाषा अस्ति। अतः हिन्दी भाषायाः पोषणार्थ संस्कृतभाषायाः पोषणम् परमानश्यकम् अस्ति। समग्रासु भारतीय भाषासु च जीवनं अपि संस्कृत भाषायाः अध्ययनअध्यापनम् च अत्यावश्यकयस्ति।

संस्कृत भाषा स्वयमपि चिरात् भारतस्य साहित्यकी भाषा आसीत्। अतः भारतीयानाम् दिदुषां ज्ञान-विज्ञानस्य विचारधारा अपि अस्यामेद भाषायाम् अस्ति। अस्याः भाषायाः गद्ये-पद्ये च नालित्यम् भावबोध सामर्थ्यम्, श्रुतिमाधुर्यम् सर्वस्व विद्यते। किं बहुना चरित्र निर्माणस्य यादृशी प्रेरणा संस्कृत भाषा ददाति न तादृशी अन्या भाषा।

मानवीय गुणानां पोषणम् दया, दानम, शौचम्, अहिंसा, सहिष्णुता, विश्वद-धुता च अनेके गुणाः संस्कृतसाहित्यान्दशीलनेन जायन्ते।

उक्तम् च भदीये काव्ये -

धन्या भारती भाषा यथा धन्यो हि भारतम्।
गंगा-प्रचाहवत् यत्त गीता गोविनद सत्कथा।।

- डॉ. देवकीनन्दन जोशी (असि.प्रो. भूगोल)

दर्शनशास्त्रः (चार्वाकदर्शन)

दर्शनशास्त्र मध्ये चार्वाकदर्शन स्थानम्

चारूः (सुन्दरम्) वाको (वचनम्) यस्येति यौगिक व्युत्पत्याः सुन्दरवचनप्रतिपादनपरं दर्शन इत्यर्थो लभ्यते इति।

अस्य चार्वाकदर्शनस्य प्रवक्ताऽचार्यो बृहस्पतिरस्तीति अभियुक्तोक्त्वा ज्ञायते। अत एवेंद दर्शनं बृहस्पति दर्शनम् इत्युच्यते। लोकयतदर्शनम् अपस्यास्ति नामान्तरम् इदम्चास्त्यन्वर्धकं नाम, यतो लोकेषु (जगत्सु) सर्वत्र आयतम् (विस्तीर्णम्) इति च तदर्थः। इदानीन्तनकालावच्छेदेन सर्वोऽपि लोकः चार्वाकमतं सिद्धान्तानुसरति। प्रमाणदृष्टया विचार्यमणि प्रत्यक्ष प्रमाणस्यैव प्रामाण्यं स्वीकरोति लोकोऽपि। व्यवहारदर्शनेन तु सर्वेऽपि सन्ति प्रायः चार्वाका एव, प्रतीयन्ते च तथैवेति।

चार्वाकनये इन्द्रीयजन्यज्ञानस्य विषयः स एव पारमार्थिकः सत्यः। अनुमानप्रमाणजन्य ज्ञानस्य विषयः, एवं शब्दप्रमाणजन्यज्ञानस्य विषयोऽपि तन्मते नास्ति पारमार्थिकसत्तवान् सत्योवेति। चार्वादर्शन सिद्धान्त प्रदर्शनपाणि सूत्राणि साक्षादाचार्यप्रवरः श्री वृहस्पतिरेव प्रणीतवान इति श्रूयते प्रमाणिकैः गुरुकोटिकैः इति तेषां सूत्राणामितस्ततो दर्शनान्तरसम्बद्ध ग्रन्थेषु श्रवणात् समुल्लेखाद्वा श्रावणप्रत्यक्ष विषयतामात्रं सम्पाद्यते शिते निश्चीयते च। नीह तानिसूत्राणि अद्यतनकालावच्छेदेनापि कश्चिद् दार्शनिको विपश्चित् निमातुं शक्तिधरोऽनुभूयते –

''यावज्जीवेत् सुखं जीवेत्।

प्रच्णं कृत्वा घृतं पिबेत्।।''

इति च प्रतपादनपरं चार्वाकदर्शनं केनचित् चार्वाक नामकेन दैत्येन प्रणीत मित्यपि केचिद् दार्शनिका वदन्ति विवदन्ते चात्र बहवः।

चार्वाकाणां बहुत्वात् सन्ति केचन शरीर आत्मवादिन।ः अपरे चैन्द्रियात्मवादिनः, अन्ये च प्राणात्मवादिनः, इत्यादिरूपेण तेषां वर्णनं वैविध्येन मिलति ग्रन्थान्तरेषु वेदान्तसारप्रभृतिषु। वार्चाकस्याऽयमप्याशयः – यद् येषां पदार्थानां प्रत्यक्ष–प्रमाणातिरिक्ताऽमान – शब्दादिभिः प्रमाणैः सिद्धः क्रियते चार्वाकमते सन्ति ते पदार्था मिथ्याभूताः स्वास्तित्वविहीश्चेति मन्तव्यम्।

चार्वादर्शने पृथ्वी, जल, तेजो, वायवश्चेति सन्ति केवलं चत्वारि द्रव्याणि प्रत्यक्षप्रमाणजन्य ज्ञानविषयीभूतानि।

ऐतेषां प्रत्येकं जड़भूतानामपि चतुर्णामेव वैजात्यमापन्नानां द्रव्याणां परस्परं सम्मेललेन सम्पाद्यमाने शरीरे चैतन्यमुपजायते। एवचैतन्मते चैतन्यं शरीरनिष्टमेव अर्थात् शरीरस्यैव धर्मश्चैतन्यमित्यतः। शरीरमेवाऽऽत्मा इति चार्वाको वदति। शरीरातिरिक्तः कश्चिचेतन आत्मा न्यायवैशेषिकाभिमतः, सांरण्यप्रभृतिदार्शनिकाभिमतो वेति नूनं विचार्यताम्।

पृथ्वी–जल–तेजो–वायु–स्वरूप चतुर्दद्रव्योत्पनं जगदिदं प्रतिभासमानं सत् समनुभूयते। एतेषां चतुर्णां जड़–पदार्थानां पारस्परिक संयोगेनैव चैतन्योत्पत्तिर्जायते। यथा–मधुघृतादित्वेकत्र कृतेषु अर्थात् परस्परं यंयुक्तेषु प्रत्येकं मध्वादौ स्वास्तित्वविहीना सती काचिदेका शक्तिर्विजातिया तेषां चतुर्णामेव द्रव्याणां सम्बन्धविशेषमहिम्ना जायते।

अङ्गनालिङ्गनादिजन्यं केवलमिह लौकिकं सुखमेव पुरुषार्थः स एव च स्वर्गपदाभिधेयतां गच्छति। प्रियवस्तुनो वियोगेनाऽप्रियवस्तुनः संयोगेन च जायमानं दुःखमेव चास्ति नरकः। एतन्मते जगति सुखस्यैवोपादेयत्वं सिद्धयति निश्चीयते च। यद्यपि सुखस्य सर्वमतेनोपादेयत्वं सिद्धमेव नाऽसिद्धमिति पुनः पूर्वप्रबन्धेन तत्साधने सिद्धसाधनो दोषः समागच्छति।

परन्तु तथापि चार्वाकमते सन्मार्गेण असन्मार्गेण वा केनापि मार्गेण सुखं जायतामिति सुखप्राप्तिरेव चास्ति सर्वथा जीवनस्य प्रधानोद्देश्यीभूता तथा चोक्तम् –

''यावज्जीवेत् सुखं जीवेत् प्रच्छ्णं कृत्वाच घृतं पिबेत्।
भस्मीभूतस्य देहस्य पुनरागमनं कुतः।।''

(चार्वाकषष्टिः)

एवं स्थितेऽङ्गनाऽऽलिङ्गनादिजन्यस्य धर्मादिरूप कारणाजन्यस्य स्वर्गरूपफलस्य सम्प्राप्तिरेव पुरुषार्थः। एतन्मते धर्माधर्मौ नहि सुःखदुःखयोः कारणे स्वतः भवितुं वाऽर्हतः, अपितु प्रियवस्तुनः वियोगस्य– अप्रियवस्तुनः संयोगस्य च धर्माऽधर्मौ प्रति हेतुत्वात् इति।

चार्वाका अर्थकामयोरेव पुरुषार्थत्वं स्वीकुर्वन्ति, ''आद्यन्तौ टकितौ'' इति न्यायेनाऽऽद्यन्तयोः टित् कित् संज्ञानतत्वात् तादृशसंज्ञायां एव धर्मस्याऽपुरुषार्थतायां मानत्वात्। तत्वतो धर्मस्य पुरुषार्थत्वमेव नास्ति। तस्य स्वयमेव खपुष्पायितत्वात् वन्ध्यापुत्रस्य चार्वाकस्य हार्दिकोभिप्रायः। अर्थात् यथा वन्ध्यापुत्रस्य, खपुष्पस्य च नास्ति किमपि सत्वम्। केवलं शब्दानुपूर्विमात्रमेव समनुभूयते न तु तत्र चास्ति काप्यार्थानुपूर्वी तस्याः सर्वथा समप्तत्वात्।

चार्वाकः चार्वाकदर्शनं वा मोक्षविषये चेत्थं विचारयति यत् – देहोच्छेदरूपस्य मोक्षस्यापि नास्ति पुरुषार्थत्वम्। यतः मोक्षस्याऽधारः आत्यन्तिक दुःख निवृत्ति मोक्षस्तस्यानुभव विधानन्तु, तथा प्राप्तिस्तु इनानीमप्यत्रैव भवितुमर्हति तेषां येषां पयोदधियुतस्य, सघृतस्य, भोजनस्य अङ्गनालिङ्गना देश्चाऽिस्त समीचीना साध्वी व्यवस्थेति ध्येयम्।

अपि च धर्मशास्त्रिणो वा वेदशास्त्रिणो वा तथा अन्यशास्त्रशास्त्रिणो वा केवलं धर्माऽधर्मयोः ईश्वरस्य च विभीषिकां प्रदाय वेदशास्त्र अधिकृत्य संचाल्यमानं लोकायतं निखिलमपि नित्यम्। नैमित्तिकञ्च वेदोक्तं कर्मकाण्डम् अस्या उदरदर्या आहोस्विजीविकाया उपायभूतं प्रभूतं साधनं कथयन्तो जनान् वराकान् सम्मोहयन्ति व्यामोहयन्ति मदयन्ति भ्रमाध्यकारे ज्ञानान्धकारे वा पात्यन्ति। उक्तञ्च –

''अग्निहोत्रं प्रयो वेदास्त्रिदण्डं भस्मगुष्ठनम्।
बुद्धिपौरुषहीनानां जीविकेति बृहस्पतिः।।'' **(चार्वाकषष्टिः)**

अपि च –

''अङ्गनालिङ्गनाज्जन्यं सुखमेव पुमर्थता।
कण्टकादिव्यथाजन्यं दुःखं निरय उच्यते।।''

''निहतस्य पशोर्यज्ञे स्वर्गप्राप्तिर्यदीष्यते।
स्वपिता यजमानेन किन्नु तस्मान्न हन्यते''।। **(विष्णुपुराण)**

– ***हेमचन्द्र जोशी (M.A. IInd Sem.)***

संस्कृत भाषाय: महत्त्वम्

संस्कृतभाषाया: महत्त्वं तु संस्कृतशब्द एव द्योतयति, यत: सर्वमेव संस्कृतं वस्तु श्रेष्ठं महत्त्वपूर्णञ्च भवति। यथा संस्कारेण एव रत्नस्य रत्नत्वं द्विजस्य द्विजत्वं च दृश्यते इयं संस्कृतभाषा देवानां वाणी अस्ति। अत: देववाणी इति प्रोच्यते।

रामायणकाले महाभारतकाले च संस्कृतभाषैव लोकव्यवहार भाषाऽभूदिति पाश्चात्त्यैरपि निर्विवादम् उररीक्रियते। यथा सृष्टं साहित्यं ग्रीक-लैटिनादि-भाषापेक्षया समधिकम्। सा एव भाषा सर्वासु भाषासु प्राचीनतमा श्रेष्ठा प्रेष्ठा विश्ववन्द्या च भवति, यस्या: सकाशे सकलभौतिका: भौतिक-तत्त्वविवेचनाय शब्दभाण्डागारो भवन्ति। प्राचीनकाले संस्कृतमेव वृहत्तमस्य भारतवर्षस्य राष्ट्रभाषा आसीत्।

सर्वासु भारतीयासु भाषासु प्रतिशतकं षष्टिशब्दा: संस्कृतभाषायामे एव सन्ति। तदानीं निम्नवर्णा: परिचरा अपि संस्कृतभाषायामेव भाषन्तेस्म। किन्तु सम्प्रति संस्कृतभाषायां न तादृशं स्थानं दृश्यते। विद्यालयेषु तादृशी शिक्षा अपि न प्रदीयते। न तु जना: व्यवहरन्ति, संस्कृतभाषाया: प्रचाराय प्रसाराय च सरलभाषायां संस्कृतपत्राणां प्रकाशनं कुर्यात् तत्र परीक्षोपयोगिनो विषया: मनोहारिण्य: कथा: कविताश्च प्रकाशनीया:। येन जना: तदध्ययनेन स्वाभिरुचिं प्रदर्शयेयु:, विद्वद्भिश्च सरलायां संस्कृतभाषायां पुस्तकान्यपि प्रकाशनीयानि।

प्रशासकै: आकाशवाणी-दूरदर्शनद्वारा संस्कृतस्य प्रचाराय प्रसाराय च प्रबन्धोऽपि कार्य:। समये-समये संस्कृत-नाटकाभिनयै: चलचित्र-प्रदर्शकैश्च संस्कृतम्प्रति लोकानामभिरुचिरुत्पादनीया संस्कृतभाषाया: अध्ययनाध्यापनविधौ कश्चित् परिष्कारोऽपि कर्तव्य:। संस्कृताध्ययनशीलानां विद्यार्थिनां कृते छात्रवृत्तिप्रदानस्य व्यवस्थापि कर्तव्या। प्रशासकै: समये-समये विद्यालयादिषु संस्कृत-प्रतियोगिताया: आयोजनं कर्त्तव्यं तत्र विजयिणां छात्राणां प्रोत्साहनार्थ पुरस्कारादिवितरणस्य प्रबन्धोऽपि कार्य: शासनद्वारा अखिल - भारतवर्षे स्थाने-स्थाने संस्कृतविद्यालयानां स्थापना कार्या यत्र विविधविषयाणां अध्ययनाध्यापनव्यवस्था भवेत् तत्र राज्याधिकारिणां प्रथमत: इदं कर्त्तव्यमस्ति यत् सर्वेषु विद्यालयेषु संस्कृतभाषाया: अध्ययनं अनिवार्य रूपेण कुर्यु:।

अद्य तु जना: तामेव भाषामध्येतुं प्रवृत्ता: भवन्ति या भाषा 'अधिकारी' भवेत्। अतोऽस्माभिरहर्निशम् अस्या: भाषाया: अर्थ - करीसम्पादनाय प्रयत्नो विधेय: किन्तु तदर्थं राज्य-साहाय्यमपेक्षते। यतश्च या भाषां राज्याश्रिता भवति। सैव अर्थकरी समुन्नताम च भाषा दृश्यते। भोजराजकाले इयं भाषा व्यावहारिकी भाषा आसीत्। तदानीं निग्नवर्णां परिचारका अपि संस्कृतभाषाम्ेव भाषान्तेस्म। किन्तु सम्प्रति संस्कृतभाषाया: न तादृशं स्थानं दृश्यते। यस्यां योग-शास्त्रादारभ्य भोगशास्त्रपर्यन्तं शोभते साहित्यम्।

– ***कविता पाण्डेय* (B.A. IIth Sem.)**

सुभाषितानि

प्रारभ्यते न खलु विघ्नभयेन नीचैः, प्रारभ्य विघ्नविहता विरमन्ति मध्याः।

विघ्नैः पुनः पुनरपि प्रतिहन्यमानाः, प्रारब्धमुत्तमजनाः न परित्यजन्ति।।1।।

अर्थ – अधम श्रेणी के पुरुषों के द्वारा विघ्न के भय से निश्चय ही कार्य का प्रारम्भ नहीं किया जाता है। मध्यम श्रेणी के पुरुष प्रारम्भ करके विघ्नों से पीड़ित होकर कार्य से विरत हो जाते हैं। उत्तम श्रेणी के पुरुष विघ्नों से बार–बार पीड़ित होते हुए भी प्रारम्भ किये गये कार्य को नहीं छोड़ते हैं।

यस्यास्ति वित्तं स नरः कुलीनः, स पण्डितः स श्रुतवान् गुणज्ञः।

स एव वक्ता स च दर्शनीयः, सर्वे गुणाः काञ्चनमाश्रयन्ति।।2।।

अर्थ – जिसके पास धन है, वह मनुष्य श्रेष्ठ कुल में उत्पन्न है। वह पण्डित है, वह वेदशास्त्र में पारंगत है, गुणों का जानने वाला है, वह ही बोलने वाला है और वह देखने योग्य है। सारे गुण सुवर्ण अर्थात् धन का ही आश्रय लेते हैं।

आज्ञा कीर्तिः पालनं ब्राह्मणानां, दानं भोगो मित्रसंरक्षणं च।

येषामेते षड्गुणाः न प्रवृत्ताः, कोऽर्थस्तेषां पार्थिवोपाश्रयेण।।3।।

अर्थ – हे राजन्! आज्ञा करना, यश प्राप्त करना, ब्राह्मणों का पालन करना, दान देना, ऐश्वर्य का उपभोग करना और मित्रों की रक्षा करना – ये छः गुण जिनके उपस्थित नहीं है, उनके आश्रय से क्या लाभ ? अर्थात् कुछ भी नहीं।

विपदि धैर्यमथाभ्युदये क्षमा, सदसि वाक्पटुता युधि विक्रमः।

यशसि चाऽभिरुचिर्व्यसनं श्रुतौ, प्रकृतिसिद्धमिदं हि महात्मनाम्।।4।।

अर्थ – विपत्ति में धैर्य, अभ्युदय में सहिष्णुता, सभा में वाक्चातुरी, युद्ध में वीरता, यश में उत्कण्ठा, वेदशास्त्र विषयक अनुराग ये गुण महापुरुषों के स्वभाव में ही पाये जाते हैं।

आरम्भगुर्वी क्षयिणी क्रमेण, लघ्वी पुरा वृद्धिमती च पश्चात्।

दिनस्य पूर्वार्द्ध-परार्द्धभिन्ना, छायेव मैत्री खल-सज्जनानाम्।।5।।

अर्थ – खलों तथा शिष्टों की मित्रता दिन के पूर्वार्ध तथा उत्तरार्द्ध की छाया के समान अलग–अलग होती है। खलों की मित्रता छाया की तरह आरम्भ में बड़ी तथा फिर क्रम से घटती हुई होती है और सज्जनों की मित्रता उत्तरार्ध की छाया की तरह पहले छोटी तथा पश्चात् बढ़ने वाली होती है।

– *भारती पाठक* **(B.A.-II Sem.)**

सुभाषित श्लोकाः

क्वचिद्भूमौ शय्या क्वचिदति च पर्यङ्कशयनः, क्वचिप्छाकाहारी, क्वचिदपि च शाल्योदनरूचिः।

क्वचित्कन्थाधारी क्वचिदपि च दिव्याम्बरधरो, मनस्वी कार्यार्थी न गणपति दुखं न च सुखम्।।

हिन्दी अनुवाद – कार्यसिद्धि चाहने वाला महामना पुरुष कभी भूमि पर सोता है, तो कभी पलंग परं, कभी साग खाता है, तो कभी महार्ध भारत का आस्वादन लेता है। कभी जीर्ण वस्त्र धारण करता है, तो कभी दिव्य वस्त्र धारण करता है (तथापि वह) सुख और दुख की गणना नहीं करता है अर्थात् सुख एवं दु:ख दोनों ही स्थितियों में महापुरुष समान रहते हैं।

केयूराणि न भूषयन्ति पुरुषं हारा न चन्द्रोज्ज्वला, न स्नानं न विलेपनं न कुसमं नालङ्कता मूर्द्धजाः।

वाण्येका समलङ्करोति पुरुषं, या संस्कृताधार्यते, क्षीयन्ते खलु भूषणनि सततं, वाम्भूषण भूषणम्।।

हिन्दी अनुवाद – मनुष्य को न तो बाहुभूषण आभूषित करते हैं और न ही चन्द्रनिर्मल हार। स्नान व चन्दनानुलेपन पुष्प और न केशों का अलंकृत विन्यास, एकमात्र संस्कारित वाणी ही धारण करने पर मनुष्य को अलंकृत करती है। काल के प्रवाह में अभी आभूषण निश्चय ही नष्ट हो जाते है। परन्तु वाणी का भूषण सदा भूषण ही रहा है। अर्थात् सुसंस्कृत/सभ्यतायुक्त वाणी ही (विद्या) मनुष्य का स्थायी आभूषण (गहना) होता है, जबकि अन्य आभूषण समयानुसार नष्ट होते रहते हैं।

आरम्भगुर्वी क्षयिणी क्रमेण, लहवी पुरा वृद्धिमति च पश्चात्।

दिनस्य पूर्वाद्धीभिन्न, छायेव मैत्री खल-सज्जनानाम्।।

हिन्दी अनुवाद – खलों तथा शिष्टों की मित्रता दिन के पूर्वार्ध तथा उत्तरार्द्ध की छाया के समान अलग-अलग होती है (यथा) खलों की मित्रता छाया की तरह आरम्भ में बड़ी तथा फिर क्रम से घटती हुई होती है और सज्जनों की मित्रता उत्तरार्द्ध की छाया की तरह पहले छोटी तथा पश्चात् बढ़ने वाली होती है।

निन्दन्तु नीतिनिपुणा यदि वा स्तुवन्तु, लक्ष्मीः समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम्।

अद्यैव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा, न्याय्यात्पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः।।

हिन्दी अनुवाद – नीतिचतुर निन्दा करें अथवा स्तुति करें। इच्छानुकूल सम्पत्ति आवे अथवा दूर चली जाय, आज ही मरण हो अथवा युग में परन्तु न्यायोचित मार्ग से धैर्यशील मनुष्य एक पग भी विचलित नहीं होते हैं।

को लाभो - गुणिसङ्गमः किमसुखं - प्रोज्ञेतैरैः सङ्गतिः, का हानिः समयच्युतिर्निपुणता का धर्मतत्त्वे रतिः।

को शूरो विजितेन्द्रियः प्रियतमा काऽनुव्रता किं धनं, विद्या किं सुखमप्रवासगमनं राज्यं किमाज्ञाफलम्।।

हिन्दी अनुवाद – इस संसार में गुणियों के साथ से लाभ क्या है, दु:ख क्या है, मूर्खों को संग से हानि क्या है? समय का चूकना, चतुरता क्या है। धर्म के तत्त्वज्ञान में प्रीती, शूर कौन हैं? जिसने इन्द्रियों को जीत लिया हो, एवं प्रियतमा स्त्री कौन सी है? जो अनुकूल हो, धन क्या है? विद्या एवं सुख क्या है, परदेश न जाना, राज्य क्या है। आदेश (राजाज्ञा) का निर्बाध क्रियान्वयन होना।

– ***हेमलता (B.A. IInd Sem.)***

संस्कृत के कुछ श्लोक भावार्थ सहित

उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः।

न हि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः।।

अर्थात्- उद्यम, अर्थात् मेहनत से ही कार्य पूरे होते हैं, केवल इच्छा मात्र करने से नहीं। जैसे सोये हुए शेर के मुँह में हिरण स्वयं प्रवेश नहीं करता, बल्कि शेर को स्वयं ही प्रयास करना पड़ता है।

वाणी रसवती यस्य, यस्य श्रमवती क्रिया।

लक्ष्मी दानवती यस्य, सफलं तस्य जीवितम्।।

अर्थात्- जिस मनुष्य की वाणी मीठी है, जिसका कार्य परिश्रम से युक्त है, जिसका धन दान करने में प्रयुक्त होता है, उसका जीवन सफल है।

प्रदोषे दीपकः चन्द्रः, प्रभाते दीपकः रविः।

त्रैलोक्ये दीपकः धर्मः, सुपुत्रः कुलदीपकः।।

अर्थात्- संध्या-काल में चन्द्रमा दीपक है, प्रातःकाल में सूर्य दीपक है, तीनों लोकों में धर्म दीपक है और सुपुत्र कुल का दीपक होता है।

प्रियवाक्यप्रदानेन सर्वे तुष्यन्ति जन्तवः।

तस्मात तदेव वक्तव्यं वचने का दरिद्रता।।

अर्थात्- प्रिय वाक्य बोलने से सभी जीव संतुष्ट हो जाते हैं, अतः प्रिय वचन ही बोलने चाहिए, ऐसे वचन बोलने में कंजूसी कैसी।

सेवितव्यो महावृक्षः फलच्छाया समन्वितः।

यदि दैवाद् फलं नास्ति, छाया केन निवार्यते।।

अर्थात्- विशाल वृक्ष की सेवा करनी चाहिए क्योंकि वो फल और छाया दोनों से युक्त होता है। यदि दुर्भाग्य से फल नहीं है तो छाया को भला कौन रोक सकता है।

देवो रुष्टे गुरुस्त्राता गुरो रुष्टे न कश्चन।

गुरुस्त्राता गुरुस्त्राता गुरुस्त्राता न संशयः।।

अर्थात्- भाग्य रूठ जाए तो गुरु रक्षा करता है, गुरु रूठ जाए तो कोई नहीं रक्षा करता। गुरू ही रक्षक है, गुरु ही रक्षक है, गुरु ही रक्षक है, इसमें कोई संदेह नहीं होना चाहिए।

- परिधि (B.A. IInd Sem.)

वर्तमान सन्दर्भ में संस्कृत की उपयोगिता

1. मात्र 3,000 वर्ष पूर्व तक भारत में संस्कृत बोली जाती थी तभी तो ईसा से 500 वर्ष पूर्व पाणिनि ने दुनिया का पहला व्याकरण ग्रंथ लिखा था, जो संस्कृत का था। इसका नाम अष्टाध्यायी है।
2. संस्कृत, विश्व की सबसे पुरानी पुस्तक (ऋग्वेद) की भाषा है, इसलिये इसे विश्व की प्रथम भाषा मानने में कहीं किसी संशय की संभावना नहीं है।
3. इसकी सुस्पष्ट व्याकरण और वर्णमाला की वैज्ञानिकता के कारण सर्वश्रेष्ठता भी स्वयं सिद्ध है।
4. संस्कृत ही एकमात्र साधन है, जो क्रमश: अंगुलियों एवं जीभ को लचीला बनाते हैं।
5. संस्कृत अध्ययन करने वाले छात्रों को गणित, विज्ञान एवं अन्य भाषाएँ ग्रहण करने में सहायता मिलती है।
6. संस्कृत केवल एकमात्र भाषा नहीं है अपितु संस्कृत एक विचार है संस्कृत में विश्व का कल्याण है, शान्ति है, सहयोग है, ''वसुधैव कुटुम्बकम्'' की भावना है।
7. नासा का कहना है कि 6th और 7th Generation Super Computers संस्कृत भाषा पर आधारित होंगें।
8. संस्कृत विद्धानों के अनुसार और परिवार के प्रमुख सूर्य के एक ओर से रश्मियाँ (Beams of Light) निकलती हैं और ये चारों ओर से अलग-अलग निकलती हैं। इस तरह कुल 36 रश्मियाँ हो गई। इन रश्मियों के ध्वनियों पर संस्कृत के 36 स्वर बने।
9. कहा जाता है कि अरबी भाषा को कंठ से और अंग्रेजी को केवल होंठो से ही बोला जाता है किंतु संस्कृत में वर्णमाला को स्वरों की आवाज के आधार पर कवर्ग, चवर्ग, टवर्ग, तवर्ग, पवर्ग, अन्त:स्थ और ऊष्म वर्गों में बाँटा गया है।
10. संस्कृत उत्तराखण्ड की आधिकारिक राज्य (Official State) भाषा है।
11. अरब आक्रमण से पहले संस्कृत भारत की राष्ट्रभाषा थी।
12. कर्नाटक के मट्टुर (Mattur) गाँव में आज भी लोग संस्कृत में ही बोलते हैं।
13. जर्मनी के 14 विश्वविद्यालयों में लोगों की भारी मांग पर संस्कृत (Sanskrit) की शिक्षा उपलब्ध करवा रहे हैं, लेकिन आपूर्ति से ज्यादा मांग होने के कारण वहाँ की सरकार संस्कृत (Sanskrit) सीखने वालों को उचित शिक्षण व्यवस्था नहीं दे पा रही हैं।
14. काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के अनुसार संस्कृत में बात करने वाला मनुष्य बीपी, मधुमेह, कोलेस्ट्रॉल आदि रोग से मुक्त हो जाता है।
15. संस्कृत में बात करने से मान व शरीर का तंत्रिका तंत्र सक्रिय रहता है, जिससे कि व्यक्ति का शरीर सकारात्मक आवेश के साथ सक्रिय हो जाता है।
16. यूनेस्को (Unesco) ने भी मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की अपनी सूची में संस्कृत वैदिक जाप को जोड़ने का निर्णय लिया है। यूनेस्को (Unesco) ने माना है कि संस्कृत भाषा में वैदिक जप मानव मन, शरीर और आत्मा पर गहरा प्रभाव पड़ता है।

संस्कृत शब्द का अर्थ होता है – पूर्ण, सम्पूर्ण, शुद्ध और परिष्कृत इसे देवताओं की भाषा भी कहा जाता है। पाणिनि ने अष्टाध्यायी नामक पुस्तक लिखी थी, जिसमें उन्होंने संस्कृत के नियमों का उल्लेख किया है। समस्त वेद संस्कृत भाषा में लिखे गये हैं। वर्तमान में शास्त्रीय संस्कृत पढ़ाई जाती है। हिन्दू, बौद्ध आदि ग्रन्थ संस्कृत भाषा में ही लिखे गये हैं।

दिल्ली में संस्कृत शिक्षक प्रशिक्षण कार्यशाला आयोजित की गई थी, जिसमें दिल्ली संस्कृत अकादमी के उपाध्यक्ष एवं शिक्षाविद् डॉ॰ श्री कृष्ण सेमवाल ने कहा आज शिक्षण की अनेक विधियाँ आ रही हैं। हमें संस्कृत शिक्षण को भी इसी के अनुरूप बनाना चाहिए। छात्रों में संस्कृत के प्रति लगाव उत्पन्न करने के लिए संस्कृत की पाठ्य–सामग्री को सरलतम ढंग से प्रयुक्त किया जाना चाहिए। प्रतियोगिता के माध्यम से संस्कृत वाचन क्षमता का छात्रों में विकास किया जा सकता है।

1. विद्यालयीय स्तर पर संस्कृत को संस्कृत भाषा में पढ़ाना चाहिए।
2. अधिक से अधिक कक्षा में संस्कृत को बोलचाल का माध्यम बनाना चाहिए। इससे छात्र स्वयं संस्कृत बोलने के प्रति रुचि लेंगें।

अतः अस्माभिः संस्कृतम् अवश्यमेव पठनीयम्।

अन्त में मैं यही कहना चाहूँगी कि –

अमृतं संस्कृतं मित्र, सरसं सरलं वचः।
एकतामूलकं राष्ट्रे, ज्ञानविज्ञानपोषकम्।।

भावार्थ – संस्कृत अमृतरूपी वह मित्र होती है जो सरसता, सरलता से बोली जाती है और राष्ट्र में एकता की मूलक होती है तथा जो हमारे ज्ञान–विज्ञान को पोषित अर्थात् पुष्पित एवं पल्लवित करती है।

– ***परिधि (B.A. IInd Sem.)***

लक्ष्यैकदृष्टिः

अथ कदाचित् मण्डूककुलेन काचित् स्पर्धा आयोजिता। यः समुच्चस्य स्तम्भस्य शिखरं सर्वादौ प्राप्नुयात् सः विजयी भवेत् इति सर्वेः मण्डूकैः निर्णीतम्।

स्पर्धायां भागं ग्रहीतुं बहवः मण्डूकाः अग्रे आगतवन्तः। स्पर्धां द्रष्टुं तु असङ्ख्याः मण्डूकाः तत्र सम्मिलिताः। स्पर्धा आरब्धा। मण्डूकाः स्तम्भस्य आरोहणम् आरब्धवन्तः। प्रेक्षकाः मण्डूकाः करताऽनेन, 'अरे', 'अहो', 'हो' इत्यादिभिः शब्दैः च स्पर्धार्थिनः प्रोत्साहितवन्तः।

स्तम्भः तु समुच्चः। अल्पस्य भागस्य आरोहणमात्रेण एव पतिताः अभूवन् बहवः। येषां मनोबलं सुदृढ़म् आसीत् ते उप्थाय पुनरपि आरोहणप्रयत्नं कृतवन्तः। तथापि केनापि मण्डूकेन स्तम्भस्य पादभागः अपि न आरुढः। दर्शकाः स्पर्धार्थिनः च परस्परम् अवदन्– ''मण्डूककुलीयेन केनचिदपि स्तम्भस्य आरोहणं कर्तुं न शक्यम्'' इति।

एवं स्थितेऽअपिकेचन पुनरपि प्रयत्नं कृतवन्तः। किन्तु अन्येषां मण्डूकानां निराशतापूर्णं वचनं श्रुत्वा ते भीताः सन्तः अधः पतितवन्तः।

किन्तु एकः लघुकायः मण्डूकः मन्दं मन्दं स्तम्भस्य आरोहणम् आरब्धवान्। ''एषः लघुकायः कथं स्तम्भस्य आरोहणं कुर्यात्'' इति सर्वे उपहसितवन्तः। अल्पे एव काले सः लघुकायः स्तम्भस्यं मध्यभागं प्राप्नोत्। 'अये पतिष्यति भवान्। 'भोः, किमर्थम् एतत् साहसं भवतः। ' 'अयि भोः भवतः प्रयासः व्यर्थः' इत्यादीनि वचनानि मण्डूकानां मुखात् निर्गच्छानि। तथापि सः लघुकायः मण्डूकः निरन्तरम् अग्रे अगच्छत्। सर्वेषु आश्चर्येण पश्यत्सु सः स्तम्भस्य अग्रभागम् अपि प्राप्नोत्। एतत् दृष्टवा सर्वे आश्चर्येण स्तब्धाः। 'कथम् एषः लघुकायः स्तम्भम् आरोढुं शक्तवान् ?' इति ते परस्परम् अवदन्। केनचित् पृष्टः सः लघुमण्डूकः अवदत्–' अहं एकाग्रः आसम्। लक्ष्यं मनसि निधाय मया अग्रे गतम्। एकाग्रता कारणतः मया कस्यापि नैराश्यपूर्ण वचनं न श्रुतम्। अन्ये तु तादृशानि वचनानि श्रुत्वा पराजयं प्राप्तवन्तः। लक्ष्यैकदृष्टिः निरन्तरः प्रयत्नः च मम साफल्यकारणम्' इति।
लक्ष्यपथे अस्माभिः एकाग्रता अवलम्बनीया।

नीतिसौरभम्

हे जिह्वे कटुकस्नेहे मधुरं किं न भाषसे।
मधुरं वद कल्याणि लोकाऽयं मधुरप्रियः।।

भावार्थ : हे कटुता से स्नेह करने वाली जीभ ! तू मधुर क्यों नहीं बोलती है ? हे कल्याण करने वाली, मधुर बोल क्योंकि यह संसार मधुरता से प्रेम करने वाला है।

रे! रे! चातक सावधानमनसा मित्र! क्षणं श्रूयताम् अम्बोदाः बहवो वसन्ति गगने सर्वेऽपि नैतादृशाः।
केचिद् वृष्टिभिरार्द्रयन्ति वसुधां गर्जन्ति केचिद् वृथा यं यं पश्यसि तस्य तस्य पुरतो मा ब्रूहि दीनं वचः।।

भावार्थ : अरे मित्र चातक ! सावधान मन से क्षण भर के लिए सुनो, आकाश में बहुत से बादल हैं, किन्तु सभी ऐसे उदार नहीं हैं। कुछ वर्षा के द्वारा पृथ्वी को भिगो देते हैं, किन्तु कुछ व्यर्थ ही गरजते हैं, अतः जिस–जिसको देखते हो उस–उसके सम्मुख दीन वचन मत कहो।

अर्थात् प्रत्येक व्यक्ति के समक्ष अपनी दीनदशा नहीं कहनी चाहिए, जो समझता हो आपकी बातों को उसी से कहना चाहिए।

– ***वंशिता रस्तोगी (B.A. IInd Sem.)***

पावनं हरिद्वारम्

देवतात्मा-हिमालस्य सुरम्ये अञ्चले शिवालिक पर्वत शिखराणां च मध्ये नयनाभिरामं प्रकृतिसुषमासम्पन्नं रमणीयं हरिद्वारनगरं शोभते।

हरिद्वारम् उत्तराखण्डस्य ऐतिहासिकं, सांस्कृतिकं, पौराणिकं, विश्वविख्यातं नगरम् अस्ति। भारतीयसंस्कृतिः, राष्ट्रियैक्यभावः, देशस्य गरिमाबोधः च हरिद्वारस्य कणे-कणे व्याप्ताः सन्ति।

पतितपावनी पापविमोचनी मोक्षदायिनी भगवती भागीरथी गंगा पर्वतशिखराणां मध्ये विचरन्ती कलकलनिनादं व्यक्त्वा शान्तस्वरेण हरिद्वारतः एव समभूमिं प्रविशति। गङ्गाम् उभयतः मन्दिराणि, घट्टाः, आश्रमाः च सन्ति। तान् निकषा जनाः पूजां कुर्वन्ति। हरिद्वारम्, हरद्वारम्, स्वर्गद्वारम्, तपोवनम्, मायाक्षेत्रम्, मायापुरी, कपिलाश्रमः, कपिला च अस्यैव पुण्यक्षेत्रस्य हरिद्वारस्य अपराणि नामानि पुराणेषु वर्णितातिं सन्ति। माया-पुरी नाम्नाख्यातं हरिद्वारं मोक्षप्रदं नगरम् अस्ति।

यशोक्तं हि शास्त्रेषु –

अयोध्या-मथुरा-माया-काशी-काञ्ची-अवन्तिका।
पुरी द्वारावती चैव सप्तैताः मोक्षदायिकाः।।

हरिद्वारं भारतीयानां प्रमुखं तीर्थस्थलं विद्यते। अत्र ब्रह्मकुण्ड-नामके स्थाने गङ्गायां स्नानेन जनाः पापविमुक्ताः (निर्मलाः) भवन्ति इति तेषां मान्यता अस्ति।

प्रत्येकस्मिन् द्वादशे वर्षे अत्र विशालं कुम्भस्नानपर्व भवति। अस्मिन् पर्वणि लक्षशः जनाः स्नानं कृत्वा पुण्यार्जनं कुर्वन्ति। उक्तं हि-

अश्वमेधसहस्राणि वाजपेयशतानि च।
लक्षप्रदक्षिणा भूमेः कुम्भस्नानस्य तत्फलम्।।

प्रतिदिनम् अत्र सान्ध्यवेलायां गङ्गादेव्याः आरार्तिकस्य दृश्यम् अतीव मनोहरं भवति। यदा जनाः पावने गङ्गाजले दीपार्पणं कुर्वन्ति। सन्ध्यावन्दनं पुष्पार्चनं च कुर्वन्ति तदा तत्र अद्वितीया ज्योतिष्मती शोभा विराजते।

हरिद्वारं मन्दिराणां महताम् आश्रमाणां सङ्गमस्थली अपि अस्ति। अत्र मनसादेवीमन्दिरं, चण्डीदेवीमन्दिरं, बिल्वकेश्वरमन्दिरं, दक्षेश्वरमन्दिरं, मायादेवीमन्दिरं, ब्रह्मकुण्डं, कुशाव्रतम् इत्यादीनि अनेकानि पौराणिकस्थलानि सन्ति।

दक्षप्रजापतेः पौराणिकी राजधानी कनखलनगरी अत्रैव विराजते। पुराकाले दक्षप्रजापतिः अत्र विशालं यज्ञं सम्पादितवान् आसीत्। हरिद्वारम् उच्चशिक्षायाः, संस्कृतशिक्षायाः, योगशिक्षायाः आयुर्वेदशिक्षायाः, प्रौद्योगिकीशिक्षायाः चापि केन्द्रम् अस्ति। अत्र गुरुकुल-कांगडी-विश्वविद्यालयः देवसंस्कृत-विश्वविद्यालयः, उत्तराखण्ड-संस्कृत-विश्वविद्यालयः पतञ्जलि-योगपीठं च प्रमुखानि शिक्षणकेन्द्राणि सन्ति। अत्र भारत-हैवी-इलैक्ट्रिकल-लिमिटेड (BHEL) रूडकीनगरे स्थितं भारतीय-प्रौद्योगिकी-संस्थानम् (IIT), अनेके नवनिर्मिताः अनेक नूतनाः उद्योगयन्त्रागाराः च देशस्य प्रगतौ महत्वपूर्णं योगदानं ददति। एवं प्रकारेण पौराणिक्या संस्कृत्या सह आधुनिकभारतीयविकासस्य प्रौद्योगिक्यां च अत्र दर्शनं कर्तु शक्यते।

– ***वंशिता रस्तोगी (B.A. IInd Sem.)***

आधुनिककालेऽपि संस्कृतस्य महत्त्वम्

आधुनिकयुग: प्रौद्योगिकी युगनाम्ना परिगीयते सम्प्रति। अधुना प्रतिदिनं नवीना आविष्कारा: भवन्ति। अस्माकं जीवनं विज्ञानाश्रितमस्ति।

किमपि राष्ट्रं प्रौद्योगिकीमाध्यमेन विकासं करोति। अस्माकं राष्ट्रं भारतवर्षम् अपि प्रौद्योगिकीक्षेत्रे विकासशीलराष्ट्रमस्ति। युगेऽस्मिन्नपि मानवस्य विकासाय संस्कृतम् उपादेयतापूर्णं वर्तते। आङ्गलभाषायेक्षया अधुना संस्कृतभाषां महत्त्वहीनां कथयन्ति जना: समाजे, वस्तुत: एतत असत्यं कथनम्। संस्कृतं सङ्गणकस्य कृते सवोत्तमा सर्वथोपयुक्तो च भाषा अस्ति।

आधुनिककाले सर्वेऽपि जना सर्वकार्याणि सङ्गणकमाध्यमेन सम्यालयन्ति। आधुनिककाले सामान्यजना अपि संस्कृतेन व्यवहरन्ति। केचन कथयन्तियत् इयं भाषा प्रयोगे नास्ति अत: सङ्गणकाय कथमुपयोगिनी भविष्यति। ? केचन एवमपि वदन्ति यत् संस्कृतं नगण्यं स्थानं विदधाति परं ते नं जानन्ति यत् न केवलं संस्कृतभाषाया: साहित्यं विपुलं समृद्धञ्चास्ति अपितु विश्वस्य अन्यभाषापेक्षया अत्र श्रेष्ठम् अधिकम्य साहित्यं लिखितं वर्तते। अत: सर्वेऽपि संस्कृतस्य महत्त्वं स्वीकुर्वन्ति सम्प्रत्यपि। संस्कृत पठनेन अपि सर्वक्षेत्रेषु जीविका प्राप्तुं शक्यते। यथा–सेनायां धर्मगुरु: (J.C.O.) शिक्षक:, ज्योतिषाचार्य:, प्रशासनिकपदानि, संस्कृतप्रशिक्षक: इत्यादीनि।

न केवलं संस्कृतं स्वक्षेत्रे लाभप्रदम् अपितु अन्यक्षेत्रेषु अपि दक्षतां प्राप्तं संस्कृतस्य ज्ञानम् अनिवार्यम् अस्ति। जना: अवबोधयन्तु यत् संस्कृताध्ययनेन मानव: संस्कारयुक्त: भारतीयसंस्कृतिपोषकश्च भवति।

इयं प्राचीनतमा भाषा अस्ति अस्या: प्रभाव: सर्वासु अपि भाषासु द्रष्टुं शक्यते। भारतवर्षे केचन जना: संस्कृतस्य महत्त्वं न जानन्ति इति तेषां अज्ञानतां सूचयति। संस्कृतस्य महत्त्वम् आप्राचीनकालात् आधुनिककालं यावत् वर्तते। प्रत्येकं क्षेत्रे ध्येयवाक्यानि संस्कृते एव लिखितानि यतोहि इयं महत्त्वपूर्णेन सह विश्वकुटुम्बसूत्रेऽपि निबध्नातिं वसुधैव कुटुम्बकम्'' अयं निज: परो वेति ''सर्वे भवन्तु सुखिन:'' इत्यादीनि सुभाषितानि संस्कृते एव न तु अन्यभाषासु कासुचित्।

– ***शमा परवीन (B.A. IInd Sem.)***

English Section

(Teachers and Students)

Words are our most inexhaustible source of magic.
- J.K. Rowling

RESEARCH METHODOLOGY & SPSS IN COMMERCE AND MANAGEMENT

Research is a part and parcel of any systematic knowledge. The human urges for new areas of knowledge have developed a sense for search and research on him. The main aim of research is to find out the truth which is hidden and which has not discovered as yet. According to Clifford Woody, research comprises defining and redefining problems, formulating hypothesis or suggested solutions: collecting, organising and evaluating data; making deductions and reaching conclusions ; and at last carefully testing the conclusions to determine whether they fit in formulating hypothesis. Research is actually a voyage of discovery . So when we talk of research methodology, we not only talk of the research methods but also consider the logic behind the methods we use in the context of our research study and explain why we are using a particular method of technique and why we are not using others so that research results are capable of being evaluated either by researcher himself or others. In the same manner, Research methodology is a way to systematically solve the research problem. It may be understood as a science of studying how research is done scientifically.

Though Commerce & Management are developed as Social Sciences, the objectives of research in commerce & management are different. Research in Commerce & Management is basically meant for a specific purpose and that's why Management researchers are classified in two groups one is on the basis of application and second is on the basis of method of investigation.

On the basis application :

- Pure or basic Research - it is termed as fundament research, Exploratory research design is used for this research. Prime objective of pure research is to facilitate momentum towards a solution to concurrent and unreserved problems.
- Applied research - Applied research sought immediate solution to the problem under study. Descriptive, diagnostic and experimental research design is used to seek solutions to problems.

On the basis of Investigation :

- Experimental Research - this research deals with undertaking actual experimentation. For example, retail merchants wish to know reactions of customers on different shelf display. Experimentation can be designed to know fact of customer reactions on different arrangements of products displayed on shelf.
- Surveys - Surveys in management science are known as sample survey since population is very large in size an unattainable with limited resources. So samples are selected using sampling design and opinions if samples on subject matter are taken with the help of either schedule or questionnaire. For example opinions of MBA students towards syllabus of respective university for use of getting employment. This study can be conducted using survey research.
- Case Studies : A case study reveals to an in-depth study of a single unit. The unit may be an organization, city, industry etc. Case study involved narration of the entire situation revolves around the subject under study.
- Ex Post Facto Research : In ex-post factor research effort has been made to establish relationship between two or more variables under study. One variable may be dependent variable (y) and another is independent (x).

- Action Research : Action research refers to gathering data and information out of actual actions or experimentations undertaken with samples in field. This research is used in mainly marketing management.
- Field Investigation : This type of research is widely used in history. Field investigation research refers to search or verify facts visiting to the field. In management science also verifying suitability of location for factory could accommodate in field investigation.
- Evaluation Research : This research is used to assess the performance of various projects which are undertaken in an organization such as Training and development program, employee engagement program, Employee motivational program in which organization invests amount.
- Library Research : this research is typically based on secondary data. Researcher engages time in library and collects required data from secondary sources such as books, journals, reports, newspapers, manuals etc.

Role of SPSS (Statistical Package for Social Sciences) :

SPSS software is used to perform quantitative analysis and is used as a complete statistical package that is based on a point and click interface. This software has been widely used by researchers to perform quantitative analysis since its development in the 1960s by Norman H.Nie, in collaboration with C.Hadlai Hull & Dale Bent. For every researcher, Working on data is a complex and time consuming process, but SPSS can easily handle and operate information in a systematic manner. SPSS software can read & write data from other statistical packages, databases, and spreadsheets. When entering data into the software, one has to click on "variable view". The variable view enables the user to customize it by data type and consists of the following headings : Name, Type, Width, Decimals, Label, Values, Missing, Columns, Align, and Measures. These headings enable the user to characterize the data. SPSS is most often used in social science fields such as commerce & management, where statistical techniques are involved at a large scale. Such as cross tabulation, t-test, chi square test, etc. are available in the "analyze" menu of the software. There is also an option in the software called "split file", which is given in the "data" menu. This option is very useful for researchers who are performing comparative studies. SPSS software has a technique called missing value analyses, and this technique helps in making better decisions about the data. This technique enables the user to fill in the missing blanks in order to create better models to estimate the data. The analysis provides the user with procedures for data management and preparation. This software also involves some sophisticated inferential and multivariate statistical procedures such as factor analysis, discriminate analysis, analysis of variance etc. SPSS is designed in such way that it can handle a large set of variable data formats.

- Dr. K.K.Pant (Asst. Prof. Commerce)

ROLE AND OBJECTIVE OF HIGHER EDUCATION FORMATION OF INTELLECT

"A University stands for humanism, for tolerance, for reason,
For progress, for the adventure of ideas and for the search of truth
It stands for the onward march of the human race towards even
higher objectives. But if the temple of learning itself becomes a
home of narrow bigotry and petty objectives, how then will
Nation prosper or people grew in stature?"

It is indeed an urgency, a call of the hour that all the thinking persons who somewhere are conscious to the needs of the society, should have at least some 'deliberation' on the role of higher education as the higher education is what that provides the very basis of socio-cultural, political and economic fabric of the country's life and its betterment. Also when education ceases decay sets in and citizen become mere automations. Considering the polluted and degenerated state of higher education all over the country the time has now come up with ringing danger bell in the mind, when the reformation of or the endeavour towards reform in it should begin.

Even when we go by the Abraham lincdn's famous words that "if we could first know where we are and whither we are trending we could better judge what to do and how to do it" 2 it becomes very difficult to adjudge or locate the specific area of the problem as the whole of the educational set-up is problem ridden and needed serious examination. To quote few of them :

1. Growing indiscipline among students, a gradual fall in standards and mounting unemployment amongst the youth. Amongst students seeking services instead of gaining self employment is a common observance.
2. Overcrowding in the classes, specially in the human sciences, contributes to the decline of educational standard.
3. The predominance of age-old and baseless superstitions and beliefs, prejudices of caste, creed and sex in the higher education. Creeping political interference along with the politicization and criminalization of educational institutions' life.
4. Grave situation of declining interest in studies and the common scene among the students, of being not associated with the subject of their interest and abilities, shows the complete absence of the essential system of holding psychological tests for the identification and better understanding of the areas of interest of ability of an individual even at secondary level, not to talk of higher level. Thus common choice rests itself upon chance career rather than planned career.
5. Present education is examination ridden. It is not the pursuit of excellence or thirst for knowledge but simple the zeal to pass the examinations anyhow by adopting easy and short cut methods that dominate the educational scenario. Failing of teaching methods, system and guidance is thus open to observance to all.
6. There is lack of concentration upon developing professional expertise and entrepreneurship and skill and less emphasis on technical and professional courses. Educational institutes are thus producing hoard of masses without having any utility of functional importance for the society.
7. Finally, 'community-society-nation' have five parts namely home life, work-life, community life, leisure life and citizen life. What is very surprising is that there is no planning for the student's integration in to home life, work life, community life, a life of leisure and citizenship, no provisions are made for the international understanding, cooperation and peace.

And so on. Situation looks more grim, when we observe that higher education is not paid due and sincere attention by our policy makers and politicians. Higher education is not even listed in the top priorities of nation and even the amount allotted to it has been reduced in the recent announced budget. No separate ministry or cabinet ministers in charge of education are appointed even on national level, not to talk of a newly created Uttarakhand state. Though my intentions are not to paint black over what we have achieved and progressed during the seventy two year of independence but I am politely drawing the attention that we are still miles away from achieving the goals we had set out seventy two years ago.

I can't dare with in the limited capacity of my intellect to point out the suggestion to improve the situation, but I would politely draw your attention towards that by emphasizing upon which we might gain insight that could help even if partially, in finding solution to the problems of education. In spite of accepting the strict educational division of schooling life of an individual into three stages of 10+2+3, I should stress on developing the integrated approach towards the education. In this sense 'Higher

education' is not only the stage reached after graduation though 10+2 but the consummated total of what a student has experienced and obtained in terms of learning, knowledge building attitude, skill and behavior since the start of its education in childhood. Thus education attained deemed as an 'education' only in his promotion and cultivation of strict adherence to righteous way of living, thereby connecting individual self with not only other human beings but also with the nature making him a complete experience of integrated whole. And by this, any education that is applicable is higher education, that, which is in theory, is anything but education. The role and aim of higher education thus transcend beyond the responsibility of imparting knowledge, science and information with its unaltered commitment in growth towards a fundamental ethic with a bright openness to righteous principles of life and laws of beauty, and thus the essential objective of education appears as the 'formation of intellect' in an individual. This very aim demands a progressive graduation through each of the hierarchical processes. Namely -

(i) Knowledge : referring to the pure and simple information imparted, calling for the exercise of recall, recognition and reproduction.

(ii) Understanding : Involving better comprehension reinforced though explanation and aids.

(iii) Application : demonstrating the learner's skill to apply lessons learnt in the class room to daily life situations to concretize the theories and make them alive.

(iv) Analysis : Implying the ability to dissect, break up into two parts or to identify disjointed sections.

(v) Synthesis : Showing the ability to compose, piece together, compile, draw and create.

(vi) Formation of intellect : The sad part of the higher education is that most of the teachers are satisfied with the achievement of imparting knowledge to the students and stop there. Others, and these are in the majority take the student to application level and leave them fixated, offering no incentive to proceed further. he last three stages - consisting of analysis, syntheses and evaluation, lead to the peaks of intellect formation and stimulate the student to rationalize, judge and make choice in a logical manner. And a small majority will ever scale these heights. The discriminatory, critical abilities are hardly exercised an when this happens, persons lack depth of thought and it is evident from the attitude and judgment passed on major issues, that thinking is superficial and lacks equilibrium and conviction.

Formation of intellect, a essential aim is thus not fulfilled. Nor have we yet devised any meaningful programme and policies in education to realize it. Because of this very lacking what we have is the hoard of 'discrimination' between 'right' and 'wrong'. Higher education meant to render and cultivate undying quest for development and betterment, is rather catering to rising inner contradictions and conflicts among individuals as the personal goals of the individual clashed with the individual need and the needs of the local community.

So if higher education aimed at the pursuit of excellence, providing future leadership from among the masses, providing good citizens able to serve the country at all times and in all circumstances then our educationist must devise ways and means to regulate the system of higher education so that students should be guided for the formation of intellect. The alone we can rest our hope upon our trained students as well as the institutions of higher education to help our society to realize the dreams enshrined in the constitution of India -

To secure to all its citizens
Justice, social economic and political,
Liberty of thoughts, expression, belief faith and worship
Equality of status and of opportunity and to promote among them all :
Fraternity assuring the dignity of the individual and the unity and integrity of the nation -

References

1. Jawahar Lal Nehru's speech at Allahabad on 13 December 1947.
2. Abraham Linken, quoted in M. Pia Nazareth, "Education", London, 1979 P-68
3. Victor E- Frankl, M.D. "the will to Meaning", London, 1967, P-151

Sharad Bhatt
(Asst. Prof.-History)

MAN AND ENVIRONMENT

Environment refers to the sum total of conditions which surround man at a given point in space and time. In the beginning the environment of early man consisted of only physical aspect of the planet earth (land, air and water) and biotic communities but with the march of time and advancement of society man extended his environment through his social, economic and political functions. Generally speaking the environment is equated with nature where in physical components of the planet earth viz-land, air, water etc. support and affect life in biosphere.

A Goudie (1984) in his book "The Nature of the Environment has infact taken environment as the representative of physical components of the earth where in man is an important factor affecting the environment. Environment is defined more comprehensively by others 'as a holistic view of the world as it functions at any point of time, with a multitude of spatial elemental and socio-economic systems distinguished by quality and attributes of space and mode of behaviour of abiotic and biotic forms. He further remarks, 'The definition and n turn the scope, could be governed by our concern and priorities. Our immediate concern is the quality of space we live in the air we breathe, the food we eat, the water we drink and the resources we draw from the environment to support our economy.

Infact, environment is viewed in different ways with different angles by different groups of people but it may be safely argued that 'environment is an inseparable whole and is constituted by the interacting system of physical, biological and cultural elements which are interlinked. The idea of geography as the study of man's relationship with environment has a long history and has lad to a long standing debate about the position of man inrelation to nature : first whether man is part of, or a part from nature : secondly about the extent to which man is affected by the environment from the classical times onwards, the idea that man is a product of the environment was dominant, and in the nineteenth century the work of Darwin in the biological sciences which showed that life developed under the selective action of natural forces, seemed to confirm scientifically the position of man as a creature adapted to his environment. At the same time, work in the social sciences showed regularties in human behaviour that marriage rates in England for example, were affected by the price of corn and the conclusion was reached that man was not free, but was ruled by natural and economic laws.

This resulted in many geographers focussing their study on the effects of the physical environment on man, in which man was seen as a passive creature moulded by natural forces and the geographer's task as being the identification and formulation of the scientific laws which governed the relationship. This approach is known as determinism or environmentalism and simple cause and effect laws were formulated to explain the distribution and activities of man.

The environmental factor which does affect all people directly is climate, and it has been suggested that it is the basic reason for man's racial differences of skin colour, size and shape. It is not clear how it affects human activity despite centuries of speculation about its effects on character and behaviour. Aristotle believed that people of cold climate were brave but deficient in thought while the people of warm climate were thoughtful but without spirit. The medieval Arab historian Ibn Khaldun compared the solidity and lack of vivacity among peoples of cold climate with passionate natures and ready abandoment to physical pleasures of people in warm zones. According to Ellsworth Huntington & S.F. Markham, the climates in moderately coolzones with frequent cyclonic activity and rapid changes of weather. Such as Western Europe, New England and Japan. Stimulate individuals to mental activity and Nations to World leadership climate is only one of many factors which affect human activity.

It is clear that similar physical environments do not produce the same responses and the mediterranean civilizations of Greece and Rome did not develop in similar conditions in Australia, South Africa. California, Also man can respond in the same way to different environments : and there is considerable similarity in European settlement in the varied environments to North America. Although environment influences the environment and the cause-effect relationship of determinism is too simple to explain this.

As a result, the idea that man is controlled by nature was rejected and other geographers stressed the fact that man is free to choose. Never the less this choice must be made with in the limits set by nature although these limits are wide enough to give man a lot of scope. This approach in which the emphasis is firmly placed on man rather than nature and in which man is seen as an active force rather than a passive being is known as possibilism.

In reality of course, the balance between man's freedom and nature's control varies from place to place and from time to time and the extremes of possibilism and determinism must be replaced by sliding scale in which man and nature act and react with each other in a very complex system.

- Dr. Devkinandan Joshi (Asst. Prof.-Geography)

THE VALUE OF TIME

Time never waits for anyone, anywhere so don't spend the time use the time. Don't see the time only watch the time. Only that person knows the value of time who loses something by missing the time. If you want to know the value of one year. Then you must go and ask him the value of one year who had failed in one class. And if you want to know the value of a month, you must go and ask him, who could'nt get salary in the last month. If you want to know the value of a week.

Then you must ask a sick person who spend his whole week in the hospital. And if you want to know the value of a day. Then you must ask a beggar who could'nt get food in whole day.

If you want to know the value of an hour. Then you must go near a person who waited for some one for long one hour. And if you want to know the value of a minute. So you go near the man who missed his train. And if you want to know the value of a second you must meet from him who luckily safe from an accident. So thanks and understand the value of a year. Month, day, hour, minutes and second. Because every second can change our whole life.

- Riya Tamta (M.A.-IVth Sem.)

Let's

Let's dream of a face,
Who is in no race,
Have some dreams to be chased.
Where one has to play,
With mud or clay, and just
BE HAPPY all the day.
When they have no barrier,
On choice of their career.
When all have food, and
No boss is ever rude.
No love is rejected,
No lover is dejected.
Where she lives her life, but
Not only as a wife.
No solider is dead,
No bloodshed to be read,
No war to be fought,
A happy solution to be sought.
Ethics are everywhere seen,
The politics become very clean,
Everyday is a festival, and
Nobody is Nobody's rival.
Where caste, class
Religion are word,
Not all in one herd,
All welcome the gender - THIRD.
Let's dream of a day, when
All is happy, and
All is gay, come
Let's dream the DAY.

- Abhishek Bora (M.A.-IInd Sem.)

MY LOVING SISTER

O' God! You gave me a gift
In the form of my sister,
I don't have words to say
How much I love her.
She is my loving doll
And a close friend,
In every situation
She's there to hold my hand.
She's a blessing for me
God's supreme creation,
All the while she showers
Spring of affection.
She is as beautiful
As the angel of heaven,
Life would have been incomplete
Without this loving relation.

- Abhishek Bora (M.A.-IInd Sem.)

SOME FACTS ABOUT INDIAN MUSIC AND INDIAN MUSICIANS

India has got one of the oldest musical traditions and heritage in the wold. One can find its origin in the vedas (ancient scripts). Known as' 'Sangeet' in indian, the nation's music has got a unique and varied style as compared to other music forms in the wold. In the earlier days, when Indian music was just coming of age, the music was devational in nature. It was restricted only to temples and used for ritualistic purpose. It is said that the sound that pervades the whole universe, i.e. (Nada) Nadabrahma, itself represents the divinity. Over the period of time each folk form has evalved in a particular region of India. The most prominent forms of suck Folk music are : Punjab's Bhagra, Maharashtra's Lavani, Gujrat's Dandiya, Sufi form (Devotinal music) Qawwali, and Bengal's Bauls. Now the Indian music is dominated by bollywood numbers and pop music. Here are some interesting facts related to Indian music and Indian musicians :

OLDEST GHARANA OF HINDUSTANI MUSIC

Gwaliar Gharana is the oldest gharanas of Hindustani music, it is one of the oldest Khyal Gharana. There are many Gharanas that actually originated from Gwalior Gharana. NATHAN PEER BAKSH and NATHAN KHAN were the two people who founded Gwalior Gharana the 16th Century.

FIRST WOMEN SHEHNAI PLAYER OF INDIAN

The first women Shehnai wadak of India is Bageshwari Queen. Renowned Guru ustad Bismillah Khan taught her. She made her debut in the year 1983 and was crowned as "Shehnai Queen" at Chandigarh. Apart from her solo recordings. She has also recorded 'Jugalbandi' with her teacher Ustad Bismillah Khan. In 1988 she represented India at "The Bharat Mahotsav" in Russia.

FIRST WOMAN SAROD PLAYER OF INDIA

The first woman Sarod player of India is Sharan Rani. She was born in 1929 in Delhi. Sharan rani is popularly known as Sarod Rani and she played Sarod for almost 70 years. She died on 8th April 2008. She learnt Sarod from great music maestros like Ustad Allaudin Khan and Ustad Ali Akbar. She performed at various shows around the world and was titled as "Cultural Ambassadar" by Jawahar Lal Nehru. In 1968 She was awarded the Padma Shri, in 1986 she was awarded Sangeet Natak Akademi Award for Hindustani Instrumental Music. She is one of the there three woman who conferred the title as "Gems of India" by the Government of Indian. The other two women who conferred this title are MS Subbulakshmi and Lata Mangeshkar.

FIRST MUSIC SCHOOL IN INDIA

The first Music School in India is "Gandharva Mahavidalaya" in Lahore (which was then a part of India). It was set up by "Pandit Vishnu Digambar Paluskar" on 5th May 1901. Pandit Vishnu Digambar was an Indian Classical musician born in Kurundwad (a small town in British Bombay Presidency) Maharashtra. The Music School was run by funds raised by concerts, public support and donations from richer class of the society. Vishnu Digambar returned to Mumbai in September 1908 to start a branch of the Gandharva Mahavidyalaya. Eventually, the Lahore School was shifted to Mumbai after independence.

FIRST MUSICIAN TO RECEIVE PADMA BHUSHAN AWARD

The first musician to receive Padma Bhushan was Ms. Subbulakshmi. She received Padma Bhushan Award in the year 1954 and Padma Vibhushan Award in 1975. She was also the first musician to receive Ramon Magsaysay Award for public service in 1974. She was popularly known as the nightingale of India and was the legendary carnatic musician of India.

She was born on September 16th 1916 in the Temple City if India, Madhurai. She got her carnatic music training from Semmangudi Srinivas lyerand then took her Hindustani music training from Pandit Narayan Raovyas. She is one of the three women who conferred the tittle as "Gems of India" by the Government of India. The other two women who conferred this title. The other two women who conferred this title are Sharan Rani and Lata Mangeshkar. In 1988 She was conferred Bharat Ratna.

FIRST INDIAN TO COMPOSE SYMPHONY

The First Indian to compose Symphony was Illayaraja in July 1993 Illayaraja composed a full length western classical symphony. It took one month to compose this one hour symphony. Illayaraja is the first asian whose symphony was performed by John Scott of the Royal Philharmonic Orchestra. The Orchestra is partronized by Queen Elizabeth. The president of the Orchestra is Lord Yehudi Menuhim. He is a renowed lyricist, singer and film composer. Three times he has Non national Film Award for best Music Director. He has provided background music for about 800 Indian Film and about 4000 songs in different languages.

FIRST GRAMOPHONE RECORD IN INDIAN

The first gramophone record was made in Kolkata in the year 1898. Thomas Edison invented a sound machine which was called phonograph in 1877. Hemendra Mohan Bose of Kolkata who was an Indian entrepreneas imported the phonograph record. The records were popularly known as Bose's records. The Gramophone & typewriter Ltd recorded the First Indian Song in their Belighata Factory in 1898.

FIRST FOLK ALBUM IN INDIA

The first Folk album of India was 'Banjarah' by Ila Arun. Banjaran was released in the year 1983 and Folk songs of Gujrat and Rajasthan. These Folk songs were the nomadic ballads from Gujarat and Rajasthan. Ila Arun is famous for her husky voice and her incredible talent. She majorly sings folk songs and has brought folk singing to a height. Her other popular album's include : Best of Ila Choli ke peeche vol2, Haule Haule, Ila Arun pop hits, main ho gai sawaa lakh ki The very best of Ila Arun, and vote for Ghagra. Ila Arun has also sung and acted in Films. Some of her popular film songs include "Choli ke peeche kya hai" frrom the film "Khalnayak", and mornee bagga mein bole aadhi raat maa' from "Lamhe". Ila Arun won the filmfare best singer award in 1993 from the song "Choli ke peeche kya hai".

THE FIRST COMPACT DISC LAUNCHED IN INDIA

The first compact disc launched in India was "Shagufta" which was launched by Music India in December 1987. The album was sung by Pankaj Udhas. Pankaj Udhas is a famous Ghazal Singer. He has developed his own unique style where Urdu verses of poets are set to music. He was born on may 17, 1951 in Jetpur hear Rajkot in Gujarat. His singing was first noticed in the movie "Naam" starring Kumar Gaurav, Sanjay Dutt and Amrita Singh, in which he sung "Chitthi aayi hai" and the song was an instant hit. Some of his popular music albums are : Lamha, Mahak, Muskaan, Humsafar and Janeman. Pankaj Udhas received Padma Shri in 2006.

FIRST COMPUTERISED ALBUM OF INDIA

The first computerised album of India was "Baby Doll" sung by alisha chinoy. It was released in the year 1988 by HMV. The sound engineer of the albums was Rajesh Johri who also happens to be Alisha Chenai's husband. Alisha is one of the pioneers of pop music in India. Alisha is popularly known as Indian Madonna. Alisha made indipop history with her music album "Made in India". The album is one of the biggest selling Hindi pop albums of all time in Indian Music History. Alisha has also done playback singing in Hindi films. Some of her famous numbers include "Kaate nahein kat te -Mr. India," Its Rocking- "Kya love story hai", "Aaj ki Raat - Don." and Ticket to Hollywood - Jhoom barabar Jhoom "Alisha won filmfare best female playback award for her chartbuster number " Kajra re kajra re - "Bunty aur Bubbly."

FIRST HINDI RAP ALBUM

The first Rap album was "Thanda Thanda Paani" by Harjeet Singh Sehgal popularly known as Baba Sehgal, it was a remake of "Ice Ice baby" by vanilla Ice. There was a record sale of more than 30,000 copies. To your surprisingly Baba Sehgal happen to be an engineer by profession. His first album was Dilruba (1990) followed by alibaba (1991). Thanda Thanda Pani was his third album. His music video Dil Dhadke had the distinction of beeing the first Indian music video ever to be shown on MTV Asia. Baba Sehgal has appeared in the main lead in the Hindi Films "Miss 420".
He has also given music for the movies "Dance Party" and "Bhoot Uncle".

- Shweta Parasar
(B.A.-IInd Sem.)

THE LOVE OF A MOTHER

A mother's love is something
that no one can explain,
It is made of deep devotion
and of sacrifice and pain.
It is endless and unselfish
and enduring comes what may
For nothing can destroy it
or takes that love away.
It is patient and forgiving
When all others are forsaking.
And it never fails or falters
even though the heart is breaking.
It is for beyond believing
When the world around condemns
And it glows with all the beauty
of the rarest, brightest defining,
it defies all explanation,
And it still remains a secret
like the mysteries of creation.
A really splendid miracle
that man cannot understand
And another wondrous evidence
of God's tender giving hand.

- Harshita Maulekhi (M.A.-IInd Sem.)

MOTHER

God gave me a gift
This is a great gift
This gift is precious than all
This gift is beautiful than all.
This gift shows me the right way.
This gift always remains anxious.
For the night and day
For my well being.
This gift makes me cheer.
This gift is my mother.

- Rupali Negi (B.A.-VIth Sem.)

TRIBUTE

Tribute to the great warriors of India
far from, lovers, mother, children
choose their pavement of darkness
No care, No Joy, No pleasure
Pavement filled with anger, fear, pain
Death waiting or their way
There no care of breath
Only one care, struggle with the last breath
Advance always in darkness, despair untrooden way
Yet the patrotic exaltation
Thunderclap demolition of Pulwama
Loss of 50 innocent soldiers
Before the destruction the,
eyes of old mother waiting for her son
But, when he came back
Broken and bruised, in shreds, shreds, shreds
only a body, now a martyr.

- Kiran (M.A.-IVnd Sem.)

IMPORTANCE OF READING

"Reading is to the mind what exercise is to the body". Reading daily is one of the best habits one can passes. It develops your imagination and provides you a fortune of knowledge. Books are your best friend is rightly said. Reading helps build up your confidence and uplifts your mood. Once your start reading, you experience a whole new world.

Reading fills the mind with new ideas and thoughts and develops the whole personality of a man. Conversation makes a man alert and quick - witted, never at a loss for words, through talking and thinking. Reading helps a man to mould his personality. Different kind of reading material have different kind of reading material has different kind of effect on the reader. History makes a man wise. Poetry develops man's imagination and ingenuity. Mathematics makes a man's mind subtle and sharp. Logic and rhetoric develops a man's ability to debate and argue. Philosophy enables a man to go deep into a subject.

Man's mental deficiencies can be cured by the reading of suitable subjects just as the deficiencies of the body can be cured by physical exercise. Bowling is good for the kidneys, shooting is good for the lungs and walking is good for the digestion. Similarly, the make out of mathematics is good for wandering minds. If a man suffers from a confusion of thoughts he should take up philosophy.

Reading increases creativity and enhances your understanding of life. Reading also inspires a man to write and one can fall in love with writting as well. If we want to adopt some good habits in life then reading should definitely be on the top of our list. It plays a vital role in the optimistic growth and development of a person.

- Pushpa Rawat (M.A.-IVth Sem.)

THE REAL BEAUTY

The famous poet John Keats says - "A thing of beauty is a joy for ever".

A beautiful object gives us joy. By seeing it we dont get tired beauty is eternal but merely physical beauty can not be eternal. It's charm can not be permanent . Physical beauty fades with the passage of time and finally dies out.

Beauty and truth must be one to have permanent appeal. Every thing is beautiful must also be truthful. The face of an ugly woman could be beautiful if her face is illuminated with the light of truth. A work of art is beautiful, for it is an expression of truth lying within the soul of an artist. Nature is beautiful. The sun, the moon and the stars are beautiful only because such beauties are the reflection of the purity of their maker, which is the ultimate truth. Plato identified the truth and beauty and regarded them as the common attributes of divine reality.

There is a basic unity of truth and beauty in our life. So we can say "Satyam Shivam Sundaram".

The famous poet John Keats says in poem "LABELLE DAME SAN'S MERCI" I made a garland for her head, And bracelets too, and fragrant zone; She looked at me as she did love, and made sweet moon.

So we can say -

"Beauty is truth, truth beauty. Thats is all. Ye know on earth and all ye need to know."

- Rupali Negi (B.A.-VIth Sem.)

J&K

(Yesterday, Today & Tomorrow)

The Fencing at LOC is geting taller these days, Climate harsher, people frustrated & Armed Forces more patriotic. The strikes have wounded the enemy. Every news channel and social media is on fire, every side & groups are raising their voices, asking for answers, Agenda - [unknown]. Who is responsible, who started it, is there any end to it, who really is paying the price, who is innocent and the Million Dollar question, who is right?

As the British crown rule marked its era's end, it took a long run of time for the peices of land to because a Union of States called India. Each and every state showed a leaning towards joining the Union except J&K Maharaja Hari Singh of J&K wanted a separate territory on which Pt. J.L. Nehru stated in U.N. that we will respect & walk away. Pakistan Army attacked J&K under unusual circumstances they devided to join Union of India. But in return they laid down conclusion which we today known as "Article 370" in my legal sense it was like, "We will accept to be your ally if you accept us as a separate territory of J&K" # special category states if that makes any sense, don't think that it's called a merger integratran in any universe.

Dr. Bhim Rao Ambedkar walked out of assembly rejecting it but under certain circumstances Pt. J.L. Nehru made it a "Temporary & Transiant Provision" and passed "Article 370" special status to Jammu & Kashmir." (as it is a different topic of debate that it has been temporary & transient for 70 years since 1952.)

In my opinion if article 370 was never written / passed in constitution of India, there would be no violence, no strikes, no wounds and no war at all. If J&K may have merged with Union of India like a normal state so all administrative & political powers would be much easy to control, rather putting an emergency and Human Rights voilatom every time a cease-fire is violated at attack happens. There would have been fundamental rights, dutres, regular Electrons, town planning, community development, development construciton, and so an. Just by a normal merger, which this special status met given to them talks of being a integral point of India would not have been necessary the youth of J&K would have not been turned into haters of their own nation quoting - a youth of J&K working in Bengaluru.

"I am a citizen of J&K, J&K is not in India. India is illegally controlling J&K." - a youth of J&K working in flipkart (Bangalore)

This whole scenario could have been avoided. May be there is still hope if article 370 goes out and this time Jammu and Kashmir properly merges with India as a integral state of union of India.

- Himanshu Singh Rawat (B.A.-VIth Sem.)

WONDERING OF SOCIAL MEDIA

Everyday i wonder, how would you be,
How was your day & how your night would be,
You haven't said a word, not to me ,
Its been long since last 'Active' - 'Seen',

Do you miss me like I do,
or Do you have some work to do,
Do you even remember me,
or Do you write to someone else like me,

May be its all my fault,
haven't wished your day at all,
Said ill keep my word to you,
Didn't do all I wished to do.

Blame me for the things i did,
Even those i didn't care, I do,
Some hardest choices made for you,
I wonder you'll belive or not,
Everyday i wonder, how you would be.

- Himanshu Singh Rawat (B.A.-VIth Sem.)

INTERESTING FACTS ABOUT ENGLISH LITERATURE

English literature has a deep and interesting history. From William Shakespeare, Charles Dickens to JRR Tolkien and JK Rowling, the world has witnessed some great writers. But what are the most Fascinating literary facts? Read all of them below :

1. Sherlock Holmes never said, "Elementary my dear Watson."
2. A language dies every 14 days.
3. The first novel ever written on a typewriter was Tom Sawyer.
4. "I am". is the shortest complete sentence in the English language.
5. There are only four words in the english language which end in 'dous' tremendous, horrendous, stupendous, and hazardous.
6. Ghosts appear only in 4 Shakespearean plays : Julius Caesear, Richard III, Hamlet and Macbeth.
7. Microsoft founder Bill Gates bought ' codex leicester; one of Leonardo Di Vinci's scientific journals for a whopping $ 30.8 million in november 1994.
8. Roald dahl, the author of charlie and the chocolate factory, tested chocolates for cadbury's while he was at school.
9. Marcel Prout's in search of lost time is the longest book in the world at 9,609,000 characters. The Book is highly inspired by proust's personal experiences.
10. Stewardesses is the longest world that is typed with only the left hond.

- Avantika Tiwari (M.A.-IInd Sem.)

GOOD THINGS

I once heard an old man say.
Shaping vases out of day
Into subtle forms sublime,
"Listen dear, good things take time."
All my life I've thought of this
When a task was lacking bliss,
When the work seemed awfully tough
And I thought I'd had enough.

So I'd give a little more
To what sometimes seemed a chore;
And, you know, without a doubt,
Good things always came about.

Contributed by- Deeksha Saini (M.A.-IInd Sem.)

WHAT IS LIFE ?

Something we live....
But just to live
Is not life....
Life has emotions
Both happy and sad
But just emotions
Is not life....
Success and failures
Is the way of life.
It makes life complete
But its just a way
Not life....
Love and respect
The main element of life
Makes us to lead life
But just this
Is not life
Then,
What is life?
We don't know
But we still live it
This question
Remains a question
That's what life is?

Contributed by- Deeksha Saini (M.A.-IInd Sem.)

JOHN UPDIKE

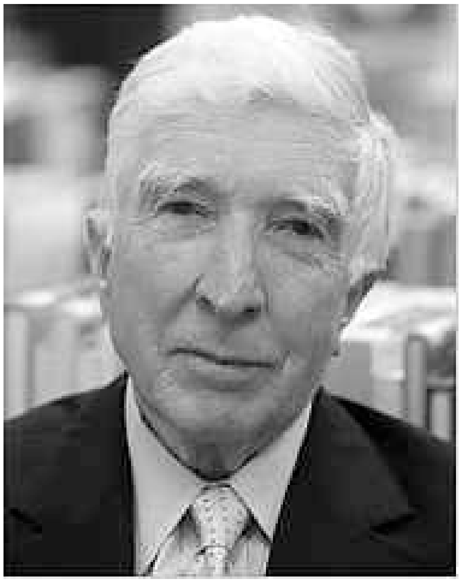

John Hoyer updike (18 March 1932 - 27 January 2009) was an American novelist, poet, short story writer, art critic, and literary critic.

Updike's most famous work in his Harry "Rabbit" Angstrom series, which chronicles Rabbit's life over the course of several decades, from young adulthood to his death. Both Rabbit is Rich. (1981) and Rabbit At Rest (1990) received the Pulitzer Prize. Updike is one of only three author (the others were. Both Tarkington and William Faulkner) to win the Pulitzer Prize for fiction more than once. He published more than twenty novels and more then a dozen short story collections, as well as poetry, art criticism, literary criticism and children's books. Hundreds of his stories, reviews, and poems appeared in the New Yorker, starting in 1954. He also wrote regularly for the New York review of Books.

Career as a writer : Updike stayed at the New Yorker as a fully staff writer for only two years, writing "Talk of the Town" Columns and submitting poetry and short stories to the magazine. In New York, Updike wrote the poems and stories that came to fill his early book like the corpentered Hen (1958) and the same door (1959). During this time, Updike also underwent a profound spiritual crisis. Suffering from a loss of religious faith, he began reading soren kierkegoard and the theologian Karl Barth.

Personal life and death : Updike married Mary E. Pennington, an art student at Radcliffe College, in 1953. She accompanied him to Oxford, England, where he attended art school and where their first child, Elizabeth was born in 1955. They divorced in 1974. In 1977 Updike married Martha Ruggles Bernhard, with whom he lived for more than thirty years in Beverly forms, Massachusetts. He died of lung cancer at a hospice in Danvers Massachusetts, on 27 January 2009.

- Reena Negi (M.A.-IInd Sem.)

INTERNET ADDICTION

Addiction of anything is bad - be it a drug, a person or a habit. It is difficult to get rid of and some of these may even be contagious.

In present scenario, Internet addiction is a growing problem for the entire world : researches show that from 5 to 10% of world population have this problem.

Internet addiction is termed as any online - related, compulsive behaviour which interferes with normal living and causes severe stress on family, friends, loved ones, and one's work environment. It is also known as Internet dependency and Internet compulsivity. Therefore, those who tend to become addicts in real life have the same chance of becoming internet addicts. On the other hand, the availability of Internet, propagation of new online possibilities and the lack of moral and social responsibility are the main driving forces causing people to drive into Internet compulsion.

In my opinion, though internet popularity itself should not be blamed for causing addiction, the tardy actions of the government and its "dual standards" - which encourage computer gaming business and internet cafes - together with the lack of adequate social programs for youth have partly added to the dimensions of the problem. However, current concern of the government and its set of actions aimed at reducing the Internet addiction and its causes indicate that problem has been recognized, therefore , I believe that in future the number of Internet addicts and those in the "risk zone" will reduce.

- Neelam Negi (Research Scholar-Psychology)

अद्यतन

समारोहक की आख्या

शैक्षणिक सत्र 2017–18 से पी.एन.जी., राज.स्ना. महाविद्यालय के मुख्य प्रशासनिक भवन के प्रांगण मे सुसज्जित झण्डारोहण स्थल पर उत्तराखण्ड शासन उच्च शिक्षा अनुभाग के आदेशों के आलोक में प्रत्येक कार्य–दिवस में प्रात: 10:15 मिनट के मध्य झण्डारोहण के साथ राष्ट्रगान का गायन/वादन, जबकि अपराह्न 3:15 मिनट के बीच राष्ट्रगीत का गायन/वादन अविराम सम्पादि किया जाता रहा है। झण्डारोहण स्थल पर राष्ट्रध्वज के सम्मान सहित उन सम्पूर्ण संवैधानिक नियमों का परिपालन सम्पूर्ण महाविद्यालय परिवार द्वारा पूर्ण मनोयोग से किया जाता आ रहा है।

राष्ट्रगान एवं राष्ट्रगीत के गायन/वादन के लिए क्रीड़ा परिषद् द्वारा उच्च गुणवत्ता युक्त ध्वनि विस्तारक यंत्र लगाया गया है। 26 जुलाई को महाविद्यालय में उत्साहपूर्वक शौर्य दिवस मनाया जाता है। यह क्रम शैक्षणिक सत्र 2017 से चला आ रहा है माननीय उच्च शिक्षा मंत्री डॉ. धनसिंह रावत महोदय के निर्देशानुसार महाविद्यालय की गैलरी तथा पी.जी. भवन के मुख्य द्वार से लगी दीवार में शौर्य की दीवार सजायी गयी हैं। जिसका उद्घाटन 26 जुलाई 2017 को क्षेत्रीय विधायक माननीय दीवान सिंह बिष्ट जी के कर कमलों से सम्पादित हुआ। 26 जुलाई, 15 अगस्त एवं 26 जनवरी के शुभ अवसर पर एन.सी.सी. के कैडेट्स एवं महाविद्यालय परिवार के सम्पूर्ण सदस्यो द्वारा शौर्य की दीवार में सजी वीरों के चित्रों में पुष्प अर्पित कर सलामी दी जाती है।

सरदार पटेल जयन्ती के दिन रन फॉर यूनिटी का आयोजन करने के साथ उनके जीवन दर्शन पर विद्वान प्राध्यापकों एवं विद्यार्थियों द्वारा व्याख्यान दिए जाते हैं इसी तरह गाँधी जयन्ती, शास्त्री जयन्ती, डॉ. भीमराव अम्बेडकर जन्म दिवस आदि मनाए जाते हैं।

छात्र संघ द्वारा आयोजित वार्षिक उमंग–तरंग समारोह में केन्द्रीय तथा राज्य के माननीय मंत्रियों, माननीय मुख्यमंत्री महोदय उत्तराखण्ड जैसे महानुभावों का संस्था में आगमन महाविद्यालय परिवार के लिए 'अतिथि देवो भव' सार्थक करता है।

– डॉ. जी.सी. पन्त (समारोहक)

क्रीड़ा परिषद्

विभागीय आख्या 2017-2018 एवं 2018-2019

महाविद्यालय परिसर में लगभग 25 खेलों को खेलने की सुविधा उपलब्ध है। प्रत्येक क्रीड़ा सत्र में कुमाऊँ विश्वविद्यालय अन्तर्महाविद्यालय की विभिन्न प्रतियोगिताओं में संस्था की 28 से 30 तक (महिला/पुरुष) टीमें सहभाग करती हैं। प्रत्येक सत्र में कुमाऊँ विश्वविद्यालय के खेल चक्रानुसार अन्तर्महाविद्यालय प्रतियोगिता की तिथि का निर्धारण होते ही संस्था की टीम का ट्रायल लेकर चयन किया जाता है, पश्चात् कुशल प्रशिक्षकों द्वारा टीम को अधिकतम 10 दिनों का प्रशिक्षण देने के उपरान्त चिकित्सालय द्वारा प्रदत्त स्वस्थता प्रमाण पत्र एवं प्रतिभागी तथा उसके अभिभावक के द्वारा शपथ पत्र देने के उपरान्त, खिलाड़ी को महाविद्यालय की टीम में शामिल किया जाता है। खिलाड़ी को उसके खेल से सम्बन्धित सम्पूर्ण किट एवं तत्सम्बन्धित सहायक सामग्री से सुसज्जित कर कुशल एवं अनुभवी टीम मैनेजर तथा प्रशिक्षक के संरक्षण में टीम आयोजन स्थल को भेजी जाती है।

<u>सत्र 2017-2018 एवं सत्र 2018-2019 में क्रीड़ा परिषद द्वारा पारित प्रस्ताव (लिए गए निर्णय)</u>

1. टीम का ट्रायल को लेकर चयन के उपरान्त दस-दिवसीय प्रशिक्षण अवधि में प्रत्येक दिवस रु. 20/- का नाश्ता (पुष्टाहार) सम्बन्धित टीम के प्रत्येक सदस्य को दिया जाएगा।
2. विभिन्न टीमों के खिलाड़ियों को ब्राण्डेड किट, स्पोर्ट्स शूज, मोजा आदि सहायक सामग्री प्रदान की जाएगी।
3. संस्था में सम्पादित होने वाली अन्तर्महाविद्यालय (कु.वि.वि.) प्रतियोगिता में आमंत्रित मुख्य अतिथि, विशिष्ट अतिथियों, चीफ सलैक्टर एवं अन्य सलैक्टरों, पर्यवेक्षक तथा निर्णायक मण्डल के साथ अन्य समस्त सहयोगियों (जो विश्वविद्यालय/महाविद्यालय) क्रीड़ा परिषद् द्वारा आमंत्रित हो को (ब्राण्डेड ट्रेक सूट) प्रदान कर पुरस्कृत किया जाएगा।
4. संस्था में विभिन्न महाविद्यालयों से आए टीम मैनेजरों एवं प्रशिक्षकों को स्मृति चिन्ह भेंट किए जाऐंगे।
5. संस्था की टीम के साथ जाने वाले टीम मैनेजरों एवं प्रशिक्षकों को एक क्रीड़ा सत्र में एक ब्राण्डेड ट्रैक सूट देकर सम्मानित किया जाएगा।
6. अन्तर्महाविद्यालय प्रतियोगिताओं में संस्था की प्रथम स्थान प्राप्त करने वाली टीम के सम्पूर्ण सदस्यों को ब्राण्डेड ट्रेक सूट देकर सम्मानित किया जाएगा।

7. संस्था के खिलाडी जो कुमाऊँ विश्वविद्यालय की टीम के सदस्य के रूप में अखिल भारतीय, राष्ट्रीय, नॉर्थ जोन अर्न्तविश्वविद्यालय प्रतियोगिताओं में सहभाग करेंगे, संस्था में वापसी पर उन्हें ब्राण्डेड ट्रैक सूट प्रदान कर सम्मानित किया जायेगा।

8. अन्तर महाविद्यालय प्रतियोगिताओं में संस्था के लिए स्वर्णपदक जीतने वाले खिलाड़ियों को भी क्रीड़ा परिषद् ब्राण्डेड ट्रेक सूट प्रदान कर सम्मानित करेगी।

9. प्रत्येक क्रीड़ा सत्र में वार्षिक क्रीड़ा समारोह के अवसर पर छात्र संघ पदाधिकारियों को ब्राण्डेड स्पोर्ट्स शूज एवं वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह में उन्हें क्रीड़ा परिषद् का ब्राण्डेड ट्रेक सूट प्रदान किया जायेगा।

10. विगत सत्रों की ही भाँति इन सत्रों में भी बढ़ती मंहगाई के साथ आवागमन में होने वाली परेशानियों तथा अन्य अनुषांगिक व्ययों को दृष्टिगत रखते हुए क्रीड़ा परिषद् द्वारा सम्बन्धित क्रीड़ा सत्रों में भी प्रस्तावित किया गया है कि प्रतिभागी छात्र/छात्रा, टीम मैनेजर एवं प्रशिक्षक को मुख्यालय से गन्तव्य स्थल की कुल दूरी (गन्तव्य स्थल की दूरी x रु.2.00/-दो मात्र) प्रति किलोमीटर यात्रा भत्ता दिया जाएगा। खेलों को बढ़ावा तथा खिलाड़ियों के उत्साहवर्धन के लिए ऐसी उदार व्यवस्था देने वाली यह अद्यतन प्रथम संस्था है।

11. क्रीड़ा सत्र 2017-2018 एवं 2018-2019 की अग्रांकित उपलब्धियाँ क्रीड़ा डायरी 2017-2018 एवं 2018-2019 में उल्लिखित सफलताओं का श्रेय क्रीड़ा परिषद् की संरक्षिका प्राचार्य डॉ. (श्रीमती) हेमा प्रसाद, क्रीड़ा परिषद् के सम्मानित प्राध्यापक सदस्यों, कुशल एवं कर्मठ प्रशिक्षकों, छात्र संघ पदाधिकारियों, महाविद्यालय से राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिभाग कर लौटे खिलाड़ियों को जाता है।

क्रीड़ा डायरी से

पी.एन.जी. राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामनगर (नैनीताल) : क्रीड़ा परिषद्।

वर्ष 2017-18 में अन्तर विश्वविद्यालय, राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय क्रीड़ा प्रतियोगी छात्र/छात्राओं का विवरण

क्र.	छात्र/छात्रा का नाम	क्रीड़ा का नाम	आयोजन का स्थल	उपलब्धि का विवरण	अन्य
1	अरमान अली	फुटबॉल	राज. स्ना. महा. पिथौरागढ़	**कु.वि.वि. टीम के सदस्य एवं नॉर्थ जोन सहभाग।**	
2	मुजीबुर रहमान	फुटबॉल	राज. स्ना. महा. पिथौरागढ़	,,	**पदक**
3	राहुल भण्डारी	लॉन टेनिस	राज. स्ना. महा. द्वाराहाट	,,	1. सोनी जोशी-एथलेटिक्स गोल्ड
4	सूरज सिंह	योगा पु.	आम्रपाली इंस्टीट्यूट, हल्द्वानी	,,	2. रूपेश यादव-एथलेटिक्स सिल्वर
5	सोनी जोशी	एथलेटिक्स	राज. स्ना. महा. रूद्रपुर	,,	3. ममता रावत-ड्रॉप रो बॉल सिल्वर
6	सोनिया रावत	खो-खो महिला वर्ग	एस.आई.एम.टी. गदरपुर	,,	4. अमन शर्मा-ड्रॉप रो बॉल सिल्वर
7	हेमा रजवार	खो-खो महिला वर्ग	एस.आई.एम.टी. गदरपुर	,,	
8	रूपेश यादव	5000 एवं 10000 मी.	राज. स्ना. महा. रूद्रपुर	,,	**अन्तर्महाविद्यालय प्रतियोगिता**
9	अजय सिंह बोरा	खो-खो पुरुष वर्ग	राज.महा. खटीमा	,,	**2017-18 की उपलब्धियाँ**
10	राहुल भण्डारी	योगा पु.	आम्रपाली इंस्टीट्यूट, हल्द्वानी	,,	1. शतरंज पुरुष वर्ग - प्रथम स्थान
11	कुशाग्र पाण्डे	क्रिकेट पु.	राज. स्ना. महा. अल्मोड़ा	,,	2. योगा पुरुष वर्ग - प्रथम स्थान
12	पंकज जाटव	फुटबॉल पु.	राज. स्ना. महा. पिथौरागढ़	,,	3. फुटबॉल पुरुष वर्ग - द्वितीय स्थान
13	प्रियंका भण्डारी	वालीबॉल म.	राज.महिला महा. हल्द्वानी	,,	4. खो-खो महिला वर्ग - द्वितीय स्थान
14	गौरव मिश्रा	हैण्डबॉल पु.	एम.बी.पी.जी.राज.स्ना.महा.	,,	
15	अमन शर्मा	ड्रॉप-रो बॉल	राज.स्ना.महा. रूद्रपुर	,,	कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल की ड्रॉप रो
16	ममता रावत	ड्रॉप-रो बॉल	राज.स्ना.महा. रूद्रपुर	,,	बॉल की सदस्या कु. ममता रावत तथा
17	रूपेश यादव	एथलेटिक्स	राज.स्ना.महा. रूद्रपुर	,,	छात्र अमन शर्मा ने भी रजत पदक प्राप्त
18	विनोद सिंह	शतरंज	राज.स्ना.महा. रूद्रपुर	,,	किया। इस अखिल भारतीय ड्रॉप रो बॉल
19	धर्मपाल सिंह	शतरंज	राज.स्ना.महा. रूद्रपुर	,,	प्रतियोगिता में कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल
20	प्रियंका पाल	बैडमिन्टन	एस.एस.जे.परिसर, अल्मोड़ा	,,	की टीम उपविजेता रही।
21	ओनम राणा	बास्केट बॉल	अन्तरवि.वि.बॉस्केट बॉल प्रतियोगिता, देहरादून में सहभाग।		
22	भावना आर्या	बास्केट बॉल	अन्तरवि.वि.बॉस्केट बॉल प्रतियोगिता, देहरादून में सहभाग।		
23	हिमांशु आर्या	बास्केट बॉल	अन्तरवि.वि.बॉस्केट बॉल प्रतियोगिता, देहरादून में सहभाग।		

पी.एन.जी. राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामनगर (नैनीताल) : क्रीड़ा परिषद्।

वर्ष 2018-19 में अन्तर विश्वविद्यालय, राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय क्रीड़ा प्रतियोगी छात्र/छात्राओं का विवरण

क्र.	छात्र/छात्रा का नाम	क्रीड़ा का नाम	आयोजन का स्थल	उपलब्धि का विवरण	अन्य
1	उमा आर्या	खो-खो छात्रा वर्ग	फैजाबाद (उ.प्र.)	नॉर्थ जोन हेतु चयन एवं सहभाग	**विशिष्ट उपलब्धियाँ**
2	वैशाली कनवाल	खो-खो छात्रा वर्ग	फैजाबाद (उ.प्र.)	,,	1. कुमाऊँ विश्वविद्यालय नैनीताल ड्रॉप रो बॉल छात्रा
3	कमलेश सिंह	खो-खो छात्रा वर्ग	फैजाबाद (उ.प्र.)		वर्ग टीम की सदस्या ममता रावत ने सिंगल इवेन्ट में
4	सौरभ सिंह	वॉलीबाल छात्र वर्ग	कानपुर (उ.प्र.)	,,	स्वर्ण पदक प्राप्त किया।
5	गौरव जोशी	वॉलीबाल छात्र वर्ग	कानपुर (उ.प्र.)	,,	
6	अनमोल शर्मा	वॉलीबाल छात्र वर्ग	कानपुर (उ.प्र.)	,,	2. कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल ड्रॉप रो बॉल छात्र
7	प्रियंका भण्डारी	वॉलीबाल छात्र वर्ग	कानपुर (उ.प्र.)		वर्ग टीम के छात्रों अमन शर्मा एवं विवेक थापा ने डबल
8	प्रदीप चौधरी	कबड्डी छात्र वर्ग	एम.डी.यू.रोहतक (हरियाणा)	,,	इवेन्ट में रजत पदक प्राप्त किये।
9	मीनू महरा	बॉस्केटबॉल छात्रा वर्ग		,,	**पदक**
10	भावना आर्या	बॉस्केटबॉल छात्रा वर्ग		,,	1. वेटलिफ्टिंग छात्र वर्ग - 02 स्वर्ण
11	ऋषभ टम्टा	बॉस्केटबॉल छात्र वर्ग	जामिया इस्लामिया, दिल्ली	,,	1. एथलेटिक्स छात्र वर्ग - 02 स्वर्ण
12	पंकज मनराल	फुटबॉल छात्र वर्ग	जालंधर (पंजाब)	,,	3. बॉक्सिंग छात्र वर्ग - 01 रजत
13	मुजीबुर्रहमान	फुटबॉल छात्र वर्ग	जालंधर (पंजाब)	,,	4. एथलेटिक्स छात्रा वर्ग - 02 रजत
14	विक्रम रावत	क्रिकेट छात्र वर्ग		,,	5. एथलेटिक्स छात्र वर्ग - 02 काँस्य
15	मौहम्मद समीर	सेपक टाकरा छात्रवर्ग	शिवामोगा (कर्नाटक)	अखिल भा.अन्त.महा. प्रतियो.	6. एथलेटिक्स छात्रा वर्ग - 02 काँस्य
16	अमन शर्मा	कुश्ती छात्र वर्ग	रोहतक (हरियाणा)	**नॉर्थ जोन**	
17	अमन शर्मा	ड्रॉप रो बॉल छात्र वर्ग	फगवाड़ा (पंजाब)	अखिल भा.अन्त.महा. प्रतियो.	**अन्तर्महाविद्यालय प्रतियोगिता**
18	विवेक थापा	ड्रॉप रो बॉल छात्र वर्ग	फगवाड़ा (पंजाब)	अखिल भा.अन्त.महा. प्रतियो.	**2018-19 की उपलब्धियाँ :-**
19	ममता रावत	ड्रॉप रो बॉल छात्रा वर्ग	फगवाड़ा (पंजाब)	अखिल भा.अन्त.महा. प्रतियो.	**1. खो-खो छात्र वर्ग - उपविजेता**
20	धरमपाल सिंह	शतरंज छात्र वर्ग	मेरठ	**नॉर्थ जोन**	**2. वॉलीबाल छात्र वर्ग - उपविजेता**
21	ममता रावत	क्रिकेट छात्रा वर्ग	रोहतक (हरियाणा)	**नॉर्थ जोन**	**3. योगा - उपविजेता**
22	महेन्द्र सिंह	योगा छात्र वर्ग	चेन्नई (मद्रास)	अखिल भा.अन्त.महा. प्रतियो.	
23	हिमांशु कुमार	योगा छात्र वर्ग	चेन्नई (मद्रास)	अखिल भा.अन्त.महा. प्रतियो.	
24	विवेक थापा	हैण्डबॉल छात्र वर्ग	अमृतसर (पंजाब)	**नॉर्थ जोन**	कुमाऊँ विश्वविद्यालय नैनीताल की मिनी
25	पूजा पाल	बैडमिन्टन छात्रा वर्ग	जालंधर (पंजाब)	,,	गोल्फ टीम अखिल भारतीय प्रतियोगिता में
26	राहुल भण्डारी	लॉन टेनिस छात्र वर्ग	रोहतक (हरियाणा)	,,	उपविजेता रही। इस महाविद्यालय के छात्र रोहित ने
27	विरेन्द्र रावत	लॉन टेनिस छात्र वर्ग	रोहतक (हरियाणा)	,,	01 स्वर्ण, 01 रजत एवं 03 काँस्य पदक जीते।
28	दीपक जोशी	वेटलिफ्टिंग छात्र वर्ग		राष्ट्रीय स्तर	उपरौत की छात्रा वर्ग में गीता ने 01 स्वर्ण,
					04 रजत एवं 01 काँस्य पदक जीता।

प्रशस्ति/सम्मान

प्रो. संजय कुमार :

एन.एस.एस. दिवस पर लैंसडौन इकाई के द्वारा सामाजिक, सांस्कृतिक तथा साहित्यिक प्रतिबद्धता के लिए प्रशस्ति पत्र तथा सम्मान, 2017-18

अकादमिक : विशिष्ट उपलब्धियाँ :

- देव संस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार के द्वारा दिसम्बर 2017 में बोर्ड ऑफ स्टडीज में सदस्य (विषय विशेषज्ञ) के रूप में मनोनयन।

- मध्य प्रदेश लोक सेवा आयोग, इन्दौर तथा छत्तीसगढ़ लोक सेवा आयोग रायपुर द्वारा विषय विशेषज्ञ के रूप में आमंत्रण।

- जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय नई दिल्ली, नव नालंदा महाविहार (संस्कृति विभाग, भारत सरकार) पटना वि.वि. पटना, मगध वि.वि. गया इत्यादि के द्वारा बोर्ड ऑफ एक्जामिनर्स के सदस्य/बाह्य परीक्षक के रूप में नियुक्ति।

अतिथि व्याखान/विषय प्रवर्त्तन : 28, 29 अक्टूबर (2017) को स्वराज संस्थान संचालनालय, भोपाल (मध्य प्रदेश) में आधुनिक भारत में राष्ट्रवाद के विभिन्न आयाम पर अतिथि व्याख्यान)

अकादमिक/बौद्धिक संस्था की सदस्यता :

1. लाइफ मेंबर, इंडियन हिस्ट्री कांग्रेस
2. संस्थापक सदस्य, सेंटर फॉर जेंडर स्टडीज, पटना
3. सदस्य तथा सदस्य कार्यकारिणी-सेंटर फॉर पीश्रेंट स्टडीज, पटना
4. लाइफ मेंबर, सेण्ट्रल इंडियन हिस्टॉरिकल रिसर्च फाउण्डेशन, ग्वालियर

- इंडियन काउंसिल फॉर कल्चरल रिलेशंस भारत सरकार द्वारा विदेशों में चेयर हेतु पैनल में चयन हेतु संस्तुत (प्रतीक्षारत)

डॉ. प्रीति त्रिवेदी :

1. राष्ट्र कवि पं. वंशीधर शुक्ल स्मारक एवं साहित्य प्रकाशन समिति लखीमपुर-खीरी (उ.प्र.) द्वारा **''अवधी-वारिधि''** पुरस्कार।
2. राष्ट्र कवि पं. वंशीधर शुक्ल स्मारक एवं साहित्य प्रकाशन समिति लखीमपुर-खीरी (उ.प्र.) द्वारा जन कवि **''वंशीधर शुक्ल''** पुरस्कार।

डॉ. जी.सी. पन्त :

4 अन्तर्राष्ट्रीय शोध पत्र (आयुध इन्टरनेशनल जनरल) पुरुस्कृत।

TEACHERS ORIENTATION AND REFRESHER

S.No.	NAME	PLACE	DATE	COURSE NAME
1	Dr. Deepak Khati (Astt. Prof. Commerce)	UGC-HRDC Kumaun University Nainital	18-06-2018 to 14-07-2018	Orientation Programme
2	Dr. Prakash Chandra Paliwal (Astt. Prof. Botany)	AMU UGC-HRDC	08-03-2018 to 06-04-2018	Orientation Programme
3	Dr. Shipra Pant (Astt. Prof. Music)	UGC-HRDC Kumaun University Nainital	18-06-2018 to 14-07-2018	Orientation Programme
4	Dr. Krishna Bharti (Astt. Prof. Economics)	UGC-HRDC Kumaun University Nainital	18-06-2018 to 14-07-2018	Orientation Programme
5	Dr. Kamla Tiwari (Astt. Prof. Psychology)	UGC-HRDC Kumaun University Nainital UGC-HRDC Kumaun University Nainital	25-10-2017 to 21-11-2017 21-02-2019 to 14-03-2019	Orientation Programme Refresher Course
6	Dr. Nivedita Awasthi (Astt. Prof. Home Science)	UGC-HRDC Aligarh	January 2018	Refresher Course Good & Biotechnology
		P.N.G.Govt. P.G. College Ramnagar (Nainital)	February 2019	SPSS for Social Science Data Analysis One Week Workshop
7	Dr. D.N. Joshi (Astt. Prof. Geography)	Vardhman College Bijnor (Uttar Pradesh)	25-04-2019 to 28-04-2019	Gour days Training Programme on Academic Leadership
		Govt. P.G. College Panchkula (Haryana)	February 22-24-2019	Research Paper Presentation in XII International Geographical Union "India Conference on Climate Change"
8	Dr. Abhilasha Kannaujia (Astt. Prof. & Geography)	University of Geneva	14-04-2019 to 15-06-2019	CERG-C2019
9	Dr. Bhawana Pant (Astt. Prof. Zoology)	UGC-HRDC Summar School, Nainital	05-07-2019 to 19-07-2019	Environmental Study
10	Dr. Moolchandra Shukla (Astt. Prof. Sanskrit)	UGC-HRDC B.H.U. Varansi (U.P.)	01-09-2017 to 28-09-2017	Orientation Programme (अभिविन्यास कार्यक्रम)
11	Dr. Moolchandra Shukla	UGC-HRDC Dept. of Sanskrit D.D.U. Gorakhpur (U.P.)	11-08-2018 to 31-08-2018	Refresher Course (पुनश्चर्या पाठ्यक्रम)
12	Dr. Anumita Agarwal (Asso. Prof. Economics)	Hiroshima (Japan)	01.08.2019 to 06.08.2019	Global Network against Weapons and Nuclear Power in Space-Indian Chapter
13	Dr. Abhilash Kannaujia (Astt. Prof. Geography)	UGC-HRDC Kumaon University Nainital	27.08.2019 to 09.09.2019	Refresher Course
14	Dr. Anurag Shriwastav (Astt. Prof. Geography)	UGC-HRDC Kumaon University Nainital	27.08.2019 to 09.09.2019	Refresher Course

हिन्दी-विभागीय-परिषद्

2017-18 एवं 2018-19

सर्वप्रथम हिन्दी विभाग (सत्र 2017-18, 2018-19) के तत्वाधान में हिन्दी परिषद के पदाधिकारियों का चयन कर एक संघ का गठन किया गया, जिसमें निम्नाकिंत छात्र/छात्राएँ वरिष्ठता के क्रम में विभिन्न पदों पर चयनित हुए।

सत्र : 2017-18

क्र.सं.	नाम छात्र/छात्रा	कक्षा	पद
1.	कमलेश	स्नातकोत्तर तृतीय सत्र	अध्यक्ष
2.	सीमा	स्नातकोत्तर प्रथम सत्र	उपाध्यक्ष
3.	नीलम	स्नातकोत्तर पंचम सत्र	सचिव
4.	नवीन	स्नातकोत्तर तृतीय सत्र	कोषाध्यक्ष
5.	शीतल	स्नातकोत्तर प्रथम सत्र	कक्षा प्रतिनिधि

सत्र : 2018-19

क्र.सं.	नाम छात्र/छात्रा	कक्षा	पद
1.	स्वराज	स्नातकोत्तर चतुर्थ सत्र	अध्यक्ष
2.	ममता/सीमा	स्नातकोत्तर द्वितीय सत्र	उपाध्यक्ष
3.	नीलम मनराल	स्नातकोत्तर षष्ठ सत्र	सचिव
4.	नवीन	स्नातकोत्तर चतुर्थ सत्र	कोषाध्यक्ष
5.	परिधि, शुभम्, शीतल	स्नातकोत्तर द्वितीय सत्र	कक्षा प्रतिनिधि

इसके पश्चात् कार्यक्रमों की श्रृंखला के अन्तर्गत निम्नाकिंत प्रतियोगिताएँ आयोजित की गई, जिनमें प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय एवं सॉन्त्वना पुरस्कार प्राप्त छात्र/छात्राओं के नाम इस प्रकार हैं -

निबन्ध प्रतियोगिता, विषय - राष्ट्र भाषा हिन्दी

क्र.सं.	नाम छात्र/छात्रा	कक्षा	पद
1.	कु. डिम्पल	स्नातकोत्तर द्वितीय सत्र	प्रथम
2.	कु. चेतना	स्नातकोत्तर द्वितीय सत्र	द्वितीय
3.	कु. मंजू	स्नातकोत्तर द्वितीय सत्र	तृतीय

स्वरचित कविता प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम छात्र/छात्रा	कक्षा	पद
1.	कु. परिधि	स्नातकोत्तर द्वितीय सत्र	प्रथम
2.	कु. शमा परवीन	स्नातकोत्तर द्वितीय सत्र	द्वितीय
3.	कु. सीमा	स्नातकोत्तर द्वितीय सत्र	तृतीय
4.	कु. भारती पाठक,कविता रावत	स्नातकोत्तर चतुर्थ सत्र	सॉन्त्वना प्रथम, द्वितीय

आशु भाषण प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम छात्र/छात्रा	कक्षा	पद
1.	कमल सैनी	स्नातकोत्तर चतुर्थ सत्र	प्रथम
2.	स्वराज	स्नातकोत्तर चतुर्थ सत्र	द्वितीय
3.	कविता रावत	स्नातकोत्तर चतुर्थ सत्र	तृतीय
4.	चेतना	स्नातकोत्तर द्वितीय सत्र	तृतीय

सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी

क्र.सं.	नाम छात्र/छात्रा	कक्षा	पद
1.	स्वराज	स्नातकोत्तर चतुर्थ सत्र	प्रथम
2.	कविता रावत	स्नातकोत्तर चतुर्थ सत्र	द्वितीय
3.	कमलेश	स्नातकोत्तर चतुर्थ सत्र	तृतीय
4.	राकेश	स्नातकोत्तर चतुर्थ सत्र	तृतीय

हिन्दी-विभाग - (बायें से दायें)
कु. भावना अग्रवाल,डॉ. जी.सी.पन्त एसोसिएट प्रो.हिन्दी
डॉ. (श्रीमती) हेमा प्रसाद प्राचार्य
डॉ. प्रीति त्रिवेदी (विभाग प्रभारी हिन्दी)
डॉ. दुर्गा तिवारी

- डॉ. प्रीति त्रिवेदी (हिन्दी-परिषद-प्रभारी)

मनोविज्ञान–विभाग

विभागीय आख्या (2017–2019)

महाविद्यालय में मनोविज्ञान विभाग की स्थापना वर्ष–1980 में डॉ. लाभ सिंह (भूतपूर्व प्राचार्य) द्वारा की गयी थी। वर्तमान समय में मनोविज्ञान विभाग में प्राध्यापक के कुल चार स्वीकृत पद है जिन पर डॉ. अनीता जोशी, विभागाध्यक्ष (नेट, पीएच.डी.), डॉ. कमला तिवारी (पीएच.डी.), डॉ. रूपाली जोशी(नेट, पीएच.डी.), डॉ. रंजीता जौहरी (पीएच.डी.) कार्यरत है।

सत्र 2017–18 में मनोविज्ञान विभाग द्वारा विभागीय परिषद् का गठन किया गया, जिसमें आजम अध्यक्ष, कु.प्रीति उपाध्यक्ष, श्रद्धा अवस्थी सचिव, हिमांशु सिंह रावत संयुक्त सचिव एवं तनवीर कोषाध्यक्ष पद पर चुने गये। इस वर्ष विभाग द्वारा दिनांक 12.2.2018 को स्नातक कक्षाओं हेतु एक **पोस्टर प्रतियोगिता** का आयोजन किया गया जिसमें पोस्टर का विषय – **स्नातक पाठ्यक्रम से सम्बन्धित किसी एक विषय पर पोस्टर निर्माण** रखा गया था। जिसमें हिमांशु सिंह रावत प्रथम, रूचि रावत द्वितीय एवं गुलशेर मलिक तृतीय स्थान पर प्ररूस्कृत रहे। दिनांक 15.02.2018 को स्नातकोत्तर कक्षाओं हेतु एक **स्लोगन लेखन** प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें प्रतियोगिता का विषय विभिन्न मनोविज्ञानकों द्वारा दिये गये अभिप्रेरणात्मक कथन रखा गया था। जिसमें हरिओम प्रथम, कादिर द्वितीय एवं टिंकी मौलेखी तृतीय स्थान पर प्ररूस्कृत रके। दिनांक 12.02.2018 को मनोविज्ञान परिषद द्वारा **विश्व मनोविज्ञान दिवस** मनाने हेतु एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसमें मनोविज्ञान विषय के समस्त विद्यार्थियों को मनोविज्ञान दिवस के विषय में उपयोगी जानकारी प्रदान की गयी।

सत्र 2018–19 में मनोविज्ञान विभाग द्वारा विभागीय परिषद् का गठन किया गया, जिसमें कादिर अध्यक्ष, श्रद्धा अवस्थी उपाध्यक्ष, वैष्णवी सचिव, रूचि नेगी संयुक्त सचिव एवं सोनिया कोषाध्यक्ष पद पर चुने गये। दिनांक 10.10.2018 को मनोविज्ञान परिषद द्वारा **विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस** का आयोजन किया गया, जिसमें मनोविज्ञान विषय के समस्त विद्यार्थियों को मानसिक स्वास्थ्य दिवस के विषय में उपयोगी जानकारी प्रदान की गयी।

दिनांक 11.02.19 से 17.02.19 तक मनोविज्ञान विभाग द्वारा महाविद्यालय में सर्वप्रथम एस.पी.एस.एस. पर एक **सात–दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला** का आयोजन किया गया, जिसमें छः दिवस बनारस विश्वविद्यालय के डॉ. योगेश आर्या एवं डॉ. तुषार सिंह द्वारा देश के विभिन्न राज्यों से आये शोधार्थियों एवं शिक्षकों को एस.पी.एस.एस. सॉफ्टवेयर की सहायता से शोध सम्बन्धी आंकड़ों के सांख्यिकिय विश्लेषण के सम्बन्ध में प्रशिक्षण प्रदान किया गया। इस प्रशिक्षण के अन्तर्गत डॉ. योगेश आर्या जी द्वारा शोधार्थियों एवं शिक्षकों को शोध एवं सांखिकिय सम्बन्धी आधारभूत ज्ञान प्रदान किया गया, एवं डॉ. तुषार सिंह जी द्वारा शोध के अन्तर्गत प्राप्त आंकड़ों का कूट–संकेतन करना, आंकड़ों को एस.पी.एस.एस. सॉफ्टवेयर में अंकित करना, आंकड़ों की सफाई करना, आंकड़ों का क्रम परिवर्तन करना, अनउपलब्ध मूल्यों के प्रकार एवं उनका विश्लेषण करना, नोट–पेट पर लिखना एवं नोट–पेट तथा एक्सल की फाइलों को एस.पी.एस.एस. सॉफ्टवेयर की फाइलों में प्रतिहस्तान्तरित करना, एकांश–लेखन, एकांश–विश्लेषण, आंकड़ों का मध्यमान, माध्य, बहुलांक, सहसम्बन्ध, टी–परीक्षण प्रसरण–विश्लेषण मूल्य ज्ञात करना, आंकड़ों के एकत्रीकरण हेतु प्रयोग में लायी जाने वाली मापनी एवं उसके प्रत्येक पदों की विश्वसनीयता एवं वैधता ज्ञात करना आदि का प्रशिक्षण प्रदान किया गया एवं शोध के अन्तिम सातवें दिवस डॉ. अनुमिता अग्रवाल जी द्वारा वर्ड की फाइल में ए.पी.ए. के नियमानुसार शोध–ग्रन्थ सूची लिखने का प्रशिक्षण प्रदान किया गया। इस 'सात–दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला' के आयोजन का उद्देश्य शोधार्थियों को शोध के अन्तर्गत एकत्र आँकड़ों का शीघ्र–अतिशीघ्र शुद्धरूपेण विश्लेषण करने का प्रशिक्षण देना था, जिसके परिणामस्वरूप उनके शोध की गुणवत्ता में वृद्धि हो सके।

वर्तमान समय में मनोविज्ञान विभाग में शोध कार्य हेतु चार शोधार्थी पंजीकृत हैं एवं इस वर्ष विश्वविद्यालय द्वारा मनोविज्ञान विभाग के तीन शोधार्थी सोनाली काण्डपाल, लक्ष्मण सिंह एवं दीपक कुमार को विश्वविद्यालय द्वारा पीएच.डी. की शोध उपाधि प्रदान की गयी।

अर्थशास्त्र–विभाग

विभागीय आख्या (2017–2018 एवं 2018–19)

प्रत्येक सत्र में अर्थशास्त्र विभागीय परिषद का गठन किया जाता है, जिसमें 2017–18 में अध्यक्ष पद पर एम.ए. चतुर्थ सेमेस्टर के जगदीश, उपाध्यख पद पर एम.ए. द्वितीय सेमेस्टर की उन्नति गुसाईं, सचिव पद पर बी.ए. तृतीय वर्ष के सचिन मेहरा, सहसचिव पद बी.ए. तृतीय सेमेस्टर की पूजा पन्त, कोषाध्यक्ष पद पर बी.ए. प्रथम सेमेस्टर के मनोज कुमार निर्वाचित हुए। सत्र 2017–18 में दिनांक 07.03.2018 को नोटबंदी का कालाबाजारी पर प्रभाव विषय पर निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें निर्णायक मण्डल द्वारा निम्न विद्यार्थियों को विजेता घोषित किया गया, जिसमें एम.ए. द्वितीय सेमेस्टर की कु. हेमा, कु.सुनीता, कु. सोनिया शर्मा ने क्रमशः प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त किया। इस सत्र में एम.ए. द्वितीय सेमेस्टर की छात्रा कु. उन्नति गुसाई ने अर्थशास्त्र में कुमाऊँ विश्वविद्यालय में सर्वोच्च अंक 87 प्रतिशत प्राप्त किये। डॉ. अनुमिता अग्रवाल के निर्देशन में एक शोध छात्रा पंजीकृत हुई। इस सत्र में डॉ. अनुमिता अग्रवाल एवं डॉ. कृष्णा भारती द्वारा विभिन्न राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय संगोर्ष्ठियों में प्रतिभाग किया गया तथा अपने शोधपत्र प्रस्तुत किये गये।

सत्र 2018–19 में दिनांक 14.9.2019 को विभागीय परिषद का गठन हुआ जिसमें अध्यक्ष पद पर एम.ए. तृतीय सेमेस्टर के संजय सिंह, उपाध्यक्ष पद पर एम.ए. प्रथम सेमेस्टर की शिवानी, सचिव पद पर बी.ए. पंचम सेमेस्टर के तरूण कुमार, सहसचिव पद पर बी.ए. तृतीय सेमेस्टर के नवीन कुमार, कोषाध्यक्ष पद पर बी.ए. प्रथम सेमेस्टर के मौ. जावेद निर्वाचित हुए। दिनांक 06.10.2018 को 'अस्त्र मुक्त विश्व' विषय पर पोस्टर प्रतियोगिता एवं संगोष्ठी का आयोजन किया गया, इसमें अर्थशास्त्र के सभी छात्र/छाओं एवं प्राध्यापकों ने अपने–अपने विचार प्रस्तुत किये। इसमें एम.ए. तृतीय सेमेस्टर की उन्नति गुसाई एवं संजय सिंह ने क्रमशः प्रथम व द्वितीय स्थान प्राप्त किया। इसी सत्र में विभाग द्वारा 26.11.2018 को अतिथि व्याख्यान का आयोजन किया गया, जिसमें अतिथि वक्ता डॉ. संजय धनवटे, प्राचार्य NKS Model College Karanja (Gh) Wardha, Maharastra द्वारा Impact of Disarnament of Socio-Economic Development of Developing Countries पर व्याख्यान प्रस्तुत किया गया। सत्र 2018–19 में डॉ. अनुमिता अग्रवाल को Indian Economic Association में North Zone का समन्वयक नामित किया गया। डॉ. कृष्णा भारती ने UGC-HRDC कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल में दिनांक 18 जून 2018 से 18 जुलाई 2018 तक अभिविन्यास कार्यक्रम में प्रतिभाग किया। डॉ. अनुमिता अग्रवाल एवं डॉ. कृष्णा भारती ने विभिन्न राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों में प्रतिभाग किया एवं अपने शोधपत्र प्रस्तुत किये। डॉ. कृष्णा भारती ने S.P.S.S. सात दिवसीय कार्यशाला (मनोविज्ञान विभाग द्वारा आयोजित) दिनांक 11.2.2019 से 17.2.2019 में प्रतिभाग किया।

पदोन्नति पश्चात् प्राचार्य बनने पर डॉ. धन सिंह कुँवर (विभागाध्यक्ष अर्थशास्त्र) का विदाई समारोह

अर्थशास्त्र विभागीय परिषद (2018–19) के कार्यक्रम में अतिथि वक्ता डॉ. संजय धनवटे प्राचार्य, (NKS Model College, Kharanja, Wardha, Maharastra) द्वारा व्याख्यान प्रस्तुतीकरण

DEPARTMENT OF GEOGRAPHY

(Report 2017-2019)

Presently the Department is running with three faculty members -

1. Abhilasha Kannaujia (HOD) Assistant Professor
2. Dr. Anurag Srivastava, Assistant Professor
3. Dr. D.N. Joshi, Assistant Professor

At present two Lab. Staffs are working in the department. Presently BA, MA and Ph.D courses are being offered to students. The class room study is combined with seminars, dissertations, field-work and local excursion at UG and PG levels.

All the above mentioned teachers have completed orientation course in 2018. Abhilasha Kannaujia had presented 5 research paper in different national seminar/International Seminar. Dr. Anurag Srivastava had presented four research paper in different National/International Seminar and one research paper was published. Dr. D.N. Joshi had presented 09. research paper in different National/International Seminars and 01. paper was published. Dr. D.N. Joshi is also guiding a research scholar as supervisor. All the three teachers had done a SPSS workshop which was organised from 11 Feb. 2019 to 17 Feb. 2019.

Each year Student Parishad is constituted at departmental level with students as office bearers, which organises various activities like quiz, lecture competition etc. on contemporary issues. The students are faring well in the examination with a consistent good result at UG level (more than 7%) and Ph level (more than 85%). MA semester students of the department submit a dissertation on the allotted topic at the end of session which is presented and duly evaluated by the experts appointed from the university. In 2018-19 the total number of student in Uh is 356 and Ph is 25.

- Abhilasha Kannaujia (HOD Dept. Geography)

DEPARTMENT OF ENGLISH

(Report 2018-2019)

The Department of English , which was formulated with the inception of the College in the year 1976, is presently in its 43rd year. The Department comprises of around 1344 students inclusive of undergraduate and Post Graduates. Many brought alumni have made a mark in their respective professional areas.

In the session 2018-19, the council of English Department was formed which included the following students in their respective roles :

(i) President - Pushpa Rawat (M.A.-IV Sem.)
(ii) Vice-President - Abhishek Bora (M.A.-II Sem.)
(iii) Secretary - Vaishnavi Bhatt (B.A.-VI Sem.)
(iv) Deputy-Secretary - Mansi Rawat (B.A.-IV Sem.)
(v) Treasurer - Sunaina Bharti (B.A.-II Sem.)

Various activities, including chart making, declaration, literary quize, were organised by the department.

- Akshay Gururani (Dept. of English)

गृह विज्ञान–विभाग

विभागीय आख्या (2017-2018)

- **परीक्षा परिणाम** – सभी कक्षाओं (BA-II Sem. BA-IV Sem. तथा BA-III Sem.) का परीक्षा परिणाम 90 प्रतिशत से अधिक रहा।
- **गृह विज्ञान विभागीय परिषद का गठन किया गया जिसमें निर्वाचित सदस्य निम्नवत् रहे –**
  अध्यक्ष – कु. प्रियंका (BA-IIIyr), उपाध्यक्ष – कु. अल्फा सिद्दीकी (BA-II Sem.)
  सचिव – कु. नीलम मनराल (BA-IV Sem.), उपसचिव – कु. तनुजा तड़ियाल (BA-II Sem.)
  कोषाध्यक्ष – कु. हिमानी उपाध्याय (BA-IIIyr)
- विभागीय परिषद् के तत्वाधान में प्रायोगिक कार्यों का प्रदर्शन, ''**बदलते सामाजिक परिदृश्य में महिलाओं की भूमिका**'' विषय पर भाषण तथा ''**किशोरी बालिकाओं का स्वास्थ्य**'' विषय पर सामूहिक चर्चा का आयोजन किया गया।
- विभाग प्रभारी द्वारा 02 अन्तर्राष्ट्रीय तथा 03 राष्ट्रीय सेमिनार/संगोष्ठी में शोध पत्र प्रस्तुत किये गये।
- शोध पत्र ''**Food Terrorism : A threat to Human Health and Development**'' **International Terrorism, Tourism and Economic Health of the World Book** में प्रकाशित हुआ।

विभागीय-आख्या (2018-2019)

- स्नातक प्रथम सेमेस्टर, स्नातक तृतीय सेमेस्टर तथा स्नातक पंचम सेमेस्टर में क्रमशः 69, 14 तथा 30 विद्यार्थी अध्ययनरत् रहे।
- शैक्षणिक सत्र 2018-19 के लिए गृह विज्ञान विभाग में विभागीय परिषद् का गठन हुआ है, जिसके निर्वाचित सदस्य निम्नानुसार हैं –
  अध्यक्ष – कु. हिमानी (BA-VI Sem.), उपाध्यक्ष – कु. रिया बिष्ट (BA-II Sem.)
  सचिव – कु. आँचल (BA-VI Sem.), उपसचिव – कु. ललिता रावत (BA-IV Sem.)
  कोषाध्यक्ष – कु. आरती रावत (BA-I Sem.)
- विभागीय परिषद् के तत्वाधान में हस्तशिल्प प्रतियोगिता आयोजित की गयी जिसमें रिया बिष्ट प्रथम, श्वेता पराशर द्वितीय तथा आरती रावत तृतीय स्थान पर विजयी हुए।
- स्नातक पंचम सेमेस्टर की पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन हुआ, जिसमें छात्राओं ने ''**पर्यावरण, स्वच्छता एवं स्वास्थ्य : एक पारस्परिक सम्बन्ध**'' विषय पर उत्कृष्ट पोस्टर निर्मित किए जिसमें कल्पना ने प्रथम, प्रियंका ने द्वितीय तथा भगती ने तृतीय स्नान प्राप्त किया।
- विभाग प्रभारी द्वारा SPSS Social Science Data Analysis कार्यशाला तथा 02 राष्ट्रीय सेमिनार/संगोष्ठी में प्रतिभाग किया गया।
- शोध पत्र "Health Status of Women and Challenges : An Indian Scenario" महिला सुरक्षा : मुद्दे एवं चुनौतियाँ Book में प्रकाशित हुआ।

– ***Nivedita Awasthi (Asstt. Prof.-H.Science)***

राजनीति–विभाग

विभागीय–आख्या (2017–2018 एवं 2018–19)

14 अगस्त 1976 का वह सुनहरा दिन जब नया सवेरा हुआ और पी.एन.जी.पी.जी. महाविद्यालय रामनगर, नैनीताल अस्तित्व में आया। सत्र 2003–04 में स्नातकोत्तर स्तर पर कला संकाय के अन्तर्गत राजनीति विज्ञान विषय महाविद्यालय में प्रारम्भ हुआ, जिसमें डॉ. हेमलता मिश्रा विभागाध्यक्ष व डॉ. जे.पी. त्यागी असिस्टेंट प्रोफेसर कार्यरत हैं।

2017–18 का विभागीय गठन किया गया जिसमें निम्नलिखित पदाधिकारी थे –

अध्यक्ष–रोहित कुमार (M.A.4th Sem.), उपाध्यक्ष–ज्योति (M.A.4th Sem.), सचिव–सौरभ कुमार (B.A. 3rd Sem.), उपसचिव – पंकज कुमार (B.A.2nd Sem.), कोषाध्यक्ष– रूपाली अग्रवाल (M.A.4th Sem.)

2018–19 का विभागीय गठन किया गया जिसमें निम्नलिखित पदाधिकारी थे –

अध्यक्ष–समीर रियाज (M.A.3rd Sem.), उपाध्यक्ष–पूजा रावत (M.A.1st Sem.), सचिव–सन्तोष कुमार (B.A. 4th Sem.), उपसचिव – योगेश सैनी (B.A.4th Sem.), कोषाध्यक्ष – विनोद कुमार (M.A.4th Sem.)

दिनांक 09.05.2018 को राजनीति विज्ञान विभाग परिषद की ओर से "श्रम दिवस की महत्ता" विषय पर एक भाषण प्रतियोगिता आयोजित की गयी जिसमें निम्न विद्यार्थियों ने भाग लेकर प्रथम पुरस्कार बन्दना, द्वितीय पुरूस्कार कमल सैनी, तृतीय पुरूस्कार विजय ने प्राप्त किया।

दिनांक 07.09.2018 को राजनीति विज्ञान विभाग में श्लोगन प्रतियोगिता (विशेष नारी के सम्मान में) विषय पर एक प्रतियोगिता आयोजित की गयी जिसमें निम्न विद्यार्थियों ने भाग लेकर प्रथम पुरूस्कार रूपाली अग्रवाल B.A. 6th Sem., द्वितीय पुरूस्कार प्रियंका रावत M.A. 1st Sem., तृतीय पुरूस्कार रेखा M.A. 1st Sem. ने प्राप्त किया।

वर्तमान समय में डॉ. जे.पी. त्यागी विभागाध्यक्ष के निर्देशन में 02 छात्र शोधरत हैं व डॉ. मीनाक्षी नेगी अतिथि प्रवक्ता, श्री रोहित कुमार अतिथि प्रवक्ता कार्यरत हैं।

– डॉ. जे.पी. त्यागी (विभागाध्यक्ष)

समाजशास्त्र–विभाग

विभागीय-आख्या (2017-19)

समाजशास्त्र विभाग में दोनों सत्रों में विभागीय परिषद का गठन किया गया। विभागीय परिषद की ओर से शीर्षक जल संरक्षण हेतु समाज की भूमिका विषय पर सेमिनार आयोजित किया गया, जिसमें स्नातक व स्नातकोत्तर स्तर के छात्र/छात्राओं ने अपने विचार प्रस्तुत किये। इस अवसर पर महाविद्यालय के वरिष्ठ प्राध्यापक व छात्र-छात्रायें उपस्थित थे।

विषय के छात्र/छात्राओं ने रोवर/रेंजर्स के साथ मिलकर स्वच्छ भारत मिशन के तरह महाविद्यालय में पी.जी. ब्लॉक के बाहर व अन्दर लॉन में साफ-सफाई का कार्य किया। विभाग में डॉ. हेमलता सैनी, असिस्टेंट प्रोफेसर ICSSR द्वारा अनुदानिक मेजर रिसर्च प्रोजेक्ट शीर्षक "Education and Changing Pattern of Socio-Economic Status in Dalit Women of Uttarakhand : An Empirical Study of Kumaon Region" पर शोध कार्य कर रही हैं।

डॉ. रविन्द्र कुमार सैनी, असिस्टेंट प्रोफेसर UGC, New Delhi द्वारा शीर्षक "Social Exclusion and Untouch ability with Hillbilly Scheduled Castes : A Socially Epirical Study of Garhwal" पर माईनर रिसर्च प्रोजेक्ट स्वीकृत हुआ।

विभाग में कुल 4 प्राध्यापकों के पद स्वीकृत हैं जिसके सापेक्ष दो स्थायी व एक अतिथि शिक्षक शिक्षण कार्य कर रहे हैं। दोनों सत्रों में स्नातकोत्तर स्तर पर परीक्षा परिणाम 100 प्रतिशत रहा तथा 90 प्रतिशत विद्यार्थियों ने प्रथम श्रेणी में परीक्षा उत्तीर्ण की। 2018 IV सेमेस्टर की दो छात्राओं श्वेता बुधवाल व यामिनी मिंश्रा ने डॉ. रविन्द्र कुमार सैनी व डॉ. हेमलता सैनी के निर्देशन में लघु शोध प्रबन्ध किया।

दो सत्रों में परमजीत कौर, डॉ. हेमलता सैनी के निर्देशन में शोध कर रही छात्रा ने UGC-NET की परीक्षा उत्तीर्ण की। शौकिन M.A.IV सेमेस्टर के छात्र ने UGC-NET की परीक्षा उत्तीर्ण की। डॉ. रविन्द्र कुमार सैनी के निर्देशन में शोध कर रहे प्रभदीप सिंह ने भी UGC-NET की परीक्षा उत्तीर्ण की।

– ***डॉ. हेमलता सैनी***

गणित–विभाग

विभागीय–आख्या

सत्र 2016–17 में एम.एस.सी. चतुर्थ सेमेस्टर गणित में 34 छात्र/छात्राऐं सम्मिलित हुए जिनमें से 34 छात्र/छात्राऐं परीक्षा में उत्तीर्ण हुए तथा 28 छात्र/छात्राऐं प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण हुए जिसमें जया पाण्डे ने सर्वाधिक अंक प्राप्त किये।

सत्र 2017–18 में एम.एस.सी. चतुर्थ सेमेस्टर गणित में 33 छात्र/छात्राऐं सम्मिलित हुए जिनमें से 17 छात्र/छात्राऐं प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुए जिनमें कु. रूपाली रावत ने सर्वाधिक अंक प्राप्त किये। सत्र 2018–19 में एम.एस.सी. चतुर्थ सेमेस्टर गणित में 27 छात्र/छात्रायें हो रही है। अधिकांश छात्र/छात्राऐं के प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होने की सम्भवना है। सत्र 2018–19 में गणित परिषद का गठन किया गया जिसमें अध्यक्ष विरेन्द्र सिंह रावत M.Sc. IIIrd Sem., उपाध्यक्षा रीतिका आर्या M.Sc. Ist Sem., सचिव करन कुमार विद्यार्थी B.Sc. Vth Sem., सह–सचिव चित्रा छिम्वाल B.Sc. IIIrd Sem.एवं विभिन्न कक्षाओं के कक्षा प्रतिनिधि छात्र एवं छात्राओं का गठन किया गया तथा परिषद द्वारा विभाग में विभिन्न कार्यक्रम सम्पन्न कराये गये जैसे–Maths Quiz, Science Day...AISHE नोडल अधिकारी डॉ. प्रमोद जोशी DCF Form 2017–18 दिनांक 25.2.2019 को AISHE Portal पर upload किया गया। Achievements Dr. Dhirendra Singh Astt. Proff. Mathematics

1. One Week National Workshop on SPSS for Social Science & Data analysis 11&17 Feb. 2019 organized by P.N.G. Govt. (P.G.) College Ramnagar (Nainital).
2. One week research workshop for Ph.D Scholars (R.M.W.-2018) organized by research development cell M.B.P.G. College Haldwani (Nainital) Delivered a invited talk entilled "Computer application & Data processing in research methodology workshop" from 26 Nov. - 2 December 2018.
3. National conference an Advance in mathematics & its applications (NCAMA) during 17-18 March 2018 organized by M.B.(P.G.) College Haldwani national in association with (USERC) Dehradun presented a paper on (N.P.Q.) summability of Jacobi series.
4. Three week research methodology workshop for Ph.D scholars on 4-24 December 2018, invited talk "Mathematical aspects of research correlation & vegression".
5. Disaster management First-aid & herman improvisation methods conducted on 18-20 September 2017 at Dr. R.S.T. Uttarakhand academy of administration Nainital.
6. Refresher course in Mathematics Statistics Computer Science & Astronomy organized by U.G.C., A.S.C. University of Lucknow during 2-23 January 2019.

Books Published :-

1. A Text Book of Group Theory ISBN-978-93-80803-13-5, 2017 Publisher - S.J. Publication Meerut.
2. A Text Book of Integral calulus ISBN-978-93-80803-33-3, 2017 Publisher - S.J. Publication Meerut.
3. A Text Book of Analytical Geometry ISBN-978-93-80803-37-1, 2017 Publisher - S.J. Publication Meerut.
4. A Text Book of Mathematical Methods ISBN-978-93-80803-12-3, 2018 Publisher - S.J. Publication Meerut.
5. A Text Book of vector space & Matrices ISBN-978-93-80803-10-9, 2018 Publisher - S.J. Publication Meerut.
6. A Text Book of Advanced algebra ISBN-978-93-80803-64-7, 2018 Publisher - S.J. Publication Meerut.
7. A Text Book of function of several variables & partial differential eq^n ISBN-978-93-87007-58-1, 2019 Publisher - S.J. Publication Meerut.
8. A Text Book of linear Algebra ISBN-978-93-87007-40-0, 2019 Publisher - S.J. Publication Meerut.
9. A Text Book of complex analysis ISBN-978-93-87007-143-7, 2019 Publisher - S.J. Publication Meerut.
10. A Text Book of operation research ISBN-978-93-87007-67-3, 2019 Publisher - S.J. Publication Meerut.

AISHE नोडल ऑफिसर – डॉ. नरेन्द्र कुमार

DCF form 2016–17. 2017–18 को AISHE Portal पर upload किया गया।

– डॉ. प्रमोद जोशी (असि.प्रो. व विभाग प्रभारी–गणित)

संगीत–विभाग

विभागीय-आख्या

सत्र 2017-18

संगीत विभागीय परिषद् का निम्नवत् गठन किया गया। अध्यक्ष – प्रीति B.A. तृतीय वर्ष, उपाध्यक्ष– हर्षा छिम्वाल B.A.-4th sem., सचिव–मोनिका B.A.4th Sem., उपसचिव–करूणा तिवारी B.A. 2nd Sem., कोषाध्यक्ष – भारती B.A. 2nd Sem. विभागीय परिषद् के तत्वावधान में संगीत के विद्यार्थियों द्वारा विभाग में शास्त्रीय संगीत की विभिन्न वर्गों में प्रतियोगिता आयोजित की गई जिसके अन्तर्गत शास्त्रीय संगीत गायन प्रतियोगिता के परिणाम इस प्रकार रहे –

हितेश शर्मा B.A. 3 वर्ष–प्रथम, कु. रितु B.A. 3 वर्ष–द्वितीय, चित्रेश त्रिपाठी B.A.-2 सेमेस्टर – तृतीय

इसके अतिरिक्त विभाग में संगीत सम्बन्धी प्रश्नोत्तरी पर आधारित प्रतियोगिता भी आयोजित की गई जिसमें सभी विद्यार्थियों द्वारा प्रतिभाग किया गया।

सत्र 2018-19

अध्यक्ष–हर्षा छिम्वाल B.A. 6th Sem., उपाध्यक्ष–मोनिका आर्या B.A. 6th Sem., सचिव–करुणा तिवारी B.A.4th Sem., उपसचिव–भारती B.A. 4th Sem., कोषाध्यक्ष–भारती पाठक B.A.2nd Sem.

इस सत्र में संगीत विभागीय के द्वारा शास्त्रीय संगीत एवं सुगम संगीत आधारित प्रतियोगिता आयोजित की गई, जिसके परिणाम निम्नवत् रहे – शास्त्रीय संगीत गायन

स्नातक द्वितीय सेमेस्टर – भारती पाठक– प्रथम, श्वेता पराशर–द्वितीय

नतक चतुर्थ सेमेस्टर – सतनाम सिंह–प्रथम, हरजिन्दर सिंह–द्वितीय, ललिता रावत – तृतीय, करूणा तिवारी–सांत्वना

स्नातक षष्टम सेमेस्टर– लक्ष्मी नेगी–प्रथम, हर्षा छिमवाल – द्वितीय , अनीता–तृतीय

इसके अतिरिक्त विभाग की पूर्व छात्रा रीता पाण्डे को N.E.T.-J.R.F. की प्राप्ति हुई और वर्तमान में वह राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रानीखेत में अतिथि प्रवक्ता के रूप में कार्यरत है। संगीत विभाग के छात्र–छात्राओं द्वारा महाविद्यालय द्वारा आयोजित छात्र अभिनन्दन समारोह,राष्ट्रीय सेवा योजना तथा सेमिनार/संगोष्ठी में सक्रिय सहभागिता भी की गई।

विभाग–प्रभारी असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. शिप्रा पंत द्वारा सत्र 2017 से सत्र 2019 तक 10 राष्ट्रीय व 5 अन्तराष्ट्रीय सेमिनारों/ संगोष्ठियों में प्रतिभागिता की गई तथा निम्न शोध पत्रों का ''संगीत एवं जल का सह सम्बन्ध'', तथा ''संस्कृति और आतंकवाद का सम्बन्ध'', ''संगीत शिक्षा का मूल्यपरक अनुशीलन'', ''घरानों में भारतीय संगीत का स्वरूप'', ''भारतीय संगीत के क्षेत्र में महिला सशक्तिकरण की प्रासंगिकता'' इत्यादि शीर्षकों से शोध पत्रिकाओं में प्रकाशन हुआ। इसके अतिरिक्त विभाग प्रभारी डॉ. शिप्रा पंत द्वारा 28 दिवसीय अभिविन्यास कार्यक्रम तथा एक सप्ताह की SPSS Data-analysis की कार्यशाला में भी प्रतिभाग किया गया। सत्र 2017–18 में सेमेस्टर प्रणाली में परीक्षा परिणाम 99 प्रतिशत रहा।

– डॉ. शिप्रा पन्त (असि.प्रोफेसर-संगीत विभाग)

जन्तु–विभाग

विभागीय-आख्या : सत्र 2017-19

पी.एन.जी. राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय रामनगर में जन्तुविज्ञान विभाग की स्थापना सन् 2002 में हुई। जिसमें 10 छात्र–छात्राओं ने प्रवेश लिया था। विभाग अपने आरम्भिक वर्ष से अब तक निरन्तर विकास व छात्र–छात्राओं को योग्यता विकास का अवसर प्रदान करता रहा है। वर्तमान सत्र में 43 छात्र–छात्राओं ने प्रवेश लिया है। जन्तुविज्ञान विभाग में विषय शिक्षण हेतु दो पद स्वीकृत है, जिसमें वर्तमान में डॉ. भावना पन्त विभाग प्रभारी व डॉ. प्रदीप पाण्डे संविदा गेस्ट प्रवक्ता द्वारा अध्यापन कार्य सुचारू रूप से प्रदिपादि किया जा रहा है।

सत्र 2017–18 में विभाग में जन्तुविज्ञान परिषद् का गठन किया गया। जिसमें अध्यक्ष दीपांशु शर्मा तथा उपाध्यक्ष निधि मिश्रा, सचिव दानिश सलमानी, उपसचिव धीरज आर्या रहे। परिषद के तत्वाधान में **वन्य जीव संरक्षण दशा एवं दिशा** पर व्याख्यान आयोजित किया गया। एम.एसी. चतुर्थ सेमेस्टर के विद्यार्थियों द्वारा लघु शोध पर सेमिनार प्रस्तुत किये गये। एम.एसी. चतुर्थ सेमेस्टर के विद्यार्थियों का परीक्षाफल सत प्रतिशत रहा। जिसमें 12 छात्र–छात्राओं ने प्रथम श्रेणी प्राप्त की। मीरा रावत ने सर्वाधिक 73 प्रतिशत अंक प्राप्त किये। एम.एसी. द्वितीय वर्ष का परीक्षा फल सत प्रतिशत रहा, जिसमें 22 छात्र–छात्राओं मे से 14 ने प्रथम श्रेणी अंक प्राप्त किये।

सत्र 2018–19 में विभाग में जन्तुविज्ञान परिषद का गठन किया गया। जिसमें अध्यक्ष मनीषा सती तथा उपाध्यक्ष दानिश सलमानी सचिव धीरज आर्या उपसचिव रहे। परिषद के तत्वाधान में **जलवायु परिवर्तन एवं दुष्प्रभाव** पर व्याख्यान आयोजित किया गया। एम.एससी. तृतीय सेमेस्टर के विद्यार्थियों में सभी 23 छात्र–छात्राओं का परीक्षाफल सत प्रतिशत रहा। 18 छात्र–छात्राओं ने 60 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त किये।

विभाग में शोध कार्य प्रगति पर है। निम्नलिखित छात्र डॉ. भावना पन्त विभागप्रभारी के निर्देशन मे शोध कार्य कर रहे हैं– कु. शालिनी, राजदीप सूद, भुवन चन्द्र, राबिला अहमद। कु. शालिनी के 03 शोध पत्र विभिन्न अन्तर्राष्ट्रीय शोध पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं।

इन सत्रों में डॉ. भावना पन्त द्वारा निम्नलिखित उपलब्धि रहीं –

RESEARCH AND PUBLICATIONS :

1. International Journal/Proceeding - 03, 2. National Journal & Proceeding - 03

- SEMINARS ATTENDED & PAPER PRESENTATION - 02 (International/National/Conference)
- **Book Publication -** Environmental Biology & Animal Behaviour (BSCZO202) Uttarakhand Open University 2018.

2. PRACTICAL ZOOLOGY MSCZO505 Uttarakhand Open University 2018-19.

- **Resource Person -**

(1) National Seminar on 'Recent Trends in Commerce & Management' Date 15th Feb. & 16th Feb. 2019 (Date : 15-2-2019), Shri Dnyaneshwar Mahavidyalaya, Newasa, Ahmednagar' Affiliated to University of Pune.

(2) **Resource Person -** National level Seminar on 'Research Methodology in Commerce and Management' Date 15th Feb & 16th Feb. 2019, (Date : 16-2-2019) "Karmveer punjababa Goverdhan Arts, Commerce and Science, Igatpuri" Nashik, Affiliated to University of Pune.

(3) **Resource Person -** State level Seminar on 'USE OF ICT IN TEACHING FOR SLOW AND ADVANCED LEARNERS' Date 15th Feb. & 16th Feb. 2019, (Date : 16-2-2019) "Karmveer punjababa Goverdhan Arts, Commerce and Science, Igatpuri" Nashik, Affiliated to University of Pune.

– डॉ. भावना पन्त (असि.प्रो. एवं विभाग प्रभारी–जन्तुविज्ञान)

DEPARTMENT OF BOTANY

Department of Botany, PNG Govt. PG College, Ramnagar was established in 1989 by commencement of B.Sc. classes and later on it was upgraded to PG level in 2002. At present the Department is running with two faculty members.

1. Dr. Sidheshwar Singh Maurya, Associate Prof. & Head 2. Dr. Prakash Chandra Paliwal, Assisstant Prof.

Presently two laboratory staff is working in the department to help in the day activities. B.Sc. (ZBC), M.Sc.(Botony) and Ph.D. courses are being offered to students. From 1916-17 both UG & PG courses are running in semester mode system according to guidelines of UGC, New Delhi. Throughout the year students remain engaged in different types academic and co-curricular activities. Every year "Vanaspati Vigyan Parishad" is constituted at the departmental level with students as office bearers which organises different types of academic activities like debate, quiz, poster and essay writing competition on contemporary botanical issuies.

Following established traditions, welcome ceremony for M.Sc.-I Sem. Freshers and farewell ceremony for M.Sc. IV Sem students was organised by the department. The classroom study is combined with field - work to enrich students learning experience. Each year the department organises local and regional botanical excursions for UG & PG students. The department is also proud in making arrangement for the delivery of invited lectures by visiting distinguished and eminent scientists & senior botanists on relevant and contemporary topics useful for students.

Research activity is also going on in the department and presently two research scholars are working in the field of plant ecology and plant pathology under the supervision of Dr. S.S.Maurya and Dr. P.C. Paliwal respectively. M.Sc.-IV sem students are exposed towards research by submitting dissertation on the allotted topic at the end of session which is presented orally and duly evaluated by the experts appointed by the university. The students are consistently faring well in the examination with a satisfactory result at UG (more than 70%) and PG (more than 90%) levels.

This year Vanaspati Vigyan Parishad organised a speech competition on a very relevent topic "Importance of Biodersity" on 04 April 2019 in the botany department and winners of the event were.

1. Ms. Raimeen Malik - B.Sc. II Sem. 2. Mr. Deepak Singh - B.Sc. IV Sem.

3. Ms. Bhawna - B.Sc. IV Sem. 4. B.Sc. II Sem.

- Dr. Sidheshwar Singh Maurya (Associate Prof. & Head-Botany)

संस्कृत–विभाग

वार्षिक उपलब्धियाँ

विभाग की स्थापना – महाविद्यालय में संस्कृत विभाग की स्थापना सन् 1976 ई. में स्नातक–स्तर पर संस्कृत–विषय की सुचारू रूप से पढ़ाई के फलस्वरूप प्रारम्भ हुई।

आवश्यकता – स्नातकोत्तर स्तर पर भी संस्कृत विषय को मान्यता प्रदान करने नितान्त आवश्यकता है जिससे स्नातक में संस्कृत–पठित विद्यार्थी स्नातकोत्तर (संस्कृत) भी यहीं से कर सके।

छात्र-छात्राओं की विशिष्ट उपलब्धियाँ (सत्र : 2018-19) – संस्कृत विभागीय परिषद् के अन्तर्गत विविध पदों में विद्यार्थियों को चयनित किया गया। परिषद् द्वारा छात्र–छात्राओं की त्रिविध स्पर्धाएँ आयोजित की गयी। 24.04.2019 को उनमें ''संस्कृत भाषण'' जिसका विषय ''वर्तमानसन्दर्भे संस्कृतमुपयोगि न वा'' रहा, संस्कृत–श्लोकोच्चारण तथा संस्कृत–सामान्यज्ञान प्रतियोगिताएँ सम्पादित की गयी। जिसमें विद्यार्थियों ने सोत्साह प्रतिभाग किया और प्रमाणपत्रादि द्वारा विजेताओं को पुरस्कृत भी किया गया।

1. संस्कृत भाषण में – प्रथम स्थान चित्रेश त्रिपाठी (बी.ए. VI सेमे.), द्वितीय स्थान कु. भावना आर्या (बी.ए. VI सेमे.), तृतीय स्थान कु. विजय लक्ष्मी (बी.ए. II सेमे.) रहे।

2. संस्कृत श्लोकोच्चारण में – प्रथम स्थान कु. भारती पाठक (बी.ए. II सेमे.), द्वितीय चित्रेश त्रिपाठी (बी.ए. VI सेमे.), तृतीय कु. विजयलक्ष्मी (बी.ए. VI सेमे.) रहे।

3. संस्कृत सामान्य ज्ञान में – इस प्रतियोगिता में विद्यार्थियों की संख्या अधिक होने के कारण कक्षावार पुरस्कृत किया गया।

प्रथम स्थान कु. कविता पाण्डेय (बी.ए. II सेमे.), द्वितीय स्थान कु. परिधि (बी.ए. II सेमे.), तृतीय स्थान कु. भारती पाठक (बी.ए. II सेमे.), तृतीय स्थान कु. हेमलता (बी.ए. II सेमे.), प्रथम स्थान चित्रेश त्रिपाठी (बी.ए. VI सेमे.), द्वितीय स्थान कु. विजयलक्ष्मी (बी.ए. VI सेमे.), तृतीय स्थान कु. नीतू जीना (बी.ए. VI सेमे.), तृतीय स्थान – हीरो (बी.ए. VI सेमे.), तृतीय स्थान पंकज कुमार (बी.ए. VI सेमे.) रहे।

उपर्युक्त प्रतियोगिताओं में कुछ विद्यार्थियों को प्रोत्साहन पुरस्कार भी प्रदान किया गया।

बीच–बीच में प्रत्येक सत्रों में विद्यार्थियों में संस्कृत के प्रति रूचि उत्पन्न करना

अध्ययन्–अध्यापन के प्रति प्रोत्साहित करने हेतु कक्षा के अतिरिक्त भी संस्कृत के विशिष्ट गुणों को प्रकाशित किया तथा भारतीय संस्कृति, संस्कार एवं सभ्यता के समुचित ज्ञानार्थ संस्कृत का जानना नितान्त आवश्यक है, आदि विशेषताएँ बतायी गयी।

विविध संगोष्ठियों में प्रस्तुत शोधपत्र – 04 – सत्र 2018–19 में विविध संगोष्ठियों में भागिता –

1. 20, 21 फरवरी 2019 में राष्ट्रीय संगोष्ठी में शोधपत्र वाचन किया। आयोजक–न्याय विभाग, राष्टणीय संस्कृत संस्थान, श्री रघुनाथकीर्ति परिसर, देवप्रयाग (उत्तराखण्ड), प्रस्तुत शोधपत्र विषय – ''न्यायनये कारणविचार:''

2. 22, 23 फरवरी 2019 में राष्ट्रीय संगोष्ठी में शोधपत्र वाचन। प्रस्तुत शोध पत्र विषय – ''मोक्षस्वरूपं तस्य साधनोपाया:''
आयोजक – वेदान्त विभाग, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, श्री रघुनाथ कीर्ति परिसर, देवप्रयाग (उत्तराखण्ड)

3. February 2019, National Conference at Rishikesh, Held by - University Mission of Awareness on Namami Gange, Umang Cell, H.N.B. University, Srinagar, Under the Programme - National Clean Ganga Mission (Government of India)

4. 30–31 मार्च 2019, राष्ट्रीय संगोष्ठी, आयोजक – वाणिज्य संकाय, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामनगर

प्रस्तुत शोधपत्र विषय – ''वैश्वीकरणस्य सामाजिक – भौगोलिक – सन्दर्भे मेघदूतम्''

विविध पत्रिकाओं में प्रकाशिल लेख –

1. विषय – ''वेदों में आयुर्वेदिक तत्व''

पत्रिका जयराम सन्देश, ISSN No. 0975-8739, प्रकाशक – जयराम आश्रम, हरिद्वार (उत्तराखण्ड)।

2. विषय – ''श्रीमद्भागवते विश्वबन्धुत्वं लोकमंगलभावना च''

पत्रिका–व्युत्पत्तिः, ISSN No. 2455-717, प्रकाशक–श्रीजयराम, ब्रह्मचर्याश्रम ट्रस्ट, नई दिल्ली।

3. विषय – ''वेदेषु गीतिकाव्यतत्त्वानि''

पत्रिका – Asian Journal of Advance Studies, ISSN - 2395-4965 2017, Impact Factor-2.597

प्रकाशन – Faculty of Law, Banaras Hindu University Varanasi

4. विषय – ''रामायणे गीतितत्त्वानि''

पत्रिका – Journal of Humanities and Culture, ISSN-2393-8285, 2017, Impact Factor - 2.897

प्रकाशक – Faculty of Law, B.H.U, Varanasi, 2017-18 in Orientation Programme and Refresher Course

इतिहास–विभाग

सत्र 2017–18 परिषद कार्य

राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय रामनगर (नैनीताल) के इतिहास विभाग के द्वारा दिनांक 24.11.2017 को वर्ष 2017–18 हेतु 'विभागीय परिषद का गठन किया गया। इसमें चुने गये परिषद सदस्य –

अध्यक्ष–गुलफाम अंसारी (M.A.-IIIrd Sem.), उपाध्यक्ष–विजेन्द्र सिंह (M.A.-Ist Sem.)

सचिव – अनुदेश सिंह बुधवाला (B.A.-IIIrd Sem.), उपसचिव – मौ.शादान (B.A.-IIIrd Sem.)

दिनांक 30.11.2017 को इतिहास विभाग में इतिहास परिषद द्वारा निबंध, भाषण तथा वाद–विवाद प्रतियोगिता आयोजित की गई। इसके परिणामों में –

1. निबंध प्रतियोगिता : विषय : ''उत्तराखण्ड में उच्च शिक्षा की समस्याएँ व समाधान''

परिणाम – प्रथम स्थान–महिमा नेगी (B.A.-IIIrd Sem.), द्वितीय स्थान रितिका प्रजापति(B.A.-IIIrd Sem.)

तृतीय स्थान – अनुदेश सिंह बुधवाला (B.A.-IIIrd Sem.), सांत्वना पुरस्कार – दिवाकर मोहन पाठक(B.A.-IIIrd Sem.)

2. भाषण प्रतियोगिता : विषय : ''इतिहास की उपयोगिता''

परिणाम – प्रथम स्थान–मानसी अग्रवाल (M.A.-IIIrd Sem.), द्वितीय स्थान–दिवाकर मोहन पाठक (B.A.-IIIrd Sem.)

तृतीय स्थान विजेन्द्र कुमार (M.A.-1st Sem.), सांत्वना पुरस्कार – कमल सैनी

3. Open Quiz **का आयोजन किया गया।**

2017–2018 परीक्षाफल

वर्ष 2017–2018 में घोषित परीक्षाफल के अनुसार इतिहास विभाग में प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त छात्रों में –

एम.ए. चतुर्थ सेमेस्टर –

प्रथम – मानसी अग्रवाल (1086/1600), द्वितीय–गुलफाम (1021/1600), तृतीय – ममता (920/1600)

एम.ए. द्वितीय सेमेस्टर –

प्रथम – रचना रावत (286/400), द्वितीय–कविता (280/400), तृतीय – विजेन्द्र सिंह (273/400)

सत्र : 2018–19 इतिहास विभाग, इतिहास परिषद

दिनांक 13 अक्टूबर 2018 को इतिहास विभाग राजकीय स्नातकोत्तर कक्षाओं के विद्यार्थियों द्वारा इतिहास परिषद का चयन किया गया। इस प्रकार गठित इतिहास परिषद में चुने गये सदस्य – अध्यक्ष–पीयूष चिलवाल (एम.ए. प्रथम सेमे.), उपाध्यक्ष–लक्ष्मण सिंह (एम.ए.प्रथम सेमे.), सचिव – करन करगेती (बी.ए.पंचम सेमे.), उपसचिव – योगेश सैनी व संतोष सैनी (संयुक्त रूप से) (बी.ए. तृतीय सेमे.

इतिहास विभाग के अन्तर्गत इतिहास परिषद द्वारा आयोजित वाद–विवाद प्रतियोगिता में जिसका विषय : ''उत्तराखण्ड 18 वर्ष बेमिसाल'' दिनांक 14.11.2018 में प्रथम, द्वितीय, तृतीय व सांत्वना पुरस्कार प्रदान किये गये। पक्ष–विपक्ष में 20(बीस) प्रतिभागी थे। इसमें प्रत्येक प्रतिभागी को पुरस्कृत किया गया।

प्रथम–लक्ष्मण सिंह (एम.ए. प्रथम सेमे. इतिहास), द्वितीय–रचना रावत, तृतीय–पल्लवी पाण्डे, सांत्वना पुरस्कार–मोहम्मद जावेद, रूचि (संयुक्त) 25 फरवरी 2019 को इतिहास विभाग व इतिहास परिषद के तत्वाधान में शिक्षाप्रद लघु फिल्म हंसा दिखाई गई।

2018–19 का परीक्षाफल

वर्ष 2018–2019 में घोषित परीक्षा परिणामों मे प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त छात्रों का विवरण –

एम.ए. प्रथम सेमेस्टर –

प्रथम – पियूष चिलवाल (257/400), द्वितीय–भावना बिष्ट (253/400), तृतीय – रूपा बिष्ट (248/400)

एम.ए. तृतीय सेमेस्टर –

प्रथम – रचना रावत (279/400), द्वितीय–विजय बलूदी (270/400), तृतीय – विजेन्द्र सिंह (268/400)

–डॉ. शरद भट्ट

(विभाग प्रभारी-इतिहास)

DEPARTMENT OF PHYSICS

COURSES RUNNING IN THE DEPARTMENT : B.Sc. M.Sc. & Ph.D Programmes
Departmental Staff (Post Sanctioned)
Assistant Professor - 03, Lab Assistant - 02, Lab Attendant - 02

ABOUT THE DEPARTMENT

The department of Physics, P.N.G. Govt. (P.G.) Colllege, Ramnagar (Nainital) has been developing as nucleus for Graduate, Postgraduate and research activities since the Department was established. Initially B.Sc. Courses was started in the department that was further extended to Post graduate and now for research activity also. At present Department of Physics, offers three years undergraduate and Two years Post graduate courses with semester system of examinations. The admissions in UG and PG Classes are through merit base only.

The Departments have well-equipped laboratories for UG and PG students and rich library which have collection of many good reference & test books well as research students including many rare and excellent reference books by foreign authors. Sometimes reputed Professors/scientists are invited to deliver lectures in Department for teh benefit of the students as well as faculty. The Department is involved in various activities such as the Physics council is formulated by the department every year. National Science day celebrated, PG students makes working physics models, dissertations and makes seminars through Power Point Presentations.

Various national as well as international Conferences/seminars/symposia have been attended and papers presented by the faculties from time to time where scientists of national as well as international repute have presented their research work. The faculties of the departments are well connected with other National Universities/Research Institutes. Currently in the Department five Post Graduate Students and ten Undergraduate students are getting INSPIRE Fellowship. During last two years department have produced around 90 percent result for Undergraduate classes and 95 percent result for Postgraduate classes.

- Subhash Chandra Pokhriyal (Deptt. of Physics)

वाणिज्य–संकाय

विभागीय-आख्या

महाविद्यालय में वाणिज्य संकाय उद्घाटन सन् 1985 में किया गया तथा स्नातक स्तर पर बी.कॉम.(प्रथम) के प्रवेश प्रारम्भ हुए। इसके उपरान्त सन् 1985 में महाविद्यालय ने वाणिज्य संकाय में स्नातकोत्तर स्तर पर प्रवेश प्रारम्भ किये गये। वाणिज्य संकाय में वर्तमान में कुल 05 पद स्वीकृत है तथा एक पद रिक्त होने के साथ अन्य चार पदों पर –

1. डॉ. धर्मेन्द्र कुमार (एसोसिएट प्रोफेसर) 2. डॉ. किरन कुमार पन्त (असि.प्रोफेसर)

3. डॉ. दीपक खाती (असि. प्रोफेसर) 4. डॉ. ममता भदौला जोशी (असि.प्रोफेसर) कार्यरत् हैं।

<u>सत्र : 2017-18</u>

महाविद्यालय के वाणिज्य संकाय में स्नातक स्तर पर कुल 820 विद्यार्थी तथा स्नातकोत्तर स्तर पर कुल 82 विद्यार्थी पंजीकृत थे। सत्र में महाविद्यालय के वाणिज्य संकाय में (1) डॉ. किरन कुमार पन्त (2) डॉ. दीपक खाती (3) डॉ. ममता भदौला जोशी (4) डॉ. रोहित शर्मा कार्यरत थे।

डॉ. किरन कुमार पन्त, पी.एच.डी. रजिस्टर्ड-06 छात्र, सेमिनार-06, शोध-पत्र प्रस्तुत-06, एक शोध- छात्र द्वारा NET परीक्षा उत्तीर्ण। डॉ. दीपक खाती – सेमिनार-02, शोध-पत्र प्रस्तुत – 01, डॉ. ममता भदौला जोशी – सेमिनार – 02

<u>सत्र : 2018-19</u>

महाविद्यालय के वाणिज्य संकाय के स्नातक कुल 820 विद्यार्थी अध्ययनरत है तथा स्नातकोत्तर स्तर पर कुल 82 विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।

(1) डॉ. धमेन्द्र कुमार – पी.एच.डी.-05, पी.एच.डी. अवार्ड-01, सेमिनार-03, शोध पत्र-03

(2) डॉ. किरन कुमार पन्त – पी.एच.डी. – 06, सेमनिार-03, शोध-पत्र-06, Resource Person-02, एक शोध-छात्र का लोकसेवा आयोग उत्तराखण्ड द्वारा असि. प्रोफेसर में चयन।

(3) डॉ. दीपक खाती – पी.एच.डी.-03, सेमिनार -04, शोध-पत्र-03

(4) डॉ. ममता भदौला जोशी – पी.एच.डी.-01, सेमिनार-03, शोध-पत्र-01

– डॉ. धर्मेन्द्र कुमार (विभाग प्रभारी-वाणिज्य)

<u>वाणिज्य – संकाय परिषद् (सत्र : 2018-19)</u>

<u>एम.कॉम. (IV) –</u>

एम.कॉम (II)-अध्यक्ष – कु. मनीषा सुन्दरीयाल (पुत्री श्री डी.सी. सुन्दरीयाल), उपाध्यक्ष-कु.प्रियंका रावत (पुत्री श्री रणजीत सिंह रावत), **बी.कॉम (VI)**-सचिव-विरेन्द्र सिंह (पुत्र श्री राम सिंह), **बी.कॉम (IV)** उपसचिव- रविन्द्र बौढाई (पुत्र श्री हरीश चन्द्र बौढाई, **बी.कॉम (II)** कोषाध्यक्ष – हर्षोद पाण्डे (पुत्र श्री विमल पाण्डे)

– डॉ. धर्मेन्द्र कुमार (विभाग प्रभारी-वाणिज्य)

<u>सत्र : 2017-18</u>

एम.कॉम (IV)-अध्यक्ष – मुकेश भाकुनी, **एम.कॉम (II)** उपाध्यक्ष-कु.भारतीय बुढलाकोटी, **बी.कॉम (III)**-सचिव-कु.आरती (पुत्री श्री मनवर सिंह), **बी.कॉम (IV)** उपसचिव- महेश वर्मा (पुत्र श्री बालम लाल वर्मा, **बी.कॉम (II)** कोषाध्यक्ष – मानव महरोत्रा (पुत्र श्री मोहित महरोत्रा)

– डॉ. किरन कुमार पन्त

DEPARTMENT OF CHEMISTRY

Department of Chemistry, PNG PG College, Ramnagar was established in 1989 at UG level. It was upgraded to PG Level in year 2002. Presently the Department is running with three faculty members.

1. Dr. Himani Bisht, Astt. Prof. M.Sc., Ph.D, NET/JRF specialization in organie Chemistry
2. Dr. Navabha Joshi, M.Sc. (Pant Nagar) Ph.D. USET UKPSC-2017 qualified.
3. Dr. Preeti Verma, M.Sc., Ph.D. (IIT Delhi) NET/JRF BARC.

SESSION 2017-18

1. Km. Pratiksha Joshi CSIR-NET-JRF/BARC DST-INSPIRE AWARD / GATE/USET/Vice Chancellor's Gold Medal.
2. Rashmi Semwal-DST-Inspire Award
3. Ramesh N. Goswami - CSIR - NET - JRF
4. Km. Archana Joshi - CSIR - NET - JRF
5. 24 M.Sc. Students passed out with Ist Division.

SESSION 2018-19

1. Arvind Singh Gold Medalist of Chemistry from Kumaun University aznd rewarded with the draft of 1100/- by Ex. president of P.N.G.P.G. College, Ramnagar, Mr. Ganesh Rawat.
2. Shankar Ram M.Sc. NET/JRF was selected as Asst. Prof. by Uttarakhand Public Service Commission.
3. Two Students of M.Sc. IVth Sem have been declared qualified for UGC-CSIR JRF/NET EXAM DEC 2018.
4. M.Sc. IInd Sem. Student Bhawana Joshi was rewarded with the draft of 2500/- by ex-president of P.N.G.P.G. College, Ramnagar for obtaining highest marks (75.4%) among all the students of M.Sc. of all stream.

DEPARTMENTAL COUNCIL

Session : 2018-19

President - Sachin Juyal (M.Sc. IVth Sem.)

Vice President - Santoshi Gholiya (M.Sc. IInd Sem.)

Female Vice President - Vandana Rawat (M.Sc. IInd Sem.)

Secretary - Manish Airara (B.Sc. VIth Sem.)

Joint Secretary - Manisha (B.Sc. IVth Sem.)

Treasurer - Farha Ansari (B.Sc. IInd Sem.)

DEPARTMENTAL ACTIVITIES

Session : 2018-19

1. Post Graduate Level "Quiz" Competition was organized Name of the winning participants was as follows :

Ist - Ravi Saini, Anika, Mohan
IInd - Anjali Bisht, Sudha, Urbashi, Rekha Mawari
IIIrd - Rajesh Singh, Prakash, Vandana, Jyoti

2. Graduate level Poster Competition entitled "Role of Chemistry in Daily Life" was organized. Following participants were declared winner by a Juri Comprising all the faculty members of Science Stream.

Ist - Priyanka Prajapati (B.Sc. IVth Sem.)
IInd - Raimeen Malik (B.Sc. IInd Sem.)
IIIrd - (i) Vaishali Rajput (B.Sc. IVth Sem.)
(ii) Rakshita Pandey (B.Sc. IVth Sem.)

- Himanee Bisht (Astt. Prof. - Department of Chemistry)

एन0सी0सी0–विभाग

विभागीय-आख्या

महाविद्यालय में एन0सी0सी0 छात्र दल एवं छात्रा दल अलग-अलग चलाया जा रहा है। एन0सी0सी0 छात्र दल 79/यू0के0/बटालियन/एन0सी0सी0 नैनीताल तथा छात्रा दल 24/यूके/बटालियन, अल्मोड़ा से सम्बद्ध है। सत्र 2017-18 में एन0सी0सी0 छात्र दल के एन0सी0सी0 अधिकारी के0 विश्वमोहन पाण्डेय तथा एन0सी0सी0 छात्रा दल के एन0सी0सी0 अधिकारी के0 हेमलता मिश्रा थीं।

सत्र 2017-18

- एन.सी.सी. छात्रा दल में कुल 88 छात्राओं को कैडेट्स के रूप में चयनित किया गया तथा एन0सी0सी0 छात्र दल में कुल 105 छात्रों का चयन हुआ।
- 32 छात्राओं ने एन0सी0सी0 'सी' सर्टिफिकेट परीक्षा में सम्मिलित हुई तथा 52 एन0सी0सी0 छात्र कैडेट्स इस परीक्षा में शामिल हुए।
- 22 छात्रा कैडेट्स तथा 11 छात्र कैडेट्स 'बी' सर्टिफिकेट परीक्षा में शामिल हुए।
- एन0सी0सी0 छात्र कैडेट 'अक्षय काम्बोज' ने नई दिल्ली में 'थल सेना कैम्प'' में प्रतियोगिता की।

सत्र 2018-19

- सत्र 2018-19 में एन0सी0सी0 की छात्रा दल का प्रभार के धर्मेन्द्र कुमार (एन0सी0सी0 अधिकारी, छात्र दल, रा0 स्नात0 महाविद्यालय, रामनगर) के पास रहा।
- एन0सी0सी0 छात्रा दल में कुल 88 तथा छात्र दल में 105 छात्रों को एन0सी0सी0 कैडेट्स के रूप में चयनित किया गया।
- एन0सी0सी0 छात्र दल के 15 कैडेट्स ने ''आर्मी अटैचमेन्ट कैम्प'' रानीखेत में प्रतिभाग किया। छात्र दल के ही 05 कैडेट्स ने ''एक भारत श्रेष्ठ भारत' रानीबाग में प्रतिभाग किया। छात्र दल का एन0सी0सी0 कैडेर पवन पाठक का चयन आर.डी.सी. (रिपब्लिक डे कैम्प) के लिए हुआ।
- एन0सी0सी0 छात्र दल तथा छात्रा दल ने इस सत्र में महाविद्यालय परिसर तथा परिसर के बाहर ''स्वच्छता अभियान'', पर्यावरण बचाओ अभियान', 'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ' अभियान चलाया।
- एन0सी0सी0 छात्रा दल के 03 कैडेट्स ने कर्नाटक, बैल्लारी में आयोजित ''एक भारत श्रेष्ठ भारत'' में प्रतिभाग किया तथा उत्तराखण्ड राज्य के द्वितीय स्थान पर आने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।
- छात्रा दल के 29 कैडेट्स ने 'सी' प्रमाण पत्र तथा 2 कैडेट्स ने 'बी' प्रमाण पत्र/छात्र दल के 34 कैडेट्स ने 'सी' प्रमाण पत्र तथा 27 कैडेट्स ने 'बी' प्रमाण पत्र परीक्षा में प्रतिभागिता की।

PROFESSIONAL DEVELOPMENT OF TEACHERS

The term professional development is defined as learning to earn or maintain professional credentials such as academic degrees to formal course work, attending conferences and informal learning opportunities situated in practice. It has been described as intensive and collaborative, ideally incorporating an evaluative stage (SPEC and KNIPE, 2005).

TALIS adopts a broad definition of professional development among teachers. According to him, "Professional development is defined as activities that develop an individual's skills, knowledge expertise and other characteristics as a teacher." (OECD, 2009). The definition recognizes that development can be provided in many ways, ranging from the formal to the informal. It can be made available through external expertise in the form of courses, workshops, or formal qualification programmes through collaboration between schools teachers across school or within the schools in which teachers work.

TALIS asked teachers about their professional development activities, their impact, the support they received for undertaking them, the extent to which they wanted more than they had engaged in and the barriers they felt had prevented them from doing so, and the areas of their work they found most in need of further development.

Level and Intensity of Participation in Professional development :

Levels of participation was measured by TALIS in terms of teacher participation rates and intensity of participation in terms of the average member of teacher's day of development during the 18-months period prior to the survey conducted by TALIS.

A comparision of the level and intensity of participation can serve to indicate different policy choices that school systems may make, e.g. to spread opportunities across all teachers or to concentrate them on a smaller proportion of the teacher population.

Approaches to professional development of Teachers :

Professional development on the job may develop or enhance process skills, as well as task skills and sometimes leadership skills. Some example for process skills are 'effectiveness skills' 'team functioning skills', and 'system thinking skills'.

Professional development opportunities can range from a single workshop to a semester long academic course, to services offered by different professional development providers. Some examples of approaches to professional development include :

(i) **Case-study Method -** The case method is a teacher approach that consists in presenting the students with a case, putting them in the role of a decision maker facing a problem. (Hammond - 1976).

(ii) **Consultation -** to assist an individual or group of individuals to clarify and address immediate concerns by following a systematic problem-solving process.

(iii) **Coaching -** to enhance a person's competencies in a specific skill area by providing a process of observation, reflection and action.

(iv) **Communities of Practice -** To improve professional practice by engaging in shared inquiry and learning with people who have a common goal.

(v) **Lesson - study -** To solve practical dilemmas related to intervention or instruction through participation with other professionals in systematically examining practice.

(vi) **Mentoring -** To promote an individual's awareness and refinement of his or her own professional development by providing and recommending structure opportunities for reflection and observation.

(vii) **Reflective Supervision -** To support, develop and ultimately evaluate the performance of employees through a process of inquiry that encourages their understanding and articulation of the rationale for their own practices.

(viii) **Technical Assistance -** To assist individuals and their organizations to improve by offering resources and information, supporting networking and change efforts.

The World Bank's 2019 World Development Report on the future of work argues that professional development opportunities for those both in and out of work, such as flexible learning opportunities at universities and adult learning programs, enable labor markets to adjust to the future of work.

Other activities that contribute to professional growth and development are as below.

(a) Continuing Education
(b) Participation in professional organizations
(c) Research
(d) Improve job performance
(e) Increased duties and responsibilities
(f) Skill based training
(g) Job Assignments

References :

1. SPECK, M, AND KRIPE, C (2005), Designing high quality Professional development for standards based schcool (2nd ed.) Thousand Oaks: Corwin Press.
2. OECD (2009), Creating Effective Teaching and Learning Environments : First Results from TALIS-ISBN 978-92-64-05605-
3. Connecting coaches to corporates, "two fold asia, Retrived, 28 April 2015.
4. World Bank World Development Report 2019; The changing Nature of Work.

- Dr. Sangeeta Kumari
(B.Ed., Self-financed)

सत्र 2017-18 एवं 2018-19 द्विवर्षीय पाठ्यक्रम की आख्या

सभी प्रवक्ताओं के पुनः कार्यभार गृहण करने के पश्चात् बी0एड0 द्विवर्षीय पाठ्यक्रम के अन्तर्गत 2017 में 2015-17 की कक्षायें अगस्त माह से तथा सत्र् 2016-18 की कक्षायें सितम्बर माह से प्रारम्भ की गयीं। 2017 में जुलाई माह में 15 दिनों तक सभी प्रवक्ताओं को कार्यमुक्त रखा गया।

सत्र् 2016-18 के प्रशिक्षुओं ने तृतीय सेमेस्टर के पाठ्यक्रमानुसार अपना शिक्षण अभ्यास राजकीय इण्टर कॉलेज, रामनगर में पूर्ण किया। शिक्षण अभ्यास के साथ-साथ उन्होंने विद्यालय में प्रशासन व्यवस्था का ज्ञानार्जन भी किया। 2018-20 सत्र् की कक्षायें महाविद्यालय में सुचारू रूप से यथावत चलती रहीं।

अन्य गतिविधियां :-

- माह सितम्बर 2017 में शैक्षिक भ्रमण का आयोजन रामनगर से मानिला।
- माह सितम्बर 2018 में शैक्षिक भ्रमण का आयोजन रामनगर से नानकमत्ता।
- उत्तराखण्ड पुलिस उपनिरीक्षक (एस0आई0) परीक्षा में उत्तीर्ण छात्रा - मीनाक्षी रौतेला
- 2018 में शिक्षक पात्रता परीक्षा उत्तीर्ण छात्र-छात्रायें - 12
- सत्र् 2017-19 का शिक्षण अभ्यास कार्यक्रम राजकीय पूर्व माध्यमिक विद्यालय, लखनपुर, रामनगर में 16 नवम्बर से 22 फरवरी 2019 तक संचालित किया गया।
- छात्राओं द्वारा प्रतिवर्ष मानवाधिकार दिवस, एड्स दिवस, मतदाता-जागरूकता दिवस, पोलिया मुक्त भारत आदि कार्यक्रमों की रैलियों का आयोजन।

इसके अतिरिक्त सम्पूर्ण सत्र में की गयी पाठ्य-सहगामी क्रियाओं का विवरण निम्नलिखित है -

1. वाद-विवाद प्रतियोगिता - 29-12-2017

प्रथम	-	उमा नेगी
द्वितीय	-	सोनिका
तृतीय	-	सुमन, दीपिका पाठक

2. 08 मार्च 2018 - महिला दिवस के अवसर पर छात्र/छात्राओं द्वारा विचार प्रकट किये गये।
3. अनुपयोगी से उपयोगी वस्तु निर्माण प्रतियोगिता -

प्रथम	-	शिवा
द्वितीय	-	उमा नेगी
तृतीय	-	आरती, गीतांजलि बिष्ट

4. श्रमदान (प्रशिक्षुओं द्वारा) कार्यक्रम - प्रतिवर्ष प्रत्येक माह के हर दूसरे शनिवार को।
5. प्रभावी शिक्षण कार्यशाला - माह फरवरी 2019
6. वार्षिक क्रीड़ा प्रतियोगिता - 15 मार्च 2019
7. मतदाता जागरूकता अभियान कार्यक्रम - 03 अप्रैल 2019
8. दिव्यांग मतदाता जागरूकता एवं प्रोत्साहन कार्यक्रम - 04 अप्रैल 2019

- डॉ0 श्रीमती संगीता कुमारी

विभागाध्यक्ष, स्ववित्त पोषित, बी0एड0 संकाय

योग एवं वैकल्पिक चिकित्सा विभाग की प्रगति रिपोर्ट – 2017–2019

राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय रामनगर में कुमाऊँ विश्वविद्यालय के अंतर्गत स्ववित्त पोषित पाठ्यक्रम के रूप में सत्र 2004–2005 से एक वर्षीय पी0जी0 डिप्लोमा योग एवं वैकल्पिक चिकित्सा कोर्स का संचालन हो रहा है। पूर्व में योग के समन्वयक डॉ0 डी0 के0 शुक्ला रहे थे। 2009–10 से योग के समन्वयक डॉ0 संजय कुमार रहे तथा वर्तमान सत्र 2018–19 में योग समन्वयक डॉ0 धीरेन्द्र सिंह हैं। योग का प्रायोगिक एवं सैद्धान्तिक प्रशिक्षण डॉ0 नितिन ढोमणे द्वारा दिया जा रहा है। इनके मार्गदर्शन में 800 छात्र–छात्राओं ने सफलतापूर्वक प्रशिक्षण प्राप्त किया है तथा 30 से अधिक छात्र–छात्रायें विभिन्न स्कूलों में योग प्रशिक्षक के रूप में कार्य कर रहे हैं। सर्वजित कौर मान कनाडा में योग प्रशिक्षक के रूप में कार्यरत हैं तथा गीता कैलिफॉर्निया अमेरिका में योग प्रशिक्षक के रूप में कार्यरत हैं। सचिन भारद्वाज, जसपुर में योग प्रशिक्षक के रूप में कार्यरत हैं, हेमा क्वेरा सेंट जोसफ स्कूल में योग प्रशिक्षक के रूप में कार्यरत हैं। किशन बिष्ट भीमताल केन्द्रीय विद्यालय में वर्तमान समय में योग प्रशिक्षक के रूप में कार्यरत हैं, आनन्द माउंट सिनाई स्कूल में योग प्रशिक्षक के रूप में कार्यरत हैं, जितेन्द्र लिटिल स्कॉलर में कार्यरत हैं। आदि छात्र–छात्राओं ने विभाग से प्रशिक्षण लेकर रोज़गार प्राप्त किया है।

डॉ0 नितिन ढोमणे को आयुष मंत्रालय, भारतीय सांस्कृतिक परिषद भारत सरकार द्वारा चयनित कर 21 जून अंतराष्ट्रीय योग दिवस पर 2015 में उजबेकिस्तान ताशकंद में 5000 लोगों को योग कराया तथा 2016 में अफ्रीका, ब्राजाविल कांगो एवं पोइंटनोर में योग शिक्षक के रूप में भेजा गया था। कुमाऊँ विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित अंतर महाविद्यालय प्रतियोगिता में सत्र 2017–18 में पुरूष वर्ग की टीम विजेता रही तथा सत्र 2018–19 में पुरूष वर्ग की टीम उपविजेता रही।

महाविद्यालय के अन्तर्गत 26 जनवरी वं 15 अगस्त को एडवांस आसनों का प्रदर्शन किया जाता है। सत्र 2017–18 में मुख्यमंत्री श्री त्रिवेन्द्र सिंह रावत का योग विभाग की टीम द्वारा स्वागत एवं योग का प्रदर्शन किया जिसे देखकर मुख्यमंत्री ने योग की महत्ता का वर्णन किया तथा सबकी सराहना की।

योग विभाग द्वारा अंतर्राष्ट्रीय योग महोत्सव ऋषिकेश तथा जागेश्वर में उत्तम प्रस्तुति दी है। योग विभाग द्वारा जन सामान्य के समग्र स्वास्थ्य लाभ हेतु समय–समय पर नि:शुल्क कैम्प लगाये गये हैं तथा विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास हेतु नि:शुल्क कैम्प लगाये गये हैं।

– डॉ0 नितिन ढोमणे (योग प्रवक्ता)

राज0स्नात0महा0रामनगर

प्रोजक्ट उत्कर्ष

प्रगति आख्या

उत्तराखण्ड शासन द्वारा उच्च शिक्षण संस्थानों में संस्थागत छात्र–छात्राओं को उच्च शिक्षा के साथ रोजगारपरक शिक्षा प्रदान करने हेतु पी0एन0जी0पी0जी0 कॉलेज रामनगर में प्रोजेक्ट उत्कर्ष सत्र 2015–16 से संचालित किया जा रहा है, जिसमें विभिन्न रोजगारपरक पाठ्यक्रम–

- Tally
- Data Entry Operator
- English Speaking Skill Development
- Skill and Entrepreneurship development program

संचालित किये जा रहे हैं।

गत वर्षो में विभिन्न विद्यार्थियों ने इन पाठ्यक्रमों में प्रवेश लिया था एवं उनकी कक्षाएं भी संचालित की गयी। इस योजना का उद्देश्य एवं प्रयोजन विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा के साथ–साथ रोजगारपरक शिक्षा प्रदान करना है। राज्य में उच्च शिक्षा में सकल नामांकन अनुपात राष्ट्रीय सकल अनुपात से अधिक है। अतः उच्च शिक्षा में अध्ययनरत विद्यार्थियों की रोजगारीय क्षमता को बढ़ाने हेतु रोजगारपरक एवं गुणवत्ता युक्त शिक्षा प्रदान की जाती है।

पाठ्यक्रम एक माह/तीन माह/छः माह/एक वर्ष के प्रमाण पत्र/डिप्लोमा पर आधारित है जो कि किसी मान्यता प्राप्त/पंजीकृत/प्रतिष्ठित संस्था से किया जाता है। यह पाठ्यक्रम पीपीपी मोड के अन्तर्गत प्राइवेट पार्टनर/साझेदारी पर आधारित है। योजना का उद्देश्य महाविद्यालय की नियमित समय सारणी के पश्चात महाविद्यालय की रिक्त अवस्थापना का विद्यार्थियों के हित में अधिकतम उपयोग सुनिश्चित करने हेतु रोजगार परक पाठ्यक्रमों का संचालन किया जाता है।

– समन्वयक

डॉ0 धीरेन्द्र सिंह

असिस्टेन्ट प्रोफेसर गणित

राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय रामनगर (नैनीताल)

वार्षिक प्रगति आख्या राष्ट्रीय सेवा योजना वर्ष 2017–18, 2018–19

महाविद्यालय में राष्ट्रीय सेवा योजना की छात्र व छात्रा इकाई स्वीकृत है। जिसमें छात्र वर्ग की एक इकाई डॉ0 दीपक खाती एवं छात्रा वर्ग की ढाई इकाई डॉ0 धीरेन्द्र सिंह, डॉ0 कृष्णा भारतीय एवं डॉ0 डी0एन0 जोशी के निर्देशन में कार्य कर रही है। शिक्षा सत्र 2017–18 में रा0से0यो0 के अन्तर्गत एक दिवसीय एवं सात दिवसीय विशेष शिविरों का आयोजन किया गया।

वर्ष 2017–18 में सात एक दिवसीय शिविर दिनांक 25 जुलाई 2017, 6 दिसम्बर 2017 एवं 4 फरवरी 2018 को महाविद्यालय परिसर एवं गिरिजा माता मन्दिर परिसर में आयोजित किये गये।

- दिनांक 25 जुलाई 2017 को आयोजित प्रथम शिविर में कारगिल शहीद दिवस मनाया गया एवं स्वैच्छिक रक्तदान शिविर का आयोजित किया गया जिसमें 60 इकाई रक्तदान किया गया।
- द्वितीय शिविर में मतदाता जागरूकता रैली निकालकर नगर भ्रमण कर लोगों को अनिवार्य मतदान हेतु जागरूक किया गया। तृतीय शिविर में रा0से0यो0 का स्थापना दिवस मनाया गया, जिसमें महाविद्यालय परिसर में कंटीली झाड़ियों का उन्मूलन कर परिसर की साफ–सफाई की गयी।
- दिनांक 31 अक्टूबर को आयोजित शिविर में सरदार बल्लभ भाई पटेल जयन्ती के रूप में मनाया गया एवं राष्ट्रीय एकता दौड़ का आयोजन किया गया, जिसमें प्रतिभाग कर छात्र रूपेश यादव बी0ए0 तृतीय सेमेस्टर ने प्रथम एवं कु0 नेहा एम0ए0 चतुर्थ सेमेस्टर ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया।
- पंचम एकदिवसीय शिविर में स्वच्छ तीर्थ सुन्दर तीर्थ के दृष्टिगत प्रसिद्ध गर्जिया देवी मन्दिर परिसर में स्वच्छता अभ्यिान चलाकर लोगों को प्लास्टिक का उपयोग न करने के लिए जागरूक किया।
- षष्टम शिविर को विश्व एड्स दिवस के रूप में मनाते हुए स्वैच्छिक रक्दान शिवर का आयोजन कर 55 यूनिट रक्त एकत्र किया गया।
- रा0से0यो0 का सप्तम् एकदिवसीय शिविर महाविद्यालय परिसर में आयोजित किया गया जिसमें स्वयं सेवियों ने श्रमदान कर परिसर की साफ–सफाई की।

विशेष उपलब्धि :–

छात्रा इकाई से कु0 ललिता बधानी, बी0ए0 तृतीय सेमेस्टर एवं छात्र इकाई से श्री अक्षय काम्बोज बी0एस0सी0 तृतीय सेमेस्टर का चयन प्री आर0डी0 परेड के लिए हुआ जिसमें से श्री अक्षय काम्बोज ने गणतन्त्र दिवस पर आयोजित परेड में राजपथ पर प्रतिभाग कियाा। रा0से0यो0 के छात्र श्री धीरेज काण्डपाल बी0कॉम0 तृतीय सेमेस्टर ने राष्ट्रीय सेवा योजना के राष्ट्रीय शिविर में नोएडा उत्तर प्रदेश में प्रतिभाग किया।

सात दिवसीय विशेष शिविर (दिन–रात्रि) :–

छात्रा इकाई – दिनांक 7 फरवरी 2018 से 13 फरवरी 2018 तक राजकीय प्राथमिक विद्यालय एवं राजकीय इण्टर कॉलेज देवीपुरा नम्बर 4 मालधनचौड़ में आयोजित किया गया जिसमें 125 स्वयंसेवी छात्राओं द्वारा प्रतिभाग किया गया।

छात्र इकाई – दिनांक 16 फरवरी 2018 से 22 फरवरी 2018 तक आई0टी0आई0 मालधनचौड़ नम्बर 1 में आयोजित किया गया जिसमें 57 स्वयंसेवियों ने प्रतिभाग किया।

–डॉ0 धीरेन्द्र सिंह (वरिष्ठ कार्यक्रम अधिकारी, रा0से0यो0 इकाई)

वार्षिक प्रगति आख्या राष्ट्रीय सेवा योजना वर्ष 2017–18, 2018–19

वर्ष 2018–19 में तेरह एक दिवसीय शिविरों का दिनांक 27–04–2018, 04–08–2018, 07–08–2018, 20–09–2018, 24–09–2018, 11–10–2018, 31–10–2018, 06–12–2018, 15–12–2018, 25–01–2019, 02–02–2019, 21–02–2019 एवं 28–02–2019 को आयोजन किया गया।

• दिनांक 27–04–2018 को महाविद्यालय की एन0एस0एस0 इकाई द्वारा सड़क सुरक्षा जागरूकता हेतु नुक्कड़ नाटक द्वारा लोगों को सड़क सुरक्षा जन सुरक्षा का संदेश दिया गया।

• 04–08–2018 को एन0एस0एस0 प्रकोष्ठ युवा कल्याण विभाग देहरादून के अनुसार महाविद्यालय के रा0से0यो0 के चार स्वयंसेवियों दो छात्र एवं दो छात्राओं का चयन कर दिनांक 07–08–2018 को एम0बी0पी0जी0 कॉलेज हल्द्वानी में युवा संसद नवीन भारत की आवास कार्यक्रम में प्रतिभाग डॉ0 कृष्णा भारतीय के नेतृत्व में भेजा गया। चयनित स्वयंसेवियों के नाम निम्नवत हैं :- अनिल सैनी, बी0ए0 चतुर्थ सेमेस्टर, रविन्द्र बौड़ाई, बी0कॉम तृतीय सेमेस्टर, रचना रावत, बी0एस0सी0 तृतीय सेमेस्टर, किरन बंगारी, बी0एस0सी0 तृतीय सेमेस्टर

• दिनांक 20–09–2018 से 25–02–2018 तक एन0एस0एस0 रामनगर एवं प्रथम शिक्षा संस्थान ASER केन्द्र नई दिल्ली द्वारा शिक्षा की वार्षिक स्थिति की आख्या (Annual Status of Education report ASER 2018) का सर्वेक्षण किया गया जिसमे 25 स्वयंसेवियों ने प्रतिभाग किया तथा संस्था द्वारा प्रशिक्षणार्थियों को प्रशिक्षण के उपरान्त प्रमाण पत्र वितरित किए गए। प्रशिक्षण में संस्था के श्री जयकान्त झा, श्री जीत सिंह द्वारा दिया गया। प्रशिक्षण में डॉ0 धीरेन्द्र सिंह, डॉ0 दीपक खाती, डॉ0 डी0एन0जोशी एवं डॉ0 कृष्णा भारतीय व महाविद्यालय के अन्य वरिष्ठ प्राध्यापक उपस्थित रहे।

• 24–09–2018 को एन0एस0एस0 के 50वें स्थापना दिवस पर महाविद्यालय परिसर की सफाई, प्लास्टिक कूड़ा उन्मूलन, वाद–विवाद प्रतियोगिता व राष्ट्रीय एकता पर विचार विमर्श हुआ।

• 11–10–2018 को स्वीप के अन्तर्गत स्वीप अधिकारी डॉ0 डी0एन0जोशी0 के नेतृत्व में महाविद्यालय से मतदाता जागरूकता रैली का आयोजन किया गया, जिसमें विद्यार्थियों ने शहर की मुख्य गलियों दुर्गापुरी, लखनपुर जगहों में बैनर, पोस्टर, तख्तियों व नारों के माध्यम से समाज को अधिकाधिक मतदान हेतु जागरूक किया। उपरोक्त जागरूकता रैली में एन0एस0एस0 के चारों कार्यक्रम अधिकारी व बी0एड0 विभाग के विद्यार्थी व शिक्षक उपस्थित रहे।

• 31–10–2018 को एन0एस0एस0 द्वारा सरदार बल्लभ भाई पटेल जी की जयन्ती को राष्ट्रीय एकता दिवस के रूप

में मनाया गया, जिसमें स्वयंसेवियो ंएवं कार्यक्रम अधिकारियों ने राष्ट्रीय एकता एवं देशभक्ति गीत प्रस्तुत कर समाज को एकजुट रहने की अपील की तथा आपसी भाईचारा बनाए रखने हेतु लोगों का आह्वान कियाा। कार्यक्रम में महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ0 हेमा प्रसाद, डॉ0 डी0एस0 कुंवर, डॉ0 धीरेन्द्र सिंह, डॉ0 डी0एन0जोशी, डॉ0 कृष्णा भारती व डॉ0 दीपक खाती उपस्थित रहे।

• 6-12-2018 को एन0एस0एस0 एवं एच0डी0एफ0सी0 बैंक रामनगर के संयुक्त तात्वाधान में एक रक्तदान शिविर का आयोजन महाविद्यालय में किया गया जिसका उद्घाटन महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ0 श्रीमती हेमा प्रसाद द्वारा किया गया। रक्तदान शिविर में 69 स्वयंसेवियों ने रजिस्ट्रेशन कराया एवं कुल 55 यूनिट रक्त एल0टी0 भट्ट राजकीय चिकित्सालय द्वारा एकत्रित किया गया।

• 15-12-2018 को महाविद्यालय की एन0एस0एस0 तथा विशाखा ग्रुप के संयुक्त तत्वाधान में विद्यार्थियों और स्टाफ सदस्यों के लिये कार्यस्थाल/शौक्षिक संस्थानों में महिलाओं के यौन उत्पीड़न के विषय पर जागरूकता फैलाने के लिए एक दिवसीय कार्यशाला यौन उत्पीड़न विषय पर आायोजित की गयी । यह SHWW कानून 2013 पाश अधिनियम पर केन्द्रित थी। कार्यशाला में विशाखा टीम लीडर सजल कुमार, नैन्सी खुराना, ललित मोहन तथा कोमल राजपूत व महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ0 हेमा प्रसाद, डॉ0 डी0एस0 कुंवर, डॉ0 जी0सी0 पन्त, डॉ0 धीरेन्द्र सिंह, डॉ0 डी0एन0जोशी, डॉ0 कृष्णा भारती व डॉ0 दीपक खाती उपस्थिति रहे।

• 25-01-2019 को एन0एस0एस0 द्वारा राष्ट्रीय मतदाता दिवस 2019 का आयोजन किया गया, जिसका उद्घाटन महाविद्यालय की प्राचार्या, डॉ0 (श्रीमती) हेमा प्रसाद जी ने किया। कार्यक्रम में उपस्थित अर्थशास्त्र विभाग की एसो0 प्रोफे0 डॉ0 अनुमिता अग्रवाल जी ने छात्र-छात्राओं को मतदान के महत्व को समझाया। डॉ0 मूलचन्द शुक्ल, असि0 प्रोफे0 ने छात्र-छात्राओं के समक्ष मतदाताओं के विभिन्न कर्तव्यों एवं अधिकारों की बात कही। महाविद्यालय के क्रीड़ा प्रभारी एवं समारोहक डॉ0 जी0सी0 पन्त जी ने समस्त छात्र-छात्राओं को राष्ट्रीय मतदाता दिवस के अभिप्राय: एवं कार्यान्वयन के सम्बन्ध में अपने विचार व्यक्त करते हुए सभी से मतदान में सक्रिय प्रतिभाग करने की अपेक्षा की। मंच संचालन डॉ0 डी0एन0जोशी (कार्यक्रम अधिकारी, राष्ट्रीय सेवा योजना) ने राष्ट्रीय मतदाता दिवस के विषय में बताया कि भारत निर्वाचन आयोग पूरे देश में इस बार शत-प्रतिशत मतदान हेतु प्रतिबद्ध है तथा SVEEP के माध्यम से प्रत्येक क्षेत्र में जिला निर्वाचन कार्यालय द्वारा मतदान को सफल बनाने हेतु बृहद स्तर पर जागरूकता अभियान चलाये जा रहे हैं, जिसमें प्रत्येक स्थान के 18 वर्ष की आयु पूर्ण कर चुके युवक-युवतियों के वोटर आई0डी0 (मतदाता परिचय पत्र) मतदाताओं के स्थान परिवर्तन, त्रुटि संशोधन आदि कार्यो को सक्रियता से पूर्ण किया जा रहा है। कोई भी मतदाता अपने स्थानीय बी0एल0ओ0, महाविद्यालय, तहसील परिसर आदि में जाकर सम्पर्क कर सकता है। वरिष्ठ

कार्यक्रम अधिकारी डॉ0 धीरेन्द्र सिंह ने छात्र–छात्राओं को Online Process के बारे में बताया। पूर्व छात्रसंघ अध्यक्ष श्री हेमन्त रावत ने समस्त छात्र–छात्राओं को अपने वोटर आई0डी0 बनाने हेतु आह्वाान किया। कार्यक्रम में डॉ0 अनुमिता अग्रवाल, डॉ0 जया भट्ट, डॉ0 शरद भट्ट, डॉ0 अनीता जोशी, डॉ0 कृष्णा भारती (कार्यक्रम अधिकारी), डॉ0 दीपक खाती (कार्यक्रम अधिकारी), डॉ0 अभिलाषा कनौजिया एवं छात्र–छात्रा उपस्थित रहे।

• 02–02–2019 को एन0एस0एस0 द्वारा महाविद्यालय के पी0जी0 कक्ष संख्या 1 में युवाओं को नशामुक्ति तथा नशा उन्मूलन का संदेश देने हेतु कार्यशाला का आयोजन किया गया। जिसमें गीत, नाटक, पोस्टर इत्यादि के माध्यम से नशे से होने वाले नुकसान को दर्शाया गया।

• 21–02–2019 को पी0एन0जी0 राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामनगर में राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई द्वारा राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य एवं तम्बाकू नियंत्रण कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसका शुभारम्भ महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ0 (श्रीमती) हेमा प्रसाद जी ने किया। कार्यक्रम में राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयं सेवियों द्वारा नशा उन्मूलन एवं धूम्रपान निषेध पर एक नुक्कड़ नाटक प्रस्तुत किया गया। छात्र–छात्राओं में कु0 रचना रावत ने नशा उन्मूलन पर कविता पाठ किया। महाविद्यालय के क्रीड़ाा प्रभारी डॉ0 जी0सी0 पन्त ने युवाओं में बढ़ती नशे की लत एवं उसके द्वारा युवााओं के शारीरिक एवं माानसिक स्वास्थ्य पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों के विषय में बताया। राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन, नैनीताल के स्वास्थ्य विभाग के चिकित्सक डॉ0 बलवीर सिंह ने राष्ट्रीय तम्बाकू नियंत्रणा कार्यक्रम के संदर्भ में छात्र–छात्राओं को भारात में तम्बाकू नियंत्रण कानून के विषाय में बताया तथा राष्ट्रीय, राज्य एवं जिला स्तर पर किये जाने वाले कार्यो को बताया। मनोरोगियों की मनोदशा एवं स्वास्थ्य के लक्षणों पर प्रकाश डालते हुए मनोचिकित्सक डॉ0 गिरीश चन्द्र पाण्डेय ने युवाओं को नशे से दूर रहने का आह्वान किया तथा खुद की देखभाल करते हुए अपने मानसिक और भावनाात्मक सेहत को बेहतर बनाने की अपील की। मंच संचालन कर रहे कार्यक्रम अधिकारी डॉ0 डी0एन0जोशी ने वार्यतां मद्यराक्षसः पर अपने विचार व्यक्त किये। बी0एड0 की छात्रा कु0 मरियम सैफ़ी ने नशा मुक्ति पर कविता पाठ किया। स्वयंसेवियों ने नशा मुक्ति, धूम्रपान निषेध, युवाओं में बढ़ती नशे की प्रवृत्ति आदि पर पोस्टर वं कवितायें प्रस्तुत की जिनमें बबीता, कविता रावत, रचना रावत, जावेद अन्सारी, रजनी सती, निधि शर्मा ने अपने–अपने पोस्टर प्रस्तुत किये। कार्यक्रम की अध्यक्षा प्राचार्य डॉ0 (श्रीमती) हेमा प्रसाद ने समस्त छात्र–छात्राओं को अपने मानसिक स्वास्थ्य स्वस्था रखने तथा नशे की बुरी लत से दूर रहते हुये अपने उज्जवल भविष्य को बनाने की बात कही। कार्यक्रम में वरिष्ठ कार्यक्रम अधिकारी डॉ0 धीरेन्द्र सिंह, डॉ0 दीपक खाती, डॉ0 कृष्णा भारती, डॉ0 निवेदिता अवस्थी, डॉ0 अनीता जोशी, डॉ0 हेमलता सैनी, डॉ0 किरन कुमार पन्त एवं छात्र–छात्रा उपस्थित रहे।

• 28-02-2019 को मतदाता जागरूकता संगोष्ठी का आयोजन महाविद्यालय ऑडिटोरियम में किया गया, जिसका शुभारम्भ मुख्य अतिथि श्री विमल कुमार पाण्डे, ए0आर0टी0ओ0 रामनगर तथा श्री ललित मोहन पाण्डे, जिला समन्वयक, राष्ट्रीय सेवा योजना, जिला नैनीताल एवं महाविद्यालय की प्राचार्या, डॉ0 (श्ररीमती) हेमा प्रसाद जी ने माँ सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्जवलित कर संयुक्त रूप से किया। कार्यक्रम में स्वयंसेवियों द्वारा मंगल गीत कु0 मानसी, कु0 ररचना रावत एवं कु0 किरन बंगारी ने प्रस्तुत किया। डॉ0 शरद भट्ट ने अपने विचार व्यक्त करते हुये शत-प्रतिशत मतदान करने हेतु छात्र-छात्राओं से निर्वाचन में प्रतिभाग करने की बात कही। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री विमल कुमार पाण्डे जी ने छात्र-छात्राओं को SVEEP के विषय में विस्तार पूर्वक बताया तथा 18 वर्ष पूर्ण कर चुके सभी युवा मतदाताओं को शेल्फी बूथ तथा शॅर्ट फिल्म्स के द्वारा अभिनय के माध्यम से मतदाताओं को जागरूक करने के लिये प्रेरित किया। अपने वक्तव्य में श्री पाण्डे जी ने समस्त युवाओं को SVEEP की सहायता से टॉल फ्री नम्बर 1950 पर अपनी शंका समाधान करने के विषय में बताया। विशिष्ट अतिथि श्री ललित मोहन पाण्डेय, जिला समन्वयक राष्ट्रीय सेवा योजना ने सुव्यवस्थित मतदाता शिक्षा एवं निर्वाचकीय सहभागिता के उद्देश्यों एवं लक्ष्यों को बताते हुये कहा कि जनपद नैनीताल में कुल 729157 मतदाता हैं जिसमें 346234 महिला मतदाता एवं 382917 पुरूष मतदाता हैं, तथा कुल 943 मतदान केन्द्र हैं। मंच संचालक एवं कैम्पस अम्बेस्डर डॉ0 डी0एन0जोशी ने वोटर अवेयरनैस फोरम के विषय में बताते हुए 14 से 17 वर्षा के भावी मतदाताओं हेतु चुनावी पाठशाला के विषाय में बताया। दिनांक 23 व 24 फरवरी 2019 को 2200 लोगों का पंजीकरण हुआ, जिसमें 700 नये मतदाता तथा 1500 ने संशोधन के लिये आवेदन प्रस्तुत किया। कार्यक्रम की अध्यक्ष डॉ0 (श्रीमती) हेमा प्रसाद ने छात्र-छात्राओं को आगामी लोकसभा चुनावों में शत-प्रतिशत मतदान एवं प्रलोभन मुक्त मतदान करने का आह्वान किया। कार्यक्रम में छात्रा अम्बेस्डर कु0 ललिता बधानी ने मतदान हेतु जागरूक करने के लिए प्रेरक कविता पाठ किया। स्वयंसेवियों ने निर्वाचन हेतु स्वविवेक से जन प्रतिनिधि चुनने के लिये नुक्कड़ नाटक प्रस्तुत कियाा, जिनमें कु0 मानसी, कु0 किरन बंगारी, कु0 रचना रावत, विजय जमवाल, जाावेद सिद्दीकी आदि ने सबको मतदाता जागरूकता का संदेश दिया। कार्यक्रम में महाविद्यालय के वरिष्ठ प्राध्यापक डॉ0 धन सिंह कुंवर, वरिष्ठ कार्यक्रम अधिकारी डॉ0 धीरेन्द्र सिंह, कार्यक्रम अधिकारी डॉ0 दीपक खाती एवं डॉ0 कृष्णाा भारती, डॉ0 धर्मेन्द्र कुमार, डॉ0 प्रमोद जोशी, डॉ0 एस0एस0 मौर्य, डॉ0 प्रीति त्रिवेदी, डॉ0 अनुमिता अग्रवाल, डॉ0 अनीता जोशी, डॉ0 निवेदिता अवस्थी, डॉ0 हेमलता सैनी, डॉ0 शिप्रा पन्त, छात्र संघ वर्तमान एवं पूर्व पदाधिकारी तथा छात्र-छात्रायें उपस्थित रहे। अन्त में डॉ0 डी0एन0 जोशी ने सबका धन्यवाद ज्ञापित कर आभार व्यक्त किया।

- डॉ0 धीरेन्द्र सिंह (वरिष्ठ कार्यक्रम अधिकारी, रा0से0यो0 इकाई) रामनगर महाविद्यालय

शहीद भगत सिंह छात्रावास

प्रगति आख्या 2017-19

महाविद्यालय में छात्रावास अपने स्थापना दिवस के अभिलेखानुसार से ही पी0एन0जी0पी0जी0 कॉलेज रामनगर के शहीद भगत सिंह छात्रावास में 80 छात्रों के निवास करने की व्यवस्था है, जिसमें वर्तमान सत्र में 40 छात्र निवास कर रहे हैं।

महाविद्यालय में नियमित प्रवेश के बाद छात्रावास में मात्र एक सत्र के लिए प्रवेश हेतु प्रार्थना पत्र स्वीकार किया जाता है। उन छात्रों को प्राथमिकता दी जाती है, जिनके हाईस्कूल से अन्तिम उत्तीर्ण परीक्षा अंक प्राप्तांकों का प्रतिशत उत्तम रहा हो। अन्तिम परीक्षा उत्तीर्ण करने के पूर्व एवं बाद एक वर्ष से अधिक वर्षों का अवरोध होने पर छात्रावास में प्रवेश नहीं दिया जाता है।

छात्रावास में प्रवेश उन्हीं छात्रों को दिया जाता है जिनका स्थायी निवास महाविद्यालय में 15किमी0 की परिधि के बाहर होगा, जिस प्रार्थी के अभिभावक का मकान इस परिधि में आता हो उन्हें प्रवेश नहीं दिया जाता था। सेवा तथा व्यवसाय करने वाले छात्रों को प्रवेश नहीं दिया जाता था।

अनुसूचित जाति/जनजाति/पिछड़ा वर्ग जाति के छात्रों को नियमानुसार प्रवेश में आरक्षण दिया जाता था। बशर्ते व प्रवेश हेतु योग्यता रखते हों, जिन छात्रों के विरूद्ध अनुशासन सम्बन्धी शिकायत होती है/आचरण असंतोषजनक समझा जायेगा जो छात्र नैतिक भ्रष्टाचार अथवा हिंसा के अभियोग में दण्डित किया है या उक्त में सम्बन्धित न्यायालय में वाद चल रहा हो उसे प्रवेश नहीं दिया जाता है। यदि महाविद्यालय प्रशासन यह अनुभव करता है कि किसी छात्र विशेष का प्रवेश छात्रावास हित में नहीं है तो बिना कारण बताये उसको प्रवेश आवेदन पत्र को अस्वीकृत की जाती है।

यदि महाविद्यालय प्रशासन यह अनुभव करता है कि किसी छात्र का विशेष छात्रावास हित में नहीं है तो बिना कारण बताये उसके प्रवेश आवेदन पत्र को अस्वीकृत किया जााता था। प्रवेश के सम्बन्ध में प्राचार्य का निर्णय अन्तिम होगा। छात्रावास के अनुशासन बनाये रखना अत्यावश्यक है। अनुशासनहीनता करने वाले छात्रावासी को छात्रावास से हटा दिया जाता था।

प्राचार्य छात्रावास आधुनिक मुख्य शास्ता किसी भी समय किसी भी कक्ष का निरीक्षण कर सकते हैं। प्रत्येक छात्र को दो सीट वाले कक्ष में एक सीट दी जाती थी। कक्ष उपलबध होने पर छात्र किसी कक्ष में अकेले रह सकता था। किन्तु दो सीटों का किराया जमा करना होता था। सभी छात्रावासी प्राचार्य एवं छात्रावास अधिकारियों का समय-समय आदेशों का पालन करते थे।

दशहरा, दीपावली, होली एवं ग्रीष्मकाल में छात्रावास अनिवार्य रूप से खाली करना होता था। प्रत्येक छात्रावासी को अप्रैल से सितंबर तक रात्रि 9:00 बजे तथा कटॅबर से सायं 7 बजे तक छात्रावास में पहुंचना आवश्यक होता था। निर्धारित समय उपरान्त छात्रावासियों की उपस्थिति ली जाती थी। अनुपस्थित छात्र के विरूद्ध अनुशासनात्मक कार्यवाही की जाती थी।

छात्रावास का मुख्यद्वार रात्रि 9:00 बजे बंद कर दिया जाता था ओर प्रात: 05:00 बजे खोल दिया जाता था मुख्य द्वार बंद रहने की अवधि में किसी भी छात्रावासी को अवागामन की अनुमति नहीं होती थी। रात्रि में अनुपस्थित रहने पर छात्र के विरूद्ध अनुशासनात्मक कार्यवाही की जाती थी। यदि किसी छात्रावासी को आवश्यक कार्य हेतु बाहर जाना हो और निर्धारित

समय में छात्रावास तक लौटने की सम्भावना न हो तो छात्रावास अधीकक्ष से पूर्व अनुमति लेना आवश्यक होता था।

छात्रावास को अधीक्षक को बिना सूचित किए अथवा पूर्व अनुमति लिये बिना अनुपस्थित रहना अनुशासनहीनता होता था। छात्रावासियों की अनुपस्थिति में उसके स्थान पर कक्ष में अन्य कोई व्यक्ति नहीं रहता था। छात्रावासियों को अपने कमरे या आसपास स्वयं सफाई करनी होती थी। समस्त कूड़ाकरकट कूड़ेदान में ही फेंकना तथा गन्दगी करना अनुशासनहीनता होता था। प्रत्येक कक्ष में उपलब्ध फर्नीचर और बिजली की सामग्री इत्यादि तथा अन्य साज सज्जा के रख-रखाव के पूर्ण उत्तरदायित्व उस कक्ष में रह रहे छात्रावासियों का होता था। सामग्री के खाने अथवा किसी प्रकार की टूट-फूट होने पर उसकी क्षतिपूर्व कक्ष में रहने वाले छात्रों से की जाती थी। छात्राावास में कोई भी हीटर आदि अथवा पानी गर्म करने का बिजली का कोई भी उपकरण प्रयोग नहीं किया जाता था। अचानक निरीक्षण करने पर यदि किसी छात्र का उक्त सामग्री का प्रयोग करते हुए पकड़ा जाता था तो उसे आर्थिक

दण्ड भोगना पड़ता था। साथ ही उसे छात्रावास से निष्कासित किया जाता था। छात्रावास में किसी भी प्रकार का दुर्व्यसन (जैसे- धूम्रपान, मदिरा, जुआ आदि) तथा किसी भी प्रकार के अस्त्र-शस्त्र अपने पास अथवा कक्ष में रखना कानूनी जुर्म होता था। कानूनी जुर्म के अलंगतः छात्रावासी की सूचना पुलिस प्रशासन को दी जाती थी। छात्रावास में किसी प्रकार का चुनाव कार्यालय बनाना, चुनाव मीटिंग करना या भाषण देना किसी प्रकार का चुनाव प्रचार करना वर्जित था। ऐसा करते हुए पकड़े जाने पर छात्र को छात्रावास खाली करना भी पड़ सकता था।

शस्त्र अपने पास अथवा कक्ष में रखना कानूनी जुर्म होता था। कानूनी जुर्म के अलंगतः छात्रावासी की सूचना पुलिस प्रशासन को दी जाती थी। छात्रावास में किसी प्रकार का चुनाव कार्यालय बनाना, चुनाव मीटिंग करना या भाषण देना किसी प्रकार का चुनाव प्रचार करना वर्जित था। ऐसा करते हुए पकड़े जाने पर छात्र को छात्रावास खाली करना भी पड़ सकता था।

प्रत्येक छात्रावासी अपनी सह छात्रवासी के साथ सौहार्द एवं सद्भााव रखतो हुए निवास करते थे। किसी भी प्रकार का आपसी मन-मुटाव, मुखन्दी, संघर्ष या उपद्रव करना, शोर गुल करना अथावा किसी भी प्रकार से दूसरे की पढ़ाई में विघ्न डालना अनुशासनहीनता होता था और अनुशासनहीनता एक दण्डीय अपराध है, जिसके अन्तर्गत छात्र को छात्रावास से निष्कासित किया जा सकता है। छात्रावासी को परीक्षा में सम्मिलित होने से पूर्व अपने समस्त देय को भुगतान कर छात्रावास अधीक्षक से अदेय प्रमाण पत्र प्राप्त करना आवश्यक होता था और परीक्षायें समाप्त होते ही उसे प्रदान की गई छात्रावास सम्बन्धी सामग्री सम्बन्धित अधिकारी या कर्मचारी को सौंप कर तुरन्त छात्रावास कक्ष खाली करना आवश्यक होता था। छात्रावास खाली करने के बाद दी गई सामग्री साज-सज्जा सम्बन्धी अदेय प्रमाण-पत्र प्राप्त करना अनिवार्य होता है। यथासमय छात्रावास के देयकों को का भुगतान आवश्यक होगा। अन्यथा अनुशासनात्मक कार्यवाही की जाएगी। नियमित न रहने वाले छात्रों को छात्रावास भी छोड़ना पड़ सकता है। अपने समान की सुरक्षा छात्रावासी स्वयं करेंगे। महाविद्यालय प्रशासन का इसका उत्तरदायित्व नहीं होगा।

शुल्क संरचना

सामान्य पाठ्यक्रमों में प्रवेश लेने वाले छात्रों हेतु

1.	छात्रावास किराया	-	300/- वार्षिक
2.	कारमनी/छात्रावास छोड़ते समय वापस	-	250/- वार्षिक
3.	जल/विद्युत	-	3860/- वार्षिक
4.	आकस्मिक व्यय	-	1059/- वार्षिक
	कुल	**-**	**5500/- वार्षिक**

छात्रावास को अधीकक्ष को बिना सूचित किए अथवा पूर्व अनुमति लिये बिना अनुपस्थित रहना अनुशासनहीनता होता था। छात्रावासियों की अनुपस्थिति में उसके स्थान पर कक्ष में अन्य कोई व्यक्ति नहीं रहता था। छात्रावासियों को अपने कमरे या आसपास स्वयं सफाई करनी होती थी। समस्त कूड़ाकरकट कूड़ेदान में ही फेंकना तथा गन्दगी करना अनुशासनहीनता होता था। प्रत्येक कक्ष में उपलब्ध फर्नीचर और बिजली की सामग्री इत्यादि तथा अन्य साज सज्जा के रख-रखाव के पूर्ण उत्तरदायित्व उस कक्ष में रह रहे छात्रावासियों का होता था। सामग्री के खाने अथवा किसी प्रकार की टूट-फूट होने पर उसकी क्षतिपूर्व कक्ष में रहने वाले छात्रों से की जाती थी। छात्रावास में कोई भी हीटर आदि अथवा पानी गर्म करने का बिजली का कोई भी उपकरण प्रयोग नहीं किया जाता था। अचानक निरीक्षण करने पर यदि किसी छात्र का उक्त सामग्री का प्रयोग करते हुए पकड़ा जाता था तो उसे आर्थिक दण्ड भोगना पड़ता था। साथ ही उसे छात्रावास से निष्कासित किया जाता था।

छात्रावास में किसी भी प्रकार का दुर्व्यसन (जैसे- धूम्रपान, मदिरा, जुआ आदि) तथा किसी भी प्रकार के अस्त्र-शस्त्र अपने पास अथवा कक्ष में रखना कानूनी जुर्म होता था। कानूनी जुर्म के अलंग्तः छात्रावासी की सूचना पुलिस प्रशासन को दी जाती थी। छात्रावास में किसी प्रकार का चुनाव कार्यालय बनाना, चुनाव मीटिंग करना या भाषण देना किसी प्रकार का चुनाव प्रचार करना वर्जित था। ऐसा करते हुए पकड़े जाने पर छात्र को छात्रावास खाली करना भी पड़ सकता था।

प्रत्येक छात्रावासी अपनी सह छात्रवासी के साथ सौहार्द एवं सद्भााव रखतो हुए निवास करते थे। किसी भी प्रकार का आपसी मन-मुटाव, मुखन्दी, संघर्ष या उपद्रव करना, शोर गुल करना अथावा किसी भी प्रकार से दूसरे की पढ़ाई में विघ्न डालना अनुशासनहीनता होता था और अनुशासनहीनता एक दण्डीय अपराध है, जिसके अन्तर्गत छात्र को छात्रावास से निष्कासित किया जा सकता है। छात्रावासी को परीक्षा में सम्मिलित होने से पूर्व अपने समस्त देय को भुगतान कर छात्रावास अधीक्षक से अदेय प्रमाण पत्र प्राप्त करना आवश्यक होता था और परीक्षायें समाप्त होते ही उसे प्रदान की गई छात्रावास सम्बन्धी सामग्री सम्बन्धित अधिकारी या कर्मचारी को सौंप कर तुरन्त छात्रावास कक्ष खाली करना आवश्यक होता था। छात्रावास खाली करने के बाद दी गई सामग्री साज-सज्जा सम्बन्धी अदेय प्रमाण-पत्र प्राप्त करना अनिवार्य होता है। यथासमय छात्रावास के देयकों को का भुगतान आवश्यक होगा। अन्यथा अनुशासनात्मक कार्यवाही की जाएगी। नियमित न रहने वाले छात्रों को छात्रावास भी छोड़ना पड़ सकता है। अपने समान की सुरक्षा छात्रावासी स्वयं करेंगे। महाविद्यालय प्रशासन का इसका उत्तरदायित्व नहीं होगा।

शुल्क संरचना

सामान्य पाठ्यक्रमों में प्रवेश लेने वाले छात्रों हेतु

1.	छात्रावास किराया	-	300/- वार्षिक
2.	कारमनी/छात्रावास छोड़ते समय वापस	-	250/- वार्षिक
3.	जल/विद्युत	-	3860/- वार्षिक
4.	आकस्मिक व्यय	-	1059/- वार्षिक
	कुल	-	**5500/- वार्षिक**

स्ववित्त पोषित पाठ्यक्रमों में प्रवेश लेने हेतु –

1.	छात्रावास किराया	–	300/– वार्षिक
2.	कारमनी/छात्रावास छोड़ते समय वापस	–	250/– वार्षिक
3.	जल/विद्युत	–	5520/– वार्षिक
4.	आकस्मिक व्यय	–	1230/– वार्षिक
	कुल	**–**	**7300/– वार्षिक**

पी0एच0डी0 पोषित पाठ्यक्रमों में प्रवेश लेने हेतु –

1.	छात्रावास किराया	–	300/– छः माह
2.	कारमनी/छात्रावास छोड़ते समय वापस	–	250/– छः माह
3.	जल/विद्युत	–	1900/– छः माह
4.	आकस्मिक व्यय	–	550/– छः माह
	कुल	**–**	**3000/– छः माह**

छात्रावास में निवास कर रहे छात्रों को क्रीड़ा विभाग से खेल सामग्री भी उपलब्ध करायी जाती है, जिससे छात्र अपने खाली समय का उपयोग कर सकें। छात्रावास में निवास कर रहे छात्र श्री विजय शाही (बी0एस00सी0 द्वितीय वर्ष) एवं श्री किशन सिंह (बी0कॉम प्रथम वर्ष) का सत्र 2017–18 में आर्मी में नियुक्ति हुई थी एवं सत्र 2018–19 में श्री रविन्द्र सिंह (बी0ए0 पंचम सेमेस्टर) एवं भूपेन्द्र सिंह (बी0ए0 पंचम सेमेस्टर) का आर्मी में फिजिकल परीक्षा पास हुए।

छात्रावास में समय समय पर विभिन्न प्रतियोगिताएं भी करायी जाती हैं, जिससे छात्रावासियों के प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय पुरस्कार भी दिया जाता है। छात्रावास के सफल संचालन के लिए महाविद्यालियों में प्राध्यापकों की समिति बनाई जाती है एवं छात्रोंां की समिति बनाई जाती है, जिसमें जल विद्युत समिति, प्रांगण विकास समिति, सुरक्षाा समिति, खेल समिति आदि और जिससे समय–समय पर छात्राओं को उपयोगी सुझाव दिये जाते हैं। जिसमें छात्रों में सृजनात्मक विचार उत्पन्न होते हैं।

पार्यनियर्स कल्ब द्वारा छात्रावास को एक (आर.ओ.) प्रदान किया जाता है, जिसके लिए छात्रावास समिति हृदय से धन्यवाद देती है। छात्रावास द्वारा अन्तर महाविद्यालय द्वारा प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाले छात्रों का अच्छा प्रदर्शन रहा।

निवर्तमान छात्रसंघ अध्यक्ष श्री रविन्द्र सिंह रौतेला के प्रयास द्वारा छात्रावास में विधायक निधि से चार सी.सी.टी.वी. कैमरे लगाये गये हैं, जिसका मुख्य मॉनीटर छात्रावास कक्ष डॉ0 धीरेन्द्र सिंह के कक्ष में लगाया गया है। महाविद्यालय परिवार एवं छात्रावास समिति विधायक श्री दिवान सिंह बिष्ट जी का भी आभार व्यक्त करता है। वर्तमान छात्र संघ अध्यक्ष श्री जितेन्द्र सिंह रावत द्वारा छात्रावास में गर्मपानी का गीजर लगाने की घोषणा की गई है, जिसका छात्रावास समिति स्वागत करती है।

– डॉ0 धीरेन्द्र सिंह (छात्रावास अधीक्षक)

रोवर्स–रेंजर्स

विभागीय आख्या 2017–18 व 2018–19

राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामनगर में 15 रोवर एवं 15 रेंजर, प्रत्येक की एक शाखा पंजीकृत है। महाविद्यालय में एवं विभिन्न स्तरों पर सभी रोवर–रेंजर, प्रभारी डॉ0 रवीन्द्र कुमार सैनी एवं डॉ0 हेमलता सैनी के दिशा निर्देशों में उत्कृष्ट कार्य करते रहे हैं। महाविद्यालय से रोवर–रेंजर ने खण्ड स्तर से लेकर अंतर्राष्ट्रीय स्तर तक की गतिविधियों में भाग लिया है।

- महाविद्यालय की इकाई ने 2017 में योग दिवस में प्रतिभाग किया।
- इकाई ने हेमराज सिंह व अभिषेक बोरा (रोवर) के दिशा–निर्देश में राजकीय इण्टर कॉलेज, करनपुर में स्टॉप द वॉयलेंस कार्यक्रम की ट्रेनिंग दी।
- अभिषेक बोरा एवं हेमराज सिंह को 2017–18 एवं 2018–19 के लिए प्रादेशिक प्रोजेक्ट कॉर्डिनेटर नियुक्त किया गया।
- महाविद्यालय की पूरी इकाई विभिन्न क्रियाकलापों को पूर्ण कराने में ब्लॉक एवं नगर संस्था रामनगर को सहयोग प्रदान करती आई है – (1) वर्ष 2017 एवं 2018 में टोली नायक प्रशिक्षण शिविर में सेवाएं प्रदान की हैं। (2) वर्ष 2019, खण्ड शिक्षा अधिकारी के सेवानिवृत्ति कार्यक्रम को सम्पन्न कराया। रूपा बिष्ट, अभिषेक बोरा एवं पंकज भट्ट मौजूद रहे।
- समय–समय पर महाविद्यालय में भिन्न कार्यक्रमों में सक्रियता रही। इकाई ने अक्टूबर 2017 से अनवरत् महाविद्यालय में विभिन्न स्थानों पर सफ़ाई कार्य करते हुए स्वच्छ भारत अभियान को बढ़ावा दिया है।
- पर्यावरणीय अध्ययन के तहत इकाई ने 25 सितंबर को गूलरसिद्ध मंदिर तक पदयात्रा की एवं 5–9 नवम्बर 2017 रोवर व रेंजर ने दादर–नागर हवेली में राष्ट्रीय स्तरीय ट्रैकिंग में प्रतिभाग किया।
- 3 रोवर व 2 रेंजर ने श्रवणबेलगोला, कर्नाटका में माहामष्तकाभिषेक कैम्प में सेवा कार्य किया।
- 2–6 अगस्त 2018 के दौरान 3 रोवर ने निपुण व 4 रोवर ने राज्यपाल, शीतलाखेत, अल्मोड़ा़ परीक्षा उत्तीर्ण की।
- 20–24 अगस्त 2018 के दौरान 2 रेंजर ने निपुण एवं 6 रेंजर ने राज्यपाल परीक्षा, भोपालपानी, देहरादून में उत्तीर्ण की।
- 02–11 फरवरी 2019 के दौरान 4 रोवर (अभिषेक बोरा, पंकज भट्ट, राहुल शाह व चन्द्रशेखर सती) ने प्रयागराज, इलाहाबाद में कुम्भ मेला में उत्कृष्ट सेवाएं प्रदान की। पंकज भट्ट व चन्द्रशेखर सती ने उत्तम कार्य हेतु कैम्प प्रशासन व मेला अधिकारी की प्रशंसा भी प्राप्त की।

सभी छात्र–छात्राओं का इकाई के विकास हेतु योगदान रहा है। समय–समय पर बैठकों में भविष्य के कार्यक्रमों पर चर्चा की जाती है। वर्तमान में सभी रोवर–रेंजर अगले चरण की परीक्षा की तैयारी कर रहे हैं, प्रवेश से निपुण, निपुण से राज्यपाल, राज्यपाल से राष्ट्रपति पुरूस्कार प्राप्ति हेतु सभी प्रयासरत हैं। विभाग एवं महाविद्यालय की उपब्धियों में रोवर–रेंजर का योगदान रहा है।

विभाग प्रभारी

डॉ0 रवींद्र कुमार सैनी, RSL (Rover Scout Leader)

डॉ0 हेमलता सैनी, RSL (Rangers Scout Leader)

रोवर–रेंजर विभाग

वर्ष 2017–18 एवं 2018–19 के क्रियाकलापों की सूची

S.No.	Name of Events	Venue	Dates	No.of Rover	No.of Ranger
1	International Yoga Day	Painth Parao, Ramnagar	21 June 2017	7	5
2	Stop the Violence - Training	G.I.C. Karanpur, Ramnagar	15 July 2017	7	4
3	Premchand Jayanti Celebration	M.P.H.I.C., Ramnagar	30 July 2017	5	5
4	'Save Tiger' - Exhibition	Forest Compound, Ramnagar	31 July 2017	5	5
5	Regional Level Handicraft Training-Northern Region	Fazilka Punzab	21-25 Aug. 2017	2	1
6	Local Association Patrol Leader Camp	Primary School Lakhanpur, Ramnagar	7-9 Sept. 2017	6	5
7	Hike to Gularsiddh	Gularsiddh, Ramnagar	25 September 2017	8	8
8	Cleanliness Drive in College	P.G. Block Garden. Ramnagar	18 October 2017	8	7
9	National Coastal Trekking Programme	Dadra and Nagar Haveli	05-09 Nov. 2017	2	2
10	Cleanliness Drive in College	Library PNG PG, Ramnagar	22 November 2017	8	8
11	Matdata Jagrukta Rally	Ramnagar	25 January 2018	10	10
12	National Mahamastakabhisheka Service Camp	Shravan Belgola, Karnataka	20-27 Feb. 2018	03	02
13	Cleanliness Drive in College	College Ground	24 February 2018	08	08
14	Cleanliness Drive in College	College Ground	31 March 2018	08	08
15	385th National Adventure Programme	Panchmarhi, Madhya Pradesh	15-21 May 2018	02	02
16	Nipun - Rajyapal Testing Camp (Rover)	Sheetlakhet, Almora	02-06 August 2018	07	N.A.
17	Nipun - Rajyapal Testing Camp (Ranger)	Bhoopalpani, Dehradun	20-24 August 2018	N.A.	08
18	Local Association Patrol Leader Camp	G.M.P.S., Himmatpur, Ramnagar	04-06 Oct. 2018	02	02
19	National Level Kumbh Mela Service Camp	Prayagraj, Allahabad (U.P.)	02-11 Feb. 2019	04	N.A

राज्यपाल पुरस्कार प्राप्त रोवर–रेंजर सूची

क्र.सं.	वर्ष	नाम	कक्षा	रोवर/रेंजर	आयोजन स्थल
1	2016 - 2017	Anshul Verma	M.A.-III Sem.	Rover	शान्तिकुंज हरिद्वार
2		Mohd. Rehan	M.A.-II Sem.	Rover	
3		Yogita Joshi	B.Ed.-III Yr.	Ranger	
4	2018 – 2019	Vivek Thapa	M.Com-III	Rover	शीतलाखेत अल्मोड़ा
5		Pankaj Bhatt	M.Sc.-I	Rover	
6		Mujeeburrehman	B.A.-V	Rover	
7		Deep Shankar	B.A.-V	Rover	
8		Roopa Bisht	M.A.-I	Ranger	भूपालपानी देहरादून
9		Neetu Bangari	B.A.-V	Ranger	
10		Nikita Dhyani	B.A.-V	Ranger	
11		Rupali	B.A.-V	Ranger	
12		Bhawna Arya	B.A.-V	Ranger	
13		Rekha Padiyar	B.A.-V	Ranger	

निपुण पुरस्कार प्राप्त रोवर-रेंजर सूची

क्र.सं.	वर्ष	नाम	कक्षा	रोवर/रेंजर	आयोजन स्थल
1	2016 - 2017	Hemraj Singh	B.Ed.-II	Rover	शान्तिकुंज हरिद्वार
2		Abhishek Bora	B.A.-II	Rover	
3		Pankaj Bhatt	B.Sc.-II	Rover	
4		Vivek Thapa	B.Com-III	Rover	
5		Mahendra Rawat	B.Com-II	Rover	
6		Punam	M.A.-I(S)	Ranger	
7		Hema Negi	M.Sc.-I(S)	Ranger	
8		Meera Rawat	M.Sc.-I(Sem)	Ranger	
9		Kiran Adhikari	M.Sc.-I(Sem)	Ranger	
10		Bhawna Mahra	M.Sc.-I(Sem)	Ranger	
11		Roopa Bisht	B.A.-II	Ranger	
12		Neetu Bangari	B.A.-II	Ranger	
13		Himanshu Rawat	B.A.-II Sem	Rover	शीतलाखेत अल्मोड़ा
14		Mohd. Asim	B.A.-II yr.	Rover	
15		Mujeeburrehman	B.A.-II Sem	Rover	
16		Deep Shankar	B.A.-II Sem.	Rover	
17		Priyanka Dhyani	B.A.-II yr.	Ranger	
18		Rupali	B.A.-II Sem.	Ranger	
19		Bhawna Arya	B.A.-II Sem.	Ranger	
20		Rekha Padiyar	B.A.-II Sem.	Ranger	
21		Nikita Dhyani	B.A.-II Sem.	Ranger	
22	2018 - 2019	Rahul Shah	B.A.-V Sem.	Rover	शीतलाखेत अल्मोड़ा
23		Rahul Kumar	B.A.-V Sem.	Rover	
24		Diwakar Mohan Pathak	B.A.-V Sem.	Rover	
25		Deepika Rautela	B.A.-V Sem.	Ranger	भूपालपानी देहरादून
26		Preeti Rawat	B.A.-V Sem.	Ranger	

निपुण एवं राज्यपाल पुरस्कार प्राप्त रोवर-रेंजर

वर्ष (सत्र)	निपुण		राज्यपाल	
	रोवर	रेंजर	रोवर	रेंजर
2014-15	-	-	-	-
2015-16	6	6	-	-
2016-17	9	12	2	1
2017-18	-	-	-	-
2018-19	3	2	4	6

प्रादेशिक समागम का विवरण

कार्यक्रम का नाम	आयोजन स्थल
एकादश प्रादेशिक समागम	श्री गुरू राम राय (पी.जी.) कॉलेज, देहरादून
द्वादश प्रादेशिक समागम	राधे हरि राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, काशीपुर

द्वादश प्रादेशिक समागम में महाविद्यालय की रोवर/रेंजर इकाई ने प्रदेश में द्वितीय स्थान प्राप्त किया। इस उपलक्ष्य में प्राचार्या महोदया ने पूरी टीम को 2000/- रु. का नगद पुरस्कार प्रदान किया।

उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय एक झलक

उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय की स्थापना 31 अक्टूबर सन् 2005 उत्तराखण्ड विधेयक (अधिनियम संख्या–23) के अनुसार हुई थी। इसकी स्थापना का मुख्य उद्देश्य दूरस्थ शिक्षा प्रणाली द्वारा प्रत्येक इच्छुक विद्यार्थी के लिये ज्ञान प्रसारित तथा प्रचारित करना है और दूरस्थ शिक्षा प्रणाली एवं संचार प्रौद्योगिकी का प्रयोग कर अधिक से अधिक लोगों को उच्च शिक्षा प्रदान करना है।

उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय का मुख्य कार्यालय हल्द्वानी, नैनीताल में स्थित है। राज्य के सभी जिलों में विश्वविद्यालय के अध्ययन केन्द्र हैं।

मुक्त विश्वविद्यालय के मुख्य उद्देश्य

- शैक्षिक आवश्यकता को दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से पूरा करना।
- आर्थिक रूप से कमजोर लोगों को उच्च शिक्षा उपलब्ध कराना।
- दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से शिक्षा को समाज के उन लोगों तक पहुंचाना जो भौगोलिक व परिस्थितियों के कारण शिक्षा प्राप्त करने में असमर्थ हैं।
- उच्च शिक्षा प्राप्ति के इच्छुक सभी व्यक्तियों, रोजगार में लगे हुए स्त्री–पुरूष, विकलाांग, वयस्कोां तथा अपरिहार्य कारणों से शिक्षा छोड़ चुके व्यक्तियों को उच्च तथा रोज़गारपरक शिक्षा प्राप्ति का अवसर उपलब्ध कराना।
- ज्ञान को सूचना व प्रौद्योगिकी की नवीन पद्धति द्वारा लोगों तक पहुंचाना।

उ0मु0वि0वि0 का अध्ययन केन्द्र रामनगर

महाविद्यालय में उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय की स्थापना 2010 में प्राचार्य डॉ0 बी0सी0 उप्रेती जी के कार्यकाल में हुई थी। प्रारम्भ में डॉ0 गिरीश चन्द्र पंत ने समन्वयक के रूप में उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय अध्ययन केन्द्र (16022) को अपनी सेवाऐं दीं, तत्पश्चात् सन् 2010 से 2014 तक डॉ0 अखिलेश दुबे, 2014 से 2018 तक डॉ0 विकास दुबे ने अपनी सेवायें दीं।

वर्तमामन समय में प्राचार्या डॉ0 हेमा प्रसाद जी के संरक्षण में डॉ0 किरन कुमार पंत समन्वयक के रूप में, डॉ0 भावना पन्त सह–समन्वयक प्रथम, डॉ0 प्रमोद कुमार पाण्डे सह–समन्वयक द्वितीय के रूप में, श्री जे0सी0 बलोदी कार्यालय सहायक के रूप में, श्री सत्येन्द्र सिंह सहायक के रूप में, श्री विजय सिंह अनुसेवक के रूप में तथा श्रीमती किरन देवी पर्यावरण मित्र के रूप में अध्ययन केन्द्र को अपनी सेवायें दे रहे हैं।

अध्ययन केन्द्र की स्थापना के समय छात्र संख्या 29 थी जो वर्तमान में बढ़कर 1000 के पार पहुंच चुकी है।

अध्ययन केन्द्र में संचालित होने वाले विद्याशाखाएं एवं पाठ्यक्रमों का विवरण–

स्वास्थ्य विज्ञान विद्या शाखा

- M.A. YOGA
- BACHELOR OF YOGAAND NATUROPATHY
- DIPLOMA IN PUBLIC HEALTH AND COMMUNITY NUTRITION
- DIPLOMA IN YOGAAND NATUROPATHY
- CERTIFICATE IN AYURVEDICA FOOD AND NUTRITION
- CERTIFICATE IN YOGIC SCIENCE

विज्ञान विद्या शाखा

- MASTER OF SCIENCE - BOTANY
- MASTER OF SCIENCE - CHEMISTRY
- MASTER OF SCIENCE - PHYSICS
- PG DIPLOMA IN DISATER MANAGEMENT
- BACHELOR OF SCIENCE

प्रबंध एवं सूचना विज्ञान विद्या शाखा

- MASTER OF BUSINESS ADMINISTRATION (MBA)
- MASTER OF COMMERCE
- PG DIPLOMA IN MARKETING MANAGEMENT
- BACHELOR OF BUSINESS ADMINISTRATION (BBA)

शिक्षाशास्त्र विद्या शाखा –

- MASTER OF ARTS IN EDUCATION

मनविकी अध्ययन विद्याशाखा –

- MASTER OF ARTS - HINDI, ENGLISH, SANSKRIT, URDU, CERTIFICATE VEDIC, KARMKAND

समाज विज्ञान विद्याशाखा –

- MASTER OF ARTS - ECONOMICS, HISTORY, POL. SCIENCE, PUBLIC ADMINISTRATION, SOCIOLOGY, MASTER OF SOCIAL WORKS (MSW)

विधि अध्ययन विद्याशाखा –

- MASTER OF LAWS (LLM)

डॉ0 किरन कुमार पन्त

समन्वयक – उ0मु0वि0

अध्ययन केन्द्र – 16022

करिअर–काउंसलिग प्रकोष्ठ

रा0 स्ना0 महाविद्यालय, रामनगर

करिअर–काउंसलिंग प्रकोष्ठ का मुख्य उद्देश्य व लक्ष्य छात्र/छात्राओं को उस दक्षता/कौशल व ज्ञान से सम्पन्न करना है जो न केवल उन्हें इनकी रूचि व योग्यता के अनुरूप उचित व बेहतर संभावना वाले व्यवसायों (CAREER) को चुनने में मदद करें, बल्कि साथ ही जीवन में महत्वपूर्ण निर्णय लेने के योग्य भी बनाये। इस उद्देश्य को दृष्टिगत रख विगत दो वर्षो 2017–18 व 2018–19 के दौरान प्रकोष्ठ द्वारा विविध विषय विशेषज्ञों, महत्वपूर्ण व्यवसायिक प्रतिष्ठानों व शैक्षणिक संस्थाओं के दक्ष समूहों को महाविद्यालय में आमंत्रित कर परामर्श सत्र/सेमिनार का आयोजन किया गया। साथ–साथ ही प्रतिष्ठित कंपनियों को 'कैम्पस–रिक्रूटमेंट' (Campus Recruitment) हेतु महाविद्यालय में आमंत्रित किया गया।

गतिविधियाँ 2017–18

- 27 जुलाई 2017 : वित्त विशेषण श्री अंकुर भट्नागर के सहयोग से कार्यशाला।
- 3 नवम्बर 2017 : सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया, रामनगर के सहयोग से 'Public Participation in Promotinig Integrity and Radicating Corruption' विषय पर वाद–विवाद प्रतियोगिता व संक्षिप्त व्याख्याल का आयोजन।
- 02 मार्च 2018 : रसायन विज्ञान की एसोसिएट प्रोफेसर डॉ0 नीता पाण्डे द्वारा 'Balancing Professional Life and Private Life' पर व्याख्यान।
- 28 मार्च 2018 : रसायन विज्ञान विषय व रोजगार पर असि0 प्रो0 डॉ0 हिमानी बिष्ट द्वारा व्याख्या।
- 27 अप्रैल 2018 : असि0 प्रो0 डॉ0 किरन पंत द्वारा वाणिज्य विषय से नैट व अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी से संबंधित आख्यान।
- 28 अप्रैल 2018 : एसोसिएट प्रो0 डॉ0 नरेन्द्र जोशी द्वारा गणित विषय में नैट व अन्य प्रतियोागी परीक्षाओं की तैयारी से संबंधित आख्यान दिया गया।
- 08 मई 2018 : एन0बी0ए0 एकेडमी, रामनगर के सहयोग से काउसंलिंग सत्र का आयोजन।
- 31 जुलाई 2018 : TIME हल्द्वानी के सहयोग से करियर काउंसलिंग सत्र का आयोजन ।

सत्र/वर्ष 2018-19

- 28 सितम्बर 2018 : सहायक परिवहन अधिकारी, रामनगर श्री विमल पाण्डे व क्षेत्राधिकारी, थाना रामनगर श्री लोकजीत सिंह द्वारा छात्रों के करिअर से सम्बन्धित विविध प्रश्नों पर व्याख्यान।
- 26 अक्टूबर 2018 : बुलंद उत्तराखण्ड टीम दिल्ली कु0 रूचि, अपराजित व भावना – द्वाारा 'युवा सपने– करियर चर्चा एवं उनका समाधान विषय पर काउंसलिंग सत्र का संबोधन।
- 01 नवम्बर 2018 : 'एन0बी0ए0 एकेडमी' (National Banking Academy), रामनगर के दक्ष विशेषज्ञों के समूह द्वारा काउंसलिंग सत्र/सेमिनार का आयोजन व संबोधन।
- 02 फरवरी 2019 : को 'बुलंद उत्तराखण्ड टीम, नई दिल्ली द्वारा 'इफेक्टिव टीचिंग मैथड्स' पर काउंसलिंग सत्र/सेमिनार का आयोजन।
- 20 फरवरी 2019 : रिलायंस जिओ की टीम के सहयोग से महाविद्यालय परिसर में आयोजित 'कैम्पस रिक्रूटमेंट' में 07 छात्रों का रिलायंस जिओ कंपनी के विविध पदों – जिओ सेल्स ऑफिसर व जिओ पाइण्ट असिस्टेंट मैनेजर' के पद पर चयन।
- 02 मार्च 2019 को 'TIME इंस्टीट्यूट दिल्ली की विशेष टीम के साथ काउंसलिंग सत्र का आायोजन।
- 06 मार्च 2019 को युवा महोतसव 2019 टीम 'उत्तराखण्ड युवा रोजगार एवं उद्यमिता की ओर' विषय पर देहरादून में आयोजित कार्यक्रम का वीडियो कान्फ्रेसिंग के माध्यम से सीधे प्रसारण का आयोजन।
- 18 अप्रैल 2019 को 'एन0बी0ए0' एकेडमी, रामनगर के सहयोग से शैक्षणिक सेमिनार का आयोजन।
- 04 मई 2019 : IMEC(Institute of Management) रूद्रपुर की दक्ष फैकल्टी द्वारा 'प्रबंधन में रोजगार व नये विषय' पर काउंसलिंग सत्र में संबोधन व प्रस्तुतिकरण।
- 06 मई 2019 : 'Sri Sai Group of Institution', जसपुर के विशेषज्ञ समूमह द्वारा विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी, साक्षात्कार, व्यक्तित्व विकास व बेहतरीन रोजगार की संभावना विषय पर– प्रस्तुतिकरण, व्याख्यान व शंका समााधान, काउसंलिंग सत्र में।

डॉ0 शरद भट्ट (प्रभारी–करिअर काउसलिंग प्रकोष्ठ)

रा0स्ना0महा, रामनगर

Emmail : sharadbhatt94123@gmail.com

शोध प्रकोष्ठ

पी.एन.जी. महाविद्यालय में शोध प्रकोष्ठ के अन्तर्गत शोध–सम्बन्धी नियमित कक्षाऐं संचालित की जाती है। शोध–कार्य की गुणवत्ता को बढ़ाने हेतु विभिन्न गतिविधियों द्वारा शोधार्थियो को प्रोत्साहित किया जाता है। सत्र 2017–18 में महाविद्यालय में विभिन्न विभागों में नवीन शोधार्थियों की संख्या 14 थी। सत्र 2018–19 में नवीन शोधार्थियों की संख्या 20 है। जो निम्नवत् हैं –

सत्र : 2017–18

क्र.सं.	छात्र/छात्रा का नाम	विषय	निर्देशक का नाम
1	परमजीत कौर	समाजशास्त्र	हेमलता सैनी
2	प्रभदीप सिंह	समाजशास्त्र	रवीन्द्र सैनी
3	मनीष राना	राजनीति शास्त्र	डॉ. जे.पी. त्यागी
4	नीरज सिंह	राजनीति शास्त्र	डॉ. जे.पी. त्यागी
5	भावना महरा रौतेला	भूगोल	डॉ. डी.एन. जोशी
6	नीलम नेगी	मनोविज्ञान	डॉ. कमला जोशी
7	अनूप साहनी	भौतिक शास्त्र	डॉ. सुभाष चन्द्र
8	दानिश	भौतिक शास्त्र	डॉ. सुभाष चन्द्र
9	भुवन चन्द्र	जंतु विज्ञान	डॉ. भावना पन्त
10	रबिला अहमद	जंतु विज्ञान	डॉ. भावना पन्त
11	पूनम राना	वनस्पति विज्ञान	डॉ. एस.एस. मौर्य
12	शुऐब अजीम अंसारी	वाणिज्य	डॉ. ममता भदोला जोशी
13	नुरुल्लाह अब्बास जारी	वाणिज्य	डॉ. दीपक खाती
14	नूरन्निशां	वाणिज्य	डॉ. दीपक खाती

(सत्र : 2017–18) शोधार्थियों की सूची

क्र.सं.	छात्र/छात्रा का नाम	विषय	निर्देशक का नाम
1	भाग्यश्री	भूगोल	डॉ. डी.एस. जोशी
2	जगदीश	अर्थशास्त्र	डॉ. कृष्णा भारती
3	विवेक आर्य	मनोविज्ञान	डॉ. अनिता जोशी
4	रिचा ओझा	मनोविज्ञान	डॉ. कमला तिवारी
5	जितेन्द्र	भूगोल	डॉ. अनुराग श्रीवास्तव
6	विकास	गणित	डॉ. धीरेन्द्र सिंह
7	निशा पटवाल	वनस्पति विज्ञान	डॉ. पी.सी. पालीवान
8	नेहा	वनस्पति विज्ञान	डॉ. एस.एस. मौर्य
9	स्वाति	हिन्दी	डॉ. प्रीति त्रिवेदी
10	अभिषेक सिंह	हिन्दी	डॉ. प्रीति त्रिवेदी
11	आराधना	हिन्दी	डॉ. प्रीति त्रिवेदी
12	मोहित जोशी	राजनीति विज्ञान	डॉ. जे.पी. त्यागी
13	हिमानी वर्मा	राजनीति विज्ञान	डॉ. पी.सी. पालीवाल
14	मुकेश कुमार भाकुनी	वाणिज्य	डॉ. दीपक खाती
15	प्रकाश सिंह मनराल	राजनीति विज्ञान	डॉ. आर.एस. कनौजिया
16	किरन आर्या	राजनीति विज्ञान	डॉ. आर.एस. कनौजिया
17	करिश्मा	वाणिज्य	डॉ. ममता भदोला जोशी
18	नवीन कुमार	राजनीति विज्ञान	डॉ. जे.पी. त्यागी
19	हेमा नेगी	वनस्पति विज्ञान	डॉ. एस.एस. मौर्य
20	हर्षिल जोशी	वनस्पति विज्ञान	डॉ. एस.एस. मौर्य

इसके अतिरिक्त महाविद्यालय के वरिष्ठ प्राध्यापकों एवं अन्य प्राध्यापकों के कुशल निर्देशन में अनेक शोधार्थी शोध–कार्य में रत हैं।

डॉ. प्रीति त्रिवेदी
शोध–संयोजिका
शोध–प्रकोष्ठ
पी.एन.जी.राज.स्ना.महा., रामनगर (नैनीताल)

पुस्तकालय

''पुस्तकें वे विश्वस्त दर्पण हैं, जो संतों एवं शूरों के मस्तिष्क का परावर्तन हमारे मस्तिष्क पर करती हैं।'' *–गिबन*

साधारण पुस्तक	–	41506
बुक बैक	–	6545
पर्यावरण	–	1960
दैनिक अखबार	–	अमर उजाला, दैनिक जागरण, हिन्दुस्तान, विभिन्न रोजगार समाचार
प्रतियोगिताओं से सम्बन्धित–		प्रतियोगिता दर्पण, विज्ञान प्रगति, कम्पटीशन मास्टर, यनिर्वसिटी न्यूज, इण्डिया टुडे इत्यादि।
शोध छात्र	–	38

समय–समय पर अनुदान मिलने पर जनरल्स भी क्रय किये जाते हैं।

– सुभाष चन्द्र
पुस्तकालय प्रभारी
पी.एन.जी.राज.स्ना.महा., रामनगर (नैनीताल)

रुसा परियोजना

पी.एन.जी. राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय रामनगर (नैनीताल) में भारत सरकार द्वारा मानव संसाधन मंत्रालय के अन्तर्गत संचालित रुसा परियोजना का कार्य संचालित हो रहा है। रुसा प्रथम चरण में महाविद्यालय को 201.12 लाख का अनुदान स्वीकृत हुआ है। रुसा परियोजना में नव निर्माण में एक नया पुस्तकालय भवन का कार्य पूर्ण हो चुका है तथा कम्प्यूटर सेण्टर तथा 02 कक्षाओं का कार्य चल रहा है। पुर्ननिर्माण और नई सुविधाओं के मद के अन्तर्गत भी महाविद्यालय में कई कार्य संचालित हो रहे हैं।

– डॉ. अनुमिता अग्रवाल
नोडल अधिकारी (रुसा)

प्राध्यापकों की सूत्री : वर्ष 2019–20

क्र.सं.	प्रवक्ताओं का नाम	पदनाम
1	डॉ. संजय कुमार	एसोसिएट प्रोफेसर, विभागाध्यक्ष, इतिहास
2	डॉ. प्रीति त्रिवेदी	एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी
3	डॉ. आर.डी. सिंह	एसोसिएट प्रोफेसर, विभागाध्यक्ष, मनोविज्ञान
4	डॉ. अर.एस. कनौजिया	एसोसिएट प्रोफेसर, राजनीति शास्त्र
5	डॉ. गिरीशचन्द्र पन्त	एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी
6	डॉ. सिद्धेश्वर सिंह मौर्या	एसोसिएट प्रोफेसर, वनस्पति विज्ञान
7	डॉ. अनुमिता अग्रवाल	एसोसिएट प्रोफेसर, अर्थशास्त्र
8	डॉ. अनीता जोशी	एसोसिएट प्रोफेसर, मनोविज्ञान
9	डॉ. धर्मेन्द्र कुमार	एसोसिएट प्रोफेसर, वाणिज्य
10	डॉ. निवेदिता अवस्थी	असिस्टेन्ट प्रोफेसर, गृहविज्ञान
11	डॉ. किरन कुमार पन्त	असिस्टेन्ट प्रोफेसर, वाणिज्य
12	डॉ. धीरेन्द्र सिंह	असिस्टेन्ट प्रोफेसर, गणित
13	डॉ. जगमोहन नेगी	असिस्टेन्ट प्रोफेसर, रसायन विज्ञान
14	डॉ. प्रमोद जोशी	असिस्टेन्ट प्रोफेसर, गणित
15	डॉ. सुमन कुमार	असिस्टेन्ट प्रोफेसर, समाजशास्त्र
16	डॉ. भावना पन्त	असिस्टेन्ट प्रोफेसर, जन्तु विज्ञान
17	डॉ. शरद भट्ट	असिस्टेन्ट प्रोफेसर, इतिहास
18	डॉ. जया भट्ट	असिस्टेन्ट प्रोफेसर, इतिहास
19	डॉ. पी.सी.पालीवाल	असिस्टेन्ट प्रोफेसर, वनस्पति विज्ञान
20	डॉ. शिप्रा पन्त	असिस्टेन्ट प्रोफेसर, संगीत
21	डॉ. देवकीनन्दन जोशी	असिस्टेन्ट प्रोफेसर, भूगोल
22	डॉ. ममता भदोला जोशी	असिस्टेन्ट प्रोफेसर, वाणिज्य
23	डॉ. अभिलाषा कन्नौजिया	असिस्टेन्ट प्रोफेसर, भूगोल
24	डॉ. मूल चन्द्र शुक्ल	असिस्टेन्ट प्रोफेसर, संस्कृत
25	डॉ. जे.पी. त्यागी	असिस्टेन्ट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान
26	डॉ. दीपक खाती	असिस्टेन्ट प्रोफेसर, वाणिज्य
27	डॉ. अनुराग श्रीवास्तव	असिस्टेन्ट प्रोफेसर, भूगोल
28	डॉ. कृष्णा भारती	असिस्टेन्ट प्रोफेसर, अर्थशास्त्र
29	डॉ. सुभाष चन्द्र	असिस्टेन्ट प्रोफेसर, भौतिक विज्ञान
30	डॉ. कुसुमलता	असिस्टेन्ट प्रोफेसर, मनोविज्ञान
31	डॉ. भावना अग्रवाल	अतिथि शिक्षक, हिन्दी
32	डॉ. रूपाली जोशी	अतिथि शिक्षक, मनोविज्ञान
33	डॉ. मीनाक्षी नेगी	अतिथि शिक्षक, राजनीति विज्ञान
34	श्री प्रभदीप सिंह	अतिथि शिक्षक, समाजशास्त्र
35	श्री प्रकाश चन्द्र सती	अतिथि शिक्षक, भौतिक विज्ञान
36	डॉ. रोहित शर्मा	अतिथि शिक्षक, वाणिज्य
37	डॉ. दुर्गा तिवारी	अतिथि शिक्षक, हिन्दी
38	डॉ. नवभा जोशी	अतिथि शिक्षक, रसायन विज्ञान
39	डॉ. अरूण कुमार सिंह	अतिथि शिक्षक, समाजशास्त्र
40	डॉ. अक्षय गुरूरानी	अतिथि शिक्षक, अंग्रेजी
41	डॉ. प्रताप सिंह बिष्ट	अतिथि शिक्षक, अंग्रेजी
42	डॉ. अखिलेश कुमार भट्ट	अतिथि शिक्षक, इतिहास
43	डॉ. रागिनी गुप्ता	अतिथि शिक्षक, जन्तु विज्ञान

शिक्षणेत्तर कर्मचारी : वर्ष 2019–20

क्र.सं.	शिक्षणेत्तर कर्मचारी	पदनाम
1	श्री आर.सी. तिवारी	मुख्य प्रशासनिक अधिकारी
2	श्री जगदीश चन्द्र बलोदी	वैयक्तिक अधिकारी
3	श्री अखिलेश कुमार गिरि	प्रशासनिक अधिकारी
4	श्री पी.सी. सती	वरिष्ठ सहायक
5	श्री सुभाष चन्द्र	प्रयो. सहायक, मनोविज्ञान
6	श्री रणजीत सिंह	विद्युतकार
7	श्री प्रमोद कुमार पाण्डे	प्रयोगशाला सहायक
8	अर्चना गौतम	प्रयोगशाला सहायक
9	पूजा कार्की	प्रयोगशाला सहायक
10	अर्पिता वत्सल	प्रयोगशाला सहायक क
11	राजेन्द्र सिंह बिष्ट	प्रयोगशाला सहायक
12	नन्दन सिंह रौतेला	प्रयोगशाला सहायक
13	श्री किशोर	अर्दली
14	श्री शेखरचन्द्र आर्य	दफ्तरी
15	श्री हुकुम सिंह	अनुसेवक
16	श्री धन सिंह	अनुसेवक
17	श्री हरी सिंह	माली
18	श्री किशन सिंह	अनुसेवक
19	श्री बलवन्त राम	अनुसेवक
20	श्रीमती किरन देवी	पर्यावरण मित्र
21	श्रीमती गौसिया खानम	अनुसेविका
22	श्री विजय सिंह	अनुसेवक
23	श्री राम सिंह	अनुसेवक
24	श्रीमती कमला जोशी	अनुसेविका
25	श्रीमती राधिका देवी	अनुसेविका
26	श्री धरम सिंह	अनुसेवक
27	श्री आकाश लाल	अनुसेवक
28	श्री नागेन्द्र सिंह	अनुसेवक
29	श्री दर्शन सिंह	उपनल कार्मिक, अनुसेवक
30	श्री प्रकाश चन्द्र	उपनल कार्मिक, अनुसेवक
31	श्री इमरान खान	उपनल कार्मिक, अनुसेवक
32	श्री सुशील कुमार	उपनल कार्मिक, चौकीदार

बी.एड. विभाग – सत्र : 2019–20
प्राध्यापकों/कर्मचारियों की सूची

क्र.सं.	नाम	पदनाम
1	डॉ. संगीता कुमारी	विभागाध्यक्ष बी.एड. विभाग
2	डॉ. राजीव सिंह गंगवार	प्रवक्ता हिन्दी बी.एड. विभाग
3	डॉ. अजय कुमार	प्रवक्ता एस.एस.टी. बी.एड. विभाग
4	डॉ. हिमावती	प्रवक्ता गणित बी.एड. विभाग
5	डॉ. प्रभाकर डांगवाल	प्रवक्ता भौतिक विज्ञान, बी.एड. विभाग
6	कु. विनीता विश्वकर्मा	प्रवक्ता अंग्रेजी, बी.एड. विभाग
7	श्री भूपेश चन्द्र पन्त	प्रवक्ता जन्तु विज्ञान, बी.एड. विभाग
8	श्री ललित मोहन	प्रवक्ता एस.एस.टी., बी.एड. विभाग
9	श्री अजय सिंह	प्रवक्ता शारीरिक शिक्षा, बी.एड. विभाग
10	श्री बालम सिंह डंगवाल	लिपिक
11	श्री सत्येन्द्र सिंह बिष्ट	स्टोर कीपर
12	श्री जय सिंह भण्डारी	अनुसेवक
13	श्री ज्वाला दत्त उनियाल	अनुसेवक

प्रपत्र-4 (नियम 8 देखिए)

1. प्रकाशन का नाम : अभिव्यक्ति
2. प्रकाशन अवधि : वार्षिक
3. मुद्रक का नाम : विबग्योर प्रिंटर्स, रामनगर
4. प्रकाशक का नाम : डॉ. (श्रीमती) हेमा प्रसाद
   राष्ट्रीयता : भारतीय
   पता : प्राचार्या
   पी.एन.जी.राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामनगर (नैनीताल) उत्तराखण्ड
5. उन व्यक्तियों के नाम और पते : इससे कोई सम्बन्ध नहीं है। जिनका इस पत्रिका पर स्वामित्व है –

मैं डॉ. (श्रीमती) हेमा प्रसाद घोषित करती हूँ कि उपर्युक्त विवरण मेरी जानकारी एवं विश्वास के अनुसार सत्य है। पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं/लेखों की मौलिकता हेतु रचनाकार स्वयं उत्तरदायी हैं। रचनाओं में व्यक्त अभिमत से सम्पादक मण्डल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

– डॉ. (श्रीमती) हेमा प्रसाद (प्राचार्या)

चित्रपत्रम्

महाविद्यालय की कर्मठ प्राचार्या (डॉ. हेमा प्रसाद)

महाविद्यालय में माननीय मुख्यमंत्री जी एवं माननीय उच्च शिक्षा मंत्री जी की गरिमामई उपस्थिति

स्मृति शेष – हमारे वित्त मंत्री प्रकाश पंत जी का महाविद्यालय आगमन

सांस्कृतिक कार्यक्रम की झलकियाँ

छात्र संघ अभिनंदन समारोह
2018–19
उमंग तरंग
25 व 26 फरवरी, 2019
समस्त छात्र छात्राओं का हार्दिक अभिनन्दन व स्वागत
जितेन्द्र सिंह रावत
अध्यक्ष - छात्र संघ
रवि ज़ोशी
कोमल
अमित कुमार
मनीष मेहरा
गौरव रौतेला

"Seminar held on "Socio economic and environmental aspects of globlisation" issues. opportunities and challanges."

(Deptt. of Commerce)

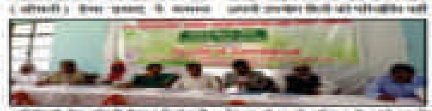

डिग्री कॉलेज में हुआ दो दिवसीय प्रायोजित राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन

- Workshop on
"SPSS FOR SOCIAL SCIENCE DATA ANALYSIS"

करियर काउंसलिंग

कुशल क्रीड़ाधिकारी
(डॉ. जी.सी. पंत क्रीड़ा दल, क्रीड़ा सम्बन्धी गतिविधियाँ, पुरस्कार)

महाविद्यालय की छात्रा क्रिकेट टीम
(सत्र 2018-19)

महाविद्यालय महिला बास्केटबॉल की टीम
(सत्र : 2018-19)

कुमाऊँ वि.वि.,अन्तर महाविद्यालय बालीबॉल पु. प्रतियोगिता में इस संस्था की टीम उपविजेता रही, क्रीड़ा प्रभारी डॉ.जी.सी.पन्त को पुरस्कृत करती हुई प्राचार्य डॉ.(श्रीमती) हेमा प्रसाद

कुमाऊँ वि.वि.अन्तर महाविद्यालय बालीबॉल (पु.) प्रतियोगिता की विजेता टीम राज.महा.हल्दूचौड़, उपविजेता पी.एन.जी.राज.स्ना. महा.रामनगर (नैनीताल) के टीम को पुरस्कृत करते हुए प्राचार्य डॉ.(श्रीमती) हेमा प्रसाद क्रीड़ाधिकारी एवं क्रीड़ा सचिव कु.वि.वि.डॉ.नागेन्द शर्मा एवं अन्य।
(सत्र : 2018-19)

वार्षिक क्रीड़ा समारोह सत्र 2018-2019 में छात्र चैम्पियन अनमोल शर्मा, छात्रा चैम्पियन कोमल आर्या एवं ललिता बधानी को ट्रॉफी प्रदान करती प्राचार्य एवं अन्य

क्रीड़ा प्रतिभागी

हिमांशु कुमार
बी.एस.सी. IInd सेमेस्टर
सदस्य कुमाऊँ वि.वि. अर्न्तमहाविद्यालय
वि.वि. योग (पु.) टीम 2018-19

मीनू महरा
बी.ए. VI सेमेस्टर
सदस्य कुमाऊँ वि.वि. बास्केटबॉल (म.)
नॉर्थ जोन, टीम 2018-19

भावना आर्या
बी.ए. VI सेमेस्टर
सदस्य कुमाऊँ वि.वि. नोर्थ जोन,
बास्केट बॉल (म.) टीम 2017-18 (कानपुर)
सदस्य कुमाऊँ वि.वि. नोर्थ जोन,
बास्केट बॉल (म.) टीम 2018-19 (हरियाणा)

सौरभ सिंह रावत
बी.कॉम III सेमेस्टर
कप्तान रामनगर महा. वालीबॉल (पु.)
टीम 2018-19
सदस्य कुमाऊँ वि.वि. वालीबॉल (पु.)
नॉर्थ जोन टीम 2018-19

राहुल शाह
बी.ए. VI सेमेस्टर
कप्तान रामनगर महा. बॉस्केटबॉल (पु.)
टीम 2018-19

विवेक थापा
एम.कॉम IInd सेमेस्टर
कप्तान रामनगर महा. फुटबॉल (पु.) टीम 2017-18
कप्तान रामनगर महा. हैण्डबॉल (पु.) टीम 2018-19
कप्तान रामनगर महा. खो-खो (पु.) टीम 2018-19
सदस्य कुमाऊँ वि.वि. हैण्डबॉल (पु.) नॉर्थ जोन
टीम 2018-19 (अमृतसर)
रजत पदक विजेता अखिल भारतीय
अंतर महा. ड्रॉप रो बॉल प्रतियोगिता 2018-19

मौ. समीर
बी.कॉम IV सेमेस्टर
कप्तान रामनगर महा. सेपक टाकरा (पु.)
टीम 2018-19

वैशाली कनवाल
बी.ए. IV सेमेस्टर
सदस्य कुमाऊँ वि.वि. खो-खो (म.)
नॉर्थ जोन टीम 2018-19

कविता बोहरा
बी.ए. IInd सेमेस्टर
कप्तान रामनगर
महा. एथलेटिक्स (म.) टीम

पंकज मनराल
एम.ए. Ist सेमेस्टर
कप्तान कुमाऊँ वि.वि. फुटबॉल (पु.) नॉर्थ जोन
टीम 2018-19
नॉर्थ जोन फुटबॉल प्रतियोगिता में
प्रतिभाग 2018-19 (जलन्धर)

प्रियंका पाल
बी.ए. Ist सेमेस्टर
कप्तान रामनगर महा. बैडमिन्टन (म.)
टीम 2017-18
सदस्य कु.वि.वि. नॉर्थ जोन बैडमिन्टन
टीम 2016-17 (रोहतक)

रूपा बिष्ट
एम.ए. IInd सेमेस्टर
कप्तान खो-खो (म.) महाविद्यालय
टीम 2018-19

पूजा पाल
एम.ए. Ist सेमेस्टर
कप्तान रामनगर महा. बैडमिन्टन (म.)
टीम 2018-19
सदस्य कुमाऊँ वि.वि. नॉर्थ जोन बैडमिन्टन
(म0) टीम 2018-19 (जलन्धर)

ममता रावत
कप्तान क्रिकेट (म.) महाविद्यालय टीम 2018-19
सदस्य कुमाऊँ वि.वि. नॉर्थ जोन क्रिकेट टीम 2017-18
सदस्य कुमाऊँ वि.वि. नॉर्थ जोन क्रिकेट टीम 2018-19
रजत पदक विजेता अखिल भारतीय अंतर विश्वविद्यालय
प्रतियोगिता 2017-18 (एम.डी.यू. रोहतक)
स्वर्ण पदक विजेता अखिल भारतीय अंतर विश्वविद्यालय
प्रतियोगिता 2018-19 (एल.पी.यू. पंजाब)

उमा आर्या
बी.ए. IV सेमेस्टर
नॉर्थ जोन खो-खो
हिसार (हरियाणा)

नीलम मनराल
बी.ए. VI सेमेस्टर
क्रॉस कन्ट्री कैप्टन
खो-खो रनरअप
ऐथलेटिक्स पार्टिशिपेंट
नेशनल प्लेयर (कबड्डी)

सूरज रावत
एम.कॉम. VI सेमेस्टर
कबड्डी टीम कैप्टन
सत्र-2018-19
पी.एन.जी.पी.जी. रामनगर
सदस्य हैंडबाल टीम

क्रीड़ा प्रतिभागी

कोमल
कप्तान बास्केटबॉल (म.)
महाविद्यालय टीम
2018-19

कोमल
छात्रा चैम्पियनशिप
2018-19

प्रदीप
बी.ए. IInd सेमेस्टर
कप्तान कबड्डी (पु.)
रामनगर महाविद्यालय टीम
2018-19

रोहित भण्डारी
बी.ए. V सेमेस्टर
कप्तान फुटबॉल (पु.) रामनगर महा.
टीम 2018-19
सदस्य कुमाऊँ वि.वि. नोर्थ जोन
फुटबाल टीम 2016-17

महेन्द्र सिंह रावत
एम.कॉम IV सेमेस्टर
कप्तान योग (पु.) रामनगर महा. टीम 2018-19
सदस्य कुमाऊँ वि.वि.अखिल भारतीय अन्तर
वि.वि. योग टीम 2018-19 (चेन्नई)

प्रियंका भण्डारी
एम. एस.सी. IInd सेमेस्टर
सदस्य कुमाऊँ वि.वि. वालीबॉल नॉर्थ जोन
टीम 2017-18 (हिमाचल प्रदेश)
सदस्य कुमाऊँ वि.वि. वालीबॉल नॉर्थ जोन
टीम 2018-19 (हिमाचल प्रदेश)

अभिषेक बोरा
एम.ए. Ist सेमेस्टर
कप्तान टेबिल टैनिस महाविद्यालय टीम
2017-18

मुजीबुर्रहमान
बी.ए. Vth सेमेस्टर
सदस्य कुमाऊँ वि.वि. फुटबाल नॉर्थ जोन
टीम 2016-17 (एल.पी.यू. जलन्धर)
सदस्य कुमाऊँ वि.वि. फुटबाल नॉर्थ जोन
टीम 2017-18 (एल.पी.यू. जलन्धर)

हेमा रजवार (छात्रा उपाध्यक्ष)
छात्र संघ पदाधिकारी – 2017-18
कप्तान खो-खो (म.) महाविद्यालय टीम 2017-18
कप्तान वालीबॉल (म.) महाविद्यालय टीम 2017-18
सदस्य कुमाऊँ वि.वि. खो-खो (म.) नॉर्थ जोन टीम
2017-18 (कानपुर)

अमन शर्मा
बी.ए. IVth सेमेस्टर
सदस्य कुमाऊँ वि.वि. कुश्ती (पु.) नोर्थ जोन
टीम 2018-19 (रोहतक वि.वि.)
सदस्य कुमाऊँ वि.वि. ड्रॉप रो बॉल (पु.) नोर्थ जोन
रजत पदक विजेता नोर्थ जोन ड्रॉप रो बॉल प्रतियोगिता
2018-19 (जालन्धर)
कांस्य पदक विजेता नोर्थ जोन ड्रॉप रो बॉल प्रतियोगिता
2017-18 (एम.डी.यू. रोहतक)

कुशाग्र पाण्डेय
बी.कॉम. VI सेमेस्टर
सदस्य कुमाऊँ विश्वविद्यालय नॉर्थ जोन
क्रिकेट टीम 2017-18 (एम.डी.यू. रोहतक)

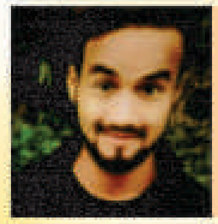

विक्रम बिष्ट
एम.कॉम. IV सेमेस्टर
कप्तान क्रिकेट महाविद्यालय
टीम 2018-19

ओनम राणा
कप्तान
बास्केटबाल महिला महाविद्यालय
रामनगर 2017-18

धरमपाल सिंह
एम.कॉम II सेमेस्टर
कप्तान रामनगर महा. शतरंज टीम 2018-19
सदस्य कुमाऊँ वि.वि.नॉर्थ जोन शतरंज टीम 2017-18
(व्यक्तिगत) विजेता कुमाऊँ वि.वि.अन्तर
महा.विद्यालयी शतरंज प्रतियोगिता 2018-19

अमित खुल्बे
एम.कॉम. IInd सेमेस्टर
सदस्य कुमाऊँ वि.वि. नोर्थ जोन शतरंज
टीम 2016-17

विनोद सिंह
बी.एस.सी. IInd सेमेस्टर
सदस्य कुमाऊँ वि.वि. नॉर्थ जोन शतरंज
टीम 2016-17 (मेरठ)
सदस्य कुमाऊँ वि.वि. नॉर्थ जोन शतरंज
टीम 2017-18 (मेरठ)

हिन्दी-विभागीय-परिषद (2018-19) के कार्यक्रम एवं प्राचार्या द्वारा पुरस्कार वितरण

हिन्दी विभाग - (बायें से दायें)
कु. भावना अग्रवाल,डॉ. जी.सी.पन्त एसोसिएट प्रो.हिन्दी, डॉ. (श्रीमती) हेमा प्रसाद प्राचार्य
डॉ. प्रीति त्रिवेदी विभाग प्रभारी हिन्दी, डॉ. दुर्गा तिवारी

अर्थशास्त्र-विभाग

अर्थशास्त्र-विभागीय-परिषद (2018-19) के कार्यक्रम में अतिथि वक्ता डॉ. संजय धनवटे प्राचार्य (NKS MODEL COLLEGE, KHARANJA, WARDHA, MAHARASHTRA) द्वारा व्याख्यान प्रस्तुतीकरण

पदोन्नति पश्चात् प्राचार्य बनने पर डॉ. धन सिंह कुँवर (विभागाध्यक्ष अर्थशास्त्र) का विदाई समारोह

अर्थशास्त्र विभाग द्वारा सत्र 2018-19 में विभागीय परिषद एवं PEACE CLUB का गठन

इस अवसर पर प्राचार्या द्वारा संबोधन

महाविद्यालय के पूर्व प्राचार्य एवं वर्तमान प्राचार्या, शिक्षक/ शिक्षिकाएँ वार्षिक क्रीड़ा–समारोह में प्रतिभाग करते हुए

वार्षिक क्रीड़ा समारोह सत्र 2017–2018 में गोला फेंककर खिलाड़ियों का मनोबल बढ़ाते हुए पूर्व प्राचार्य एवं सहायक निदेशक उच्च शिक्षा डॉ. बी.सी. उप्रेती

वार्षिक क्रीड़ा समारोह सत्र 2018–2019 में गोला फेंककर खिलाड़ियों का उत्साहवर्धन करती हुए महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ. श्रीमती हेमा प्रसाद

वार्षिक क्रीड़ा समारोह के अवसर पर 100 मीटर की दौड़ में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाली प्राध्यापिकाएँ (सत्र : 2018–19)

वीर बालिकाएँ
ताईक्वान्डो प्रशिक्षण लेती छात्राएँ

26 जनवरी 2019 के शुभ अवसर पर योग एवं तिरंगें के साथ योग विभाग के विद्यार्थी

कुमाऊँ विश्वविद्यालय अन्तर्महाविद्यालय योग प्रतियोगिता में उपविजेता रही, महाविद्यालय की योगा टीम के सदस्य सत्र : 2018–19

अन्य (विविध)

क्रीड़ा परिषद्
(बायें से दायें)-डॉ.डी.एन.जोशी, डॉ. अनीता जोशी,
डॉ.जी.सी.पन्त-प्रभारी क्रीड़ा, डॉ. धीरेन्द्र सिंह,
डॉ. सुभाष चन्द्र पोखरियाल

डॉ. नितिन ढोमड़े
योगाचार्य (योग प्रशिक्षक)

शहीद भगत सिंह छात्रावास
(बायें से दायें)-डॉ.जी.सी.पन्त-संयोजक छात्रावास समिति
डॉ. धीरेन्द्र सिंह-प्रभारी छात्रावास
डॉ. के.के. पन्त-सदस्य छात्रावास समिति

राष्ट्रीय सेवा योजना
(बायें से दायें)-डॉ. दीपक खाती-इकाई प्रभारी एन.एस.एस.
डॉ. धीरेन्द्र सिंह-वरिष्ठ कार्यक्रम प्रभारी एन.एस.एस.
डॉ. डी.एन. जोशी-इकाई प्रभारी एन.एस.एस.

महाविद्यालय के पुस्तकालय में
डॉ. डी.एन.जोशी-असिस्टेन्ट प्रोफेसर भूगोल

अनावरण - दिनांक 12 अगस्त 2017
माननीय श्री दीवान सिंह बिष्ट, विधायक रामनगर विधान सभा क्षेत्र के कर कमलों द्वारा सम्पन्न हुआ।

(बायें से दायें) - श्री धम सिंह-अनुसेवक, श्री विजय सिंह-अनुसेवक, डॉ. के.के. पन्त -समन्वयक, डॉ. (श्रीमती) हेमा प्रसाद-प्राचार्य, डॉ. जी.सी. पन्त-एसो.प्रो. हिन्दी, डॉ. प्रमोद पाण्डे-सहायक समन्वयक, श्री सतेन्द चौधरी-सहायक उ.मु.विश्वविद्यालय

उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, शाखा-पी.एन.जी.राज.स्ना.महा., रामनगर (बायें से दायें)-श्री विजय सिंह-अनुसेवक, श्री सतेन्द चौधरी-सहायक, श्री धरम सिंह अनुसेवक

स्नातकोत्तर भवन

(बायें से दायें)-डॉ.के.के. पन्त, डॉ. धीरेन्द्र सिंह, डॉ. जी.जी.पन्त-प्रभारी क्रीड़ा

रोवर्स-रेंजर्स

Tali Nayak Training Camp
Ramnagar

Tali Nayak Training Camp
Ramnagar

Rajyapal Award Testing
Seatlakhet, Almora

Farewell B.E.O. Ramnagar
G.I.C. Gularghatti

National Adventure Camp
Pachmarhi, Madhya Pradesh

एन.सी.सी. सम्बन्धी गतिविधियाँ

शौर्य–दीवार WALL OF HEROES

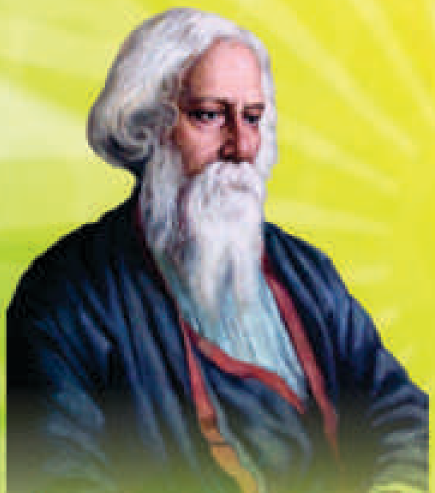

वंदे मातरम्

राष्ट्रगान

जन गण मन अधिनायक जय हे भारत भाग्यविधाता।
पंजाब सिन्ध गुजरात मराठा द्राविड़ उत्कल बंग
विन्ध्य हिमाचल यमुना गंगा उच्छल जलधि तरंग
तव शुभ नामे जागे,
तव शुभ आशिष मांगे,
गाहे तव जय गाथा।
जन गण मन अधिनायक जय हे भारत भाग्यविधाता।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय जय हे।।

राष्ट्र गीत

वन्दे मातरम्
सुजलां सुफलाम्
मलयजशीतलाम्
शस्यश्यामलाम्
मातरम्।
शुभ्रज्योत्स्नापुलकितयामिनीम्
फुल्लकुसुमितद्रुमदलशोभिनीम्
सुहासिनीं सुमधुर भाषिणीम्
सुखदां वरदां मातरम्।।